मिथिलादेशीय मकरन्दानुसार

वैदेही पञ्चाङ्गम्

विदेहभूसमुद्भूतां भूसुतां जगदम्बिकाम् ।
नत्वा वैदेहिपञ्चाङ्गं कुर्वे लोकहिताय वै ॥

संवत्-२०७६-२०७७
शाके-१९४१-१९४२
ई.सन्-२०१९-२०२०

सन्१४२७, लक्ष्मणसंवत् ९१०-९११

राजा : शनिः
वर्षा : १७

मन्त्री : मंगल
धान्य : ७

॥ अथ सर्वतोभद्र मण्डलम् ॥

॥ अथ चतुर्लिंतो भद्र मण्डलम् ॥

जगल्लग्नम्-५।०२

काल सर्प योग शुभ फल भी देता है ५१

कालसर्प दोष

हस्तरेखा ज्ञान ५०

हस्तरेखा शास्त्र (Palmistry)

परामर्शक-
मातामह पं.श्रीरामचन्द्र झा

सम्पादकः- पं.श्रीअजय मिश्र सिद्धान्त-फलित् ज्योतिषाचार्य, बनारस

मूल्यः रु. 55

आर्द्राप्रवेश-११।२४

वाण-पञ्चक विचार

सूर्य के अंश मे क्रम से
रोग वाण- ८।१७।२६ उपनयन में।
अग्नि वाण- २।११।२०।२९ गृहनिर्माण में।
नृप वाण- ४।१३।२२ नौकरी में।
चौर वाण-६।१५।२४ यात्र में।
मृत्यु वाण-१।१०।१९।२८ विवाह में निषिद्ध है

धन्यवादका:-वि.सवत्२०७६-०७७ तमवर्ष पंचांगनिर्माणे विशेषरूपेण पं.श्रीराधारमण ठाकुर देवघर,पं श्रीभुवनेश्वर मिश्रः सीतामढ़ी, पं.श्रीबाबूलाल मिश्रः सीतामढ़ी, पं.श्रीदेवेन्द्र झा बलिया,सहरसा, पं. श्रीविश्वनाथ झा लहेरियासराय, पं.श्रीसुरेन्द्र पाठकः रघुनन्दनपुर, पं.श्रीकैलाश मिश्रः नैनही-जलेश्वर, इमे सर्वे विद्वासः पंचांगनिर्माणादिकार्ये सहयोगाधिक्यं कृतवन्तः अतस्ते सर्वे विद्यानुरागिणः धन्यवादभाजः सन्ति। समीहेच भारतवाक्यं-

धन्योऽयंभारतोदेशो धन्येयं सुरभारती।
तत्पूजकाः वयं धन्याः केयंधन्यपरम्परा।।

सम्पादः

प्रकाशक-
मिथिला पब्लिकेशन
सालीमपुर अहरा पटना-३

॥ अथ गौरीतिलक मण्डलम् ॥
(दुर्गा पूजा प्रतिष्ठा समये)

॥ अथ गृहवास्तु चक्रम् ॥

मुद्रकः- मिथिला प्रेस नालारोड, लंगरटोली शीतलमन्दिर के सामने गली मे पटना-०४- हमारे यहाँ सभी प्रकार के प्रिन्टींग सम्बन्धी कार्य होता है। संस्कृत, हिन्दी कम्पोजिंग भी होता है। मिथिला पब्लिकेशन से प्रकाशित सभीं पुस्तक यहाँ पर मिलता है। ९४०९०४३२०१

वैदेहीपंचांग सदस्य एवं समर्थक

सम्पूर्ण विवरण नही होने के कारण कुछ समर्थको का संकेत नही दिया गया है. सपर्क करें–संपादक

पूज्यगुरुदेव पं.श्री शक्तिनाथ झा दुल्हा,मधुबनी
श्रीमति उषा मिश्र साहित्याचार्य, जिलापार्षद–नारायणपुर,भागलपुर
पं.श्री भुवनेश्वर मिश्र हरपुरकला,सीतामढ़ी
पं.श्री बाबू लाल मिश्र हरपुरकला,सीतामढ़ी
पं.श्री गंगाधर झा, भलोहिया,रौतहट,नेपाल
पं.श्री वशिष्ठ मिश्र मत्सरी,रौतहट,नेपाल
पं.श्री कैलश मिश्र नैनही,महोत्तरी,नेपाल
डॉ.गोविन्द चौधरी जनकपुर,
पं.श्रीचन्द्रभूषण ठाकुर ज्योतिष–साहित्याचार्य ग्रा.+पो.बड़ी एघु, पं.टोला, बेगूसराय
पं.श्री.संजीव कुमार झा .ज्योतिषाचार्य, ग्रा.कल्याणपुर,पो.सरायरंजन, समस्तीपुर
पं.श्री शिव कुमार मिश्र बजलपुरा,तेघड़ा,बेगूसराय
पं.श्री उमाकान्त ठाकुर, रामदीरी (नकटी), थाना–मटिहानी, बेगूसराय
पं.श्री विजय झा (बिटू) पिढ़ौली,तेघरा,जि.बेगूसराय
पं.श्री उमाकातन्त झा व्याकरण–साहित्याचार्य ग्रा.तीयाय,पो.दादपुर,थाना–भगवानपुर,जि.बेगूसराय
पं.श्री योगेश झा(मन्टुन) ज्योतिषविशेषज्ञ, रत्नसलाहकार, ग्रा.+पो. गोधना, भाया- बछवाड़ा
पं.श्री चन्द्रभूषण मिश्र, उपसंपादक, इण्डियनपंच, देवघर
पं.श्री राजमोहन झा, वनगॉव,वाजपटी, सीतामढ़ी
आचार्य कैलाश पति झा ज्योतिषाचार्य, (वास्तुविशेषज्ञ) मोहनपुर, बेगूसराय
पं.श्री शचीन्द्र नाथ मिश्र (रिक्तहस्त) ग्रा.पो.गोसपुर,जिला–सुपौल
डॉ. कृष्णानन्द झा, सेवानिवृत–शिक्षक, मिर्चाई बाड़ी, जिला–कटिहार
डॉ. सुशील कुमार झा शिवसिंहपुर, दरभंगा
पं.श्री उदयकान्त मिश्र ग्राम–करिहारा,समस्तीपुर
पं. श्रीवद्रीनारायण चौधरी,परिहारा,
पं. श्रीहितचन्द्र झा.वघॉत, जि.दरभंगा

पं.श्री मोहनानन्द झा ग्राम-खाड़ा, सहरसा
पं.श्रीबंशीधर झा ज्योतिषाचार्य, हाइस्कूल तेलता
आचार्य निरज कुमार मिश्र,रीगा
पं.श्रीनीरज कुमार,दरभंगा
पं.श्रीदुर्गानन्द झा वेदाचार्य
डॉ.रिपुसूदन झामहेशवडा,मुजफ्फरपुर
डॉ.विनय कुमार झासिरहुल्ली,दरभंगा
पं.श्रीगोविन्द झा, नरगा,सीतामढ़ी
पं.श्री मदन कुमार चकफतेया सं.वि.
पं.श्री ललित मिश्र मत्सरी,नेपाल
पं.श्री गंगेश मिश्र नैनही नेपाल
पं.श्री दीपेन्द्र झा बलरा सर्लाही
पं.श्री ललित झा सीतामढ़ी
पं.श्री मनबोध झा जनकपुर
पं.श्री नविन झा जनकपुर
डॉ कौशल किशोर झा बैरगनियाँ
स्वामी गोपालानन्द सिमरीया
पं.श्री बलिराम झा
पं.श्री सुरेन्द्र झा
पं.श्रीकृष्णानन्द झा
पं.श्री चन्द्रकान्त झा
डॉ.मुरलीधर झा
पं.श्री दिनेश ओझा
पं.श्री कौशलकिशोर
पं.श्री सुरेन्द्र झा
पं.श्री कृपानन्द झा
पं.श्री सुमन ठाकुर
पं.श्री देवेन्द्र झा
पं.श्री विनय झा
पं.श्री दुर्गानन्द झा
पं.श्री.वैद्यनाथ मिश्र
पं.श्रीवामदेव झा
पं.श्री अनिरूद्ध मिश्र
पं.श्री विद्यानाथ मिश्र
पं.श्री सुर्धार झा
पं.श्री अशोक पाठक

वर्षादिविश्वा २०७६-०७७

वर्षा-१७ धान्यम्-७, शीतम्-७, तृण-१३,उष्ण-१७, वायु-१३, वृद्धिः१५, विनाशः१५, विग्रहः११, क्षुधा५, तृष्णा-१३, निद्रा-१३, आलस्य७, उद्यमः१३, शान्तिः१५, क्रोधः-१३, दम्भः५, भेदः३, मैत्री१५, रसनिष्पत्तिः८, फलनिष्पत्तिः१३, उत्साहः११, शलभाः१५, शूलः१५, मूषकः८, अतिवृष्टिः८, अनावृष्टिः११, स्वचक्रम्१३, परचक्रम१८, परचक्रनाशः७, रत्नानि१५, वस्त्राणि१३, घृतम्१३, तैलम्८, दुकूलम्८,आचारः१७, अनाचारः८, मरणम्१५, जन्म३, देशोपद्रवः८,चौरभीतिः१८, चौरनाशः५, अग्निभीतिः१५, अग्निनाशः१७

आय-व्यय २०७६-०७७

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	१४	८	५	०५	१४	०५	८	१४	८	२	२	८

सन- १४२७ वर्ष का समय शुद्धा शुद्धि

- पंचांगारम्भ से आश्विनकृष्णपक्ष तृतीया मंगलवार ५६।०७ तक — अशुद्ध
- अग्रहायण शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार २८।०८ तक — शुद्ध
- माघकृष्णपक्ष पंचमी बुधवार ४५।०८ तक — अशुद्ध
- चैत्रकृष्ण अष्टमी मंगलवार २५।४२ तक — शुद्ध
- वैशाख कृष्णपक्ष तृतीया शुक्रवार८।२६ तक मकरनिचांशगत गुरु — अशुद्ध
- ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रतिपदा शनिवार १५।४७ तक — शुद्ध
- ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा शुक्रवार ४७।४५ तक — अशुद्ध
- आषाढ़ कृष्णपक्ष चतुर्दशी शनिवार ३२।१३ तक — शुद्ध
- आषाढ़ शुक्लपक्ष पूर्णिमा रविवार तक — अशुद्ध

• **अपन पवित्र वस्तुः–आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।।**
अर्थः- आसन, शैय्या, वस्त्र, पत्नी, अपत्य(सन्तान) आ जलपात्र ई सभ केवल अपने टा पवित्र होयत अछि। अनकर ई सभ अपवित्रे मानल जायत अछि।

• **एक पंक्ति मे भोजन करैत काल बीच मे नही उठी आ नहि भोजन प्रारम्भ भय गेलाक बाद पंक्ति के बीच मे भोजन हेतु बैसि**–पङ्क्तिमध्ये न भोक्तव्यं पङ्क्तिं नैव विलङ्घयेत्। पाञ्चाङ्गुलीभिर्भोक्तव्यं नाङ्गुलीपृष्ठमालिहेत्।।

• **वाम हाथ सँ जल पीबैत काल जलपात्र के नीचा दहिन हाथक मणिबन्धक संयोग आवश्यक**– वामहस्ते जलं धृत्वा मणिवन्धे निधाय च। भुञ्जानः पिबन् वारि नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत्।।

• **ककरा सङे की नहि खाय**–ताम्रपात्रे पयः पानमुच्छिष्टे घृतभोजनम्। क्षीरे च लवणं दद्यात् सद्यो गोमांसभक्षणम्।।
अर्थः- तामक वर्तन मे दूध, ऐंठ मे घी आ दूध मे नोन नहि खयबाक चाही। तामक वर्तन मे साक्षात् पानि नहि पिबि, ने ओहि मे भोजन करी।

श्री मङ्गलमूर्त्तये नमः,श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत्५१२१, शकाब्दः१९४१-४२, विक्रमसंवत्२०७५६-७७, सन्१४२७ साल, लक्ष्मणसंवत् ९१०-९११, खृष्टाब्दः२०१९-२० ई.

राजा-शनि फल-

सर्पोपद्रवतो नरः क्षतमना नश्यन्त्यथो जन्तवो
राष्ट्रोपद्रव वाच्यता निगदिता विप्रेषु साधुष्वपि।
पीड्यन्ते च समीरणाद् बहुजनाः प्रासादहर्म्यादयो
निःशब्दा वसुधा निहन्ति च जलं न स्युः शनौ शालयः।।

संवाहक(मन्त्री) मंगल फल-

वायुर्वाति महीरुहस्यपतनं भूकम्पसंक्षोभिता
पृथ्वीशैलमहातिश्रृंगपतनं लोकस्य नाशः सदा।
पीडा गोमहिषाश्वकुंजर पशोर्घोरा महीभीतिदा
शस्यानां च विनाशदारुणतरा सम्वाहके भूमिजे।।

पालक-रक्षामन्त्री-शुक्र, फल-

मेघाः काले स्वकीये बहुसलिलमुचश्चारुकीर्त्यान्विताः स्यु
र्लोकाः सम्पन्नवित्ता नयविनययुताः कीर्तिभावं वहन्ति।
राजानः शिष्टपक्षैः प्रमुदित हृदया दानदाक्षिण्ययुक्ताः
स्वस्थाः विज्ञानशीलाः प्रतिदिनमुदिताः पालके भार्गवे च।

मेघेश-मेघमन्त्री-शनि फल-

मन्दे मन्दजला मेघा दुर्भिक्षैर्व्याकुला मही।
वायुना प्रेरिताः मेघाः छिन्ना भिन्ना भवन्ति वै।

तोयेश-सिचाईमन्त्री-गुरु-फल-

तोयशस्यसमाकीर्णा मही तोयाधिपे गुरौ।

शस्येश-खाद्यमन्त्री-चन्द्र फल-

पृथ्वी शस्यसमाकीर्णा जलदा भूरितोयदाः।
नन्दन्ति मानवाः सर्वे शस्येशे च निशाकरे।।

लोकेश-गृहमन्त्री-गुरु-फल-

अनेक धनसम्पन्ना निरातंका सुरोपमाः।
मुदिता दानसंयुक्ता गुरौ लोकाधिपे जनाः।।

पुष्कर नाम-मेघ-फल-

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा।
चित्रिता तु भवेद्वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता।।

चैत्रशुक्लप्रतिपच्चन्द्रफलम्- शुभम्।
पौषामावास्या-फलम्- शुभम्
नवरात्रफलम्:-शुभम्
आर्द्राप्रवेशफलम्:-खण्डवृष्टियं
होलिकाफलम्:-शुभम्
दीपावलीफलम्:-शुभम्।
मेषसंक्रान्तिफलम्-शुभम्
शकाब्दफलम्- शुभम्
विक्रमसंवत्फलम्- सामान्यम्

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम दण्डात्मक दिनमान उसके वाद तिथि, सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान तिथि का घण्टा, मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्ड पल एवं घण्टा मिनटात्मक मान उसके वाद योग का नाम, दण्डात्मक एवं मिनटात्मक मान उसके वाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान उसके वाद मेपादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का दण्डात्मक एवं घण्टात्मक मान उसके बाद क्रमशः घण्टा मिनटात्मक सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं राष्ट्रिय,नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक ततपश्चाद् मुहूर्त्त पर्वादि दिये गये है। यथा- श्रावण कृष्ण १ बुधवार को प्रतिपदातिथि का दण्डात्मक मान५४।५१, रात्रि के ३।११ तक, नक्षत्र उत्तराषाढ़ा का दण्डपल ४३।३० रा. १०।३६ तक, योग विष्कुम्भ दण्डात्मक मान ५७।१८,करण वालव दण्डात्मक मान २०।५४, चन्द्र का भुक्त-मकर राशि में अहोरात्र। सूर्योदय ५ वजकर १५ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ वजकर ४५ मिनट पर, सूर्य कर्क राशि के ०० अंश १७।४३ कला-विकला पर भोग कर रहा है, ऐसा समझना चहिए। राष्ट्रिय ६, नेपाली श्रावण मास के १ गते तथा अंग्रेजी दिनांक १७ जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्रादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। तदनन्तर दैनिक लग्न सारणी दी गई है। पण्डितो का सुलभता के लिए अर्धप्रहरा का घण्टातत्मक मान दिया गया है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लग्न का समाप्तिकाल मानक समय के अनुसार दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।

वर्षफल

इस वर्ष राजा शनि, मन्त्री मंगल पालक शुक्र, मेघपति शनि तोयपति गुरु, सस्यपति-चन्द्र, लोकपति गुरु, रोहिणी सन्धिगत, पुष्कर मेघ वर्षा १७, धान्य ७। वर्षारम्भ मे "परीधावी"नाम संवत्सर, मध्यमे "परिधावि" नामक संवत्सर । पूजन आदि धार्मिक कार्यो में वर्ष पर्यन्त प्रमाथी नामक संवत्सर का ही विनियोग-प्रयोग किया जायेगा। साधारण संवत्सर का फल **अभिभूतं जगत्सर्वं क्लेशैश्च विविधैरपि। समीरणाऽनिदाहश्च परिधाविनि वत्सरे।** अर्थात् वर्षारम्भ में अनेक प्रकार के दुःखो से सामना करना पड़ सकता है, शारीरिक, प्राकृतिक प्रकोप सम्भव है३। खण्डवृष्टि होने से कृषी की उपज सामान्य होगी एवं खाद्यान्न सस्ते-सुलभ होगें । पर्यावरण तथा विश्व शान्ति हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। विकसित राष्ट्रो पर गंभीर आरोप लगेगें। स्त्रीयो के प्रति अत्याचार में वृद्धि होगी। विश्व व्यापार मे मंदी के संकेत है। आर्थिक तथा सामाजिक विषयो को लेकर जन आन्दोलनो की घटनायें होगी। प्रकाशन,सूचना संचार तंत्र तथा तकनीकी विषय व शिक्षा के क्षेत्र मे उन्नति होगी। वायुमण्डल मे उष्णता में वृद्धि होगी। खड़ी फसलो को हानी होगी। कृषि उत्पादन में कमी तथा चक्रवात व वायुवेग का जोर रहेगा। तटीय क्षेत्रो मे वर्षा से जनहानि संभव है। पर्वतीय क्षेत्रो में भूकम्पादि की घटनाये घटित होगी। कान्यकुब्ज और अहिक्षेत्र अर्थात् नागपुर आदि उस क्षेत्र मे कृषिकार्य मे विशेष हानि होगी।

मासफल

श्रावण–इस महिने में मीठे पदार्थ तेलहन ज्वार बाजरा अरण्ड दाल मिर्च कपास सरसो चावल गुड़ खाड़ आदि के भाव तेज रहेगें। अन्न रसादिक पदार्थ मंहगे होगें। खाद्यान्न के भाव में कुछ कमी रहेगी। तेलहन आदि कारोबार में मंदी का रुख रहेगा। वस्त्र–उद्योग में तेजी का रुख रहेगा। सराफा बाजार में तेजी रहेगी । देश के पूर्व-पश्चिम भाग में वायु जन्य रोग का प्रकोप अधिक देखने को मिलेगा। शासक वर्ग में खीचा-ताना के कारण प्रजा अशान्त रहेगा।

भाद्र- चन्द्रदर्शन के अनुसार इस मास में प्रजा मे रोग, अशान्ति, भय तथा उग्रवादियों द्वारा कहीं-कहीं पर उपद्रव की सम्भावना रहेगी। खाद्य पदार्थों में तेजी रहेगी तथा कटु वस्तु, अफीम में तेजी रहेगी, वस्त्र,रुई, सूत तथा चाँदी में उतार-चढाव देखने को मिलेगा। वर्षा का योग बनता है। नमक, गुड़ तथा लाल वस्तु महँगे होगे। नेत्र रोगो से जनजीवन अशान्त रहेगा। आपसीरागद्वेष वढ़ेगा। व्यापार में मन्दी का रुख रहेगा। देश के दक्षिण भाग में प्रवल वृष्टियोग है।

आश्विनः–इस महिनें मे प्रायः खाद्य पदार्थों में तेजी रहेगी। सरसो, मूँगफली, अफीम, गुड़, शक्कर आदि वस्तु में तेजी रहेगी। रुई तथा सूती वस्त्र सस्ते होगें। दैविक विपदाओं खासकर वाहनादि से घटनाओं अधिक होगी । पश्चिमी क्षेत्र में जलाधिकता पूर्वी में कमी। आपसी जनजीवन पारस्परिक आघात-प्रघात से चिन्तनिय रहेगा।

कार्तिक- खाद्य पदार्थो के मूल्य में सस्ती देखने को मिलेगा, लोगों की मानसिक उग्रता में वृद्धि होगी। आकस्मिक धूप तथा वर्षा आदि से बीमारियों में वृद्धि होगी। मासान्त में अन्न का भाव सम रहेगा। साग- तरकारी के मूल्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। तेलहन का संग्रह करना लाभदायक सिद्ध होगा। गोरस तथा तरकारी के मूल्य में तेजी बनी रहेगी।

अग्राहायणः- इस मास मे खाद्य पदार्थ सस्ते होगे। सोने चाँदी के भाव में तेजी आयेगी। कृषि विनाशक तत्वोका उदय होगा । इस माह में भीमान्तरिक्ष उत्पात् अधिक होगा ।

पंचांग प्राप्ति स्थान मिथिला पब्लिकेशन पटना– 8298824189। दिल्ली– 09540115477

कहीं-कहीं साम्प्रदायक उपद्रव भी होंगे। वृष्टि से अन्न हानि संभव है। आपसी विवाद की बृद्धि होगी। स्टील के भाव तेज रहेगें। खनिज उत्पादन, ईधन आदि के भाव तेज होग।

पौष-इस मास मे अन्न का भाव सम रहेगा। स्वर्णादि आभूषणों के भाव में पूर्ववत् स्थिति देखने को मिलेगा। दलहन तेलहन के मूल्य में सामान्य सस्ती का रुख रहेगा । कहीं-कहीं सामान्य वर्षा भी होगी। दुर्घटना तथा अपहरण की घटनायें घटित होंगी।

माघः- इस महिने में खाद्य पदार्थ तथा सामान्य उपभोक्ता वस्तुओ के भाव प्रायःसमभाव रहेगें। गेंहू जौ चना तिल तेल अलसी मोटे अनाज दलहन के भाव में कुछ वृद्धि होगी। बाजार में कारोबार मंदा रहेगा। मासान्त में सुधार आयेगा। सराफा बाजार में सोना के भाव प्रायः तेज रहेगें। चांदी के बाजार में उतार चढ़ाव बना रहेगा। तथा मासान्त में भाव तेज होगा। किसी विशिष्ट जन की क्षति की संभावना रहेगी।

फाल्गुनः-इस महिने में गोरस का उत्पादन बढ़ेगा। सराफा बाजार मे सुवर्ण के भाव यथावत मंहगे रहेगें लेकिन चांदी के भाव मे अस्थिरता रहेगी। मासान्त मे मंदी का ही रूख रहेगा। यातायात व संचार प्रणाली मे व्यवधान आने की संभावना है। शेयर बाजार मे अस्थिरता रहेगी,। कला क्षेत्र से संबधित लोगो को कष्ट होगा। कागज तथा अन्य लेखन सामग्री मंहगे होंगे। कर वसूली मे कड़ाई तथा कोई नये कर का प्रावधान संभव है।

चैत्र-इस महिने में सर्दी का प्रकोप रहेगा। रोगादि से जनता को कष्ट धार्मिक मामलो तथा उद्योग धन्धो से संबधित गतिविधियां तेज रहेगी। धार्मिक संगठन किसी बात को लेकर सक्रिय होगें। विदेश व्यापार संबधित समझौते होगें। गोरस का उत्पादन बढ़ेगा। कही पर वायु वेग के साथ थोड़ी वर्षा का योग है। श्वेत पदार्थ सस्ते होगें। किसी राज्य में सत्ता पक्ष को आपसी विरोध का सामना करनो पड़ सकता है।

वैशाख-इस मास मे सब्जियों तथा चीनी, चावल, गुड़ और तेलहन पदार्थो के भाव मे भी सस्ती रहेगी वृष्टि के कारण कृषि क्षेत्र मे लाभ होगा। पीले और लाल पदार्थ मंहगी होंगी। मासान्त मे उपल वृष्टिका योग सुस्पष्ट है। रस पदार्थ मंहगी होंगी। तेज वायु के कारण जान-माल का क्षति होसता है।

ज्येष्ट- सर्राफा बजार मे सामान्य सस्ता का रुख रहेगा। धूप तथा वर्षा आदि से बीमारियों में वृद्धि होगी। तूफान,अग्निकाण्ड तथा उपद्रव के कारण लोगों को हानि होगा। विदेश व्यापार संबधित समझौते होगें। हिंसा आदि की घटना बढेगी। पश्चिमोत्तर सीमान्त राज्यो में आतंकवादी समस्या के कारण आम जीवन अस्त-व्यस्त दीख पड़ेगी।

आषाढ़-इस मास मे सब्जियों तथा चीनी, चावल, गुड़ और तेलहन पदार्थो के भाव में मंहँग रहेगी । खण्ड वृष्टि का योग। आँधी तूफान से वृक्ष,मकान की क्षति होगी। अनेक जगहों पर गृहकलह की स्थिति उत्पन्न होगी। देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों मे प्राकृतिक एवं आतंकवादी दुर्घटना घटित होने का प्रवल सम्भवना है। किसी राज्य में सत्ता पक्ष को आपसी विरोध का सामना करनो पड़ सकता है।

राशिफल२०७६-७७

मेष (चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो.अ.)- आप के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। शिक्षा क्षेत्र मे विकाश होगा। नौकरी तथा व्यापार में उतार चढ़ाव रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधा युक्त रहेगा। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। वायु विकार से परेशानी सम्भव है। वर्ष के ३ ६ ९ मास नेष्ट है। विष्णुभगवान के पूजन करने से लाभ होगा।

वृष (ई. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो.) -आप के लिए यह वर्ष मिश्रित फलदायी रहेगा। शनि की ढ़ैया जहाँ शारीरिक एवं मानसिक कष्टदायी रहेगा। वाहन दुर्घटना या चोट-चपेट की सम्भावना वनी रहेगी। शिक्षा क्षेत्र मे अधिक परिश्रम से सफला प्राप्त होगा, नौकरी तथा व्यापार मे सामन्य वृद्धि होगा, मित्र से धोखा मिल सकता है, निन्दनीय कार्य से वचना चाहिये। शनि की ढ़ैया के लिए हनुमान जी की उपासना, सुन्दरकान्ड का पाट अथवा पीपल वृक्ष में दीपदान,लोह अगुंठी अवश्य धारण करना चहिये। वर्ष के १, ५, ९, मास अरिष्ट रहेगें।

• **मिथुन (का.की.कु.घ.ङ.छ.के.को.हा.)**-आप के लिए यह वर्ष शुभाशुभफलदायी रहेगा। शिक्षा, व्यापार तथा नौकरी मे वृद्धि होगा, स्वास्थ्य सामन्य अनुकूल रहेगा, धार्मिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा तथा मानसम्मान मे वृद्धि होगी। सन्तान तथा मित्रों का अभ्युदय होगा। गणेश जी की उपासना से कष्टों से राहत मिलेगी। वर्ष के ४,५,९ मास अशुभ रहेंगे।

• **कर्क (ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो.)** - आप के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वाद-विवाद कलह आदि का योग बनेगा। पत्नी की स्वास्थ्य प्रतिकुल रहेगा। व्यापार में सामान्य लाभ होगा। शिक्षा क्षेत्र में अधिक परिश्रम से लाभ होगा, घर मे मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। किसी विशेष कार्य वास्ते दूर यात्रा सम्भव है जो लाभ दायक होगा। वर्ष के २ ७ १० मास नेष्ट है। गणेश जी का उपानसना करने से लाभ होगा।

• **सिंह (मा. मी. मू. मे. मो टा. टी. टू. टे.)**- आप के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। वौद्धिक कार्यो में सफलता मिलेगी। मानसिक चिन्ता रहेगी। भइयों को कष्ट होगा, विरोधी पराजित होंगें। यात्रायें करनी पड़ेगी। स्थानपरिवर्त की सम्भावना बनेगी। वर्ष के १ ६ ११ मास नेष्ट है।

• **कन्या (टो.पा.पी.पू.ष.ण.ठ.पे.पो.)**- शनि की अढ़ैया के कारण मानिसिक चिन्ता तथा कलह से मन अशान्त रहेगा। मित्रों से अकारण विरोध वढ़ेगा। कार्य मे बाधायें आती रहेंगी। हनुमान जी का दर्शन, पीपल वृक्ष में जलदान तथा दीपक दाना करना चाहिए। वर्ष १ ७ १२ मास नेष्ट है।

तुला (रा.री.रू.रे.रो.ता. ती.तू.ते)- तुला राशि वालो के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। योजनाये सफल होंगी। भित्रों से सहयोग मिलेगा। विरोधियों का शमन होगा। अर्थिक स्थिति मजबूत होगी। भाईयो से सौहार्द्र बढेगा। वर्ष के ५ ९ १२ मास नेष्ट है।

• **वृश्चिक(तो.ना.नी.नू.ने.नो.या.यी.यू.)**-आपके शनि की रजतपाद साढ़े साती का सामान्य प्रभाव रहेगा। शिक्षा क्षेत्र से सामान्य लाभ मिलेगा। व्यापार मे उतार-चढ़ाव के कारण मानसिक परेशानी सम्भव है। सन्तान से लाभ मिलेगा, नेत्र तथा उदर विकार सम्भव है। घर में मांगलिक कार्य का योग वनता है। हनुमान जी का आराधना से परेशानी शान्त होग। वर्ष ३ ६ ९ मास नेष्ट है ल

• **धनु (ये.यो.भा.भी.भु.ध.फ.ढ़.भे)**-यह वर्ष आप के लिए वहुत अच्छा नही है। कार्य में बाधा, स्वास्थ्य प्रतिकूल, मित्र से धोखा सम्भव है अतः सावधानी वरते। व्यापार से लाभ होगा, प्रतियोगितात्मक परीक्षा मे सफला प्राप्त होगा। भूमि,भवन से सम्बन्धी कार्य मे अधिक परिश्रम से सफलता प्राप्त होगा। भगवती दुर्गा देवी की उपानसन से लाभ होगा। वर्ष के ३ ६ ९ मास नेष्ट है।

• **मकर(भो.जा.जी.जू.जे.जो.खा.खू.खे.खो.गा.गी)**-आप के लिए वर्ष अत्यन्त कष्टदायी व्यतीत होगा। शनि की साढ़ेसाती के कारण शिरः शूल शत्रु, प्रकोप,शारीरिक एवं मानसिक विकार तथा पारिवारिक समस्याओं की वृद्धि होगी। अपने किसी सहयोगी से वियोग भी सम्भव होसकता है। इष्ट मित्र भी साथ छोड़ते नजर आयेंगे। जीवन अत्यन्त संघर्षमय वना रहेगा। हनुमान जी की उपासना, शनिवार का व्रत अथवा पीपल वृक्ष में दीपदान से कष्टों से छुटकारा मिलेगा। ५, ७, १२ मास नेष्ट है।

• **कुम्भ-(गू गे गो सा सी सू से सो दा)**-आप के लिए यह वर्ष उत्तम फल दायक है। शत्रु परास्त होंगे, पूर्व से चले आ रहे रोगों से मुक्ति मिलेगी। शिक्षा में उन्नति होगी। सन्तानो के लिये किया गया कार्य अनुकूल होगा। जमीन,वाहन, सम्पति जायजाद क्रय करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यर्थ के कार्ये में उलझनो से वचना चाहिये धन का अपव्यय भी सम्भव है। वेरोजगार जातकों को रोजगार अवश्य प्राप्त होंगे, भाग्योदय होने की सम्भावना है। किसी अप्रत्याशित कार्य के सम्पादन हो जाने से उत्साह मे वृद्धि होगी। शनिवार को व्रत अथवा शंकर जी की उपासना से समस्त अरिष्टों का शमन होगा। वर्ष के ३,८,१० मास नेष्ट है।

• **मीन-दी दू थ झ ञ दे दो चा ची**- आप के यह वर्ष सामान्य लाभदायक रहेगा। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। घर में मांगलिक कार्य होंगे, सन्तानों की उन्नति होगी। नये भूमि या भवन खरीदने का अवसर मिलेगा। मान सम्मान वढ़ेगा। शिक्षा तथा व्यापार में सफलता मिलेगा। नेत्र तथा कटी विकार से परेशान हो सकते है। सम्पूर्ण वर्ष में अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक प्राप्त होंगे। वृहस्पतिवार का व्रत, भगवान विष्णु की उपासना,पीला पुखराज, गुरू का यंत्र धारण करने से समस्त अरिष्टों का शमन होगा। वर्ष के ६,९,११ मास नेष्ट रहेंगे।

मिथिला पब्लिकेशन- हमारे यहां सभी प्रकार के धार्मिक तथा मैथिली पुस्तक मिलता है। अम्बर टावर एग्जीविसन रोड पेट्रोल पम्प के बगल मे पटना चलभापः-08298824189

गायत्री मन्त्र :- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

अर्थः- ॐ उत्पत्ति स्थिति प्रलय कर्त्ता, **भूः** सत्, **भुवः** चित्, **स्वः** आनन्द स्वरूप एहि हेतु गायत्रीक आदिमे जप कैल जाइत छथि। **तत्** ओहि, **सवितुः** सव जगह के रचए वाला परमेश्वर, **बरेण्यं** सबकें भजवा योग्य, **भर्गो** सवकें कल्याण करयवाला, **देवस्य** प्रकाशवान देवताक, **धीमहि** ध्यान करैत छथि, **धियः** बुद्धिकें धर्मादिमे, **यः** जे, **नः** हमर, **प्रचोदयात्** प्रेरणा करथि।

• गायत्री मन्त्र जल म नहि जपी- न गायत्रीं जपेत् विद्वान् जलमध्ये कथंचन। यतः साग्निमुखी प्रोक्तेत्याहुः केचिन्महर्षयः।।

•पञ्च महायज्ञ :- तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः। पञ्चक्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।।

तध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भौतो नृषज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

अर्थ-चूल्हि(ईधन जरैलास), जाँत पिसलासँ, बाढ़नि लगैला सँ, ऊखरि(कुटलासँ) जलंक स्थान (जलपात्र) क नीचा जीवकें दवि गेलासँ एहि पाँचो स्थान मे जे जीव मरि जाइत अछि। ओहि पापक नाश हेतु निम्नलिखितानुसार करक चाही। (१) वेद पुराण पढ़व ब्रह्मयज्ञ थिक, (२) श्राद्ध तथा तर्पणसँ पितरकें तृप्त करब पितृयज्ञ, (३) देवताक पूजा अग्नि होम ब्रह्मयज्ञ, (४) वलि वैश्यदेव करव भूतयज्ञ, (५) अतिथि सत्कार मनुष्य यज्ञ थिक।

• मौनः- पुरीषे मैथुने होमे प्रस्रवे दन्तधावने। स्नान भोजन जाप्येषु सदा मौनं समाचरेत्।।

अर्थ- मल, मूत्र, मैथुन, होम, लघुशंका, दन्तधावन, स्नान, भोजन एवं जप करक समय मौन रहवाक चाही।

• उकासी, छींक, अधोवायु, थूकबः- दिक्कापतनजृम्भासु जीवोत्तिष्ठ करध्वनिः। कर्त्ता स्वर्गमवाप्नोति ह्यकर्त्ता ब्रह्महा भवेत्।। **अर्थ**-छींक अयलासँ **"शतं जीवेम शरदः"** कही, खसि परलासऽ **"उठू-उठू"** कही। उकासी अयलासँ **" चुटकी बजाबी"** ई करयवाला कें स्वर्ग प्राप्त होइत छन्हि। नहि केन्हिहारकें पाप होइत छन्हि।

क्षुते निष्ठीवने सुप्ते परिधानेऽश्रुपातने। एषु कर्मेषु नाचामेद्दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत्।। (सांख्यायन)

अर्थ- छीक, थूक, निद्रा, वस्त्र पहिरव एवं नेत्रमे जल आवि गेलासँ दहिना कानकें अंगूठासँ छुइला पर शुद्ध भऽ जाइत अछि।

• प्रदक्षिणा विधिः- आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात् प्रदक्षिणम्।।

अर्थ :- आसन्नप्रसवा नारी जल सँ भरल घैल लए कए जेना शनैःशनै चलै छथि, तहिना प्रदक्षिण काल मे डेगक गति होयबाक चाही।

• कोन देवताक कतेक प्रदक्षिण करी ?- एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।। **अर्थ**- भगवती के मात्र एक वेर, सूर्य के सात बेर, गणेश के तीनि वेर, विष्णु के चारि बेर आ शिव के आधा वेर प्रदक्षिण करक चाही। **टिप्णी** :- आन देवता सभक प्रदक्षिणक संख्याक विषय मे कोनो वचन उपलब्ध नहि होयत अछि, तैं आन सभक एक वेर अथवा तीन वेर प्रदक्षिण करी। विशेष कामना सँ २१, १०८ या १००८ प्रदक्षिण सेहो कएल जाइत अछि।

• कोन देवताकें की नहि चढ़ाबी – **नाक्षतैरर्चयेद् विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्। यवा-कुन्द-शिरीषैश्च यूथिका-मालतीभवैः।। केतकीभवपुष्पैश्च नैवार्च्यः शंकरः सदा। गणेशं तुलसीपत्रैर्दुर्गां नैव च दूर्वया।। मुनिपुष्पैस्तथा सूर्यं लक्ष्मीकामो न चार्पयेत्। नार्च्चयेत् तगरैः सूर्यं धूर्तपुष्पैर्न केशवम्।। देवीं नार्केर्न कुन्दैश्च शंकरं न गणेश्वरम्। न बिल्वैरर्चयेत् सूर्यम्।।**

अर्थः-विष्णु कें अक्षत्, गणेश कें तुलसी, यवा(अड़हुल),कुन्द,सिरिस, जूीही, मालती आ केतकी शंकर । दुर्गा कें दूबि। सूर्य कें मुनिपुष्प अर्थात् अगस्त्य फूल नहि चढ़ाबी। सूर्य कें तगड़, बेलपात, विष्णु कें धथूर, भगवती कें आक, शंकर आ गणेश के कुन्द फूल नहि चढ़ाबी।

• भूमि पर खसल सिङरहार आ मौलसरि कें छोड़ि आन फूल नहि चढ़ाबी- भूमिस्पृष्टं न गृह्णीयात् शेफालीं वकुलं विना।।

• कोन पुष्प आ पत्र कतेक दिन तक देवता पर चढ़यवाक लेल मान्य अछि-**पलाशं दिनमेकं पङ्कजं च दिनत्रयम्।**

पञ्चाहं बिल्वपत्रं च दशाहं तुलसीदलम्।।

संतान गोपाल मंत्र प्रयोग :-

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

विनियोगः-ॐ अस्य श्री सन्तानगोपालमन्त्रस्य नारायणऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पुत्रप्रदः श्रीगोपालो देवता, क्लीं बीजं, श्रीं ह्रीं शक्तिः, जीं कीलकम्, श्रीसन्तानगोपाल प्रसाद सिद्धिपूर्वक मम(यजमानस्य वा) चिरायुः-पुत्र -प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-ॐ नारायणऋषये नमः **शिरसि**। ॐ अनुष्टुपूछन्दसे नमः **मुखे**। ॐ पुत्रप्रदश्रीगोपालदेवतायै नमः **हृदि**। ॐ क्लीं बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ श्रीं ह्रीं शक्तये नमः **पादयोः**। ॐ जीं कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**।

करन्यासः-ॐ देवकीसुत गोविन्द **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। ॐ वासुदेव जगत्पते **तर्जनीभ्यां नमः**। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण **मध्यमाभ्यां नमः**। ॐ त्वामहं शरणं गतः **अनामिकाभ्यां नमः**। ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः,**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**।

अंगन्यासः- ॐ देवकीसुतगोविन्द **हृदयाय नमः**। ॐ वासुदेव जगत्पते **शिरसे स्वाहा**। ॐ देहिमे तनयं कृष्ण **शिखायै वषट्**। ॐ त्वामहं शरणं गतः **कवचाय हुम्**। ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः,अस्त्राय फट्।

ध्यान- ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तामर्जुनेन समन्वितम्।

समर्पयन्तं विप्राय अष्टानानीय बालकान्।।

विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्र-मध्यतः।

प्राददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः।।

(इति ध्यात्वा मानसोपचारै समपूज्य जपं कुर्यात्। लक्षचतुष्टयजपे पुत्रप्राप्तिः।। कर्मठगुरी पृष्ठ सं.७३-७४)

बीजसहितसंतान गोपाल मंत्र प्रयोग

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ।

वैदिक-ज्योतिष संस्थान- शुद्ध सभी प्रकार के रुद्राक्ष,स्फटिक, शंख, नवरत्न तथा पूजन सामग्री मिलता है। अम्बर टावर एग्जीविसन रोड पेट्रोल पम्प के बगल मे पटना चलभापः-08298824189

।। अथ कर्मकाण्ड विमर्श ।।

पंचोपचारपूजा-

गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च।
पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः।।

षोडशोपचारपूजा-

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा।
मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च।।
गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा।

पंचगव्यम्-

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।।

पंचामृतम्-

शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते।।

पञ्चरत्नानि-

वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्।।

पञ्चपल्लवाः-

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः।
पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः।।

सप्तमृत्तिका-

गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रद्गोकुलात्।
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

सर्वौषधिः-

मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः।।
सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।

सप्तधान्यम्-

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च।
श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।।

हवने शाकल्यनिर्णयः-

तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता।
यवार्द्धं शर्करा दद्यात् सर्वार्धं च घृतं स्मृतम्।।

प्रदक्षिणा विचारः-

एका चण्ड्या, रवेः सप्त,तिस्रःकार्याविनायके।
हरेश्चतस्रः, कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा।।
(आह्निकसूत्र)

नवग्रह-समिधा(लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्।।
अर्क(मदार),पलाश,खदिर(खैर),अपामार्ग (चिडचिडि), पीपल,औदुम्बर(गूलर), शमी, दूर्वा, और कुशा-ये ग्रहोंकी नव समिधाएँ कही गई हैं।

महिष्यादिप्रसवदोषः-

माघेवुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।।

बिल्वपत्र विचार-

अर्पितान्यपि विल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित्।।
(स्कन्दपुराण)बिल्वपत्र न मिलने पर चढ़ये हुयें बिल्वपत्र धोकर चढ़ना चाहिए

दूर्वादिविचारः-

दूर्वाःस्वाभिमुखग्राःस्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम्।
दूर्वाको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचो मुखकर चढ़ाना चाहियें।

धूपविचारः-

पुजनस्थल के बायें भाग में धुपदानी(अगरबती) स्थापित करना चाहियें।

दीपविचारः-

घी का दीपक दायी ओर और तेल का दीपक बायी ओर स्थापित करना चाहियें।

जपस्थान विशेषः-

शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शूचिर्भूत्वा
विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ।
गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्।।
गवां गोष्ठे दशगुणं अग्न्यागारे शताधिकम्।।
तीर्थादिषु सहस्रं स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ।।

• प्रतिमाके स्थापनमें दिशाका निर्णय (देवतामूर्तिप्रकाण३।२४-२७)

पूर्वापरास्यं देवानां मुखं, नो दक्षिणोत्तरम्। ब्रह्मा विष्णुः शिवार्केन्द्रा गुहः पूर्वपराङ्मुखः।।
शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः।।
गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा। भूताद्या धनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः मृताः।।
मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम्। हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः।।

• मन्दिरके लिये प्रतिमाका परिमाण(वृहत्संहिता५७।४७)

सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाणा वा।।

मन्दिरके लिये एक हाथकी प्रतिमा सौम्यताको प्रदान करनेवाली, दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथकी प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है।

• घरके लिये प्रतिमाका परिमाण (भविष्यपुराण)

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः।।

अंगुष्ठ पर्वसे लेकर वितस्ति(वित्ता) परिमाणतककी प्रतिमा घरोंमें रखनी चाहिये, इससे अधिक प्रमाणकी प्रतिमा विद्वानोंने अप्रशस्त कही है।

• घरमें प्रतिमा रखनेका विचार-

गृहे लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा।।
शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च। द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमां तथा।।
नार्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुन्धरे।।
एतासां पूजनान्नित्यमुद्वगं प्राप्नुयाद् गृही।

घरमें दो लिंग, दो शालग्राम, दो द्वारिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खण्डित प्रतिमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशो अवतारोंकी एकासाथ प्रतिमाओंका तथा अग्निसे दग्ध(जली) एवं भग्न(खण्डित) मूर्तिका पूजन नहीं करना चाहिये। इस प्रकारकी मूर्तियोंके पूजन करनेसे गृहस्थ नित्य ही उद्वेग(संकट) को प्राप्त होता है।

• घरमेंशालीग्रामरखनेका विचारः- (पद्मपुराण)

शालग्रामाः समाः पूज्याःसमेषु द्वितीयं न हि। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि।।
शालग्रामशिला भग्ना पूजनीया सचक्रका। खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिलाशुभा।।

शालग्राम भगवानका सम चार छः आदि रूपसे पूजन करना चाहिये। समरूपमें भी दो शालग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। विषम रूप में एक शालग्रामका ही पूजन करना चाहिये(तीन शालग्राम आदिकापूजन नहीं करना चहीये)

खण्डित मूर्ति का विचार

१ खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें। २. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुबो देना चाहिये। जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे वाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दुसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्टा करनी चाहिये।

• यज्ञमें दशदानका विवरण-

गो-भू-तिल-हिरण्याज्य-वासो-धान्य-गुडानि च। रौप्यं लवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम्।।

गो, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी ओर नमक-ये दश वस्तु दानके लिये कही गई है।

• गोदानका महत्त्व

गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा। यथाकथञ्चिद्दत्त्वा गां धेनुं वाऽधेनुमेव वा। अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते।।

गोदान से सात पीढ़ीके पूर्वजों तथा सात पीढ़ीके आगे होने वाले वंशजोका निस्तार करती है।

• भूमिदानका महत्त्व(वृहस्पति)

**षष्टिं वर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः। उच्छेत्ता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत्।।
यत्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः। अपि गोचर्ममात्रेण भुमिदानेन शुद्ध्यति।।**

भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षोतक स्वर्गमें निवास करता है और जो दी हुई भूमि हरण करता है या हरण करनेके सलाह देता है, वह उतने ही वर्ष नरकमें रहता है। मनुष्य जन्मसे लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्तिके लिये यदि वह गायके चामके बरार भी भूमिदान करे, तो वह शुद्ध हो जाता है।

• अग्निको प्रज्वलित करनेका विचारः-(देवीभागवत११।२२।५-६)

**न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत ।।
पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु ।।**

यज्ञाग्निको न तो हाथसे दहकावे, न सूपसे और न पवित्र मृगचर्म आदि से (आदि पदसे वस्त्रका ग्रहण है)। मुखसे ही यज्ञाग्निको धौंके, क्योंकि वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र(चर्म आदि)से अग्निको धौंकने पर व्याधि(रोग) होति है, सूपसे धौंकने पर धन-नाश होता है, हाथसे धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौकने पर कर्मसिद्धि होती है।

• विधिहीन अग्निमें हवन करने से हानि (वायुपु७५।६२)

अप्रबुद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः।।

जो यजमान अग्निके ठीक-ठीक न जलने पर और धूमके रहते हुए अग्निमें हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है।

• पूर्णाहुति खड़े होकर ही करना चाहिये

मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्रुवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्यकदाचन(अग्निपु)

मूर्धानंदिवः०, (शु.य.७।२४) इस मन्त्रके द्वारा स्रुवसे घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णाहुति करना चाहिये, वैठकर नही

• कर्म-विशेष में अग्निके भिन्न-भिन्न नामः-

प्रत्येक कर्मके लिये अग्निके अलग अलग नाम हैं। अतः जिस कर्मके लिये जिस अग्निका आचार्योंने नाम-निर्देश क्रिया है,उसी अग्निका सविधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहियें- गर्भाधानमें- **भरत**,पुंसवनसंस्कारमें- **वर**,सीमन्तोन्नयन संस्कारमें-**मंगल**,जातकर्ममें-**स्वभू** और नामकर्ममें **बल**,अन्नप्राशन संस्कारमें-**अंगिरा**,चूड़ाकरणमें **समुद्भव**,उपनयनमें **जय**,गोदान अर्थात् समावर्तनमें **रुद्र**,विवाहमें **संयुग** अग्नि कहा गया है। अग्निहोत्रमें **व्यालिक**,गृहकर्ममें **भव** और पितृकर्ममें **विश्वदेव**,उदरकी अग्निका नाम **अनल** है, मृत(शव)का भक्षण करनेमें अग्निका नाम **क्रव्यप** है। महाहोममें **वह्निका**,जलमें प्रवाह करनेमें अग्निका नाम **जल** है। पूर्णिमाके होम में **शशांक**, प्रलयमें अग्निका नाम **संवर्तक** है। काठसे उत्पन्न अग्निका नाम **घोर** है। बाँसोंसे उठी अग्निका नाम **परान्त** है। समुद्रमें रहनेवाली अग्नि **वडवाग्नि** है। पाक(अन्नपाक) करनेमें दक्ष,वसोर्धारामें जिसमें हवन किया जाता है उस अग्निका नाम **नियीश** है। धूपसे निकली अग्निका नाम **कामदेव** है। धान आदिके तुष(भूसी) की अग्निका नाम **कामहा** है। रथ्या(चत्वर चौराहो) में स्थित अग्निका नाम **कामहा** है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अग्निका अग्निका नाम **विभत्सु** है, राजाके घरमें उत्पन्न अग्निका नाम **विजय** है। वृक्षोंसे उत्पन्न अग्निका नाम **धूम्र** है। दीपकमें स्थित अग्निका नाम **कृष्णपथ** है। हेमन्त आदिकी अग्निका नाम **वाद्य** है। मातृमन्दिरसे उत्पन्न अग्निका नाम **अजित** है। म्लेछ लोगोंमें जो अग्नि रहती है उसका **शंकर** है। ईंटोंकी भट्ठोकी अग्निका नाम **संघ** है। प्रायश्चित्तमें अथवा व्रत खण्डित होनेपर **शुद्धि** नामक अग्नि और शुक्रके आधानमें अर्थात् वीर्याधानमें **जय** नामक अग्नि जानना चाहिये।(देवीपुराण१२३)

• गुरु-शुक्र के अस्तादि में त्याज्य कर्म-(मु.चि.शुभाशुभ ४६,४७ श्लो)

जब गुरु-शुक्र, वृद्ध अस्त ओर बाल हों तथा क्षय मास तथा अधिक मास में बावली, बगीचा, तलाब, कुआँ, मकान इनका आरंभ और प्रतिष्ठा व्रत का आरंभ और उद्यापन, वधु प्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अष्टका श्राद्ध, गोदान (ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार), नवात्र, जलशाला प्रथम श्रावणी कर्म वेद व्रत नील वृषोत्सर्ग अतिपन संस्कार (बालकों का जातकर्मादि संस्कार जो समय पर नहीं हुआ है), देवप्रतिष्ठा, गुरु से दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन प्रथम बार तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, राज्याभिषेक की यात्रा चतुर्मास यज्ञ समावर्तन कर्णवेध और किसी दिव्यान्तरिक्ष वस्तु की परीक्षा नही करनी चाहिए।

• रुद्राक्षके एक-मुख आदिके नाम और उनका फल

**एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। अवध्यत्वं प्रतिस्रोतो बह्निस्तम्भं करोति च।।
द्विबक्त्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यघनाशकृत्।**..............(**शिवरहस्य के अनुसार**)

'**एक मुखवाला रुद्राक्ष** साक्षात् 'शिव' है, जो ब्रह्महत्याको दूर करता है और समस्त स्रोतोंको अवध्य तथा अग्निको रोकता है। **दो मुखवाला रुद्राक्ष** 'हरगौरी' (शिव. पार्वती) है, जो गोहत्या आदि पापोंको दूर करता है । **तीन मुखवाला रुद्राक्ष** 'अग्निजन्मा' है, जो पाप-समूहोंको दूर करता है। **चार मुखवाला रुद्राक्ष** 'ब्रह्मा' है, जो मनुष्यकी हत्याके पापको नष्ट करता है । **पाँच मुखवाला रुद्राक्ष** 'कालाग्नि' है, जो अगम्य स्त्रीके साथ गमन तथा अभोज्यके भोजन करनेके पापको नष्ट करता है। **छः मुखवाला रुद्राक्ष** 'गुह' है, जो भ्रूण-हत्याके पापको नष्ट करता है। **सात मुखवाला रुद्राक्ष** 'अनन्त' है, जो सुवर्णकी चोरीके पापको नष्ट है।

आठ मुखवाला रुद्राक्ष 'विनायक' है, जो समस्त प्रकारके असत्योंका नाश करता है। **नौ मुखवाला रुद्राक्ष** 'भैरव' है, जो शिवसायुज्य (मोक्ष) को देता है। **दश मुखवाला रुद्राक्ष** 'विष्णु' है, जो भूत एवं प्रेतके भयको हरण करता है। **ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष** 'रुद्र' है, जो अनेक प्रकारके यज्ञोंके फलको देता है। **बारह मुखवाला रुद्राक्ष** 'आदित्य' है, जो समस्त प्रकारके रोगोंको दूर करता है। तेरह **मुखवाला रुद्राक्ष** 'काम' है, जो समस्त कर्मोंमें सफलता देता है और **चौदह मुखवाला रुद्राक्ष** 'श्रीकण्ठ' है, जो वंशका उद्धार करता है।

समस्त पाठक गण से निवेदन है कि लोकोपयोगी या पंचांगोपयोगी विषय वस्तु का संकलन कर उपलब्ध करायें, जिससे आम आदमी को सुलभता से शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त हो सके। जैसे- तन्त्र मन्त्र [illegible] ज्योतिष धर्मशास्त्र आदि [illegible] विषय होना चाहिए।

।। अथ यज्ञ विमर्शः ।।

• अनाधिकारीको यज्ञ करानेसे हानि (मनुस्मृति३।६५)

अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्मणाम्। कुलान्याशु विनश्यन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः।।

जिनको यज्ञ करनेका अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, उसके द्वारा यज्ञ करानेसे, कर्मोंकी नास्तिकतासे और वेदमन्त्रोंसे रहित होनेसे कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते है।

• पतितको यज्ञ करानेसे हानि (महाभारत, अनुशा० १११।४८-५१)

पतितं याजयित्वा तु कृमियोनौ प्रजायते। तत्र जीवति वर्षाणि दश पञ्च च भारत।।
कृमिभावाद् विमुक्तस्तु ततो जायति गर्दभः। गर्दभः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि सूकरः।।
कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः। श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः।।

पतित पुरुषको यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीडा बनकर उत्पन्न होता है और हे भरतवंशी राजन् ! वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़ेकी योनिको भोगता है। कीड़ेकी योनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्षमें गधेकी योनिसे छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गेकी, गीदड़की तथा एक वर्ष तक कुत्तेकी योनिको भोग कर फिर वह मनुष्य योनिमें जन्म लेता है।

• शूद्रको यज्ञ करानेसे हानि(पाराशरस्मृति १२।३६)

दक्षिणार्थे तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः। ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत्।।

जो ब्राह्मण दक्षिणाके लोभसे शूद्रको यज्ञ कराता है, वह शूद्र हो जाता है।

• यज्ञमें ब्राह्मणोंके पूजनसे ही कर्मकी पूर्णता होती है:-(यज्ञ-मीमांसा२०४-०५ङ)

ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वित्तानुसारतः। यावद् विप्रो न पूज्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत्।।
पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं सम्प्रर्णतां व्रजेत्। प्रतिमा तेऽधिकं पुण्यं ब्राह्मणस्य तु पूजने।।

यज्ञ मे प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राहाणोंका पूजन करना चाहिये। क्योंकि जव तक ब्राह्मणोंका पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नही होता। देवताओंसे भी अधिक यज्ञकें ब्राह्मणोंके पूजन करनेका महत्त्व है, अतः ब्राह्मणोंका पूजन होने पर ही यजमानके समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं।

• स्त्री और नपुंसकके द्वारा हवन करनेवाले यज्ञका निषेधः- (मनु.४।२०६)

अश्लीकमेतत्साधूनां यत्र जुहृत्यमी हविः। प्रतीपमेतद्देवानां तस्मात्तत्परिवर्जयेत्।।

जिस यज्ञमें स्त्री और नपुंसक हवन करते हों वह यज्ञ सज्जनोंके लिये लक्ष्मीका विनाशक है और इस प्रकारका यज्ञ देवताओंके लिये भी विरुद्ध है, अतः ऐसे यज्ञका त्याग कर दे।

• यज्ञादि में धर्मपत्नी कीआवश्कताः-

पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः।। पत्नी धर्म, अर्थ तथा कामकी सिद्धिका श्रेष्ट साधन है। कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो- धार्मिक कर्म करनेके योग्य नहीं हो सकता। **"अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।"**(तैत्तिरीयब्राह्मण२।२।२)जो पुरुष पत्नी से रहित हैं वह यज्ञ के अयोग्य है। **एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः। अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु।**(भविष्यपुरा.)-जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पाँखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भार्यारहित पुरुष समस्त कर्मो में अयोग्य हैं।

• पत्नी के अनुपस्थित मेंः-(वाघूलस्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला। अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधौ क्रिया।।
अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम्। क्वचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत्।

जिनकी पत्नी दूर हो,पतित हो,रजस्वला हो,अनिष्ट करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधिरूपमें कुशा की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें।

• कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।।
वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।।
आशीवदिऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा। शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्।।

समस्त धार्मिक कार्योंमें पत्नीके लिये अपने पतिके दक्षिण भागमें बैठना शुभ कहा गया है। व्रतबन्ध में विवाहमें, चतुर्थी कर्ममें, सहभोजनमें, दानमें, यज्ञमें और श्राद्धमें पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये।

विवाह के समय सिन्दुरदान में,द्विरागमन में,पति के साथ बैटकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्रहाणोंके द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणोंके पाद-प्रक्षालनके समय, अभिषेकके समय भी अपने पतिसे वामभागमें बैठना चाहिये।

• स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेधः- (मनुस्मृति५।१५५)

नास्ति स्त्रीणां पृथज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् । पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते।।

स्त्रियोंको पतिकी आज्ञाके वगैर स्वतन्त्ररूपेण यज्ञ,व्रत तथा उपवास करनेका अधिकार नहीं है। स्त्री तो केवल पति-सेवारुपी यज्ञके प्रभावसे ही स्वर्गेमें आदर प्राप्त करती है।

• यज्ञादिमें संकल्पकी आवयकता- (भविष्यपुराण मे)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्।।

मनुष्य संकल्पके विना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्यका क्षय हो जाता है। **संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।** मनु२।३।

• यज्ञादिमें न्यासकी आवश्यकता (शारदातिलक टीका ४ पटल)

पूजाजपार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलान्यमी।।
न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्।।

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंगन्यासके विना फलप्रद नहीं होते। न्यासके विना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता । इसलिये न्यासादि कर्मद्वारा तदाकार वनकर अर्थात् देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये- **देवो भूत्वा देवान् यजेत्। न्यासहीनं तु यत्कर्म गृह्णन्त्यर्द्धं तु राक्षसाः।** न्यासके बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते है।

• यज्ञादिमें एक वस्त्र धारणक निषेध

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्श्राद्धभोजनसत्क्रियाः।।(योगियाज्ञवल्क्य)
एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्दैवकार्याणि दानं होमं जपं तथा।। (गौतमः)

• प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा।।
कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्।।

शमी, गम्भार, शोणवृक्ष, कदंब और खैर, रेमश, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चनमें प्रशस्त गहे गये है।

• आसनके विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-मोक्षश्रीव्याघ्रचर्मणा। वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्।।
अभिचारे नीलवर्णे रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्।।
वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरण्यां दुःखसमभूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।।
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः।। काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि, व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशवल्कल पर व्याधिसे मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्ममें(मारण, मोहन, उच्चाटन आदिमें) नीला आसन, किसीको वशमें करनेके लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्तिके निमित्त किये जा रहे कर्ममें कम्वलका आसन कहा गया है। चित्र कम्वल समस्त कार्योंके लिये कहा गया है। बांसके आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यशका नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।

• पूजन के समय प्रौढपाद(जाँघपर पैर रखकर) नहीं बैठना चाहिए

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्।।

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पणमें जांघपर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिये। (अत्रिसंहिता३१८)

• दक्षिणा देने की आवश्यकता

यज्ञो दक्षिणया सार्धं पुत्रेण च फलेन च। कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः।। देवीभागवत९।४५।१०
कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने।।
कर्ता कर्मणि पूर्णेऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम्। न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानतोऽथवा।।
मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम्। एकरात्रे व्यतीते तु भवेद्रसगुणा च सा।।(ब्रह्मवैवर्त प्र.ख.४२।५४)

दक्षिणासे युक्त यज्ञ पुत्ररूप फलके साथ यजमानों को फल प्रदान करता है। तथा कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देनेसे यजमानको तत्काल फलकी प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्मके पूर्ण हो जानेपर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणोंको दक्षिणा न देनेसे प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात वीत जाने पर वह छगुनी ....।

• तिलक(चन्दन) धारणकी आवश्यकता-

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैत्र्यं होमादिकर्म यः। विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्।।

स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भ(कुश) के बिना करता है, उसका वह निष्फला जाता है।

• यज्ञादिमें धौतवस्त्र पहनना चाहियेः-वसिष्ठ

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत्। अलंकृतः शुचिर्मौनी श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः।।

जप,होम आदि शुभ कृत्योंमें धोती पहन कर ही कर्म करना चाहिये और श्राद्ध आदि कृत्यमें पवित्र वस्त्रको धारण कर तथा जितेन्द्रिय एवं मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिये।

• कुशके पवित्री(अंगुठी) की महत्ताः-

जपहोमहरा ह्येते असुरा दैत्यरूपिणः। पवित्रकृत-हस्तस्य विद्रवन्ति दिशो दश।।
यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्।।

जप और होमके फलकी हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमें पवित्र धारण किये हुए ब्रह्मणको दखकर दशों दिशाओंमें भाग जाते हैं। जैसे इन्द्रका वज्र, विष्णुका चक्र और शिवका त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्रह्मणका रक्षक शस्त्र पवित्री कहा गया है।

• पवित्रीमें कुश की संख्या विचारः-

चतुर्भिर्दर्भपिञ्जूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्णे वर्णे यथाक्रमम्।।
सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम्। चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा।।
पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि।। अर्थात् ब्राह्मणके लिये चार कुशोंका पवित्री धारण करने के लिये कहा है। क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रके लिये क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिये। अथवा सभी वर्णके लिये नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशोंका पवित्री होना चाहिए। शान्ति कर्ममें चार कुशोंका, पौष्टिक कर्ममें पाँच कुशोंका, पितृकर्म में तीन कुशोंका और नित्यकर्ममें दो कुशोंका पवित्री बनाना चाहिये।(मार्कण्डेयः)

• जप करते समय हायसे माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित्त

माला यदि पतेद्धस्तात्तया चैव विनश्यति। सहस्रं तत्र सञ्जप्यं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः।।
भोजनं ब्राह्मणानां तु सर्वानिष्टस्य नाशनम्। गायत्रीं वा जपेत्साष्टशतं भक्त्या समाहितः।।
ततोऽपरां नवां मालां तज्जातीयां वरानने। गृह्णीयात्तु कृते चैवं न विघ्नैरभिभूयते।।

यदि जप करते समय माला हायसे गिर जाय या टूट जाय तो एक हजार बार मन्त्रका जप करे और ब्राह्मणभोजन करावे। ब्राह्मणको भोजन कराना सकल अरिष्टोंका विनाशक है। अथवा एकाग्र होकर भक्तिसे १०८ बार गायत्रीका जप करे। तदनन्तर दूसरी वैसी ही नई माला ग्रहण करे। ऐसा करनेसे पुरुषको विघ्न क्लेश नहीं देतें।

• जप गणनार्थ(गणना हेतु) विहित वस्तु

लाक्षा कुसीदं(रक्तचन्दनम्) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम्। एभिर्निर्माय गुटिकां जपसंख्या तु कारयेत्।। (यानल)
नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकया जपसंख्यां तु कारयेत्।।

लाख, लालचन्दन, कन्यमद्रव्य, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए। अक्षतसे, हायके पर्वसे, धान्यसे, पुष्पसे, चन्दनसे और मृत्तिकासे जपकी गणना न करे।

• यज्ञादिमेंयज्ञोपवीतधारणकीआवश्यकता

द्विजको सर्वदा यज्ञोपवीती होकर औरशिखा बाँधकर रहना चाहिये। शिखा और यज्ञो पवीतके बिना वह जो कुछ कर्म करता वह न किये हुएके सदृश ही होता है।

• यज्ञमें जलयात्राकी आवश्यकता

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्।।
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेऽयुतहोमे तथैव च।।
व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत्।।

जो शान्तिक वा पौष्टिक यज्ञादि कर्म जलयात्राके बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदिकी प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्यापना करनी हो, लक्षहोम,कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रतका उद्यापन करना हो, सुवर्णका तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मंगलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्मका अनुष्टान करना चाहिये।(यज्ञमीमांसा४१३)

गर्भाधानमुहूर्त्तः-

अश्वि, रो., मृ, उ.३, ह,स्वा, अनु., श्र., ध., श., चि, पुन., पु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं,बु,वृ,शु वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनान्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्र त्रिकोणगैः, पापैस्त्र्ययारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीयेमासि कार्यम्। सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमेमासे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृ. पुष्य, श्र., मू., पुन., हस्त, रो., रे, उ. ३, (जन्मभंविना) नक्षत्रेषु । १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे,कृष्णे ५ यावत्। सू., मं., वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु.,चं. अपि पूर्वाह्ने, पुभरयांगे तदंशे शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः,शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

जातकर्ममुहूर्त्तः-जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि., अनु रे., उ.३, रो, अश्वि,पुन, पु., स्वा, श्र., ध., श., नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभ तिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

शिशोर्दुग्धपान मुहूर्त्तः-अश्वि.,रो.,मृ.पुष्य, श्र.,पुन.,हस्त,रे, उ. ३, चि.,अनु.,ध.,शत.नक्षत्रेषु। शुभतिथिषु।शुभदिनेषु, वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम्। भैषज्योक्तनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम्।

सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि.,रो., मृ. स्वाती अनु., उ.३, रे, नक्षत्रेषु । रवि, मंगल,गुरु दिनेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्लेषा पू.३, ज्ये, ध., शत. नक्षत्रेषु मध्यम्।

प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः-अश्वि.,रो., मृ., पुन. पु. उ.३,हस्त,चित्रा, स्वाती,वि. अनु.,ज्ये, श्र.,ध., शतभिषा नक्षत्रेषु । ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः

भ., आ., श्ले,म., वि., शत. रहित नक्षत्रेषु । शनि मंगल रहित दिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठीधारणं) शुभम्।

शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः-जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।

शिशोर्भूम्युपवेशन मुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पंचमे मासि उत्तरा३, रो. मृ. ,ज्ये अनु. अश्वि. हस्त पुष्य: अभिजित् नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष सिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।........

तन्मन्त्रः- रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये। अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनी, पुस्तकं सुवर्ण रौप्यञ्च स्थाप्यम्। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

शिशुदर्शन मुहूर्त्तः

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्प-फल-वस्त्र-द्रव्यादिनी शिशुदर्शनं शुभम्।

नामकरण-मुहूर्त्तः

विप्राणां ११, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा., पुन.,श्र.,ध., ह.,अश्वि.,पु.,अभि.,उ.३,रो.,मृ.,रे., चि., अनु, नक्षत्रेपु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं., बु., वृ., शु. दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम्। शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थैः । ८।१२ गृहे शुद्धे चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते । लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

अन्नप्राशन - मुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेपु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा.३, मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., शत., ह., अश्वि., पु., अभि नक्षत्रेपु। २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु चं.,बु., वृ., शु., दिनेषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने, २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेपु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु। शभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

कर्णविध- मुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिपु, शुक्लेपक्षे, कृष्णे ५ यावत्,चं., बु., वृ.,शु. दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र., ध., पुन., ह., अश्वि., पु., अभि.,मृ.,रे., चि., अनु. नक्षत्रेषु ६।७।८। मासे वा विषमवर्षे चैत्र-पौष-हरिशयन-रिक्ता-समवर्षाणि त्यक्त्वा, २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेपु शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः३।६।११गतैः,लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

चूडाकरण(मुण्डन-आद्यकेशकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमासादि ६ मासे, ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना विषमवर्षे अश्वि, मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., ज्ये., अभि., श्र., ध., शत., रे नक्षत्रेषु। चं, बु., वृ., शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषुशुक्ल पक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।४।७।९।१२ एतद्राशेर्ललग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ४।६।८।१२ रहित चन्द्रे शुभम्।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्			
ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरूः
शुभः	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पुज्यः	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्यः	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीं लक्ष्मी-नवग्रह-कूलदेव-ग्रामदेवान् विधिवत् सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः। अश्वि., आ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., अनु., अभि.,श्र., रे. नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु ,शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं., बु., वृ., शु., दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्वांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे गुरौ दशमे बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभम्।

विद्यारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णु लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृष्टे संजाते सति सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु. अश्वि., मृ., आ., पुन., पु., आश्ले., ह., चि., स्वा., मू., पूर्वा. ३ श्र., ध., शत. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः पापैः ३।६।११ गतैः वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुभ समये, उत्तरायणे माघादिषड्मासेषु सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु (सामवेदीनां मंगलवारेऽपि) जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिपु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्न मासानां द्वितीया, आषाढ १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि., रो., मृ., आ., पुष्य, आश्ले., पूर्वा३,उत्तरा३,ह.,चि., स्वाति, अनु., मू., श्र., ध., शत., रे. नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम् । मन्वादियोगादिषु अपराह्ने सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षष्ठगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १।५।८ स्थाःपापा न शुभाः । ६।८।१२ गताःशुभाः न शुभ प्रदाः। ३।६।११ गताः पापाः शुभदा पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्न-गतः शुभो नान्यथाः। लग्नेऽर्कः शुभः। **गुरुशुद्धि**-जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरु शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थान गतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडश वर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्यः द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानां सप्तवर्षादारभ्यः चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तर गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वम् उपनयनं कार्यम्।

प्रदोषनिर्णयः- यदा तृतीयायां प्रहरात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी,द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

विवाहमुहूर्त्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठापाढमासेपु सौरक्रमेण(देवोत्थानात्परं हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, **सू. चं. बु. वृ. शु** वारेषु, **अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे.** नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठ-कन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्,आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्योर्विवाहः शुभः।

वरवरणमुहूर्त्तः-शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणंशुभम्।

वरणमन्त्र-ओम् तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये, स्नातः स्नातेह्यरोगिणि अव्यंगे अपतिते अक्लीवे(अमूक नाम्नीं)कन्यां पिता तुभ्यं प्रदास्यति।

कन्यावरणमुहूर्त्तः

शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहभेषु च पुष्पफलवस्त्रादिभिः कन्यावरणंशुभम्।

विवाह-उपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्त्तः

विवाहोपनयनादिशुभकर्मसु चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं सम्बद्धं सर्वं कार्यं विधेयम्।

द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३. पुन. पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू.चं.बु.वृ.शु.वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२. लग्नेषुशुभयुतेक्षितेषु; शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते । पापैः ३।६।११ स्थितैःशुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखमासेषु. शुक्रबाल्यस्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारकार्यः । तृतीयादिविषमवर्षे शुक्र विचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित(रे.अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनम् शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न. शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि. शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

मासस्नान-मुहूर्त्तः-विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये मदभावे मासपर्यन्तं।२।३।५।७।१० ।१३ तिथिषु, चं.,बु.,गृ.,शु.,दिनेषु, आर्द्रा,पुन.,पु.,आश्ले.,म.,पूफा.,उफा.,ह.,चि.,स्वा.,नक्षत्रेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, लग्नेषु शुभम्।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु,. लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

वधूप्रवेश-मुहूर्त्तः-

विवाहादिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पंचम-सप्तम-नवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे,चैत्र-पौष-भाद्र-क्षयमास-मलमास-भिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। न अत्र शुक्रविचारः कालविचारो वा १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। चं.,गु.,शु.,श.,वारेषु,मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि.,रो.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मृ.,श्र.,ध.,रे., नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।८।९।११।१२। लग्नेषु। शुभैः।१।२।५।७। १०।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

गृहप्रवेश मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ, कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन,श्रावण सौरमासेषु। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्ल. पक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अ., रो., मृ.,पुन, पु., उ.३, ह. ,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र.,ध.,शत.,रे. नक्षत्रेषु। **चं. बु. वृ. शु. श.** वारेषु। दिवारात्रौ। शुद्ध समये। शुद्धे कुम्भचक्रे । २।५।८।११ लग्नेपूत्तमः । ३।६।९।१२ लग्नेषु मध्यमः । जन्मराशि लग्नाभ्यामुपचय- ३।६।१०।११ राश्यांशेः स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः। ३।६।११ स्थानेषु पापाः। ४।८ भवने ग्रहरहिते। सम्मुखकाल रहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्ध-समय तृण-काष्ठादिक-गृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि। अग्निभय राजकोपे देविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभ मुहूर्त्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं अर्कभात्		
स्थान	न०	फलानी
मु.	१	अग्निदाहः
पू.	४	उद्वसनम्
द.	४	लाभः
प.	४	धनम्
उ.	४	कलहः
म.	४	विनाशः
अ.	३	स्थिरताः
क.	३	स्थिरता

त्रिविधप्रवेशः-

दिवा नृपप्रवेशः,
निशि वधूप्रवेशः,
दिवारात्रौ च गृहप्रवेशः
शुभदः प्रोक्तः।

गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहन, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण). मासेषु। सम्मुख-काल-वर्जित-समये। २।३।५।७।१०।११। १२।१३। १५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। **अ.,रो.,मृ.,पुन, पु.,उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र., ध.,शत.,रे.** नक्षत्रेषु। **चं, बु, गु, शु, श,** वारेषु। दिवा, शुद्धसमये।। शुद्धवास्तु-चक्रे,पृथ्वीशयननक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।९।१२। लग्नेषु। लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १। ४। ५। ७।९।१० ।स्थितैः,पापैः ।३।६।११। स्थितैः, ।८।१२। ग्रहरहिते शुभः तृण-काष्ठादि-गृहनिर्माणम् अशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठादि-निर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम्।

गृहारम्भे वृषचक्रं अर्कभात्		
स्थान	न०	फलानी
शीर्षे	३	अग्निभयम्
अ.पा.	४	शून्यम्
पृ.पा.	४	स्थैर्यम्
पृष्टे	३	धनम्
द.कु.	४	लाभः
पृ.	३	नाशः
वा.कु.	३	धननाशः
मुखे	३	कष्टम्

यात्रामुहूर्त्तः

वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चैत्र,भाद्र,पौष, रहित मासेषु। **अ.,मृ.,पुन.,पु.,ह.,ज्ये.,अनु.,श्र.,रे.** नक्षत्रेषूत्तमः। **रो. पू.३, चि., स्वा., मू.,पूषा.,ध.**नक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोग दग्धतिथि मासान्त-संक्रान्ति-मासादि प्रभृतिदोषरहिते। अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु। अमाशुक्लप्रतिपच्च विहान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितादिने २।४।६।८।९ तारासु। पञ्चमताराया: प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च। १।२।३।५।६।७।९।१०।११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४ । १२ चन्द्रेऽपि। द्विरागमनान्तरं पितृगृहगतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिण-सम्मुख-कालौ त्याज्यौ। तदन्तरमावश्यके केवलं सम्मुख- कालस्यत्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन-यात्राकार्या

सर्वदिग्गमननक्षत्राणि-

अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य- श्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च - सोमे शंनिवारे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रवि शुक्र वासरे च पश्चिमस्यां, मंगल बुध वासरे च उत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्।

दिक्शूल-परिहारः-रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृत-पयो-गुड-तिल- दधि - यव-माषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत्।

विदिक्शूलविचार-शनौ पूर्वे, चन्द्रऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

मिथिला पब्लिकेशन- हमारे यहाँ सभी प्रकार के धार्मिक तथा मैथिली पुस्तक मिलता है। नालारोड, लंगरटोली गली शीतला मन्दिर के सामने पटना चलभाषः-08298824189

लग्नचन्द्रयोर्वासः

लग्नचन्द्रयोर्वासः:-मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां,कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्राशुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

द्वादशचन्द्रस्य विशेष-

अधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्र द्वादशगः शुभः।

पृथ्वीशयननक्षत्राणि मुहूर्त्तः-

सूर्यनक्षत्रात्। ५ ।७ ।६ ।१२ ।१६ ।२६ मिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते। एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृति कार्यं ट्यूबेल ,बोरिंग, प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।

चरणिविचारः-

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार- संयुततमष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते। पशुहानिःपशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाश पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः।

अर्धप्रहरा

दिन- रवौ वर्ज्यं चतुष्पञ्च सोमे सप्त द्वयन्तथा। कुजे षष्ठ द्वयं चैव बुधे पञ्च तृतीयकम्। गुरौ सप्ताष्टकश्चैव शुक्रे वेद तृतीयकम्। शनो वाद्यन्त षष्ठञ्च। वारवेलेति निन्दिता।
रात्रौ- रवौ दसाब्धौ हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे तुतीये शनौ रसाद्य निशिवारबेला।

नक्षत्रगण्डान्तः-

अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडीका।
रेवतीसर्पशक्रान्ते मासस्द्ररसः क्रमात्।

वापी-कूप-तडागादिखनन-मुहूर्त्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे शुद्धसमये,रो.,मृ. ,पुष्य.,म., उत्तरा-३,ह.,अनु.,ध. ,श. ,रे.,नक्षत्रेषु। पृथ्वीशयन नक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ।४ ।१० ।११। १२। लग्नेषु नवत्रिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयो-स्त्वन्तरस्थ-लग्ने,पापैर्निर्वलैः,शुभैः सुवलिभिः शुद्धे वापी-कूप-तडागादि- चक्रे शुभम

चन्द्रविचारः-

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभिष्ट दिनस्य चन्द्रं यावत् गणनीयम्। तत्र १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ संख्याकश्चन्द्र शुभः प्रदः ८ चन्द्रः मृत्यु प्रदः। ४ कलहदः। १२ हानिकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद् दोषशान्त्यर्थमामतण्डुशंख श्वेतवस्त्रादि दानं कार्यम्।

राहु(काल)वासः-

सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम्। फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठ-आषाढ-श्रावणेषु पश्चिमस्याम्। भाद्र-आश्विन-कार्तिकेषु उत्तरस्यां कालवासः

कालशूलम्-उषाकाले पूर्वस्यां,मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले(गोधूल्यां)पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्,कालशूलदोषत्वात्।

जन्मराशिवशेन-विचारणीयविषयाः

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्युते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

जन्मनक्षत्रे त्याज्याः-

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु । क्षौरभेषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

जन्ममासे त्याज्याः- क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	पू.३,अश्वि.,पुष्य,म.,मृ. श्र.,कृ.,ज्ये.,वि.,चि	४ ।८ ।१२ ।१४	मं.,शु.	स्थायिजयदः
अकुलः	भर,स्वा.,आश्ले.,ध.,रे ह, रो.,अनु.,पुन.,उत्तरा.३	१ ।३ ।५ ।७ ।९ ११ ।१३ ।१५	सू.,च.,वृ.,श.	यायिजयदः
कुलाकुलः	आर्द्रा,मू.,अभि.,श.	२ ।६ ।१०	बुधः	उभयोःसन्धिः

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई

वामपृष्ठगतायोगिनीशुभ, दक्षिण-सम्मुख अशुभ।

ट्यूबवेल, वोरिंग,टंकी प्रभृति स्थापने शुभ मुहूर्त्तः-कृ.,आश्ले.,म.,पू.३,भ.,वि.,मू., नक्षत्रेषु। २ ।४ ।५ ।६ ।७ ।६ ।१३ ।१५तिथिषु शुक्लपक्षे,कृष्णपक्षे ५ यावत् ।चं.बु.वृ.शु.वारेषु। पूवाहेऽपराहे वा, २ ।३। ४ ।६ ।७ ।६ ।१० ।११ ।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे शुभैः१ ।४ ।५ ।७ ।६ ।१० स्थितैः। पापैः३ ।६ ।११गतैः शुभम्।

जलाशयवाटिका-देवादि-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे, सू., चं., बु.,गु.,शु., वारेषु ।१ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।८ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५। तिथिषु। **मृ.रे.चि.अनु.ह.,अश्वि. पु.,स्वा.,पुन.,श्र.,ध.,श.,रो., उत्तरा-३**, नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथि दिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्य, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं, स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्या चन्द्रपापैः ।३ ।६ ।११। स्थितैः। शुभैः १२ ।८। भिन्नस्थानगतैः देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये,बुधः श्रवणायां, गणेशादयो देवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्री दीमालिकायाञ्च; शंकरस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

खलस्थापनमुहूर्त्तः-ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

धान्यस्थापन-मुहूर्त्तः-अश्वि.,रो.,मृ.,पुन.,पुष्य,चि.,ह.,उ.३,स्वा.,अनु.,मू.,श्र. ध. , श.,रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिन लग्नेषु, २ ।३ ।५ ।८ ।६ ।१० ।११ ।१२ लग्नेषु शुभम्।

देवालय-गृहारम्भ-जलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातंदिक्	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्	वायव्यम्
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ.सूर्ये	मि.क.सिं.सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सिं.क.सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु.सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे.सूर्ये

हलप्रवहणमुहूर्त्तः-

अश्वि. रो. मृ. पुन.पुष्य. म. उत्तरा३, ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, । चं. मं. बु. गु. शु. वारेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः। शुभैः सुबलिभिः। चन्द्रे जलचर-राशिस्थे तन्नवांशे वा । गुरौ लग्नस्थे शुक्रे विधौ च पृष्टे शुभम्।

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र-	३	८	६	[illegible]
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं

वापीचक्रंरोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
पृष्टे	४	शुभजलं
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादायोः	८	दुःखम्

बीजवपन-मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुष्य,म. चि., ह., उ.३, स्वा., अनु., श्र., मू. रे. नक्षत्रेषु, २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११। १२ ।१३ ।१५ तिथिषु, चं., बु., गु., शु.दिनषु, शुभलग्नेषु, लग्नेशुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रत्रिकोणौ पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

बीजवपने फणिचक्र राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र-	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं

कूपचक्रंरोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम्
नैर्ऋत्य	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतजलम्
वायु	३	जलहानिः
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेवच

तडागचक्रंसूर्यभात्

स्थान	न	फलानि
पूर्व	२	जलशोषः
अग्नि	३	वहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानिः
नैर्ऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
वाह्य	३	अमृतजलम्

धान्यरोपणमुहूर्त्तः- रो. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्त्तः-मू.ज्ये.आश्ले.आर्द्रा, पूभा.ह.कृ. ध.श्र.मृ.स्वा.म.उत्तरा३,पूषा,भ.चि.पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु. शु. दिनेषु, १ ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२। १३ ।१५ तिथिषु, २ ।५ ।८ ।११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव- गोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

मेधिरोपणमुहूर्त्तः-अ.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा३,ह. चि. स्वा.अनु. श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः-वर्षेश सूर्य वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम्, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कणमर्दनमुहूर्त्तः-मघा.पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः- अ.रो.पुन.पु.उत्तरा३, स्वा.वि.ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्त्तः- रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. गु. शु. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत्। २ ।३ ।५ ।७ ।१०। ११ ।१२ ।१३ ।१५, तिथिषु, २ ।५ ।८ ।११ लग्नेषु शुभम्।

वृक्षादिरोपण-मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो.,मृ., पुष्य, उ.३, ह चि., वि., अनु., मू., श., रे., नक्षत्रेषु, चं., वृ., शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्-

पञ्चक (ध., श., पू.भा., उ.भा., रे) रहित नक्षेत्रेषु। १ ।२ ।३ ।४ ।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

नवान्नभक्षणमुहूर्त्तः-

अ., रो., मृ., पुन., पु., उ.३, ह., चि., स्वा., अनु. , श्र., ध., श., रे. नक्षत्रेषु शुभम्। मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम्। सू., च., बु., गु. वारेषु। शुक्ल पक्षे २ ।३। ५ ।७ ।८ ।१०। १२ ।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३ ।२० अंशानन्तरं, १३ अंशयावत् आवश्यके २३ अंश यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् २ ।३ ।४ ।६ ।७ ।६ ।१२ लग्नेषु, लग्नेशुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम्। नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघा- भरण्याश्लेषाऽऽर्द्रा-नक्षत्र-सौर-क्रमेणकार्तिक-पौष- चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशी - रिक्तामंगलशनि- शुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपञ्चमी यावत् ग्राह्यः।

पुराणादिश्रवणमुहूर्त्तः

अश्वि., रो.. मृ., पुन., पु., ह., चि.,स्वा, अनु., मू., श्र. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे २ ।३ ।५ ।७ ।८ ।१०। ११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु। कृष्णपक्षे५ यावत्। **सू.,च., बु., गु., शु.** दिनेषु । शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाढ्ये, शुभैः ।१ ।४ ।५ ।७ ।६ ।१०। स्थितैः पापैः ३ ।६ ।११ स्थितैः। उत्तरायणे,श्रावण., आश्वि., कार्तिक, अग्र. मासेषु। तीर्थक्षेत्रे,देवालये, सिद्धि क्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तविनाऽपि शुभम्।

मन्त्रग्रहणमुहूर्त्तः-

अश्वि,रो.,पुन.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,अभि. ,श्र.,ध.,श.,रे.,नक्षत्रेषु ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५तिथिषु। अत्यावयके कृष्णपक्षे ५ यावत्। सू.,चं.,बु.,गु.,शु.,वारेषु। शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा ।२ ।३ ।५ ।७ ।६ ।१२। लग्नेषु,शुभैः ।१ ।४ ।५ ।७। ६ ।१० गतैः,पापैः ।३ ।६ ।११ स्थितैः,सौरक्रमेण वैशाख, श्रावण,आश्विन,कार्तिक,अग्रहण,माघ, फाल्गुन,मासेषु। संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये,ग्रहणे,सिद्धक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्

व्रतोद्यापन-मुहूर्त्तः-

अश्वि,रो.,पुन.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध. ,श.,रे.,नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्तिक,माघ,फाल्गुन,वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ,मासेषु। शुभलग्नेषु। कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्वन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः ।१ ।४। ५ ।७ ।६ ।१० स्थितैः, पापैः ।३ ।६ ।११। स्थितैः,पंचमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यक

कल्याणार्थशान्तिःमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ.३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २ ।३ ।५ ।६ ।७। ८ ।१०। ११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुद्ध समये आवश्यकेऽशुद्धेऽपि चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमास रहिते शुभम्। शुभलग्ने लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे दशमस्थे सूर्ये अष्टमे लग्ने च पाप रहिते शान्तिःशुभाः। शुभम्।

नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्ड्यादि देव्याराधन मुहूर्त्तः

वैशाख,फाल्गुन,माघ,श्रावण अग्रहण, आश्विन, कार्त्तिक मासाः पूजायां तु शुभावहाः।
३ ।५ ।१५ ।७ ।१३ ।१० ।१२ ।६ तिथिषु। सू.चं.बु.गु.शु. वारेषु। अश्वि. रो. स्वा. पु. ज्ये. उत्तरा३, पुन. ।

होमाहुतिविचारः-

सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले।।

आहुतिदोषपरिहारः-

विवाहयाग व्रतवन्ध दीक्षा सीमन्तचण्डी गृहवास्तुशान्तौ। आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यज्ञविधायिनां खलु।।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहिऐंद्री त्वथ चण्डिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयौ धनाप्तिर्ह्यतस्तथा राजपदाप्तिरोगौ। विद्यासुखाप्तिर्नृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण।।

अहं संस्कृतेन वदामि भवान् संस्कृतेन वदति वा?(संस्कृतभारती- धारा प्रवाह संस्कृत बोलना सीखें वह भी निःशूल्क और अपने नगर में,)। सम्पर्क करोतु- बिहार,झारखण्ड, बंगाल, आसाम, उत्तरप्रदेश,मध्यप्रदेश, दिल्ली, पंजाव,जम्मूकाश्मिर,गुजरात, केलर,कर्नाटक,तमिल्नाडु सहित सम्पूर्ण भारत में कहि भी कभी भी, विशेष हेतु केन्द्रीयकार्याल दिल्ली से सम्पर्क करें 011-23517689

रक्तमोक्षण(आपरेशन)मुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु सू. मं. वृ. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु चन्द्र तारा अनुकूले सति शुभम्।

चिकित्सामुहूर्त्तः-

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु सू. चं. मं. वृ. शु. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु शुभाः।

भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः

अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु सू. चं. बु. वृ.शु. दिनेषु ३।६।९।१२ लग्नेषु शुभैः । ३।६।९।१२ राशि स्थितैः लग्नात् ७।८।१२ ग्रह रहितेषु औषधिभक्षण शुभम्। जन्म नक्षत्रे भैषज्यभक्षणं शुभम्।

विपणिमुहूर्त्तः-

मृग.रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा३, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे १० यावत्१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु लग्ने चन्द्र शुक्रे पापैः ८।१२रहितैःशुभैः२।१०।११स्थितैःशुभाः।

वस्तूनांविक्रयःमुहूर्त्तः-

भ.,कृ.,.आश्ले.वि.पू.३ नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु चं.बु.वृ.शु. दिनेषु शुभैः। १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तूनांक्रयमुहूर्त्तः-

शुभतिथिदिनलग्नेषु अ.चि.स्वा.श्र.शत.रे.नक्षत्रेषु शुभः।

स्वामिसेवा(नौकरी)मुहूर्त्तः-

अश्वि. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु। सू. बु. गु. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते। सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे। सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः -

अश्वि. मृ. पुष्य,पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। सू.मं. बु. गु. शु. दिनेषु, शुद्धसमये ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम्।

ऋणप्रदानमुहूर्त्तः(द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः) -स्वा. पुन. मृ. रे. चि. अनु. वि.पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु,१।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे,५।८।९ ग्रहरहिते । चं.गु.शु.शु. वारेषु शुभम्।

ऋणदाने निषिद्धसमयः- बुधवासरः, भरणी, कृ. आर्द्रा. आश्ले. मघा. पूर्वा३. चि. ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।

ऋणग्रहणेनिषिद्धसमयः- रविमंगल दिने। संक्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रञ्च। एषु ऋणार्पणं शुभम्। कुंभ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु शुभतिथिषु। चैत्रभादवपौषमलमासक्षयमासभिन्न समये शुभः।

मोटरबससाइकिलयानादिचालयनमुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु चं. मं. गु. शु. श. दिनेषु। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेष बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसप्तमेश-नवमेशै रति १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

इष्टिकारम्भमृहूर्त्तः

अ., रो., मृ., पुष्य, उ.३, ह., ज्ये., श्र., रे. नक्षत्रेषु। वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रवि, गुरु, शनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्र,भाद्र, पौष, मलमास, क्षयमास भिन्नसमये शुभः।

मीलचालनमुहूर्त्तः

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु। १।४।७।१० लग्नेषु। शुभैः१।४।५।७।१० स्थितैः, लग्नेशधनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम्।

उग्रकर्ममुहूर्त्तः:-

पूर्वा३, भ, मघा, मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा नक्षत्रेषु मं. श. दिनेषु। १।८।१०।११ लग्नेषु। १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम्।

इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम

चुल्हिकास्थापन मुहूर्त्तः

अ.,भ.,वि.,रो.मृ.,उ.३,कृ.,मू.,पू.षा.,ध.,आर्द्रा., नक्षत्रेषु। सू.मं.श. दिनेषु, शुभतिथि लग्नेषु शुभम्।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभादिनभावधि

स्थान	नं०	फलम्	स्थान	नं०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृति

पञ्चक(भदवा)विचारः-

धनिष्टा-शतभिषा पूर्वभाद्रोत्तरभाद्रे रेवतीनक्षत्राणि पंचकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादन- प्रेतदाहतृणकाष्ठादि-संग्रहशय्यावितान निर्माणादिकं च त्येजेत्। **तत्रापवादः-** वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथि-मासान्तादिविचार-

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्ये अष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्य निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च(मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकल शुभकार्येषु त्याज्यम्।

नक्षत्र संज्ञा-

चरसंज्ञक नक्षत्र- स्वाती,पुनर्वसु,श्रवण,धनि.,शतभिषा ये नक्षत्र और सोमवार ये चर और चलसंज्ञक हैं,इनमें हाथी,घोड़ा,पर चढ़ना,फूलवारी आदि लगाना और यात्रादि तथा लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म करना भी शुभ है।

उग्रसंज्ञ नक्षत्र- पूर्वा३,भ.,म.और मंगलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं,इनमें घात अग्नि कार्य,विषादिका प्रयोग,शस्त्र बनाना तथा दारुण संज्ञक नक्षों के कार्य शुभ होते है

मिश्रसंज्ञक नक्षत्र- विशाखा,कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधरण संज्ञक हैं,इनमें अग्निकार्य और वृषोत्सर्ग,उग्रसंज्ञक नक्षत्र मे भी कार्य करना शुभ होता है। क्षिप्र और लघुसंज्ञक नक्षत्र- हस्त,अश्विनी,पुष्य,अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार,क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं,इनमें दूकान लगाना,रति,शास्त्राध्ययन,आभूषण बनाना या बनवाना,चित्र रचना,६४कला सीखना।

मृदुसंज्ञक नक्षत्र- मुगशिरा,रेवती,चित्रा,अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं इनमें गीत,वस्त्र,खेल,मित्रकार्य,और आभूषण बनाना या धारण करना शुभ है।

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	जंघयोः	शुभः
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	हस्तद्वये	लाभः
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	हस्तद्वये	लाभः
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	स्कन्धयोः	विजयः
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः
नासाग्रे	रोगः	कटिभागे	पशुलाभः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	द.मणिबंधे	हानिस्तापः
वामकर्णे	लाभः	वा.मणिबंधे	कीर्तिनाशः
नेत्रयोः	धनलाभः	हृदये	धनाप्तिः
द.भुजे	पराक्रमः	मुखे	मधुरभोजनम्
वामभुजे	राजभयम्	केशान्ते	कष्टम्
कण्ठे	शत्रुनाशः	गुल्फयोः	धनम्
स्तनयोः	सौभाग्यम्	द.चरणे	भ्रमणम्
उदरे	भूषणाप्तिः	वा.चरणे	बन्धुनिग्रहः
पृष्टदेशे	बुद्धिनाशः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः
जानुद्वये	शुभः		

वारतिथिविचार यदिपल्ली(छिपकली)

१।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक होता है। तथा सोम, बुध, गुरू, शुक्र वार में। पुष्य,अश्वि.रो.मू.पुन.उ.फा.ह. चि.स्वा. ध.रे.अनु.शत.नक्षत्रों में गिरे तो शुभ फल देता है। उपरोक्त में निर्दिष्ट सभी फल पुरूषो के दक्षिण अंग में और स्त्रीयों के वाम अंग में विचार करना चाहिए। पुरूषों के वाम भाग मे और स्त्रीयों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ फल होता है। यदि छिपकिली या गिरगिट शरीर की दाहिनी तरफ से चढकर बांयीं तरफ से नीचे आ जाय तो दोष नही होता। **दोष की शान्ति-** शान्ति के लिए वस्त्र सहित स्नान कर पंचगव्य(गाय की गोबर,मूत्र, दहीं,दुध,घी मिलाकर) ग्रहण करना चाहिए। शिव मन्दिर मे दीपजलाना, महामृत्युञ्य मन्त्र का कम से कम १०८ वार जप, **ॐ नमः शिवायै ॐ नमः शिवाय** का ११ माला जप कर यथा योग्य भोज्यप्रदार्थ, वस्त्रादि दान करने से दोष की शान्ति हो जाती है।

स्वप्नफल(सपना)विचार-

सवप्न	फल	स्वप्न	फल
पत्रपढ़ना=	शुभसंदेश प्राप्ति	जहाज देखना=	परेशानी दूर हो।
कुएँ का पानी=	लाभ,विजय	अर्थीदेखना=	रोगमुक्त,आय मे वृद्धि।
आकाशदेखना=	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रप्राप्ती	नदी का पानी पीना=	राज्य से लाभ।
रत्न-नगीना=	दुःख,व्यय।	लाल फूल देखना=	पुत्र सुख,भाग्योदय
अग्नि उठाना=	अनुचितधनलाभ	सफेद फूल देखना=	दुःख हरण।
आगजलाकरपकड़ना=	कष्ट,अपव्यय।	पत्थर देखना=	मित्र से कष्ट, दुःख
सुखा अन्न खाना=	अनेक कष्ट	बाजार=	शुभ
मेघदेखना=	दुःख,कष्ट	सुराही=	कुसंगति।
वादल देखना=	राज्यलाभ	चश्मा लगाना=	ज्ञाव मे वृद्धि
अँगूठी पहनना=	धनधान्य की वृद्धि	धनुष खींचना=	लाभ प्रद यात्रा।
सूखा वागदेखना=	आपत्ति आना	रोटी खाना=	धनवृद्धि,पदोन्नति।
वालदेखना=	धनलाभ	रस्सी =	कष्टकर यात्रा।
कटेबालदेखना=	सन्तानप्राप्ति	दाँत टुटना=	दुःख,झण्झट
मुर्दादेखना=	धनलाभ	दरवाजा=	मित्रता बढ़े।
जहाजदेखना=	यात्रा	कीचड़ में फँसना=	कष्ट, अपव्यय।
समुद्रदेखना=	यश एवं धनकी प्राप्ति	कोयला देखना=	व्यर्थ की झण्झट।
शराबपीना=	अपयश हो	घर बनाना=	प्रसिद्धि प्राप्त हो।
बिल्ली,बन्दर काटना=	रोगी होना।	लोहा=	धनलाभ।
कमलदेखना=	उन्नति हो।	घोड़ा=	संकट से छुटकरा।
कुत्ता देखना=	उत्तममित्र मिले।	घास का मैदान=	धन संग्रह।
खाईदेखना=	धन एवं प्रसिद्धि मिले	घोड़ा पर चढ़ना=	पदोन्नति हो।
टोपीदेखना=	दुःख दूर हो।	मोती देखना=	लड़की पैदा हो।
कैंचीदेखना=	घर मे कलह हो।	मुर्दे से बात करना=	मुराद पुरी हो।
पूजाकरना=	पदोन्नतिं,लाभ।	बड़ी दीवाल देखना=	सम्मान मिले।
दीपक जलतेदेखना=	आयुवृद्धि हो।	जमीन पर विस्तर लगाना=	आयु वृद्धि
सुगन्धलगाना=	विद्वान एवं पण्डित हो।	रूई देखना=	स्वस्थ रहना।
चादर देखना=	बदनामी हो।	भूकम्प देखना=	सन्तान से कष्ट।
झरना देखना=	दुःख दुर हो।	खूँटा देखना=	धार्मि कार्य मे रुचि।
चाँदी देखना=	धन की वृद्धि हो।	दतुवन करना=	सुख शान्ति,
सिंहासन देखना=	सुखप्राप्त हो।		

स्वप्न फल कब मिलेगा?-रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय प्रहर का ८ मास में तृतीय प्रहर का ३ मास मे अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। **अशुभ स्वप्नदोष शान्ति-**दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने निमित्त मृत्युञ्जय का जप होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन,विष्णु सहस्र नाम,गजेन्द्र मोक्ष,वा चण्डी पाठ,ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

अंगस्फुरणफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	कुक्षौ	प्रीतिः
ललाटे	पदलाभः	उदरे	धनम्
स्कन्धे	भोगः	लिंगे	स्त्रीसमागमः
भ्रूमध्ये	सुखम्	गुदे	वाहनाप्तिः
भ्रूवोः	सुखम्	वृषणौ	पुत्रलाभः
कपाले	शुभम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	हनौ	भयम्
नेत्रकोणयोः	धनम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	पृष्ठे	पराजयः
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनं
नेत्रापांगे	स्त्रीलाभः	कपोलौ	व्यभिचारः
नासिकयोः	सुखम्	बाहौ	प्रियलाभः
हस्ते	धनलाभः	बाहुमध्ये	धनागमः
वक्षसि	सुखम्	वस्तिदेशे	उन्नतिः
हृदये	इष्टसिद्धिः	उरसी	वस्त्रलाभः
कटिदेशे	प्रमोदः	जानुन्योः	भयम्
नाभौ	स्त्रीनाशः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
कटिपार्श्वे	प्रीतिः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	पादतले	पराक्रमः
भगे	पतिसमागमः	पादयोः	हानिः

स्वप्न नाशक यन्त्र-

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ढं	चं
नं	छं	जं	टं

शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र पर अनार की कलम अष्टगन्ध की स्याही से लिखकर सविधि पूजन कर गले में धारण से दुःस्वप्न दोष दूर होता है

मिथिला पब्लिकेशन- हमारे यहाँ सभी प्रकार के धार्मिक तथा मैथिली पुस्तक मिलता है। नालारोड, लंगरटोली गली शीतला मन्दिर के सामने पटना चलभाष:-08298824189

महेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि- मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र- मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व२२
मंगल-व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४,अ४
बुध- व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ शू६
गुरू-अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र-शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि-शू४ व४,शू६,अ४,शू२,अ४,शू२,अ४,शू४,व४,अ४,व४,अ६ व४ अ२,शू२

ज्येष्ठ आषाढमासयोः

रवि-शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र-व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल-अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध-शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरू-अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शू४ व४
शुक्र- शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि-शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विन कार्तिक मार्ग पौष मासेषु

रवि- मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र- अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल- मा२ व६ अ१० व६ शू२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध- शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरू- अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र- अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ अ६ मा६
शनि- मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ११ शू४ व७ मा२ शू६

माहेन्द्रादि योग फल-

न वार तिथि नक्षत्रं न योगः करणन्तथा । शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।।
माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये मरणं ध्रुवम्।।
ज्योतिषां ग्रह शास्त्राणां सारमुधृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नाराणां हितकाम्यया।।
अयं रव्यदिवारेषु महेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाण कालेन व्यतीतो भवतीति सफलं चक्रे विलोकनीयम्।।

माहेन्द्रादिचक्र के प्रयोग की विधि- चैत्र वैशाख श्रावण भाद्र माघ फाल्गुन मास हो तो रविवार को सूर्योदय के पश्चात् पहला २ घटी माहेन्द्रयोग है, फिर८घटी अमृतयोग आगे १० घटी वक्रयोग आदि होगा। वक्र एवं शून्य योग अशुभ है, जवकि माहेन्द्र एवं अमृतयोग शुभ है। यदि अति आवश्यक हो तो यात्रा मुहूर्त न होने पर भी महेन्द्र एवं अमृत योगों में यात्रा की जा सकता है।

यात्रा में चौघड़िया मुहूर्त्त

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभः मृतिः। सूर्यः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरामृतः।। सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पच्चमगो ह्यषट्। सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनिर्बुध ाः।। शीर्घता में कोई मूहूर्त न मिलता हो तथा अचानक यात्र करनी पड़े, तो उस समय चौघड़िया मूहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर, अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे का रात्रि हो, तब एक चौघड़िया १.३०(डेढ़)घण्टा अर्थात् पौने चार घटी का होगा।

जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिनेट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जायें, तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ीयों का समय ज्ञात होते जावेंगे। उस आठों चौघड़ीयो में कौन सा ग्राहृय और कौन सा त्याज्य है, यह **दिन की चौघड़ीया** के चक्र में उस दिन के वार के सामने चक्र मे देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो, तो उसदिन के रात्रि मान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनेट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जायेगा। **शुभ,लाभ,अमृत एवं चंचल शुभ होते हैं। काल,रोग एवं उद्वेग अशुभ होते हैं।**

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल

अर्धप्रहरा बोधक चक्र

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिवा	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त्त-

होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
वार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
चन्द्र	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त्त- सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक हैं। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा-** टेण्डर देन व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चन्द्रमा की होरा-** सब कार्यो के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा-**युद्ध यात्रा कर्ज लेने देने, सभा सोसायटी में आना जाना और मुकदमा कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा-** में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन ❖

❖व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थन पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा-** विवाह सम्वन्धी कार्यक्रम, बड़ो से मिलना, कोष संग्रह, नविन काव्या लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा-** यात्रा भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा-** भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे का होता है । जिस दिन जो **वार** होता है, उस वार के आरम्भ(अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा उसी वार को होरा होता है इस के वाद एक घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता हैं। इसी प्रकार दूसरे होरे छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता हैं। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी अगले वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त होरा लिखि है, उस के अनुसार ही उस होरा में(१घण्टे) में वह कार्य करेंगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियो ने होरा को **क्षणवार** कहा है। वार से भी क्षण वारमें प्रधानता मानी गयी है। इसलिए यदि वार और क्षणवार दोनो अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नही हो तो **क्षणवार** अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे- पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो, तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए समय सोम की होरा(क्षणवार) हो, उस समय

नष्ट(खोई-हुई) वस्तु ज्ञान चक्र

संज्ञा	नक्षण	लाभालाभ	दिशा
अन्धाक्ष	रो.,पुष्य,उ.फा.,वि.,पू.षा.,ध.,रे.	शीघ्रलाभ	पूर्व में
मन्दाक्ष	मृ.,श्ले.,ह.,अनु.,उ.षा.,श.,अश्वि.	प्रयत्न से लाभ	दक्षिण में
मध्याक्ष	आर्द्रा,म.,चि.,ज्ये.,अभि.,पू.भा.,भ.	दूर श्रवण मात्र	पश्चिम में
सुलोचन	पुन.,पू.फा.,स्वाति,मू.श्र.उ.भा.,कृ.	अलाभ	उत्तर में

नष्टवस्तुज्ञानम् -

प्रश्नकालीन तिथि वार नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन और जोड़कर पाँच से भाग दें।१ शेष बचे तो भूमि पर प्राप्य,२ बचे तो जल में अप्राप्य,३ बचे तो किसी ऊँचे स्थान पर अप्राप्य,४ बचे तो नष्ट,५ शेष में केवल शोक सन्ताप ही होगा।

सिद्धादियोगचक्र तिथि-नक्षत्र-वशेन

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ-सिद्धियोगाः	अश्वि.मू. पुष्य. हस्त.	रो.मृ.अनु. श्रवण.पुष्य	अश्विनी.	रोहिणी.मृ. हस्त.	अश्वि.पुन पु.अनु.रे.	अश्वि.पुन. अनु.श्र.रे.	रोहिणी स्वा.श्रणव.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	अनु.	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगाः	००	०० ००	४।९।१४	३।८।१३	०० ००	०० ००	४।९।१४
मध्यमयोगाः	१२	११	१०	०० ००	६	२	७

ताराचक्रम्३

तारा	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	वधः	साधकः	प्रत्यरी	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	७।१६।२५	६।१५।२४	५।१४।२३	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	००	गुडम्	००	तिलाः	००	लवणम्	००	००

भद्रा वासः- कुंभ,मीन,कर्क,सिंह-इन राशियों में चन्द्रमा रहे तो मृत्युलोक में,मेष, वृष,मिथुन और वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्ग में, कन्या,तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में पाताल में भद्रा रहती है। भद्रा जहाँ रहती हैं वहाँ ही इसका फल भी होता हैं।

भद्रावास फलः-

स्वर्गे च लभते सौख्यं, पाताले च धनागमम्। मर्त्यलोके भवेच्चिन्तां एवं भद्राफलोदितम्।।

स्वर्ग में भद्रा रहे तो शुभ कारक और पाताल में रहें तो धनागमन करने वाला होता है। यदि भद्रा मृत्युलोक में रहें तों सभी कार्यों को विनाश करने वाला होता है।

शिवावास एव फल

तिथिं च द्विगुणी कृत्य वाणै: संयोजयेत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्।।
एकेनवासः कैलाशे द्वितीये गौरी सन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये।।
पंचके भाजने चैव क्रीडायांयण्मिते तथा।
श्मशाने सप्तशेषे च शिववासः इतीरितः।।
फलम्- कैलाशेलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यातसभा सन्तापकारिणी।
भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीडायां कष्टमेव च।
श्मशाने मरणज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।।

शिववास तिथि

शुक्लपक्ष- २, ५, ६, ९, १२, १३
कृष्णपक्ष- १, ४, ५, ८, ११, १२, ३०
विधि-(शुक्लादितिथिसं.X२+५)÷७=१।२।३
शेष शुभ, अन्याशुभ।

अग्निवास चक्र

शुक्लपक्ष में				कृष्णपक्ष में				र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भू	भू	दि	भू	भू	भू	दि
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भू	दि	भू	भू	भू	दि	भू
३	७	११	१५	०	४	८	१२	दि	भू	भू	भू	दि	भू	भू
०	४	८	१२	१	५	९	१३	भू	भू	भू	दि	भू	भू	भू

अग्निवास

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताः शेषे गुणेऽभ्रे भुवह्निवासः
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भुतले च।।

शुक्लादि पक्ष से वह तिथि जिसमें कर्म हो उसकी संख्या ५ या १० जो भी हो उसमें वर्तमान रव्यादि वार की संख्या जोड़कर १ संख्या और जोड़ देनी चाहिये। फिर ४से भाग देने पर यदि ३ या ०(शून्य)शेष रहे तो अग्नि का वास भूमि में होता और वह सुखकारी होता है। यदि १ या २ शेष रहे तो अशुभ अर्थात् सुख का लेश भी नहीं होता।
अर्थात्-(शुक्लादितिथिसं.+सूर्यादिदिनसं.+१)÷४ =३,० शेष शुभ

अग्निवास की विशेषताः-

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चुड़ोपनीतिग्रहणेयुगादेः।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिंत नीयम्।।
विवाह,यात्रा,व्रत,यज्ञ,नित्यनैमित्तिककार्य, यज्ञोपवीत,ग्रहण, रोग,पीड़ा तथा दुर्गापूजन आदि मे अग्निवास का विचार नही करें।

मिथिला पब्लिकेशन- हमारे यहाँ सभी प्रकार के धार्मिक तथा मैथिली पुस्तक मिलता है। नालारोड, लंगरटोली गली शीतला मन्दिर के सामने पटना चलभापः-08298824189

अथ वाजसनेयि सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिरि पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख(पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिन हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्र,सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी

१. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली **ॐ गोविन्दाय नमः।**

मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय- **ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।** पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर क सिक्त करी-**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुंण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः।** अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी।

तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंगुठी) धारण करी-**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।**

पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।**

दहिन हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी- **ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।**

शिखा स्पर्श करी-**चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।**

चन्दन करी-**ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।**

तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक संकल्प करी -**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य उत्पात्तदुरितक्षयपूर्वक- श्रीपरमेश्वर- प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।**

जल लय- **अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषि रनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्व मेधाऽवभृथे विनियोगः।**

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।। एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तदुत्तर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- **ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।**

•प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी -

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती- पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र- विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढैत **पूरक, कुम्भक आ रेचक** नामक **प्राणायाम** करी-

•प्राणायाम मन्त्रः- **ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।**

१.दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिन पूड़ाकेँ बन्दकय वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत **पूरक नामक** प्राणायाम करी।

२.द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा केँ दाबि दीर्घकालधरि वायुके धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत **कुम्भक नामक** प्राणायाम करी।

३.तृतीय दहिन पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु करैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत **रेचक नामक** प्राणायाम करीं।

• प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय-जल लय- **सूर्य्यश्चमेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्य्यो देवता प्रातराचमने विनियोगः।**

सूर्य्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।। एहि मन्त्रें प्रातः कालमे आचमन करी।

तदुत्तर वाम हाथ मे जल लए विनियोग वाक्य पढ़ि दहिन हाथक अंगुष्ठ आ अनामिका आंगुर सँ एक-एक मन्त्र पढ़ैत कुल सात मन्त्र सँ सात बेर माथ पर जल प्रक्षेप करी-

ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

१.ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २.ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महे रणाय चक्षसे। ४.ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६.ॐ उशतीरिव मातरः। ७.ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८.ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९.ॐ आपो जनयथा च नः।

तदुत्तर दहिन हाथ में जल लए एक बेर विनियोग वाक्य आ तीन बेर **"द्रुपदादिव"** इत्यादि मन्त्र पढ़ि ओहि अभिमन्त्रित जल कें देह पर सिक्त करी-

द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः।

मन्त्रः- **ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्वित्रः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।**

तदुत्तर दहिन हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जलक स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल केँ अपन वाम भाग मे विना देखने नीचा खसा दी- **ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।**

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।।

तदुत्तर दहिन हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- **ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रे अर्घ्य दी- **ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्** । एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी- • **ॐ उद्वयमिति हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।**

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

• **उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।**

• **ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ग्वं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।**

• **ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीत-पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।**

• **ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।**

• गायत्री जप विधि :-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत निचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदयाय नमः। २.ॐ भूः शिरसे स्वाहा
३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट्
६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

व्याहृतिमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री उष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।।
आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

अगिला मन्त्रें गायत्रीक विनियोग तदुत्तर आवाहन करी- **तेजोऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।**

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।

आवाहन कऽ निम्नलिखित विनियोग पढ़ी अगिला मन्त्रे प्रणाम करी-

परोरजस इति विमल ऋषिरनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थापने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे।

नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्रापत्

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर निम्नलिखित गायत्री मन्त्र जपी-

ॐ भुर्भूवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।।

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री कें जप समर्पित करी-

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी-

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि।
ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
एषोऽर्घः **ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।**

तदुत्तर सूर्य के प्रणाम करी-

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या बन्धन विधि।।

नोट- तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कय सूर्य के अर्घ्य देथि।



वाजसनेयि तर्पण विधि-

१.**देवतर्पण**- नदी वा पोखरि में तीतले वस्त्र पहिरि नाभि तक पानि में ठाढ़ भय वा स्थल पर तर्पण करवाक हो तँ सुक्खल वस्त्र धारण कय आसन पर पूब मुँह बैसि दहिन हाथ में तेकुशा लय वाम हाथ में उपयमन अर्थात् जुट्टी सन गुहल कुश (विरणी) लय दहिन हाथ में यव ओ जल लय देव तीर्थ सँ नीचाँ में राखल कुश पर जल खसबैत तर्पण करी-

ॐ तर्पणीया देवा आगच्छन्तु। ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम्।
ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्।

ॐ देवाः यक्षास्तथा नागाः गन्धर्वाऽपसरसोऽसुराः।
क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकाः खगाः।।
विद्याधराः जलाधाराः तथैवाकाशगामिनः।
निराधाराश्च ये जीवाः पापे ऽधर्मेरताश्चये।।
तेषामाप्यायनायै तद् दीयते सलिलं मया।।

तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ(कनिष्ठा आंगुलिक मूल. भाग) सँ सनकाद ऋषि सभक तर्पण एक-एक बेर जल दए करी-

ॐ सनकादय आगच्छन्तु(एहि मन्त्र सँ आवाहन् करी)

ॐ सनकश्च सनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः।
कपिलश्च आसुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा।।
सर्वे ते तृप्तिमायान्तु मद् दत्तेनाऽम्बुना सदा।।

ऋषि तर्पण-

पुनः पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय देव तीर्थ(अंगुली क अग्रभाग) सँ मरीचि आदि दस ऋषिक तर्पण एक-एक बेर जल दैत करी- **ॐ मरीच्यादय आगच्छन्तु।** आवहन करी। **ॐ मरीचिः तृप्यताम्। ॐ अत्रिः तृप्यताम्। ॐ अङ्गिराः तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यः तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुः तृप्यताम्। ॐ प्रचेताः तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठः तृप्यताम्। ॐ भृगुः तृप्यताम्। ॐ नारदः तृप्यताम्।**

दिव्य-पितृ पर्प्पण

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ(अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्यक मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो के तीन-तीन बेर जल दैत अग्निष्वात आदिक तर्पण करी।

ॐ अग्निष्वात्तादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।
ॐ अग्निष्वत्तास्तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ सौम्याः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ हविष्मन्तः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ उष्मपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ सुकालिनः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ वर्हिषदः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ आज्यपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

यम तर्पण

ऊपर मे वर्णिते विधि के अनुसार १४ यमक तर्पण करी। **ॐ यमादय आगच्छन्तु।** आवहन करी। **ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः। ॐ दध्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः।** तकर बाद **ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः।** ई वाक्य पढ़ी।

पितृ-तर्पण-

(उपयुक्ते विधि सँ पितृ-तर्पण करी। पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे **"सतिलम्"** नहि पढ़ी।) अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्। पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) **पिता अमुक** (पिताक नाम)**शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। **तस्मै स्वधा।** (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः **तस्मै स्वधा।**(ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः**(अपन गोत्र) **पितामहः अमुक**(बाबा क नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।** ३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः**(अपन गोत्र) **प्रपितामहः अमुक** (प्रपितामहक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** ।३बेर।। अन्त मे-**"ॐ तृप्यध्वम्-३"** ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) **मातामहः अमुक** (नानाक नाम) **शर्मा' तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** ३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः**(नानाक गोत्र) **प्रमातामहः अमुक**(परनानाक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा**३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः**(नानाक गोत्र) **वृद्धप्रमातामहः अमुक** (वृद्धप्रमातामहक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।** ।। अन्त मे **ॐ तृप्यध्वम्**- ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रा (अपन गोत्र) **माता अमुकी** (माताक नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा** १ बेर।। **ॐ अद्य अमुक** (अपन गोत्र) **गोत्रा पितामही अमुकी** (दादी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक** (अपन गोत्र) **गोत्रा प्रपितामही अमुक** (पर दादी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१।** अन्त मे **"ॐ तृप्यध्वम्"** ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक (नानाक गोत्र) **गोत्रा मातामही अमुकी** (नानी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक**(नानाक गोत्र)**गोत्रा प्रमातामही अमुक** (पर नानी नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक**(नानाक गोत्र)**गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी** (वृद्ध परनानी कनाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ ।** अन्त मे **"ॐ तृप्यध्वम्"** ई वाक्य एक वेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक वाद अपन अन्य समवन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर वाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अवन्धु एवं अन्य जन्मक वन्धु कें जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र कें दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कें तीन वेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
एषो अर्घः भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।१।।
ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एष द्वितीयो अर्घः भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।२।।
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः **ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।३।।** अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

छन्दोगक तर्पण विधि-

दहिन हाथ मे तेकुशा लए सव्य(वामस्कन्धस्थापित यज्ञोपवी) भए वाम हाथ के दहिन हाथक नीचा भाग मे स्पर्श कयने भूमि पर रही तऽ पूब, उत्तर अथवा ईशानकोणाभिमुख वैसि दहिना जांघ के खसेने पवित्र भूमि पर राखल तकुशा पर अथवा एक टा सराय मे राखल जल मे(ओहि जल मे विना तेकुशा राखने), यदि जल मे ठाढ़ रही तऽ पूर्वाभिमुख भए देवतीर्थ (अंगुजिसभक अग्रभाग) सँ पहिने देवतर्पण करी। यथा परिस्थिति तेकुशा पर अथवा जल मे तीन बेर जल दैत पढ़ी-**ॐ देवास्तृप्यन्ताम् ।**

तकर वाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्वित कए) भए कायतीर्थ(कनिष्ठा आंगुलिक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ ऋषि तर्पण तीन बेर जल दैत करी - **ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् ।**

पुनः पूर्वाभिमुख भए प्रजापत्य तीर्थ(कनिष्ठा अंगुलीक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ प्रजापति तर्पण एक बेर जल दैत करी-**ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्।**

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ(अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्यक मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे **"सतिलम्"** नहि पढ़ी।)

अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी **ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्न्तु अपोऽञ्जलिम्।** पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

अहं संस्कृतेन वदामि भवान् संस्कृतेन वदति वा?(संस्कृतभारती- धारा प्रवाह संस्कृत बोलना सीखें वह भी निःशूल्क और अपने नगर में,)। सम्पर्क करोतु- बिहार,झारखण्ड, बंगाल, आसाम, उत्तरप्रदेश,मध्यप्रदेश, दिल्ली, पंजाव,जम्मूकाशमीर,गुजरात, केलर,कर्नाटक,तमिल्लनाडु सहित सम्पूर्ण भारत में कहि भी कभी भी, विशेष हेतु केन्द्रीयकार्यालय दिल्ली से सम्पर्क करें 011-23517689

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(गोत्र) पिता अमुक (पिताक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा।(ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) पितामहः अमुक(बाबा क नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।३बेर।। अन्त मे-"ॐ तृप्यध्वम्-३" ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) प्रमातामहः अमुक(परनानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ।। अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्- ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ बेर।। ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुक (पर दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुक (नानी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक(नानाक गोत्र)गोत्रा प्रमातामही अमुक (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक(गोत्र)गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुक(वृद्ध परनानी कनाम)देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा - १। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य समबन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कें जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहें मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र कें दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कें तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
एषोऽर्घः भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।१।।
ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एष द्वितीयोऽर्घः भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।२।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।३।।

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं काश्य पेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

<u>इति छन्दोगानां तर्पण समाप्तिः</u>

छन्दोग सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख(पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिन हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी

१. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः। मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर क सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्ग गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी। तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिन हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

चन्दन करी-ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा। तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक

• सकल्प करी - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य... उपात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

आचमन- अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। तत्तोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।

एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तकर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

तदुत्तर •प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी-ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिग्-अनुष्टुब्बृहती-पङ्क्ति-त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्नि-वाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र- विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताः उपनयने प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-

•प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१.दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिन पूड़ाकें वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२.द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कें दाबि वायुकें धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३.तृतीय दहिन पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु करैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथ मे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ कें सिक्त करी-

• पहिल वेर- ॐ ई पढ़ी। •दोसर वेर- भूर्भुवःस्वः ई पढ़ी।

• तेसर वेर- ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ई पढ़ी। • चारिम वेर - ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६.ॐ उशतीरिव मातरः। ७.ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८.ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९.ॐ आपो जनयथा च नः ई पढ़ी। दुत्तर दहिन हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण करैने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कें अपन वाम भाग में विना देखने नीचा खसा दी-ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्-विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।। तदुत्तर दहिन हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।। तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रें अर्घ्य दी- ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् । एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायंकाल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्ववाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय मे सूर्योपस्थापन :-

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्
ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।
ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

(नोट तर्पणाधिकरी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करी)

• गायत्री जप विधि :-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मेन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत निचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी। १. ॐ हृदयाय नमः २.ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ३. ॐ भुवः शिखायै वषट् । ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् । ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

• व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री उष्णिग्-अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।• गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः। तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।। आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

कलजोड़ि अगिला मन्त्रें गायत्रीक आवाहन करी- ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।। गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता।।

तदुत्तर न्यूनतम १० वेर अथावा यथासाध्य १०८ अथवा १००० वेर निम्नलिखित गायत्री मन्त्र जपी- ॐ भुर्भूवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री कें जप समर्पित करी-

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी-

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य कें अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।। एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य कें प्रणाम करी-ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या वन्दन विधि।।

नित्य पार्थिव पूजन विधिः-

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (सधवा विष्णु की जगह गौरी पूजा करें। गौरि इहा., गौर्यै नमः)

१.पञ्चदेवता पूजा– तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी-ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत। जल लेकर- एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः । पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध -नैवेद्यानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल-इदमाचमनीयम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।

२ विष्णु पूजा' : जौ तिल लेकर आवाहन करें- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णोः इहागच्छ इह तिष्ठ। जल-एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। यवतिल- एते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। पुष्प लय- इदं पुष्पम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। तुलसी पत्र- इदं तुलसी पत्रम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें-एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल- इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः। दुनू हाथें फूल ले-एष पुष्पाञ्जलिः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।

३ कीर्त्तिमुख पूजा' : ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ इस मन्त्र से आवाहन कर जल लेकर- एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुखाय नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः । पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध -नैवेद्यानि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।जल-इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें-

एष पुष्पाञ्जलिः ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।। तदुत्तर

४.पार्थिव पूजन - ॐ हराय नमः इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नमः इस मन्त्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान करें-ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। पश्चात् ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर। जल लेकर एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्धपुष्प- धूपदीपताम्बूलयथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्त्ति की पूजा करें- १.ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः पूर्व मे। २. ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ईशानकोण में। ३ ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः उत्तर दिशा में। ४ ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः वायव्यकोण में। ५ ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः पश्चिम में। ६ ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः नैऋत्यकोण में। ७ ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः दक्षिण मे। ८ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः अग्निकोण में। ९ ॐ महादेवाय नमः पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। उसके यथा योग्य पाठ-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। तदुत्तर ॐ विष्वक्सेनाय नमः मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नमः इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन

व्रती अर्थात् पूजन कर्त्ता नित्यकर्म(सन्ध्या-वन्दन आदि) कय पूजास्थान आवि शुद्धासन पर वैसि, तीन वेरि आचमन करथि **१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः।** हाथ धोली **ॐ गोविन्दाय नमः।** पुनः दहिन हाथ में जल लय **ॐ अवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्‌ गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः।** अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी।

तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी-ॐ **पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।** पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।** आसन पवित्र करथि-ॐ **पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।**

शिखा स्पर्श करी- **चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।** तकर वाद चन्दन करी-ॐ **चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।**

कलश-स्थापन

सोन चाँनी वा माटिक छिद्र रहित चिक्कन कलश पखारि कऽ,२१ आंगुर वा ८ आंगुर चाकर ६ आंगुर ऊँच पीड़ी (वेदी)वनाय पहिने अक्षत् पुष्प, चन्दन, जल लय **ॐ आधरशक्तये नमः** एहि मन्त्र सँ वेदी क पूजन कय तदुत्तर मध्यमा आ अनामिका आंगुर सँ भूमि स्पर्श-**ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ᳪ ह पृथिवीं माहि ग्गुं सीः।।**

•आगुक मन्त्र सँ गोवरसँ कें नीपथि- **ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।** •आगुक मन्त्रें गंगाजल सँ सिक्त करथि- **ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रयम्। यूपेन**

आश्विनदुर्गा पूजनक संकल्प- **ॐ अद्य आश्विने मासि शुक्ले पक्षे प्रतिपत्तिथौ एतद्**(गामक नाम) **ग्रामवासिनां नानानां गोत्राणां सकलजनानाम्** एतत्पूजोप- **कारकाणामन्यग्राम वासिनां च उपस्थि-शरीराविरोधेन** (व्यतिगत पूजन मे- अमुक (गोत्र) गोत्रस्य अमुक(नाम)शर्म्मणः ममसदारापत्यमित्रस्य सकलवाहनस्य च उपस्थितशरीराविरोधेन) **नवग्रहोपग्रह जनितसकलारिष्ट झटिति-प्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्ट्व बलपुष्टि-नैरुज्य- प्राप्तिपूर्वक- धनधान्याकण्टक- राज्यभोग्य- सन्तति- सुखान्वितनिखिल- मनोऽभिलषित- फलप्राप्तिपूर्वक- साङ्गसायुध सवाहन सपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजाङ्गभूत कलशस्थापनमहं करिष्ये।**

यूप आप्यायते प्रणीतो अग्निरग्निना।

•आगुक मन्त्र सँ यव वा धान देथि। धान्यप्रक्षेपणः- **ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।**

ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः। देवानां तृप्तिकृद्यस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव।। तखन अगिला मन्त्र सँ सुन्दर अलंकृत सुदृढ कशल पीड़ी(वेदी) पर मध्य मे राखथि- कलश स्थापन- **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।**

•कलश में दही-अक्षत् मिलाक लगावथि- **ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत् प्रणऽआयू ᳪ षि तारिषत्।।**

•जलपूर्ण कलश मे वरुण के आवाहन करथि-कलशमें जल- **ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।** •कलश में गंगा जल देथि- **ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम(यजमानस्य) दुरितक्षयकारकाः।।** •सप्तमृत्तिकाः-**ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।** •सर्वौषधीः-**ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रुनावहा शतं धामानि सप्त च।।**

•पञ्चरत्न-**ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।**

•सुपाड़ी और जायफलः- **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ᳪ हसः ।।**

•पंचरत्न- **ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।**

•दूभी(दूर्वा)देथिः **ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**

•पञ्चपल्व या आम्रपल्व दें- **ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वंसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषा ग्गूं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।**

•पूर्णपात्र राखथिः **ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा ईषमूर्ज ᳪ शतक्रतो ।।**

•नारियल :- **ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्न त्रिषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ।।**

• वस्त्रक स्पर्श करथि- **ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् सउश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।**

• दुनु हाथ सँ कलश स्पर्शक स्थिर करथि- **ॐ स्थिरो भव वीडवङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः।**

•पुष्प अर्पण करथि- **ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणमुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।**

•चन्दन - **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।**

•पुन यवादि(सप्तधान्य)जयन्तीनिमित वपन करथि- **ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे प्रणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।**

• अल्ता अर्पण करथि- **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।**

•सिन्दुर - **ॐ सिन्धोरवि प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा आरुषोन वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।**

कलश क स्पर्श क- **ॐ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो- त्वरिष्टं यज्ञ ᳪसमिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ।।**

प्राण-प्रतिष्ठा क शान्तिकलश क पूजन करथि- **ॐ शान्तिकलश इहागच्छ इह तिष्ठ** आवाहन क **ॐ शान्तिकलशाय नमः** सँ पञ्चोपचार पूजन क पुष्प सँ पुष्पाञ्जलि देथि-**ॐ शान्तिकुम्भ महाभाग सर्वकामफलप्रद। पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते।।** कलश पर गणपति क आवाहन आ पूजन करथि- अक्षत् पुष्प लऽ- **गणानान्त्वा गणपति ᳪ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ᳪ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ᳪ हवामहे व्वसो मम ऽआहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ सर्वविघ्नहरो देव एकदन्त गजानन। पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन् गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ** सँ आवाहन क **ॐ गं गणपतये नमः** सँ पंचोपचार पूजन क पुष्पाञ्जली देथि- **ॐ एकदन्तं महाकायं लंबोदरगजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।। एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गंगणपतये नमः।**

।। इति कलश स्थापनम्।।

हवन-विधि

वनायल हवन कुण्ड या हवन वेदी क कुश सँ वहारि ओहि कुश कें ईशान कोण मे फेकि गोवर जल से सँ नीपि स्रुवक जड़ि सँ पहिने दक्षिण भाग प्रादेश मात्र पूर्वाग्र रेखा कय पुनः ताहि सँ उत्तर द्वितीय रेखा ताहि सँ उत्तर तृतीय रेखा कऽ तीनू रेखाक मध्य सँ दहिन हाथ क अनामिका अंगुठा सँ माटि फेकि जल सँ सिक्त कऽ कांसाक पात्र मे आगि लऽ अपना सम्मुख चूप्पहि रेखा पर अग्नि स्थापित करथि।

ब्रह्मास्थापन-अग्निक दक्षिण भाग कुश पर अक्षत- चन्दन-पुष्पादि लय- **ॐ अस्मिन्कर्मणि त्वम्मे ब्रह्मा भव।**

•प्रणीता पात्र आगाँ राखि जल सँ भरि कुश सँ झाँपि ब्रह्मादिश देखैत आगिक उत्तर कुश पर प्रणीता पात्र राखि देथि। •तखन कुश सँ अग्नि कें घेरथि। सोलह कुश हाथ में लऽ अग्नि कोन सँ आरम्भ कऽ दक्षिण नैर्ऋत्य पश्चिम होईत ईशान कोन वरि अग्र भाग सँ जड़ि कें झपैत एक एक कुश राखथि। •पुनः नैर्ऋत्य कोन सँ आरम्भ कऽ दक्षिण अग्नि पूव दिश होईत वायु कोन पर्यन्त अग्र सँ जड़ि कें झपैत एक एक कुश राखथि। •एक कुश आगि सँ प्रणीता पात्र पर्यन्त, •एकटा कुश ब्रह्मा सँ अग्नि पर्यन्त राखि देथि। •तखन पैता वनेवाक कुश दोसर कुश सँ नराय तोड़ि प्रादेश मात्रक दू गोट पैता वनाय पैता सहित दहिन हाथें प्रणीताक जल तीनि वेरि प्रोक्षणीपात्र में दऽ दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ उत्तराग्र पैता धऽ प्रोक्षणीक जल तीनि वेरि अपना ऊपर छीटथि। •तखन प्रोक्षणीपात्र वाम हाथ मे लऽ दहू पैता दहिन हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ धऽ पुनः तीनि वेरि प्रोक्षणीक जल अपना ऊपर छीटथि। •तखन प्रणीताक जल सँ प्रोक्षणी कें सिक्त कऽ प्रोक्षणीक सिक्त कऽ प्रोक्षणीक जल सँ संघटित सभ वस्तु कें सिक्त करथि। •तखन अग्नि प्रणीताक बीच प्रोक्षणी पात्र राखि देथि। •घृतक पात्र मे घी दऽ आगि पर चढ़ाय जरैत खढ़ घीक ऊपर प्रदक्षिणक क्रमे घुमाय आगि मे छोड़ि देथि। तखन स्रुव कें तपावथि •कुश सँ स्रुव के जडि से जडि बीच सँ बीच अन्त सँ अन्त भाग के झाड़ि स्रुव के पुन तीन वेरि तपवा दहिन भाग स्रुव कें राखि देथि। •घी कें तीन वेरि आगि पर सँ उतारि दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ पैता लऽ प्रोक्षणी जेकाँ घी कें तीन वेरि अपना ऊपर छीटि पुनः दुहू पैता दनि हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ लऽ वाम हाथें घीक पात्र वयने पैता सँ तीनि वेरि अपना ऊपर छीटि पैता प्रोक्षणी मे दऽ •घी कें देखि किछु अधलाह वस्तु होतँ वाहर कऽ विरनी कुश वाम हाथ मे लऽ तीनि गोट आनक काठी मे घी लगाय ऊठि मन सँ प्रजापतिक ध्यान कऽ चुप्पहि आगि मे छोड़ि देथि। तखन वैसि पैता सहित प्रोक्षणीक जल सँ प्रदक्षिण क्रमें आगि कें सिक्त कऽ प्रणीता पात्र मे पैता राखि •घी सँ बारह आहुति हवन करथि-

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये।।

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय । ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये ।।

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय । ॐ भूः स्वाहा इदं भूः ।

ॐ भुवः स्वाहा इदं भुवः। ॐ स्वः स्वाहा इदं स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं भूर्भुवः।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ᳪसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम् ।

ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ᳪ रराणो व्वीहिमृडीक ᳪसुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् ।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्ति पाश्चसत्य मित्त्व मया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ᳪस्वाहा इदमग्नये।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ॐश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा,इदं वरुणाय।

•नवग्रह समिधा सँ हवन

• सूर्य-अर्क(आकन) लकडी लऽ-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्, स्वाहा, इदं सूर्याय।

• चन्द्र-पलाशक लकड़ी लऽ- ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाॐराजा स्वाहा, इदं चन्द्राय।

• मंगल-खैरक क लकड़ी लऽ-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाॐ रेताॐ सि जिन्वति स्वाहा, इदं कुजाय।

• बुध-चिरचिर लकड़ी लऽ-ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सॐ सृंजेथामयञ्च। असमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा इदं बुधाय।

• बृहस्पति-पीपरक लकड़ी लऽ-ॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रग्वं स्वाहा, इदं बृहस्पतये

• शुक्र-गुलरकके लकड़ी लऽ-ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानॐ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा, इदं शुक्रायं।

• शनि-समि लऽ- ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा, इदं शनैश्चराय।

• राहु- दूवि लऽ- ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा इदं राहवे।

• केतु-कुश लऽ-ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा इदं केतवे

• शाकल्य सँ प्रधान देवता क हवन प्रारम्भ करी तदुपरान्त आवाहित पूजितादि देवता क हवनोपरान्त तर्पण ,मार्जन कऽ आगु ब्रह्मा क दक्षिणा

• ब्रह्मदक्षिणा- कुंश,तिल,यव,द्रव्य लऽ- ॐ अद्य अमुके मासे अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्न (यजमानक गोत्र) अमुकशर्मा(यजमानक नाम), कृतैतत् अमुक(जप,पाठ) होमकर्म प्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक- गोत्राय (ब्राह्मण क गोत्र,नाम) अमुकशर्मणेब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्यमहं सम्प्रददे। इ कहि ब्रह्मा कें देथि।

• प्रणीता सँ दुहू पैता दुहू हाथक अनामिका अंगूष्ठा सँ उत्तराग्र धऽ- ॐ सुमित्रियानऽ आप ओषधयः सन्तु। एहि मन्त्र सँ दुहू पैता सँ प्रणीताक जल अपना ऊपर छींटि शेष जल- ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। कहि ईशान कोन में पलट देथि।

•पूर्णाहुति- स्रुव मे पान, नारियल दहिन हाथें लऽ ऊठि आगु क मन्त्र सँ पूर्णाहुति करी- ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्। कविॐ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।

• तदुत्तर घी सँ अखण्ड धार सँ वसोधारा करी- ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा कामधुक्षः स्वाहा। इदंॐ वसुभ्यः स्वाहा। अग्नि में अखण्ड घीक धार देथि।

• तदुत्तर परिस्तरण वला कुश सभ समेटि घी लगाए आगुक मन्त्र सँ हवन मे देथि- ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञॐ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।

•स्रुवक पृष्ठ भाग सँ भस्म लऽ त्र्यायुष करथि- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। ललाट मे लगावथि।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम्। गरदनि मे लगावथि। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। इति दक्षिणबाहुमूले। दूनू बाँह मे लगावथि। ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्। इति हृदि हृदय मे लगावथि।

।।। इति हवनम्।।

सर्व कर्म उपयोगी शान्तिकलश अभिषेक मन्त्र-

कलश हाथ में उठवैत- ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे मंहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशुर्भवासवाः। आम पल्व सँ कलशक जल में घुमवैत आगुक मन्त्र पढ़ि-

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये।।
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः।
।। इति व्यास रचित अभिषेकम्।।

ग्रहों का विशेष विवरण तथा यन्त्र

ग्रह-सूर्य (Sun)

रत्न- माणिक्य(Ruby)
उपरत्न- लालड़ी, लालतामड़ा, लालहकीक
धातु- स्वर्ण, ताम्बा
अंगुली- तर्जनी,अनामिका
रत्ती में- ३, ५
दिन- रवि. सोम. गुरु
दानवस्तु- गेहूँ,गुड़,कमल-पुष्प,लालचन्दन,लालवस्त्र,सोना, ताँबा,दक्षिणा
दान समय-रविवार सूर्योदय समय।
जपसंख्या- ७०००। कलियुग में-२८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्टरोग, क्षदयरोग, सिर दर्द,रक्तचाप,नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ

सूर्य-यन्त्रम्		
६	१	८
७	५	३
२	६	४

मंगल(Mars)

रत्न- मूँगा(Coral)
उपरत्न- गारनेट, लाहकी लालगोमेद
धातु- स्वर्ण,ताम्बा
अंगुली अनामिका,तर्जनी
रत्ती- ६,८,१०,१२
दानवस्तु- मूँगा, भूमि, मसूरदाल, लालवृष, गुड़,लालचंन्दनवस्त्रपु प, सुवर्ण,
जपसंख्या- १०००० कलियुग में४०,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- रक्तविकार, भूतप्रेतवाधा, हृदयरोग, वायु, कफ विकार, पित्तादि विकार,उदर विकार अादि।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध(Mercury)

रत्न- पन्ना(Emerald)
उपरत्न- फिरोजा,हरा हकीक,मरगज,ओनेक्स
धातु- स्वर्ण या कांसा
अंगुली- कनिष्ठा
रत्ती-३,५,७। दिन-वुधवार
दानवस्तु-कांस्यपात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त घृत मूँग सुवर्ण,सर्वपुष्प,कपूर
जप संख्या ८००० कलियुग में-३२,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-त्वचा विकार,पथरी,वहुमूत्र,दमा, गुर्दा रोग,पाण्डुरोग या मानसिक रोग में लाभ।

६	४	११
१०	८	६
५	१२	७

चन्द्रमा(Moon)

रत्न- मोती(Pearl)
उपरत्न- संखमूगा, दूधिया, हकीक, सीप
लग्न से शुभ- १, ४, ८, १२
धातु- चाँदी
अंगुली- अनामिका
रत्ती- २, ४,६,११
दिन- सोम
दानवस्तु- घृत, चावल, श्वेतवस्त्र,श्वेतचन्दन,श्वेतपुष्प, चाँदी, शंख, दक्षिण
जपसंख्या- ११००० कलियुग में४४,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-चन्द्रमा जन्यअरिष्ट, मानसिकरोग, मुर्च्छा, मिर्गी, उन्माद,दामा, श्वांस, कैंसर आदि।

चन्द्रयन्त्रम्		
७	२	६
८	६	४
३	१०	५

बृहस्पति(Jupiter)

रत्न- पुखराज(Sapphire)
उपरत्न-पीला मोती,सुनैलापीला, जिरकान
धातु- स्वर्ण
अंगुली- तर्जनी
रत्ती- ५,७
दिन- गुरुवार
दानवस्तु- चने की दाल,पीतवस्त्रपुष्प, हरदी, पुस्क, मधु, लवणादि
जप संख्या १६००० कलियुग में-६४,०००
ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह,लीवर,पीलिया,प्रेत बाधा।

१०	५	१२
११	६	७
६	१३	८

शुक्र(Venus)

रत्न- हीरा(Diamond)
उपरत्न- सफेदहकीक,स्फटिक,ओपल,
धातु- प्लेटीनम
अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा
रत्ती- ३,५
दिन- शुक्र
दानवस्तु- तण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ
जप-संख्या ११०००, कलि में ४४०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-वीर्य विकार, दौर्वल्य,नपुंसकता,वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेदप्रदर,हृदय रोग,मानसिक कमजोरी आदि।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	६

शनि(Saturn)

रत्न- नीलम(Sapphire)
उपरत्न-नीलाजिरकान,कटैल,नीला पाइनल
धातु- पंचधातु धातुया स्टील।
अंगुली-मध्यमा। रत्ती-५,७, ६,१२। दिन-शनिवार।
दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्रगोपुष्प कुल्थी,लोहा,कस्तूरी, सुवर्णादि
जप संख्या २३००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- दमा,क्षय,ग्रन्थीय, अजीर्ण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु(Rahu)

रत्न- गोमेद(Zircon)
उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक
धातु-अष्टधातु या चाँदी अंगुली-मध्यमा
रत्ती-७,६। दिन-शनि, दानवस्तु-माषान्न,कस्तूरी,हेमनाग, नीलवस्त्री, तिलतैल,लोहासूप,कम्बल। जप संख्या १८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-तकवा, त्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्वलता, वातजन्य रोग आदि।

१३	८	८
१४	१२	१०
६	१६	११

केतु(Ketu)

रत्न- लहसुनिया Cats Eye
धातु- पंचधातुया चाँदी,
अंगुली- मध्यमा, रत्ती-७,६ दिन-शनि-वुध ,
दानवस्तु-माषान्न,कम्वल,कस्तूरी, तिल,लोहा,वकरा,शस्त्र,सप्तधानादि
जप संख्या-७०००। ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- वायु विकार, प्रमेह,हृदयरोग, श्वेदप्रदर,मानसिक दुर्वलता, आँत की बीमारी आदि।

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
६	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

व्यापार वृद्धि यन्त्र -

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही एवं अनार की कलम से दीपावली को रात्रि में लिखकर सविधि पूजन कर-ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः मन्त्र का ११०० सौ जप करें। तदनन्तर यन्त्र को दुकान में रखकर प्रतिदिन पूजन करें।

१६	६	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

कामना पूरक यन्त्रम् -

इस मन्त्र को लाल चन्दन से विल्व पत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिंग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

सौभाग्य वृद्धि यन्त्र-

इस यन्त्र को गुरु पुष्य योग में अष्ट गन्ध की स्याही एवं नार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करें तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

५	६	३	६
४	४	७	७
६	६	३	५
५	४	७	४

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यन्त्र-

इस यन्त्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौट आता है। वापसी तक प्रतिदिन यन्त्र लिखा करें।

६२	६६	२	७
७	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

महामृत्युञ्जय मन्त्र जपविधिः-

श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रय तिलजलान्यादाय **संकल्पः**-ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः उपस्थित शरीरा-विरोधेन अखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वक-दीर्घायुष्ट्व-वलपुष्टिनैरुज्य-प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखीय **'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ' इति महामृत्युंजय मन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्ये।

विनियोगः-ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवता हौं वीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-वामदेव-कहोल-वशिष्ठऋषिभ्यो नमः **शिरसि**। पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे**। सदाशिवमहामृत्युञ्जय- रुद्रदेवताभ्यो नमः **हृदि**। हौं बीजाय नमः **नाभौ**। जूं शक्त्ये नमः **पादयोः**। सः कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**।

हृदयादिन्यासः-ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्ययम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा,** ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरशि जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हाँ हीं हौं **कवचाय हुम्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय **नेत्रत्रयाय वौषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालनाय मां रक्ष रक्ष अघोराय **अस्त्राय फट्**। इति षडङ्गन्यासः

ध्यान-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयुषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च [illegible] दशांशक्रमेण होम तर्पणमार्जनं व्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।

लघुमृत्युंजयमन्त्रः- ॐ जूं सः।

यजुर्वेदीय न्यास सहित शान्ति मन्त्र-

सूर्य मन्त्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

विनियोगः-ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यरतूपाङ्गिरा ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖**देहाङ्गन्यास**- आकृष्णेन **शिरसि**। रजसा **ललाटे**। वर्तमानो **मुखे**। निवेशयन् **हृदये**। अमृतं **नाभौ**। मर्त्यं च **कट्याम्**। हिरण्ययेन सविता **ऊर्व्वोः**। रथेना **जान्वोः**। देवो याति **जंघयोः**। भुवनानि पश्यन् **पादयोः**।
❖**करन्यासः**- आकृष्णेन रजसा **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। वर्तमानो निवेशयन् **तर्जनीभ्यां नमः**। अमृतं मर्त्यं च **मध्यमाभ्यां नमः**। हिरण्ययेन **अनामिकाभ्यां नमः**। सविता रथेना **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। देवो याति भुवनानि पश्यन् **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**-आकृष्णेन रजसा **हृदयाय नमः**। वर्तमानो निवेशयन् **शिरसे स्वाहा**। अमृतं मर्त्यं च **शिखायै वषट्**। हिरण्ययेन **कवचाय हुँ**। सविता रथेना **नेत्रत्रयाय वौषट्**। देवो याति भुवनानि पश्यन् **अस्त्राय फट्**। **ध्यानम्**-पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

❖**चन्द्र का वैदिक मन्त्र- ॐ इमन्देवा असपत्नꣳ सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा।**

❖**विनियोगः**- इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖**देहाङ्गन्यास**- इमं देवा **शिरसि**। असपत्न ग्वग **ललाटे**। सुवध्वं **नासिकायाम्**। महते क्षत्राय **मुखे**। महते ज्येष्ठ्याय **हृदये**। महते जानराज्याय उदरे। इन्द्रस्येन्द्रियाय **नाभौ**। इममुष्य **कट्याम्**। पुत्रममुष्यै **मेढ्रे**। पुत्रमस्यै **ऊर्वोः**। विशऽएष वो **जान्वोः**। मीराजा **जंघयोः**। सोमोऽस्माकं **गुल्फयोः**। व्रह्मणानां ग्वङ राजा पादयोः।
❖**करन्यास**- इमं देवा असपत्न ग्वङ सुवध्वं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय तर्जनीभ्यां **नमः**। महंते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय **मध्यमाभ्यां नमः**। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै **अनामिकाभ्यां** नमः। विशऽएष वो मीराजा **कनिष्ठाभ्यां नमः**। सोमोऽस्माकं व्रह्मणानां ग्वङ्ग राजा **करतलकरपृष्ठा भ्यां** नमः। हृदयादिन्यासः—इमं देवा असपत्न ग्वङ सुवध्वं **हृदयाय नमः**। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय **शिरसे स्वाहा**। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय **शिखायवौषट्**। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै **कवचाय हुम्**। विशऽएष वो मीराजा **नेत्रत्रयायवषट्**। सोमोऽस्माकं व्रह्मणानां ग्वङ राजा **अस्त्राय फट्**। ❖ध्यान—**श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।**

❖मंगल वैदिक मन्त्र-

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या, अयमपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति।

❖**विनियोगः**- ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖**देहांगन्यासः**- ॐ अग्निः **शिरसि**। मूर्द्धा **ललाटे,** दिवः **मुखे,** ककुत् **हृदये,** पतिः **उदरे**। पृथिव्या **नाभौ,** अयं **कट्याम्,** अपाग्वं **जान्वो,** रेताग्वंसि **गुल्फयोः,** जिन्वति **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-ॐ अग्निः मूर्द्धा **अंगुष्ठाभ्यां नमः,** दिवः ककुत् **तर्जनीभ्यां नमः,**पतिः **मध्यमाभ्यां नमः**। पृथिव्या अयम् **अनामिकाभ्यां नमः,** अपाग्वं रेताग्वंसि **कनिष्ठिकाभ्यां नमः,** जिन्वति **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**- ॐ अग्निः मूर्द्धा **हृदयाय नमः,** दिवः ककुत् **शिरसे स्वाहा,** पतिः **शिखायै वषट्**। पृथिव्या अयं **कवचाय हुम्**। अपाग्वं रेताग्वंसि **नेत्रत्रयाय वौषट्,** जिन्वति **अस्त्राय फट्**। ध्यान- **रक्ताम्वरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भजो मेषगतो गदाभृत्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः।।**

❖बुध का वैदिक मन्त्र-

ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳ सृजेथामयञ्च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

❖**विनियोगः**- ॐ उदुध्यस्वेति मन्त्रस्य परेमेष्ठी प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। **देहांगन्यासः**-ॐ उद्वुध्वेति **शिरसि,** अग्नेः प्रति **ललाटे,** जागृहि त्वं **मुखे,** इष्टापूर्ते **हृदये,** सग्वं सृजेथामयञ्च **नाभौ,** अस्मिन्त्सधस्थे **कट्याम्,** अध्युत्तरस्मिन् **ऊर्वोः,** विश्वेदेवा **जान्वोः,** यजमानश्च **गुल्फल्योः,** सीदत पादयोः। ❖**करन्यासः**-ॐ उद्वुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वम् **अंगुष्ठाभ्यां नमः,** इष्टापूर्ते **तर्जनीभ्यां नमः,** सग्वं सृजेथामयञ्च **मध्यमाभ्यां नमः,** अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् **अनामिकाभ्यां नमः,** विश्वेदेवा यजमानश्च **कनिष्ठिकाभ्यां नमः,** सीदत **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ उद्वुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वम् **हृदयाय नमः,** इष्टापूर्ते **शिरसे स्वाहा,** सग्वं सृजेथामयञ्च **शिखायै वषट्,** अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् **कवचाय हुम्,** विश्वेदेवा यजमानश्च **नेत्रत्रयाय वौषट्,** सीदत **अस्त्राय फट्**। **ध्यान-पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी। चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च।।**

❖गुरु(बृहस्पति) वैदिक मन्त्र-

ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।।

❖**विनियोगः**- बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖**देहांगन्यासः**-ॐ वृहस्पते **शिरसि,**अतियदर्य्यो **ललाटे,**अर्हाद्युमत् **मुखे,** विभाति क्रतुमत् **हृदये,**जनेषु **नाभौ,** यद्दीदयत् **कट्याम्,** शवसऋतप्रजात **ऊर्वो,**तदस्मासु द्रविणं **जान्वोः,**धेहि **गुल्फयोः,**चित्रं **पादयोः**।
❖**करन्यासः**-ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो **अंगुष्ठाभ्यां नमः,**अर्हाद्युमत् **तर्जनीभ्यां नमः,** विभाति क्रतुमत् **मध्यमाभ्यां नमः,** जनेषु **अनामिकाभ्यां नमः,** यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु **कनिष्ठिकाभ्यां नमः,** द्रविणं धेहि चित्रम् **करतल करपृष्ठाभ्यां** नमः।❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो **हृदयाय नमः,** अर्हाद्युमत् **शिरसे स्वाहा,** विभाति क्रतुमत् **शिखायै वषट्,** जनेषु **कवचाय हुम्,** यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु **नेत्रत्रयाय वौषट्,** द्रविणं धेहि चित्रम् **अस्त्राय फट्**। ध्यानम्- **पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।**

❖शुक्र का वैदिक मन्त्र-

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

❖**विनियोगः**-अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजातिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
❖**देहांगन्यासः**-ॐ अन्नात् परिस्रुतः **शिरसि,** रसं व्रह्मणा **ललाटे,** व्यपिवत्क्षत्रं **मुखे,** पयःसोमं **हृदये,** प्रजापतिः **नाभौ,** ऋतेन सत्यं **कट्याम्,** इन्द्रियं व्विपानग्वं **गुदे,** शुक्रमन्धस **ऊर्वो,** इन्द्रस्ये-न्द्रियं **जानुनोः,** इदं पयः **गुल्फयोः,** अमृतं मधु **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं **अंगुष्ठाभ्यां नमः,** व्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं **तर्जनीभ्यां नमः,** पयःसोमं प्रजापतिः **मध्यमाभ्यां नमः,** ऋतेन सत्यमिन्द्रियं **अनामिकाभ्यां नमः,** व्विपानग्वं शुक्रमन्धस **कनिष्ठाभ्यां नमः,** इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं **हृदयाय नमः,** व्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं **शिरसे स्वाहा,** पयःसोमं प्रजापतिः **शिखायै वषट्,** ऋतेन सत्यमिन्द्रियं **कवचाय हुम्,** व्विपानग्वं शुक्रमन्धस **नेत्रत्रयाय वौषट्,** इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु **अस्त्राय फट्**। ❖ **ध्यानम्**- श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम।।

❖शनि का वैदिक मन्त्र-

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः।

❖विनियोगः- शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖**देहांगन्यासः**- शन्नो **शिरसि,** देवीः **ललाटे,** अभिष्टय **मुखे,** आपो **कण्ठे,** भवन्तु **हृदये,** पीतये **नाभौ,** शं **कट्याम्**। योः **ऊर्वो,** अभि **जान्वोः,** स्रवन्तु **गुल्फयोः,** नः पादयोः। ❖**करन्यासः**- शन्नो देवीः **अंगुष्ठाभ्यां नमः,** रभिष्टये **तर्जनीभ्यां नमः,** आपो भवन्तु **मध्यमाभ्यां नमः,** पीतये **अनामिकाभ्यां नमः,**शंय्योरभि **कनिष्ठिकाभ्यां नमः,** स्रवन्तु नः **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**।
❖**हृदयादिन्यासः**- शन्नो देवीः **हृदयाय नमः,** रभिष्टये **शिरसे स्वाहा,** आपो भवन्तु **शिखायै वषट्,** पीतये **कवचाय हुम्,** शंय्योरभि **नेत्रत्रयाय वौषट्,** स्रवन्तु नः **अस्त्राय फट्**। **ध्यानम्**:- नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

राहु का वैदिक मन्त्र-

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता।।

❖विनियोगः- **कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः**। ❖देहांगन्यासः- कया **शिरसि,** न **ललाटे,** चित्र **मुखे,** आ **कण्ठे,** भुव **हृदये,** दूती **नाभौ,** सदा **कट्याम्**। वृधः **मेढे,** सखा **ऊर्व्वोः**। कया **जान्वोः,** शचिष्ठया **गुल्फयोः,** वृता **पादयोः**।
❖**करन्यासः**- कया नः **अंगुष्ठाभ्यां नमः,** चित्र आ **तर्जनीभ्यां नमः,** भुवदूती **मध्यमाभ्यां नमः,** सदावृधः सखा **अनामिकाभ्यां नमः**। कया **कनिष्ठिकाभ्यां नमः,** शचिष्ठया वृता **करतल करपृष्ठाभ्यां**।
❖**हृदयादिन्यासः**- कया नः **हृदयाय नमः,**चित्र आ **शिरसे स्वाहा,** भुवदूती **शिखायै वषट्,** सदावृधः सखा **कवचाय हुम्**। कया **नेत्रत्रयाय वौषट्,** शचिष्ठया वृता **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- **नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली।**
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्।।

केतु का न्यास सहित वैदिक मन्त्र-

ॐ केतुङ् कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

❖**विनियोगः**-केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः,गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖**देहांगन्यासः**- केतुं **शिरसि**, कृण्वन् **ललाटे**, अकेतवे **मुखे**, पेशो **हृदये**, मर्या **नाभौ**, अपेशसे **कट्याम्**। सं **ऊर्व्वोः**। उषद्भिः **जान्वोः**, अजायथाः **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-केतुं कृण्वन् **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,अकेतवे **तर्जनीभ्यां नमः**, पेशो मर्या **मध्यमाभ्यां नमः**, अपेशसे **अनामिकाभ्यां नमः**, समुषद्भिः **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, अजायथाः **करतल करपृष्ठाभ्यां** । ❖**हृदयादिन्यासः**- केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः, अकेतवे **शिरसे स्वाहा**, [illegible] **शिखायै वषट्**, अपेशसे **कवचाय हुम्**, समुषद्भिः **नेत्रत्रयाय वौषट्**, [illegible] **अस्त्राय फट्**। ध्यानम्- **धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च। किरीट-केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः।**

सूर्यादि ग्रहो का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र-

सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ हाँ हीं सः

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता हां बीजम्, हीं शक्तिः, [illegible] श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। **ऋष्यादिन्यास**-ॐ अज ऋषये नमः **शिरसि**। ॐ [illegible] **मुखे**। ॐ सूर्यदेवतायै नमः **हृदि**। ॐ हाँ बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ हीं शक्तये नमः [illegible] ॐ [illegible] नमः **सर्वाङ्गे**। **अंगन्यास**-ॐ आं हीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं हीं [illegible] ॐ ऊँ हीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं हीं [illegible] ॐ अः हीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। **हृदयादिन्यासः**-ॐ आं हीं हृदयाय **नमः**। ॐ ईं हीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊँ हीं **शिखायै वषट्**। ॐ ऐं हीं **कवचाय हुम्**। ॐ औं हीं **नेत्रत्रयाय वौषट्**। ॐ अः हीं अस्त्राय फट्। ध्यान- **ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं, भानुं समस्त** [illegible] पद्मद्वयाभय-वरान्द- **धतं कराब्जैर्माणिक्य-मौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्**।।

❖चन्द्र का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ सों सोमाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य [illegible] भृगुऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सोमो देवता, सों बीजम्, नमः शक्तिः, [illegible] ❖**ऋष्यादिन्यासः**- ॐ भृगुऋषये नमः **शिरषि**, ॐ पंक्तिः छन्दसे नमः **मुखे**, [illegible] **हृदि**, ॐ सों बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः,।। ❖**करन्यासः**-ॐ [illegible] **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ सूं **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ सैं **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ सौं [illegible] करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ सां हृदयायां **नमः**, ॐ [illegible] **शिखायै वषट्**, ॐ सैं **कवचाय हुम्**, ॐ सौं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ सः [illegible] ध्यानम्- [illegible] पूर्णेन्दु-बिम्बानन, मुक्तादामविभूषितेन वपुषा [illegible] सोमं [illegible]

मंगल का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ अं अंगारकाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीभौममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, आपः शक्तिः, अंगारकप्रीतये जपे विनियोगः। ❖**देहांगन्यासः**-ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरषि**, ॐ गायत्री-छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ अंगारक देवतायै नमः **हृदये**, ॐ अं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖**करन्यास**-ॐ आं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,ॐ ईं **तर्जनीभ्यां नमः**,ॐ ऊं **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ ऐं **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ औं **कनिष्ठकाभ्यां नमः**, ॐ अः **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**, ❖**हृदयादिन्यास**-ॐ आं **हृदयाय नमः**, ॐ ईं **शिरसे स्वाहा**, ॐ ऊं **शिखये वषट्**, ॐ ऐं **कवचाय हुम्**, ॐ औं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ अः **अस्त्राय फट्**। ध्यानम्- **नमाम्यंगारकं देवं** रक्ताम्बरविभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताढ्यं साभयेतरपाणिकम्।

बुध का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बुं बुधाय नमः।

❖**विनियोगः**-ॐ अस्य श्रीबुधमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, बुधो देवता,बुं बीजं,आपः शक्तिः, बुध प्रीतये जपे विनियोगः।❖**देहांगन्यासः**-ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**। ॐ बुधदेवतायै नमः **हृदये**। ॐ बुं बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-ॐ बुं **अगुष्ठाभ्यां नमः**। ॐ बुं **तर्जनीभ्यां नमः**। ॐ बुं **मध्यमाभ्यां नमः**। ॐ बुं **अनामिकाभ्यां नमः**। ॐ बुं **कनिष्ठकाभ्यां नमः**। ॐ बुं **करतलकर- पृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ बुं **हृदयाय नमः**। ॐ बुं **शिरसे स्वाहा**, ॐ बुं **शिखायै वषट्**, ॐ बुं **कवचाय हुम्**, ॐ बुं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ बुं **अस्त्राय फट्**।
ध्यान- ॐ **बन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बरसुभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताढ्यं साभयेतरपाणिकम्**।।

गुरु(बृहस्पति) का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

विनियोगः ॐ अस्यश्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, बृं बीजम्, नमः शक्तिः, श्रीबृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः। ❖**ऋष्यादिन्यासः**-ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः **मुखे**,ॐ बृहस्पतिर्देवतायै नमः **हृदये**, ॐ बृं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ नमः शक्तये नमः **पादयोः**,❖**करन्यासः**-ॐ ब्राँ **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,ॐ ब्रीं **तर्जनीभ्यां नमः**,ॐ ब्रूँ **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ ब्रैं **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ ब्रौं **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ ब्रः **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ ब्राँ **हृदयाय नमः**, ॐ ब्रीं **शिरसे स्वाहा**,ॐ ब्रूँ **शिखायै वषट्**,ॐ ब्रैं **कवचाय हुम्**, ॐ ब्रौं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ ब्रः **अस्त्राय फट्**। ❖**ध्यानम्**-तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघस्तुतपादपंकजम्। मेधानिधिं मत्स्यगतं द्विबाहुं गुरुं भजे मानस पंकजेऽहम्।।

शुक्र का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ शुं शुक्राय नमः।

❖विनियोगः-ॐ अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, शुक्रो देवता, शुं बीजं स्वाहम्, स्वाहा शक्तिः, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖**ऋष्यादिन्यास**-ॐ ब्रह्मऋषये नमः**शिरसि**, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ शुक्रदेवतायै नमः हृदये, ॐ शुं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ स्वाहा शक्तये नमः **पादयोः**, ❖**करन्यासः**-ॐ शुं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,ॐ शुं **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ शुं **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ शुं **अनामिकाभ्यां नमः**,ॐ शुं **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ शुं **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖हृदयादिन्यास-ॐ शुं **हृदयाय नमः**,ॐ शुं,**शिरसे स्वाहा**, ॐ शुं **शिखायै वषट्**, ॐ शुं, **कवचाय हुम्**, ॐ शुं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ शुं **अस्त्राय फट्**।
•**ध्यानम्**- ॐ सन्तप्त- काञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुह- केशयुग्मम्। क्रौञ्चासनं असुरसेवितपादपद्मं शुक्रं भजे द्विनयनं हृदि पंकजेऽहम्।।

शनि का मन्त्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः।

❖**विनियोगः**-ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।
❖**ऋष्यादिन्यासः**- ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ गायत्रीछन्दसे नमः **मुखे**, ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः **हृदये**, ॐ शं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-ॐ शं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ शं **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ शं **मध्यमाभ्यां नमः**,ॐ शं **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ शं **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ शं **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**।
❖**हृदयादिन्यासः**- ॐ शं **हृदयाय नमः**, ॐ शं **शिरसे स्वाहा**, ॐ शं **शिखायै वषट्**, ॐ शं **कवचाय हुम्**, ॐ शं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ शं **अस्त्राय फट्**। **ध्यानम्**- ॐ नीलांजनाभं मिहिरस्य पत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम्। सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पंकजेऽहम्।।

राहु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीराहु मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, राहुर्देवता, रां बीजम्, वेशः शक्तिः, श्रीराहुप्रीतये जपे विनियोगः। **देहांगन्यासः**-ॐ ब्रह्मऋषये नमः**शिरसि**, ॐ पंक्तिछन्दसे नमः **मुखे**, ओं राहुदेवतायै नमः **हृदये**, ओं रां बीजाय नमः **गुह्ये**, ओं वेशः शक्तये नमः **पादयोः**,। **करन्यासः**-ॐ रां **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ रां **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ रां **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ रां **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ रां **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ रां **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। हृदयादिन्यासः- ॐ रां **हृदयाय नमः**, ॐ रां **शिरसे स्वाहा**, ॐ रां **शिखायै वषट्**, ॐ रां **कवचाय हुम्**, ॐ रां **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ रां **अस्त्राय फट्**। ध्यान- **वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम्।**
विकृतास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम् ।।

केतु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ कें केतवे नमः

❖विनियोगः- ॐ अस्य श्रीकेतुमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, केतुर्देवता, कें बीजं, वेशः शक्तिः, श्रीकेतुप्रीतये जपे विनियोगः। ❖**ऋष्यादिन्यासः**-ॐ ब्रह्मऋषये नमः **शिरषि**,ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ केतुर्देवतायै नमः **हृदये**, ॐ कें बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ वेशः शक्तये नमः **पादयोः** ❖**करन्यासः**-ॐ कें **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,ॐ कें **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ कें **मध्यमाभ्यां नमः**,ॐ कें **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ कें **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ कें **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**- ॐ कें **हृदयाय नमः**, ॐ कें **शिरसे स्वाहा**, ॐ कें **शिखायै वषट्**, ॐ कें **कवचाय हुम्**, ॐ कें **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ कें **अस्त्राय फट्**। **ध्यानम्**- ॐ वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्रविभूषणम्। [illegible]रुन्यस्ततद्धस्तं साभयेतरपाणिकम्।

ग्रहों का सामवेदीयशान्ति मन्त्र-

सूर्य-ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वायसूर्यम्।
चन्द्र-ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुवाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व।।
कुजस्य-ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपागुं रेतागुंसि जिन्वति।
बुधः- ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राह्नो अमर्त्य आदाशुषे।
जातवेदो वहात्वमद्या देवो उपर्व्बुधः।।
गुरोः-ॐ वृंहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपवाधमानः ।
प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकंमेध्यविता रथानाम्।।
शुक्रस्य-शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया।
अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।
शनेः- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः।
राहोः- ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता।
केतोः- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः।

ग्रहों का बीज मन्त्र-

सूर्य-ॐ हीं हौं सूर्याय नमः।
चन्द्र-ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।
मंगल-ॐ हुँ श्रीं भौमाय नमः।
बुध-ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
गुरु-ॐ हीं क्लीं हुँ बृहस्पतये नमः।
शुक्र-ॐ ह श्रीं शुक्राय नमः।
शनि-ॐ ऐं ही श्रीं शनैश्चराय नमः।
राहु- ॐ ऐं हीं राहवे नमः।
केतु- ॐ हीं ऐं केतवे नमः।

योगिनीशान्तिमन्त्रः-

मङ्गला—ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा। **पिङ्ला**—ॐ ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा। **धान्या**—ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा। **भ्रामरी**—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा। **भद्रिका**— ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। **उल्का**—ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा। **सिद्धा**—ॐ हौं सिद्धे मे सर्व मानसं साधय स्वाहा। **संकटा**—ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

शत्रुनाशक बगलामुखी प्रयोगः मन्त्र-

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, ह्ली बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे च शत्रुणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः। **करन्यासः**- ॐ ह्लीं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐश्रीबगलामुखी **तर्जनीभ्यां नमः**, सर्वदुष्टानां **मध्यमाभ्यां नमः**, वाचं मुखं पदं स्तंभय **कवचाय हुम्**। जिह्वां कीलय **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। **षडङ्गन्यासः**- ॐ ह्लीं **हृदयाय नमः**, ॐ श्रीबगलामुखी **शिरसे स्वाहा**, सर्वदुष्टानां **शिखायै वषट्**, वाचं मुखं पदं स्तंभय **कवचाय हुम्**, जिह्वां कीलय **नेत्रत्रयाय वौषट्**, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा **अस्त्राय फट्**।
ध्यानः- **सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भषणै व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतयेत्**।।

बगलामुखी शाबर मन्त्र-

शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं- **ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकाली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुमुखबंधनं कालमुख बंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनबंधन वशीकुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।**

विष्णु द्वादश अक्षर मन्त्रजप प्रयोग

मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्रीछन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा देवता, मम सर्वपापविनाश-पूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖करन्यासः- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, नमो तर्जनीभ्यां नमः, ॐ भगवते। मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ हृदयाय नमः, नमो शिरसे स्वाहा, ॐ भगवते शिखायै वषट्, ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम्, ॐ नमो भगवते नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

❖ध्यानम्- ॐ विष्णु शारदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथाङ्गदहारकुण्डलं- महामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार-कौस्तुभधरं वन्दे मनीन्द्रैः स्तुतम्।।

शिवपञ्चाक्षर मन्त्र जप विधिः-

ॐ नमः शिवायः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकं, चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः- ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ श्रीसाम्बसदाशिवदेवतायै नमः हृदये, ॐ बीजाय नमः गुह्ये, क्षों नमः शक्त्ये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, ❖करदिन्यासः- ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ मं ❖मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ नं शिरसे स्वाहा, ॐ मं शिखायै वषट्, ॐ शिं कवचाय हुम्, ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ यं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं,चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। ॐ नमः शिवाय।

न्यास सहित नवार्ण मन्त्र जपः- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः- ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्त्ये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमः नाभौ, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मूल मन्त्र से हाथोंकी शुद्धि करके करन्यास करें। ❖करन्यासः- ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यास-ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्, ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्,ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्। ❖अक्षरन्यास-ॐ ऐं नमः शिखायाम्, ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॐ मुं नमः वामकर्णे, ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॐ यैं नमः वामनासापुटे, ॐ विं नमः मुखे, ॐ च्चें नमः गुह्ये। ❖दिङ्न्यासः- ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः, ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्- खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः, शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।। अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्। घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

मालापूजन- **ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै** नमः इस मन्त्र से मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे-**ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।। ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।। ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।** इसके बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मन्त्र का जप करे। गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।। इस श्लोक से भगवति को जप अर्पण करदें।

नवार्णमन्त्र के विविध कामना मन्त्रभेद(षट्कर्म प्रयोग)-मन्त्रों के स्वरूपः-

१. **वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** अमुक(नाम) नामानं वषट् कुरुकुरु स्वाहा। वशीकरण के लिए।

२. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** देवदत्तं(व्यक्ति नाम) फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा। उच्चाटन के लिए।

३. **क्लीं क्लीं ॐ ऐं** ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे दवदत्तं(नाम) क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा। सम्मोहन के लिए।

४. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं** चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खे खे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाह। मारण के लिए।

५. ॐ ठं ठं **ॐ ऐं ह्रीं** क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं सतंभयस्तंभय

ह्रीं जिह्वांकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं **ॐ** ठं ठं स्वाहा। स्तम्भन के लिए।

६. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** देवदत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षय आकर्षय स्वाहा। आकर्षण के लिए।

७. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** हुं अमुकामुकेन सह विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाह । विद्वेषण के लिए।

नवार्ण महामन्त्र स्वरूप- यह महानवार्ण मन्त्र

अचूक फल दायक है इसका न्यासादि पूर्ववत् ही होगा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्द्दिनि धूम्रलोचनसंहंत्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल-खट्वांग-शूलखड्ग-खेटकधारिणि छिन्नमस्तक धारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देव मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं

संपुटे हवनं नास्ति के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगरु- **सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्पे होमन्तु विपुलं चरेत्।।** अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई हैं। यथा- **होमकाले बीजसंयोगे दुर्गा मन्त्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगो दुर्गा मन्त्रेण हुनेत्।। दुर्गास्तवन मन्त्रांणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मन्त्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश।। मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मन्त्रं पुटं वाच्यं होम मन्त्राः पृथक् पृथक्।। होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः। पाठे बीजं पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत्।** दुर्गापाठ मन्त्र को अगर किसी ऐं, ह्रीं श्री, या किसी बीज मन्त्र से संपुटित किया जाता हैं तो पुटित कामना मन्त्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं हैं। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या५-७ बीजाक्षर होवे तो भी एक ही आहुति होगी। अतः ७०० आहुति देवे। **अस्त संपुट**- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में कामना मंत्र या बीजाक्षर विलोम होगा। व्याहृति व बीजाक्षररों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगता है अतः विलोमाक्षर का पृथक् होम नहीं करने पर केवल७०० आहुति देवे। मरणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मन्त्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे।

निष्कर्स- प्राय उदय संपुट पठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मन्त्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अतः २१०० आहुति देवे।

संपुटित पाठ प्रकार एवं विधि- पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने से

संपुटीकरण करते हैं। संपुट पाठ ३ प्रकार के होते हैं। **१.उदय संपुट, २.अस्त संपुट, ३.अर्द्धसंपुट**

१.उदय संपुट- उदय संपुट में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता हैं।

२.अस्तसंपुट-अस्तसंपुट बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढे फिर दुर्गापाठ मंत्र पढे अंत मे कामना मंत्र विलोम रूप से उच्चारण करे यथा- ह्रौं जूं सः ऐं **मार्कण्डेय उवाच** सः जूं ह्रौं। **३.अर्द्धसंपुट**- कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अन्त में केवल एक बार पढें। इसका फल न्यून हैं परन्तु विपरित प्रभाव नहीं होता है। **प्राय सर्वत्र उदय संपुट का ही प्रचलन है।** ४. **तंत्र मार्ग के अनुसार** व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोम तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है। **५.मित्रपाद प्रयोग**- मंत्र के चरण भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मन्त्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना कि जा सकती है।

कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद-दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है,

इनको अलग अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं-(तन्त्रग्रन्थ एवं निर्णय सिन्धु) **१.महाविद्या क्रम**- प्रथम, मध्यम उत्तर चरित्र- **सर्वकामना हेतु।** **२.महातन्त्री**- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- **शत्रुनाश,लक्ष्मीप्राप्ति हेतु।** **३.चण्डी**- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- **शत्रुनाश।** **४.महाचण्डी**-उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र- **शत्रुनाश,लक्ष्मीप्राप्ति हेतु।** **५.सप्तशती**- मध्यम,प्रथम,उत्तर चरित्र- **लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उत्कीलन।** **६.मृतसंजीवनी**- मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र- **आरोग्यलाभ।** **७.रूप दीपिका**- प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र-विजय व आरोग्य। (**रूपं देहि जयं देहि से संपुटित**)। **८.निकुंभला**-मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र- रक्षा हेतु, विजय हेतु(**शूलेन पाहि नो देवि से संपुटित**)। **९.योगिनी**- बालोपद्रव शमन। (**प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बंधित योगनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को यं शं षं सम्पुटित**)। **१०.विलोम(संहार क्रम)**-७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से। **११.अक्षरशः विलोम पाठ**- १३ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है१०० वर्ष पहले छपी हुई है। इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहले भैरव नामावलि पाठ का विधान भी मिलता। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामावलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है। कई विद्वान कहते है कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लग सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते हैं। दुर्गा सप्तशती के सभी दशमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मन्त्र, भागवत के मन्त्रों का, वैदिक मंत्रों का व अन्य कई मंत्रों का संपुट लगाया जा सकता है। दुर्गार्चनसृतिः, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मन्त्रों के संपुट के विषय में लिखा है। स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठन **शूलेन पाहिनो..**। का संपुट लगाता था।

दुर्गापाठ मे निषिध आहुति विचार-

चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते। रक्षा कवचागैमन्त्रै तत्र न कारयेत्।। अर्थात्- १.कवच मंत्र एवं अस्त्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होता हैं। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुग्गुल व घृत से होम करे। क्यो कि घृत से अग्नि का आचमन होता है। २.सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नही होता है मरण कर्म में सिन्दुरादि से हवन अश्वय होता हैं उसमें तो अग्नि का १६वां मृतक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारम्भ होता है। ३. चतुर्थ अध्याय के **शूलेन पाहिनो देवि** इत्यादि चार मन्त्रो का हवन नही होता, इसी तरह **खड्गिनी शूलिनी** मन्त्र का भी उच्चारण कर हवन नही करना चाहिए उक्त मन्त्र के स्थान पर **नवार्ण मन्त्र** अथवा **श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा** से हवन करें अथवा मन्त्र को मानसिक उच्चारण कर हवन करें।४. पांचवे अध्याय में **दूत उवाच** दो बार आया हैं इस मन्त्र से आहुति देने से फल का भाग दूत को जाता हैं अतः कर्मफल में न्यूनता आती हैं। अतः मनसा पढकर **ऐं सरस्वत्यै नमः** से आहुति प्रदान करें।

दुर्गासप्तशती के प्रति अध्याय के अन्त मे महा आहुति विधान-

प्रति अध्याय के अन्त में आहुति समय स्रुक पर आहुति द्रव्य रखकर मंत्र से आहुति देवे। पश्चात् घी की आहुति इन मन्त्रो से देवे। घृताहुति के मन्त्र तो एक ही है, महाहुति क्रम अलग अलग हैं। घृत आहुति मंत्र- **ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।**

प्रथम-अध्याय-एक पान पर कपित्थफल,मधु, कमलगट्टा,गुगल, शाकल्य, गंधाक्षत्, पुष्प, लौंग, इलायची सब एक साथ लेवे। सुपारी रखे घी से भिगाये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र से आहुति देवे-**मन्त्र-** नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। **अथवा** ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

द्वितीय-अध्याय :- हवनीयद्रव्य- पान, कमलगट्टा, गुगल, नारिकेलखण्ड, पुष्प, लौंग, इलायची, शाकल्य, सुपारि- **नमो देव्यै महादेव्यै** ......अथवा **ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्त्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **तृतीय-अध्यायः-** पान, बिजोरा, चंदन, नीमगिलोय, दधि, माष, मधु, भैंसागुग्गल, कमलगट्टा, लौंग२, इलायची२, सुपारी, शाकल्य, पुष्प, फल लेकर महाहुति देवे- **नमो देव्यै महादेव्यै** ......अथवा **ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सशक्त्यै सायुधायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **चतुर्थ-अध्याय**-द्रव्य-पान, शाकल्य, पायस, कमलगट्टा, बिल्वफल, लौंग, इलायची, गुग्गल, फल, पुष्प, **मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै** ......अथवा **ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सशक्त्यै सायुधायै श्री लक्ष्मीबीज अधिष्ठात्र्यै। त्रिवर्णात्मिकायै श्री महालक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **पञ्चम-अध्याय-** द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, गुगल, कमलगट्टा, कपूर, श्वेतचन्दन, पुष्प, फल, बिल्वफल,बिजौरा। **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै** ......अथवा जयन्ती मंगला **....सांगा. सप. सवा.सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **षष्ठ-अध्यायः-** द्रव्य- पान, शाकल्य, कमलगट्टा, गुग्गल, भोजपत्र, कुष्माण्डखण्ड, नारंगी, नारिकेलखण्ड, फल, पुष्प **मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै** .....अथवा जयन्ती मंगला .. **..सांगा. सप. सवा.सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **सप्तम-अध्यायः**-द्रव्य-पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, चिरौंजी, लाजवन्ती, पुष्प, कमलगट्टा, जयफल, कुष्माण्ड- फलखण्ड, कर्पूर- **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै** . **....जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. श्रीकर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै श्री धूम्राक्षी काली चामुण्डा देवता महाहुतिं समर्पयामि नम स्वाहा।**

अष्टम-अध्यायः-द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, फल, गुग्गल, कुष्माण्डखण्ड, लालचन्दन, मधु, पुष्प- **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. अष्टमातृकासंहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **नवम-अध्याय-** द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, बिजौरा नींबू,फल, कुष्माण्डखण्ड, इक्षुखण्ड, बिलवफल,मनफल- **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. श्री वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै भगवति महाकाल्यै तारादेव्यै नमः महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **दशम-अध्याय-** द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, बिजौरा, कस्तूरी, गुग्गल,फल, कुष्माण्डखण्ड, पुष्प, मेनसिल, बिलवफल,मेनसिल- **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. सिंहवाहनायै शूलपाशधारिण्यै अंबिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

एकादश-अध्याय-द्रव्य-पान, पुष्प, फल, शाकल्य, लौंग, इलायची, कर्पूर, शर्करा, कमलगट्टा, सुपारी, मिश्री, पायसान्न, गुग्गल, इक्षुखण्ड, दाडिमफल **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...जयन्ती मंगला ...सांगा. सप. सवा. सश.सायु. सर्वनारायण्यै शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **द्वादशदश-अध्याय-** द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारि, अगर,कस्तूरी, कमलगट्टा, पत्र, पुष्प, फल, जायफल, बिल्वफल, मिश्री, पायसान्न **मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै..जयन्ती मंगला..सांगा. सप.सवा.सश.सायु.श्री बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।** **त्रयोदश-अध्याय**-द्रव्य-पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारि, बिल्वफल, गूग्गल, कमलगट्टा, फल, समीपत्र, कदलीफल, श्वेतार्कपुष्प, कसर, कर्पूर, श्वेतपुष्प, नारिकेलखण्ड, पुष्प, **मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै ... जयन्ती मंगला ..सांगा. सप. सवा. सश.सायु.** श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

।। शत्रुनाशक बगला माला मन्त्र।।

ॐ नमो भगवति ॐ नमो वीरप्रतापविजयभगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं गतिं स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मीं मुद्रय मुद्रय बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपराबुद्धिं कुरु कुरु,आत्म विरोधिनां शत्रूणां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पद अणुरेणु दन्तोष्ठ जिह्वा तालु गुह्य गुद कटि जानु सर्वाङ्गेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, खें खीं मारय मारय, परमन्त्र परतन्त्राणि छेदय छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्वग्रहं निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय दुःखं हर हर, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्वमन्त्र-स्वरूपिणि, सर्वतन्त्रस्वरूपिणि, सर्वशिल्प-प्रयोग- स्वरूपिणि, सर्वतत्वस्वरूपिणि, दुष्टग्रह भूतग्रह आकाशग्रह पाषाणग्रह सर्वचाण्डालग्रह यक्षकिन्नर -किम्पुरुषग्रह भूतप्रेतपिशाचानां शाकिनी डाकिनीग्रहाणां पूर्वदिशां बन्धय बन्धय वार्तालि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशां बन्धय बन्धय, किरातवार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमदिशा बन्धय बन्धय, स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशां बन्धय बन्धय, कालि मां रक्ष रक्ष ऊर्ध्वदिशं बन्धय बन्धय, उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पातालदिशं बन्धय बन्धय, बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकलरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रून् पलायनाय पञ्चयोजनमध्ये राजजनस्त्रीवशतां कुरु कुरु शत्रून् दह दह, पच पच स्तम्भय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय, उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

।। इति बगलामालामन्त्रः।।

श्रीसूक्त

विनियोगः— ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषि, अग्निदेवताः आदौत्रयस्य अनुष्टुप् छंदः शेषांसा प्रसार पंक्तिः, त्रिष्टुप्,अनुष्टुप् पुनः प्रसार पंक्तिश्छंदः, हिरण्य वर्णा बीजं, तां आवह इति शक्ति कीर्तिमृद्धिं ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्ध्यर्थं पाठे जपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।१।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम् ।। २।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।। ३।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ४।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ।। ८।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।।९।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।१०।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।११।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।१२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।१३।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।१४।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व।।१७।।
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।१८।। अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे।।१९।।
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् । प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे।।२०।। धनमग्नि र्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।।२१।। वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।।२२।। न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम ।।२३।। सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।२४।। विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युत–वल्लभाम्।।२५।। महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात्।।२६।। आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः। ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः।।२७।। ऋणरोगादि– दारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।२८।।
श्रीर्वर्चस्वमायुष्य– मारोग्य–माविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।२९।।

।। ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम्।।

चमत्कारी लक्ष्मी महामन्त्र प्रयोग विधि-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।।

विनियोगः- अस्य श्रीमहालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्माऋषि गायत्री छन्दः, महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः।(एक अर्घांजल छोड़ दें)।

ऋष्यादिन्यास- ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः **मुखे,** ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदये, ॐ श्रीं बीजाय नमः **गुह्ये,** ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।

करन्यास-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रींश्रीं **अंगुष्ठाभ्यां नमः,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं **तर्जनीभ्यां नमः,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं **मध्यमाभ्यां नमः,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं **अनामिकाभ्यां नमः,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं **कनिष्ठाभ्यां नमः,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमःश्रीं ह्रीं श्रीं **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः,**
करन्यासःॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं **हृदयाय नमः,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं **शिरसे स्वाहा,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं **शिखायै वषट्,**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं **कवचाय हुम्।**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं **नेत्रत्रयाय वौषट्।**
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं **अस्त्राय फट्।**

ध्यान-सिन्दूरारूणकान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्यवारां निधिं, कोटी-रांगद-हार- कुण्डल-कटी- सूत्रादि- भिर्भूषिताम्।। हस्ताब्जैर्वसुपात्राब्जयुगलादर्शी वहन्तीं परा,मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शारङ्गिणः।।

दीपावली या किसी शुभ मुहूर्त मे (धन– धान्यादि कृष्यर्थं श्रीमहालक्ष्म्याः पूजनं तथा जप करिष्ये या कारिष्ये)लक्ष्मी जी का विधिवत् पूजनादि कर जप करना चाहिए यदि केवल दीपावली दिन ही करना चाहते हैं तो ११००० जप कर अन्तमे दशांश हवन,तर्पण,मार्जनोपरान्त पूर्णाहुति दें उत्तरपूजन आरती कर यथा ज्ञान सन्तुष्ट करने से लक्ष्मी जी साक्षात् निवास करतें हैं। **जपमाला**–स्फटिक/कमलगट्टा। जप **संख्या**–११०० प्रतिदिन। **पुरश्चरण**–१,२५,०००। हवन द्रव्य–घी,शहद एवं शक्कर से युक्त बेलफल।

॥ पुरुषसूक्त ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भुमिँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरूषः ।
पादोऽस्य विश्वा भुतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुष ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः साभानि जज्ञिरे ।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरूषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते। १०
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीदबाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रो अजायत। ११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भुमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२अकल्पयन्। १३।
यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रि सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पुर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १६॥

॥ इति पुरुष सूक्तम्॥

॥ रूद्रसूक्त ॥

ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥
या ते रूद्र शिवा तनुरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरू मा हिँसीः पुरूषं जगत्।
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मँ सुमना असत् ॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जभयन्त्सर्वाश्च यातुधन्योऽधराचीः परा सुव ॥
असौ यस्ताम्रो अरूण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनँ रूद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाँ हेड ईमहे ॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रनदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टोमृडयाति नः ॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अश्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
अवतत्य धनुष्ट्वँ सहस्त्राक्षशतेषुधे ।
निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥
मा नो महान्तमुत मा नो
अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत
मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥
मा नस्तोके तनये मान आयुषि
मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।१६॥

सङ्कटा–स्तुतिः

प्रयोजन—महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली की कृपा तथा दर्शन कराने वाला अमोघ व परम तेजस्वी स्तोत्र। इसी स्तोत्र द्वारा महाकवि कालिदास ने मां भद्रकाली की उपासना कर साक्षात् दर्शन किये थे तथा वेद उपनिषदों का ज्ञान आशीर्वाद स्वरूप पाकर ज्ञानियों मे सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी हुए थे।)

अयि गिरि–नन्दिनि नन्दित–मेदिनि विश्व–विनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोऽधि-निवासिनि विष्णु-विलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठ–कुटुम्बिनि भूरि–कुटुम्बिनि भूतिकृते ।
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।१॥
सुर–वरवर्षिणि दुर्धर–धर्षिणि दुर्मुख–मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवन–पोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुज–निरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।२॥
अयि जगदम्ब कदम्बवन–प्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरि–शिरोमणि–तुङ्ग–हिमालय–शृङ्ग–निजालय–मध्यगते।
मधु–मधुरे मधु कैटभ–गञ्जिनि महिष–विदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३॥
अयि निजहुंकृति–मात्रनिराकृत–धूम्रविलोचन – धूम्रशते
समरविशोषित–रोषित–शोणित–बीजसमुद्भव–बीजलते।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित–भूत–पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४॥
अयि शतखण्ड–विखण्डित–रुण्ड– वितुण्डित–शुण्ड–गजाधिपते
निजभुजदण्ड- निपातितचण्ड विपाटित–मुण्ड–भटाधिपते।
रिपुगजगण्ड–विदारण–चण्डपराक्रम–शौण्ड–मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।५॥
धनुरनुषङ्गसुर–रणक्षणसङ्ग–परिस्फुरदङ्ग–नटत्कटके
कनक–पिशङ्ग–पृषत्कनिषङ्ग–रसद्भटशृङ्ग–हताबटुके
हत–चतुरङ्ग–बल–क्षितिरङ्ग–घटद्-बहुरङ्ग-रटद् -बटुके
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।६॥
अयि रणदुर्मद–शत्रुवधाद्धुर–दुर्धर– निर्भर– शक्तिभृते
चतुर-विचार-धुरीण -महाशय - दूतकृत-प्रमथाधिपते
दुरित–दुरीह–दुराशय– दुर्मति–दानवदूत–दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।७॥
अयि शरणागत–वैरिवधूजन– वीरवराभय–दायिकरे
त्रिभुवनमस्तक–शूलविरोधि–शिरोधिकृतामल – शूलकरे
दुमिदुमितामर–दुन्दुभिनाद–मुहुर्मुखरीकृत–दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।८॥
सुरललना–ततथेयित–थेयित–थाभिनयोत्तर–नृत्यरते
कृतकुकुथा–कुकुथोदि–डदादिक–तालकुतूहल– गानरते।
घुघुकुट-घूघुट–घिन्धि–मितध्वनि–घोरमृदङ्ग –निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।९॥
जय जय जाप्यजये जयशब्द–परस्तुति-तत्पर- विश्वनुते
झणझण-झिंमझिम-झिंकृत-नूपुर- शिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटितनटार्ध- नटीनटनायक-नाटन-नाटित-नाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१०॥
अयि सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनः सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी-रजनी-रजनी- रजनी- रजनीकर - वक्त्रभृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।११॥
महित-महाहव-मल्ल-मतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
विरचितवल्लि-कपालिक पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृत
श्रुतकृत फुल्ल- समुल्ल सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१२॥
अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन- मन्थरराजसुते
अविरल- अगण्ड- गलन्- मदमेदुर- मत्त- मत्तङ्गजराजगते
त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधिरूप- पयोनिधि - राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१३॥
कमल- दलामल- कोमलकान्ति-कलाकलितामल - भालतले
सकल- विलास- कलानिलय- कलाकलिचलत्- कलहंसकुले
अलिकुल-सङ्कुल-कुन्तल-मण्डल-मौलिमिलद्–बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।१४॥
करमुरलीरव– वर्जित– कूजित –लज्जित–कोकिल–मञ्जुमते

मिलित—मिलिन्द—मनोहरगुञ्जित—रञ्जित—शैल— निकुञ्जगते
निजगण—भूतमहा—शबरीगण —रङ्गणसम्भृत —केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१५।।
कटितटपीत — दुकूलविचित्र —मयूख—तिरस्कृत —चण्डरुचे
जितकनकाचल — मौलिमदोर्जित-गर्जित-कुञ्जर-कुम्भकुचे।
प्रणत—सुराऽसुर—मौलिमणि—स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। १६ ।।
विजित— सहस्त्रकरैक — सहस्त्रकरैक — सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक — सङ्गरतारक — सङ्गरतारक — सूनुसुते
सुरथसमाधि — समानसमाधि— समानसमाधि—सुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। १७ ।।
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १८ ।।
कनकलसत् — कलशीक जलै रनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं
भजति स किं न शची-कुच -कुम्भ-नटीपरिरम्भ—सुखानुभवम्
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवं
जय जय हे महिषासुर—मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। १९ ।।
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्न नुकूलयते
किमु पुरुहूत—पुरीन्दुमुखी— सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। २० ।।
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। २१ ।।
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना, नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्।। २२ ।।

।। इति श्रीसङ्कटा—स्तुतिः सम्पूर्णा।।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।१।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
प्रपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।२।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।३।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।४।।
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।५।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।६।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।७।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।८।।

रुद्राष्टक

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।१।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।२।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठेभुजंगा।।३।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।५।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।।
न यावद् उमानथ पादारविन्दं
भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।८।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नराः भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।
इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीकालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। १ ।।
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। २ ।।
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ३ ।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ४ ।।
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ५ ।।
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालद्रंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ६ ।।
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ७ ।।
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ८ ।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्। शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम्।।
।। श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचित कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्।।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं धुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।
।। इति श्रीमद्वाल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्रावणकृष्णपक्षः

शक १९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, दक्षिणायनं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, [illegible] अशुद्धः।
दिनांक १७ जुलाई तः १ अगस्त यावत् सन् २०१९ ई। मार्गी [illegible] गुरु-शनी, मार्गी पूर्वास्त शुक्र।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्र	समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	समा.कालः द. प.	करण द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांका ने.	अं.
१	बु.	५४।५१	रा.३।११	उत्तराषाढ़ा	४३।३०	रा.१०।३६	विष्कुम्भ	५७।१८	बालव २४।२१	मकर	अहोरात्रं	३।००।१७।४३	३३।४४	५।१५	६।४५	२६	१	१७
२	गु.	५८।५३	रा.४।४८	श्रवण	४८।५७	रा.१२।५०	प्रीति	५८।१०	तैतिल२६।५२	मकर	अहोरात्रं	३।०१।१४।४२	३३।४३	५।१५	६।४५	२७	२	१८
३	शु.	६०।००	समस्त	धनिष्ठा	५५।०५	रा.३।१८	आयुष्मान	५६।३२	वणिज् ३१।१४	मकर २२।०१	दि.२।०४	३।०२।११।४०	३३।४२	५।१६	६।४४	२८	३	१९
३	श.	०३।३५	प्रा.६।४२	शतभिषा	६०।००	समस्त	सौभाग्य	६०।००	भद्रा ३।०५	कुम्भ	अहोरात्रं	३।०३।०८।३८	३३।४०	५।१६	६।४४	२९	४	२०
४	र.	०८।३८	दि.८।४३	शतभिषा	०१।३८	प्रा.५।५५	सौभाग्य	०१।११	बालव ८।३८	कुम्भ ५१।२८	रा.१।५१	३।०४।०५।३६	३३।३८	५।१६	६।४४	३०	५	२१
५	चं.	१३।३४	दि.१०।४३	पूर्वाभाद्रपद	०८।०५	दि.८।३१	शोभन	०२।४७	तैतिल १३।३४	मीन	अहोरात्रं	३।०५।०२।३४	३३।३६	५।१७	६।४३	३१	६	२२
६	मं.	१७।५६	दि.१२।२६	उत्तराभाद्रपद	१४।०६	दि.१०।५५	अतिगण्ड	०४।०४	वणिज् १७।५६	मीन	अहोरात्रं	३।०५।५६।३२	३३।३४	५।१७	६।४३	१	७	२३
७	बु.	२१।३६	दि.१।५६	रेवती	१९।१९	दि.१।०२	सुकर्मा	०४।४५	बव २१।३६	मीन १९।१९	दि.१।०२	३।०६।५६।३०	३३।३२	५।१८	६।४२	२	८	२४
८	गु.	२४।०२	दि.२।५५	अश्विनी	२३।२५	दि.२।४०	धृति	०४।३५	कौलव ४।०२	मेष	अहोरात्रं	३।०७।५३।३५	३३।३१	५।१८	६।४२	३	९	२५
९	शु.	२५।२१	दि.३।२६	भरणी	२६।२५	दि.३।५२	शूल	०३।३६	गर २५।२१	मेष ४१।५१	रा.१०।०२	३।०८।५०।४०	३३।३०	५।१८	६।४२	४	१०	२६
१०	श.	२५।१९	दि.३।२७	कृत्तिका	२८।०७	दि.४।३४	गण्ड	०१।२९	भद्रा २५।१९	वृष	अहोरात्रं	३।०९।४७।४५	३३।२७	५।१९	६।४१	५	११	२७
११	र.	२४।०४	दि.२।५७	रोहिणी	२८।३६	दि.४।४५	ध्रुव	५४।१५	बालव २४।०४	वृष ५८।२१	रा.४।३९	३।१०।४४।५०	३३।२४	५।१९	६।४१	६	१२	२८
१२	चं.	२१।३५	दि.१।५८	मृगशिरा	२८।०५	दि.४।३४	व्याघात	४९।१५	तैतिल २१।३५	मिथुन	अहोरात्रं	३।११।४१।५५	३३।२१	५।२०	६।४०	७	१३	२९
१३	मं.	१८।०३	दि.१२।३३	आर्द्रा	२६।१०	दि.३।४८	हर्षण	४३।२९	वणिज् १८।०३	मिथुन	अहोरात्रं	३।१२।३८।५९	३३।१८	५।२०	६।४०	८	१४	३०
१४	बु.	१३।४०	दि.१०।४९	पुनर्वसु	२३।३५	दि.२।४७	वज्र	३७।०२	शकुनी १३।४०	मिथुन ६।१४	दि.९।०३	३।१३।३६।०३	३३।१५	५।२१	६।३९	९	१५	३१
३०	गु.	०८।३०	दि.८।४६	पुष्य	२०।१८	दि.१।२९	सिद्धि	३०।०३	नाग ८।३०	कर्क	अहोरात्रं	३।१४।३३।१६	३३।१२	५।२२	६।३८	१०	१६	१

ने.	अं.	विवरण
१	१७	श्रावणवर्जपंच्छाकम्। मैथिल नववर्षारम्भः। शिववासः, अमृतयोगः अहोरात्र, कर्के रविः २८।१० दि.४।३१, मु.४५ फलं समर्घकारकम्, [illegible] पुण्यकालः ←
२	१८	मासादिः। अग्निवासः, अशून्यशयन २ व्रतं,श्रीलक्ष्मीयुतविष्णुंपर्यंके [illegible]। प्रार्थनामन्त्रः-[illegible] ☾
३	१९	अश्लेषायां मंगल २६।२६।, बीजवपनं, धान्यछेदनं, भद्रा ३१।१४ उ.। पूर्वयात्रा। ☾ [illegible] पञ्चकारम्भः(मदवा) रा.१२।५० उ.।
४	२०	श्रीगणाधिप ४ व्रत। शिववासः-अग्निवासः प्रातः६।४२ उ., सिद्धियोगः-राज्यप्रदयोगश्च प्रा.६।४२ उ., भद्रा ३।०५ या.। पुष्ये रविः५८।४८ रा.४।४१, [illegible]
५	२१	शिववासः, अमृतयोगः दि.८।४३ उ.। ←दि.१२।०० उपरि दिने पुण्याहः। दक्षिणायनारम्भः, वर्षा ऋतुः, ने.श्रावणमासारम्भः
६	२२	मौना५, नागपंचमी५, मनसादेवीपूजन-मुत्थापनञ्च। मधुश्रावणीपूजारम्भः। सोमवासरव्रत,दग्धातिथि दि.१०।४३ उ.। शिववासः दि.१०।४३ या. ततः अग्निवासः, सिद्धियोग, ♍
७	२३	मृत्युयोगः दि.१२।२६ या. ततः अमृतयोगः, भद्रा १७।५६ तः ४६।४८ या., दग्धातिथि दि.१२।२६ या.। पश्चिमयात्रा [illegible] ❖विपणि, वस्तुनाक्रयः-हलप्रवहणं, बीजवपनं,
८	२४	श्रीशीतलासप्तमी(मध्याह्ने), कालाष्टमी व्रतं, पञ्चकसमाप्तिः(मदवा) दि.१।०२ उ., शिववासः दि.१।२६ उ., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.१।२६ या. ततः मृत्युयोगः, ❖
९	२५	इन्द्रसावर्णिमन्वादि, शिववासः दि.२।५५ या., सिद्धियोगः दि.२।५५ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।४० या.। पश्चिमे दिनयात्रा [illegible]। ♋
१०	२६	अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.३।२६ या., भद्रा ५५।२० या.। ♋ विपणि दि.२।४० या.,वृक्षादिरोपणं-बीजवपनं दि.२।४० या.। पुष्ये शुक्र ४६।१०
११	२७	वृद्धियोगमानं५६।५२। शिववासः दि.३।२७ उ. मृत्युयोगः ३।२७ या. ततः अमृतयोगः, दक्षिणयात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगः दि.४।३४ उ., भद्रा२५।१९ या.।
१२	२८	कामदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। शिववासः, अग्निवासः दि.२।५७ या, मृत्युयोगः दि.२।५७ या. ततः पूर्वदक्षिण यात्रा दि.४।४५ या. ततः पश्चिमे दिनयात्रा।
१३	२९	दूर्वादलेन पारणं, सोमप्रदोष १३ व्रतं, सोमवासरव्रतं, शिववासः दि.१।५८ या.ततः अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.१।५८ या. ततः पूर्वे दिनयात्रा दि.४।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोग ♐
१४	३०	प्रदोष १४ व्रतं, अग्निवासः दि.१२।३३ या., सिद्धियोगः दि.१२।३३ ततः राज्यप्रदयोगः, भद्रा १८।०३ तः ४५।५२ या.। [illegible] बुधः [illegible]।
१५	३१	श्राद्धादौ३०, शिववासः-अग्निवासः दि.१०।४९ उ., धान्यछेदनं दि.२।४७ उ.। मार्गी बुध ३५।२५। ♐ वृक्षादिरोपणं-वस्तुनांक्रयः-हलप्रवहणं-बीजन्यासनं दि.४।३४ या.।
१६	१	अगस्त ८। श्रावणी३०, अमावस्या स्नानदान-श्राद्धादौ। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं, हरियाली३०, देवसावर्णिमन्वादिः गुरुपुष्ययोगः दि.१।२९ या.,शिववासः दि.८।४६ या ♎ ♍मौनचालं-वस्तुनांविक्रयः-बीजवनं-धान्यरोपणं,बीजन्यासनं दि.८।३१ या. ततः वीपणि। कर्के शुक्रः २।४६। पश्चिमोत्तरयात्रा पंचम्यान्। ♎ अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.८।४६ या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।२९ या.। विपणि दि.८।४६ तः १।२९ या.।

१ बुधे वल्ली८।३६।३०।१६
अयनांशः २२।४८।१२

७ बुधे वल्ली८।३६।३०।२३
अयनांशः २२।४८।१३

१४ बुधे वल्ली८।३६।३०।३०
अयनांशः २२।४८।१४

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध वक्री राश्यादि	वक्री गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१	बु.	३।१५।०५।४९	२।२६।३३।००	७।२३।४१।१०	२।२३।४९।०४	८।१९।०४।४५	८।२८।२५।११
२	गु.	३।१५।४४।२३	२।२५।५४।३५	७।२३।३५।४६	२।२५।०२।३२	८।१९।००।०५	८।२५।२२।०१
३	शु.	३।१६।२२।५७	२।२५।२१।०८	७।२३।३०।३१	२।२६।१६।००	८।१८।५५।२९	८।२५।१८।५०
३	श.	३।१७।०१।३१	२।२४।५३।१५	७।२३।२५।२६	२।२७।२९।२८	८।१८।५०।४८	८।२५।१५।३९
४	र.	३।१७।४०।०५	२।२४।३१।२४	७।२३।२०।३१	२।२८।४२।५८	८।१८।४६।१२	८।२५।१२।२८
५	चं.	३।१८।१८।३८	२।२४।१५।५४	७।२३।१५।४६	२।२९।५६।२९	८।१८।४१।३८	८।२५।०९।१७
६	मं.	३।१८।५७।१४	२।२४।०६।५७	७।२३।११।११	३।०१।१०।००	८।१८।३७।०७	८।२५।०६।०७
७	बु.	३।१९।३५।४७	२।२४।०४।[illegible]	७।२३।०६।४७	३।०२।२३।३२	८।१८।३२।३७	८।२५।०२।५६
८	गु.	३।२०।१४।२१	२।२४।०८।५४	७।२३।०२।३३	३।०३।३७।०५	८।१८।२८।०९	८।२४।५९।४५
९	शु.	३।२०।५२।५२	२।२४।१९।४०	७।२२।५८।३०	३।०४।५०।३९	८।१८।२३।४४	८।२४।५६।३४
१०	श.	३।२१।३१।२५	२।२४।३६।४७	७।२२।५४।३८	३।०६।०४।१४	८।१८।१९।२१	८।२४।५३।२३
११	र.	३।२२।०९।५९	२।२५।००।०१	७।२२।५०।५७	३।०७।१७।४९	८।१८।१५।००	८।२४।५०।१३
१२	चं.	३।२२।४८।३४	२।२५।२९।०८	७।२२।४७।२७	३।०८।३१।२६	८।१८।१०।४३	८।२४।४७।०२
१३	मं.	३।२३।२७।०७	२।२६।०३।५१	७।२२।४४।०८	३।०९।४५।०३	८।१८।०६।२८	८।२४।४३।५१
१४	बु.	३।२४।०५।४०	२।२६।४३।५४	७।२२।४१।००	३।१०।५८।४१	८।१८।०२।१६	८।२४।४०।४०
३०	गु.	३।२४।४४।११	२।२७।२९।००	७।२२।३८।०७	३।१२।१२।२०	८।१७।५८।०७	८।२४।३७।२९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमानं	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४६।५१	१।०८	३।०४	५।१७	७।३५	९।५१	१२।०६	१४।२३	१६।४०	१८।४५	२०।३१	२२।०२	२३।३१
४६।५१	१।०४	३।००	५।१३	७।३१	९।४७	१२।०२	१४।१९	१६।३६	१८।४१	२०।२७	२१।५८	२३।२७
४६।५१	१।००	२।५६	५।०९	७।२७	९।४३	११।५८	१४।१५	१६।३२	१८।३७	२०।२३	२१।५४	२३।२३
४६।५०	०।५६	२।५२	५।०५	७।२३	९।३९	११।५४	१४।११	१६।२८	१८।३३	२०।१९	२१।५०	२३।१९
४६।४९	०।५२	२।४८	५।०१	७।१९	९।३५	११।५०	१४।०७	१६।२४	१८।२९	२०।१५	२१।४६	२३।१५
४६।४८	०।४८	२।४४	४।५७	७।१५	९।३१	११।४६	१४।०३	१६।२०	१८।२५	२०।११	२१।४२	२३।११
४६।४७	०।४४	२।४०	४।५३	७।११	९।२७	११।४२	१३।५९	१६।१६	१८।२१	२०।०७	२१।३८	२३।०७
४६।४६	०।४०	२।३६	४।४९	७।०७	९।२३	११।३८	१३।५५	१६।१२	१८।१७	२०।०३	२१।३४	२३।०३
४६।४५	०।३५	२।३१	४।४४	७।०२	९।१८	११।३३	१३।५०	१६।०७	१८।१२	१९।५८	२१।२९	२२।५८
४६।४५	०।३१	२।२७	४।४०	६।५८	९।१४	११।२९	१३।४६	१६।०३	१८।०८	१९।५४	२१।२५	२२।५४
४६।४३	०।२७	२।२३	४।३६	६।५४	९।१०	११।२५	१३।४२	१५।५९	१८।०४	१९।५०	२१।२१	२२।५०
४६।४१	०।२३	२।१९	४।३२	६।५०	९।०६	११।२१	१३।३८	१५।५५	१८।००	१९।४६	२१।१७	२२।४६
४६।३९	०।१९	२।१५	४।२८	६।४६	९।०२	११।१७	१३।३४	१५।५१	१७।५६	१९।४२	२१।१३	२२।४२
४६।३८	०।१५	२।११	४।२४	६।४२	८।५८	११।१३	१३।३०	१५।४७	१७।५२	१९।३८	२१।०९	२२।३८
४६।३७	०।११	२।०७	४।२०	६।३८	८।५४	११।०९	१३।२६	१५।४३	१७।४८	१९।३४	२१।०५	२२।३४
४६।३६	०।०७	२।०३	४।१६	६।३४	८।५०	११।०५	१३।२२	१५।३९	१७।४४	१९।३०	२१।०१	२२।३०

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	बु.	दि.८:३८ - १०:३८। दि.१२:००-१:४१	रा.१२:००-१:१६। रा.२:३८-३:५७।
२	गु.	दि.३:२२ - ६:४४।	रा.१२:००-१:१६ रा.३:५७-५:१६
३	शु.	दि.८:३६ - १२:०१।	रा.६:२३-१०:४२।
३	श.	प्रा.५:१७-६:५८ दि.१:४२-३:२३। दि.५:३-६:४३	सा.६:४३-८:०३ रा.१:२०-२:३६ रा.३:५८-५:१७
४	र.	दि.१०:२० -१:४२ ।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.१:२०-२:३६।
५	चं.	दि.६:५६-८:४०। दि.३:२२-५:०२।	रा.१०:४२-१२:०२ रा.२:३०-३:४६।
६	मं.	दि.६:५६-८:४० । दि.३:२२-५:०२।	रा.८।०२-९:२२
७	बु.	दि.८:४१-१०:२१। दि.१२:०१-१:४१।	रा.१२:०१-१:२६। रा.२।४१-५।१६।
८	गु.	दि.३:२६-६:४१	रा.१२:०१-१:२६। रा.४:००-५:१६।
९	शु.	दि.८:४०-१२:००।	रा.६:२०-१०:४०।
१०	श.	प्रा.५:२६-७:१ दि१:४६-३:२६ सा४:५०-६:३६	सा.६:३६-८:०० रा.१:२६-२:४१।
११	र.	दि.१०:२१-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०१।। रा.१:२६-२-४१।
१२	चं.	दि.७:०२-८:४२। दि.३:२०-४:५६।	रा.१०:४१-१२:०२ रा.२:४२-४:०२।
१३	मं.	दि.७:०३-८:४३। दि.१:४०-३:२६।	रा.७:५८-९:२६।
१४	बु.	दि.८:४३-१०:२२। दि.१२:०१-१:४०।	रा.१२:११-१:३२। रा.२:५३-४:१३।
३०	गु.	दि.३:१८-६:३६।	रा.१२:००-१:१६। रा.४:०३-५:२४।

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.६ मंगल दि.१०।५५ तः ति ८ गु० दि.२।४० या.। आश्लेषा/मघा ति.३० गुरु दि.१।२९ तः

विविधः—श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्याः उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। सोमवारव्रतं- सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्। पञ्चम्यां नागपूजनं—श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्यो गोमयेन विषोल्बणः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वाकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः। ये तस्यां पूजयन्तीह [illegible]। तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्।

पञ्चम्यां-तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरं। शकुनम्- श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा शुभिक्षम्। नभसि शुक्ल दलेऽचलेसंज्ञके रवितिथावुदयो । रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा वहुतोयदाः।

रुद्राभिषेक में विशेष द्रव्य विचार-

ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया।। घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्। तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः।। प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः।। शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्। श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शंकरस्य च।। सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह। मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात्।। पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा। जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै।। पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा। महालिंगाभिषेकेण सुप्रीतः शंकरो मुदा।। कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्।।

बिल्वाष्टकम्- त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम।।१।। त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।२।। अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे। शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३।। शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्। सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४।। दन्तिकोटि-सहस्राणि वाजपेयशतानि च। कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।५।। लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्। बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।६।। दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।७।। मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।८।। बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।।९।।

श्रावण मास भगवान् शिव के विशेष प्रिये है, इस मास में प्रतिदिन पार्थिव पूजन, रुद्राभिषेक, भजन किर्तन आदि करना चाहिए, इस मास मे शिववास का विचार करना आवश्यक नही है।

श्रावणशुक्लपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२६, दक्षिणायनं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, पश्चिमे कालः, अशुद्धः।
दिनांक २ अगस्त तः १५ अगस्त यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी पश्चिमास्तः कुज, मार्गी बुध पश्चिमास्त, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरु-शनी, मार्गी पूर्वास्त शुक्र।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.काल द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः नें.	अं.
२	शु.	०२।५०	प्रा.६।३०	आश्लेषा	१६।३२	दि.११।५६	व्यतीपात्	२२।४०	बव	२।५०	कर्क १६।३२	दि.११।५६	३।१५।३०।२६	३३।०६	५।२२	६।३८	११	१७	२
३	श.	५०।३५	रा.१।३७	मघा	१२।२७	दि.१०।२२	वरीयान्	१५।०६	तैतिल	२३।४०	सिंह	अहोरात्रं	३।१६।२७।४२	३३।०६	५।२३	६।३७	१२	१८	३
४	र.	४४।२४	रा.११।०६	पूर्वाफाल्गुनी	०७।१३	दि.८।१६	परिघ	०७।२३	वणिज्	१७।३०	सिंह २१।१२	दि.१।५२	३।१७।२४।५४	३३।०३	५।२३	६।३७	१३	१९	४
५	चं.	३८।३१	रा.८।४८	उत्तराफाल्गुनी	०३।०७	दि.६।३६	सिद्ध	५२।२८	बव	११।२८	कन्या	अहोरात्रं	३।१८।२२।०६	३३।००	५।२४	६।३६	१४	२०	५
६	मं.	३३।०१	सा.६।३७	हस्त	००।२०	प्रा.५।३३	साध्य	४५।३०	कौलव	५।४६	कन्या २८।५३	सा.४।५८	३।१९।१९।१८	३२।५७	५।२५	६।३५	१५	२१	६
७	बु.	२८।०८	दि.४।४०	स्वाती	५४।३२	रा.३।१४	शुभ	३६।०७	गर	००।३५	तुला	अहोरात्रं	३।२०।१६।२६	३२।५४	५।२५	६।३५	१६	२२	७
८	गु.	२४।०५	दि.३।०४	विशाखा	५२।४६	रा.२।३४	शुक्ल	३३।२४	बव	२४।०५	तुला३८१५	रा.८।४४	३।२१।१३।४७	३२।५२	५।२६	६।३४	१७	२३	८
९	शु.	२१।००	दि.१।५०	अनुराधा	५०।०७	रा.१।२६	ब्रह्म	२८।२८	कौलव	२१।००	वृश्चिक	अहोरात्रं	३।२२।११।०६	३२।४६	५।२६	६।३४	१८	२४	९
१०	श.	१९।००	दि.१।०३	ज्येष्ठा	५२।३७	रा.२।३०	ऐन्द्र	२४।२६	गर	१९।००	वृश्चिक५२।३७	रा.२।३०	३।२३।०८।२६	३२।४६	५।२७	६।३३	१९	२५	१०
११	र.	१८।११	दि.१२।४३	मूल	५४।२१	रा.३।११	वैधृति	२१।२२	भद्रा	१८।११	धनु	अहोरात्रं	३।२४।०५।४७	३२।४३	५।२७	६।३३	२०	२६	११
१२	चं.	१८।४२	दि.१२।५७	पूर्वाषाढ़ा	५७।२२	रा.४।२५	विष्कुम्भ	१९।१९	बालव	१८।४२	धनु	अहोरात्रं	३।२५।०३।०९	३२।४०	५।२८	६।३२	२१	२७	१२
१३	मं.	२०।३६	दि.१।४३	उत्तराषाढ़ा	६०।००	समस्त	प्रीति	१८।२१	तैतिल	२०।३६	धनु १३।२४	दि.१०।५१	३।२६।००।३३	३२।३७	५।२९	६।३१	२२	२८	१३
१४	बु.	२३।३१	दि.२।५३	उत्तराषाढ़ा	०१।२९	प्रा.६।०५	आयुष्मान	१८।१०	वणिज्	२३।३१	मकर	अहोरात्रं	३।२६।५८।००	३२।३४	५।२९	६।३१	२३	२९	१४
१५	गु.	२७।३१	दि.४।३०	श्रवण	०६।४३	दि.८।११	सौभाग्य	१८।५१	बव	२७।३१	मकर ३६।४३	रा.६।२३	३।२७।५५।३४	३२।३०	५।३०	६।३०	२४	३०	१५

दिनांकाः नें.	अं.	
१७	२	**द्वितीयातिथिमानं ५३।५६ रा.२।५७। दोलोत्सवारम्भः(झूलन)। चन्द्रदर्शनं**, सौम्यश्रृंग सुभिक्षकरं, मु.३० समासमताकरम्। धर्मसम्राट **स्वामीकरपात्रि जयन्ती।** अग्निवासः प्रा.६।३० या. ततः शिववासः, ←
१८	३	**मधुश्रावणीव्रत समाप्तिः।** स्वर्णगौरी व्रतं, अग्निवासः, **आश्लेषायां रविः ५९।२८ रा.शे.५।१०,** स्त्री.स्त्री.सू.चं.योगो मण्डुकवाहन जलनाड़ी तदीशो बुधः वायु अतिवृष्टियोग। कर्के बुधः ४८।०४।
१९	४	शिवयोगमानं ५२।२७। श्रीगणेश ४ व्रतं, अमृतयोगः रा.११।०६या.। भद्रा १७ ३० तः ४४।२४ या.।आश्लेषायां शुक्रः३७।४०। ← सिद्धियोगः प्रा.६।३० या. ततः मृत्युयोगः। मीलचानं, वस्तुनां विक्रयः दि.११।५६ या।
२०	५	**नागपञ्चमी** नागपूजनं, लघुपद्मनामा नागराजो श्वेतवर्णो द्वारमुभयतः गोमयनिर्मिता नागाः सिन्दूरदूर्वादुग्धलाजादिभिः पूज्याः। **ऋग्वेदिनांमुपाकर्म(श्रावणी)।** सोमवासरव्रतं, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः, **विपणि,** ♍
२१	६	चित्रानक्षत्रमानं ५६।४५ रा.४।०७, शिववासः सा.६।३७ या. ततः अग्निवासः, मृत्युयोगः सा.६।३७ या. ततः अमृतयोगः, द्विपुष्करयोगः सा.६।३७ उ.। पुष्ये बुध ५१।५४। ♍ हलप्रवणं, वीजवपनं, वीजस्थापनं, ।
२२	७	शीतला७, श्रीशीतलापूजन। गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। अग्निवासः दि.४।४० या., सिद्धियोगः दि.४।४०० या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा२८।०८ तः ५६।०७ या., वस्तुनांक्रय दि.४।४० या, हलप्रवहणं, वीजवपनं,।
२३	८	शिववासः-अग्निवासः दि.३।०४ उ., अमृतयोगः दि.३।०४ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.२।३९ उ., वृक्षादिरोपणं, धान्यछेदनं,
२४	९	शिववासः-अग्निवासः दि.१।५० या., अमृतयोगः दि.१।५० या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१।२६ या.। मघायां सिंहे मंगल ११।०३। **विपणिः-वस्तुनांक्रयः** दि.१।५० उ.,वृक्षादिरोपणं, वृक्षादिरोपणं, वीजवपनं नवम्यां,
२५	१०	अग्निवासः दि.१।०३ उ., मृत्युयोगः दि.१।०३ या. ततः अमृतयोगः, भद्रा १८।११ या.,
२६	११	**पुत्रदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्।** पञ्चदिनात्मकदोलोत्सवारम्भः, शिववासः दि.१२।४३ उ., मृत्युयोगः दि.१२।४३ या., भद्रा १८।११ या., धान्यरोपणं, धान्यछेदनं,
२७	१२	दूर्वादलेनपारणम्। श्रीधर१२। **सोमप्रदोष१३** व्रतं, पुत्रार्थिभिरत्रव्रातारम्भो विधेयः, सोमवासरव्रतं, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.१२।५७ या. मीलचानं-वस्तुनां विक्रयः दि.१२।५७ उ., धान्यछेदनं,
२८	१३	**प्रदोष** १४ व्रतं, शिववासः दि.१।४३ या., सिद्धियोगः दि.१।४३ या. ततः राज्यप्रदयोगः, **वस्तुनां क्रयः दि.१।४३ या.,** वीजपवनं, धान्यछेदनं,
२९	१४	व्रतादौ पूर्णिमा, अग्निवासः, भद्रा २३।३१ तः ५५।३१ या., **वस्तुनां क्रयः दि.२।५३ उ., भारतीय स्वतन्त्रतादिवसः७४ तमः** राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, मार्गीगुरु ४३।२८। मघायां सिंहे शुक्र२८।०३।
३०	१५	श्रावणी१५ पूर्णिमा, स्नानदानादि, उपाकर्म, **रक्षाबन्धनम् सूर्योदयात्। संस्कृतदिवसः,** दोलोत्सवान्त, हयग्रीवावतारः। शिववासः दि.४।३० उ., सिद्धियोगः दि.४।३० या, **पञ्चकारम्भ(मदवा)दि.८।११ उ.,**

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ शु.	३।२५।२२।४४	२।२८।१८।४८	७।२२।३५।२२	३।१३।२६।००	८।१७।५४।०२	८।२४।३४।१८
३ श.	३।२६।०१।१६	२।२९।१३।०६	७।२२।३२।५०	३।१४।३९।४१	८।१७।५०।०१	८।२४।३१।०८
४ र.	३।२६।३६।४६	३।००।११।३५	७।२२।३०।२८	३।१५।५३।२३	८।१७।४६।०३	८।२४।२७।५७
५ चं.	३।२७।१८।२२	३।०१।१३।५९	७।२२।२८।१८	३।१७।०७।०६	८।१७।४२।०६	८।२४।२४।४६
६ मं.	३।२७।५६।५५	३।०२।२०।०३	७।२२।२६।२१	३।१८।२०।५०	८।१७।३८।१८	८।२४।२१।३५
७ बु.	३।२८।३५।२८	३।०३।२९।३३	७।२२।२४।३७	३।१९।३४।३४	८।१७।३४।३२	८।२४।१८।२४
८ गु.	३।२९।१४।००	३।०४।४२।१४	७।२२।२३।०२	३।२०।४८।२०	८।१७।३०।४६	८।२४।१५।१३
९ शु.	३।२९।५२।३३	३।०५।५७।५४	७।२२।२१।४१	३।२२।०२।०६	८।१७।२७।११	८।२४।१२।०३
१० श.	४।००।३१।०६	३।०७।१६।२०	७।२२।२०।३२	३।२३।१५।५३	८।१७।२३।३७	८।२४।०८।५२
११ र.	४।०१।०९।३६	३।०८।३७।२१	७।२२।१९।३४	३।२४।२९।४१	८।१७।२०।०८	८।२४।०५।४१
१२ चं.	४।०१।४८।११	३।१०।००।४५	७।२२।१८।४९	३।२५।४३।३०	८।१७।१६।४३	८।२४।०२।३०
१३ मं.	४।०२।२६।४४	३।११।२६।२४	७।२२।१८।१६	३।२६।५७।१९	८।१७।१३।२२	८।२३।५९।१९
१४ बु.	४।०३।०५।१७	३।१२।५४।०७	७।२२।१७।५५	३।२८।११।०९	८।१७।१०।०८	८।२३।५६।०९
१५ गु.	४।०३।४३।४९	३।१४।२३।४६	७।२२।१७।४६	३।२९।२५।००	८।१७।०६।५६	८।२३।५२।५८

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४६।३४	००।०४	२।००	४।१३	६।३१	८।४७	११।०२	१३।१९	१५।३६	१७।४१	१९।२७	२०।५८	२२।२७
४६।३२	००।००	१।५६	४।०९	६।२७	८।४३	१०।५८	१३।१५	१५।३२	१७।३७	१९।२३	२०।५४	२२।२३
४६।३०	२३।५७	१।५३	४।०६	६।२४	८।४०	१०।५५	१३।१२	१५।२९	१७।३४	१९।२०	२०।५१	२२।२०
४६।२९	२३।५३	१।४९	४।०२	६।२०	८।३६	१०।५१	१३।०८	१५।२५	१७।३०	१९।१६	२०।४७	२२।१६
४६।२८	२३।४९	१।४५	३।५८	६।१६	८।३२	१०।४७	१३।०४	१५।२१	१७।२६	१९।१२	२०।४३	२२।१२
४६।२७	२३।४६	१।४२	३।५५	६।१३	८।२९	१०।४४	१३।०१	१५।१८	१७।२३	१९।०९	२०।४०	२२।०९
४६।२६	२३।४२	१।३८	३।५१	६।०९	८।२५	१०।४०	१२।५७	१५।१४	१७।१९	१९।०५	२०।३६	२२।०५
४६।२४	२३।३८	१।३४	३।४७	६।०५	८।२१	१०।३६	१२।५३	१५।१०	१७।१५	१९।०१	२०।३२	२२।०१
४६।२२	२३।३५	१।३१	३।४४	६।०२	८।१८	१०।३३	१२।५०	१५।०७	१७।१२	१८।५८	२०।२९	२१।५८
४६।२०	२३।३१	१।२७	३।४०	५।५८	८।१४	१०।२९	१२।४६	१५।०३	१७।०८	१८।५४	२०।२५	२१।५४
४६।१८	२३।२७	१।२३	३।३६	५।५४	८।१०	१०।२५	१२।४२	१४।५९	१७।०४	१८।५०	२०।२१	२१।५०
४६।१७	२३।२३	१।१९	३।३२	५।५०	८।०६	१०।२१	१२।३८	१४।५५	१७।००	१८।४६	२०।१७	२१।४६
४६।१६	२३।२०	१।१६	३।२९	५।४७	८।०३	१०।१८	१२।३५	१४।५२	१६।५७	१८।४३	२०।१४	२१।४३
४६।१५	२३।१६	१।१२	३।२५	५।४३	७।५९	१०।१४	१२।३१	१४।४८	१६।५३	१८।३९	२०।१०	२१।३९

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शु.	दि.८:४२-१२:००।	रा.६:१८-१०:३६।
३	श.	दि.५:२५-७:०४। दि.१:४०-३:१९ दि.४:१७-६:३५।	रा.६:३५-७:५७। सा.१:२२-२:४३। रा.४:०४-५:।
४	र.	दि.१०:३३-१:३८।	रा.१०:३८-११:५८। रा.१:१९-२:४०।
५	चं.	दि.७:०५-८:४४। दि.३:१७-४:५४।	रा.१०:३८-११:५८। रा.२:४०-४:०१।
६	मं.	दि.७:०६-८:४५। दि.१:३९-३:१८।	रा.७:५५-९:१७।
७	बु.	दि.८:४४-१०:२२। दि.१२:००-१:३८।	रा.१२:००-१:२२। रा.२:४४-४:०६।
८	गु.	दि.३:१६-६:३२।	रा.१२:०-१:२२। रा.४:०६-५:२८।
९	शु.	दि.८:४५-१२:०१।	रा.६:१७-१०:४०।
१०	श.	सा.५:२९-७:०७। दि.१:३९-३:१७। सा.४:१७-६:३१	रा.६:३१-७:५४। रा.१:२४-२:४६। रा.४:०८-५:३०।
११	र.	दि.१०:२-१:३९।	रा.१०:३९-१२:०२ रा.१:२४-२:४६।
१२	चं.	दि.७:०८-८:४६। दि.३:१६-४:५३।	रा.१०:३९-१२:०२। रा.१:२४-२:४६।
१३	मं.	दि.७:०९-८:४७। दि.१:३८-३:१५।।	रा.७:५२-९:१५।
१४	बु.	दि..८:४६-१०:२३। दि.१२:००-१:३७।	रा.१२:००-१:२३।। रा.२:४६-४:०९।
१५	गु.	दि.३:१४-५:२८।	रा.१२:००-१:२३ रा.४:०९-५:३२

रक्षाबन्धनमन्त्रः- येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।।
वृक्षारोपणमन्त्रः- वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।।
प्रदक्षिणविधिः - एकं चण्ड्या रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।।
आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्।।

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा- ति.३ शनिवार दि.१०।२२ या.।
ज्येष्ठा/मूल- ति.९ शुक्र रा.१।२९ तः ति.११ रवि रा.३।११ या.।

पूजन विशेष- मंगलागौरी व्रतक विशेषता आ संकल्प-स्कन्द पुराण में कहल गेल अछि जे- विवाह क बाद पहिल साओन शुक्लपक्षक मंगल दिन ई व्रत करथि। एहिव्रत क केनिहार वैधव्य दुःख नहिं पवैत छथि। विवाह क बाद पाँच वर्ष ई व्रत करथि। **संकल्प**- व्रत केनिहार स्नान सँ पवित्र भय शुद्ध आसन पर बैसि पञ्च देवता तथा गौरीक पूजा कऽ दूबि अक्षत जल चन्दन आ द्रव्य लय-**नमो अद्य श्रावणे मासि शुक्ल-पक्षस्य प्रथम भौमवारे अमुकगोत्रायाः (अपन गोत्र)अमुक देव्या(अपन नाम)इह जन्मनि जन्मान्तरे च सकल- कल्याणोत्पत्तिपूर्वक पुत्रपौत्र-अवैधव्य-धनधान्य-समृद्धि -सकल मनोरथ-सिद्ध्यर्थं यथाशक्ति-** गन्ध पुष्पधूपदीप ताम्बूल वस्त्र-नानाविध **नैवेद्यादिभिः श्रीमङ्गलागौरीव्रतपूजनमहं करिष्ये।**

रक्षाबन्धनम्- श्रावणपूर्णिमायां भद्राशून्यायां रक्षार्थं रक्षिकाबन्धनम्। भद्रायां तन्निषेधमाह स्मृतिः- **भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनी।** **इयं तु पूर्वविद्धा ग्राह्या**-श्रावणी दौर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्वविद्धास्तु कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।। श्रावणी,दुर्गापूजा की नवमी,दुर्वा और होलिका ये पूर्वविद्धा ही करनी चाहिए । इसी तरह शिवरात्रि एवं गोपूजा भी पूर्वविद्धा ही करना चाहिए। **आद्या मधुश्रावणिका कज्जली हरितालिका। चतुर्थीमिश्रिता स्त्रीभिर्दिवानक्ते विधीयते।।** पहली मधुश्रावणी,कजली, हरितालिका व तीज व्रत, स्त्रीयों को चतुर्थीमिश्रित दिनरात में करने का विधान है। रम्भा नामक व्रत को छोड़कर तृतीया में इत्यादि वचनों से चतुर्थीयुतैव करना चाहिए **गणेशचतुर्थीनिर्णय-** भाद्रशुक्लचतुर्थी गणेशचतुर्थी। सा च पूर्वविद्धा ग्राह्य। तृतीयासंयुता या तु सा चतुर्थी फलप्रदा। कर्तव्या व्रतिभिः सा तु गणनाथसुतोषिणी।। **नागपञ्चमी-**श्रावणशुक्लपञ्चमी [illegible] चतुर्थीयुताः कार्याः। पञ्चमी नागपूजादौ कार्या षष्ठीसमन्विता। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरासु चतुर्थिका।

स्मृति-श्रावणे पञ्चमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नागपञ्चमी। तां परित्यज्य पञ्चम्यश्चतुर्थीसहिताः स्मृताः।
ग्रहयोगेनवृष्टिविचारः-बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयः तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

७ बुधे वल्ली८।३६।३०।३७
अयनांशाः २२।४८।१५

ल.१ | ११ | १२ | १० | २ रा. | बु | शु. सू ३ मं | ९ | ४ | ५ | चं. ६ | ७ गु. | श ८ के.

१४ बुधे वल्ली८।३६।३०।४४
अयनांशाः २२।४८।१६

ल.१ | ११ | १२ | १० | २ रा. | बु | शु. सू ३ | ९ चं. | ४ मं | ५ | ६ | ७ गु. | श ८ के.

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१ शु.	३२।१३	सा.६।२४	धनिष्ठा	१२।४२	दि.१०।३६	शोभन	२०।०५	कौलव	३२।१३	कुम्भ	अहोरात्रं	३।२८।५३।०८	३२।२६	५।३१	६।२६	२५
२ श.	३७।१८	रा.८।२६	शतभिषा	१६।१०	दि.१।११	अतिगण्ड	२१।४१	तैतिल	४।४५	कुम्भ	अहोरात्रं	३।२९।५०।४२	३२।२३	५।३१	६।२६	२६
३ र.	४२।१७	रा.१०।२७	पूर्वाभाद्रपद	२५।४२	दि.३।४६	सुकर्मा	२३।१८	वणिज्	६।४८	कुम्भ ६।०४	दि.६।१०	४।००।४८।१६	३२।२०	५।३२	६।२८	२७
४ चं.	४६।४७	रा.१२।१६	उत्तराभाद्रपद	३१।४८	सा.६।११	धृति	२४।३५	बव	१४।३२	मीन	अहोरात्रं	४।०१।४५।५०	३२।१७	५।३३	६।२७	२८
५ मं.	५०।३०	रा.१।४५	रेवती	३७।१२	रा.८।२६	शूल	२५।२४	कौलव	१८।३६	मीन ३७।१२	रा.८।२६	४।०२।४३।२४	३२।१४	५।३३	६।२७	२९
६ बु.	५३।०३	रा.२।४७	अश्विनी	४१।३५	रा.१०।१२	गण्ड	२५।२०	गर	२१।४७	मेष	अहोरात्रं	४।०३।४०।५८	३२।११	५।३४	६।२६	३०
७ गु.	५४।३०	रा.३।२२	भरणी	४४।५१	रा.११।३०	वृद्धि	२४।२४	भद्रा	२३।४७	मेष	अहोरात्रं	४।०४।३८।४५	३२।०८	५।३४	६।२६	३१
८ शु.	५४।३७	रा.३।२६	कृत्तिका	४६।५०	रा.१२।१६	ध्रुव	२२।२७	बालव	२४।३४	मेष ००।२१	प्रा.५।४३	४।०५।३६।३१	३२।०४	५।३५	६।२५	१
९ श.	५३।२७	रा.२।५९	रोहिणी	४७।३४	रा.१२।३८	व्याघात	१९।२८	तैतिल	२४।०२	वृष	अहोरात्रं	४।०६।३४।१७	३२।००	५।३६	६।२४	२
१० र.	५१।०७	रा.२।०४	मृगशिरा	४७।०६	रा.१२।२७	हर्षण	१५।३१	वणिज्	२२।१७	वृष १७।२०	दि.१२।३३	४।०७।३२।०३	३१।५६	५।३७	६।२३	३
११ चं.	४७।४३	रा.१२।४२	आर्द्रा	४५।३२	रा.११।५०	वज्र	१०।४०	बव	१९।२५	मिथुन	अहोरात्रं	४।०८।२९।४९	३१।५३	५।३७	६।२३	४
१२ मं.	४३।२५	रा.११।००	पुनर्वसु	४३।१४	रा.१०।५६	सिद्धि	०५।००	कौलव	१५।३४	मिथुन२८।४९	सा.५।०९	४।०९।२७।३५	३१।५०	५।३८	६।२२	५
१३ बु.	३८।२०	रा.८।५९	पुष्य	४०।०४	रा.९।४२	वरीयान्	५१।४८	गर	१०।५३	कर्क	अहोरात्रं	४।१०।२५।२१	३१।४७	५।३९	६।२१	६
१४ गु.	३२।४३	सा.६।४४	आश्लेषा	३६।२३	रा.८।१२	परिघ	४४।२०	भद्र	५।३२	कर्क ३६।२३	रा.८।१२	४।११।२३।१९	३१।४४	५।३९	६।२१	७
३० शु.	२६।४३	दि.४।२१	मघा	३२।१८	सा.६।३५	शिव	३६।५४	नाग	२६।४३	सिंह	अहोरात्रं	४।१२।२१।१७	३१।४०	५।४०	६।२०	८

भाद्रकृष्णपक्षः।।

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२६, दक्षिणायनं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, पश्चिमे कालः ति.३ तः उत्तरेकालः, अशुद्धः।
दिनांक १६ अगस्त तः ३० अगस्त यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पूर्वास्त; वक्री शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पशिस्तः; मार्गी बुधः पूर्वोदितः ।

दिनांकाः ने.	अं.	
३१	१६	दधिभाद्रपदे त्यजेत्। शिववासः सा.६।२४ या. अग्निवासः अहोरात्रं, सिद्धियोगः सा.६।२४ या. ततः मृत्युयोगः। आश्लेषायां बुधः २५।४०।
३२	१७	**मासान्तः, अशून्यशयन २ व्रत**। कज्जलीनिमित्तकं रात्रौ जागरणं(रतजग्गा)। त्रिपुष्करयोगः दि.१।११ तः रा.८।२६ या., **मघायां सिंहे च रविः ५५।५०** ←
१	१८	कजली(**कजरी**)३ व्रत, गोपूजा३, विशालाक्षीपूजनं३, **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालः** दि.१२।०० यावत् पुण्याहः। **अशुद्धारम्भः**। ने.भाद्रमासारम्भः।। ♍
२	१९	मासादिः, **श्रीविनायक** ४ व्रतं, शिववासः। ♍ **भाद्रीरविव्रतारम्भः**। अग्निवासः। सिद्धियोगः रा.१०।२७ या. भद्रा ६।४८ तः ४२।१७ या.।
३	२०	रक्षापञ्चमी५। **पञ्चकसमाप्तिः(भदवा) रा.८।२६ उ.**। शिववासः, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।२६ उ.,
४	२१	हलधर६ व्रत(**ललहीछठ**)। अमृतयोगः रा.२।४७ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा ५३।०३ उ.,
५	२२	शीतलासप्तमी। अग्निवासः, भद्रा २३।४७ या.। ← **रा.३।५३, मु.३०** समा समताकरम्। पु.स्त्री.चं.सू.योगांमहीषवाहनं नीरानाड़ी तदीशो शुक्रः अतिवृष्टियोगः।
६	२३	शिववासः **श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतं सर्वेषां**, श्रीकृष्णपूजनोत्सवः, **मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं**, श्रीकृष्णावतार, गोकुलाष्टमी,
७	२४	कृष्णाष्टमीव्रतपारणा,(उदयव्यापिनी रोहिणीमतावलम्ब वैष्णवानां श्रीकृष्ण जन्म व्रत),बाबा गणिनाथजयन्त्युत्सवः। अग्निवासः, सिद्धियोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः,
८	२५	**भाद्रीरवि व्रतं**, अग्निवासः, अमृतयोगः, भद्रा २२।१७ तः ५१।०७ या.। मघायां सिंहे बुध ३६।४१।
९	२६	**जयाएकादशी ११ व्रत सर्वेषाम्**। शिववासः, सिद्धियोगः। पूर्वफल्गुन्यां शुक्र१७।३८।
१०	२७	व्यतिपातयोगमानं ५३।३६। कुष्माण्डेनपारणा । शिववासः, अग्निवासः, अमृतसिद्धियोगः, त्रिपुष्करयोगः रा.१०।५६ या.,
११	२८	**प्रदोश**१३ व्रतं। मृत्युयोगः रा.८।५६ या., भद्रा ३८।२० उ.। **🕉 पश्चिमोदितः शुक्र ४८।५६**, पूर्वफल्गुन्यां मंगल५७।२७।
१२	२९	अघोरचतुर्दशी। **प्रदोष १४, दुर्भर१४**, श्रीभैरवपूजनं, द्वापरयुगादिः। शिववासः रा.६।४४ उ., मृत्युयोगः रा.६।४४ या., भद्रा ५।३२ या.। 🕉
१३	३०	भाद्रीअमावस्या ३०, स्नानदान श्राद्धादी पुण्यतमा, कुशीअमावस्या, कुशोत्पाटन ॐ हुं फट् इति मन्त्रेण कुशग्रहणं शिववासः दि.४।२१ या., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.४।२१ उ.,

६ बुधे वल्ली८।३६।३०।५२
अयनांशाः २२।४८।१७

ल.१ | १२ चं. | ११ | १० | २ रा. | बु. ३ | ९ | शु. ४ सू. मं. | ६ | ५ | ७ गु. | ८ श. के.

१३ बुधे वल्ली८।३६।३०।५६
अयनांशाः २२।४८।१८

ल.१ | १२ | ११ | १० | २ रा. | ३ चं. | ९ | शु. ४ सू. मं. बु. | ६ | ५ | ७ गु. | ८ श. के.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ शु.	४।०४।२२।२४	३।१५।५५।१४	७।२२।१७।५०	४।००।३८।५२	८।१७।०३।५१	८।२३।४६।४७	४६।१३	२३।१२	१।०८	३।२१	५।३९	७।५५	१०।१०	१२।२७	१४।४४	१६।४९	१८।३५	२०।०६	२१।३५
२ श.	४।०५।००।५५	३।१७।२८।२०	७।२२।१८।०५	४।०१।५२।४४	८।१७।००।४६	८।२३।४६।३६	४६।११	२३।०८	१।०४	३।१७	५।३५	७।५१	१०।०६	१२।२३	१४।४०	१६।४५	१८।३१	२०।०२	२१।३१
३ र.	४।०५।३६।२८	३।१९।०२।५८	७।२२।१८।२३	४।०३।०६।३८	८।१६।५७।५३	८।२३।४३।२५	४६।०९	२३।०४	१।००	३।१३	५।३१	७।४७	१०।०२	१२।१९	१४।३६	१६।४१	१८।२७	१९।५८	२१।२७
४ चं.	४।०६।१८।००	३।२०।३६।०३	७।२२।१९।१३	४।०४।२०।३२	८।१६।५५।०२	८।२३।४०।१४	४६।०७	२३।००	०।५६	३।०९	५।२७	७।४३	९।५८	१२।१५	१४।३२	१६।३७	१८।२३	१९।५४	२१।२३
५ मं.	४।०६।५६।३३	३।२२।१६।२४	७।२२।२०।०४	४।०५।३४।२६	८।१६।५२।१७	८।२३।३७।०४	४६।०६	२२।५७	०।५३	३।०६	५।२४	७।४०	९।५५	१२।१२	१४।२९	१६।३४	१८।२०	१९।५१	२१।२०
६ बु.	४।०७।३५।०६	३।२३।५५।००	७।२२।२१।०८	४।०६।४८।२२	८।१६।४९।३७	८।२३।३३।५३	४६।०५	२२।५३	०।४९	३।०२	५।२०	७।३६	९।५१	१२।०८	१४।२५	१६।३०	१८।१६	१९।४७	२१।१६
७ गु.	४।०८।१३।३९	३।२५।३४।४३	७।२२।२२।२३	४।०८।०२।१८	८।१६।४७।०२	८।२३।३०।४२	४६।०४	२२।४९	०।४५	२।५८	५।१६	७।३२	९।४७	१२।०४	१४।२१	१६।२६	१८।१२	१९।४३	२१।१२
८ शु.	४।०८।५२।१२	३।२७।१५।३०	७।२२।२३।५१	४।०९।१६।१५	८।१६।४४।३३	८।२३।२७।३१	४६।०२	२२।४६	०।४२	२।५५	५।१३	७।२९	९।४४	१२।०१	१४।१८	१६।२३	१८।०९	१९।४०	२१।०९
९ श.	४।०९।३०।४५	३।२८।५७।१३	७।२२।२५।३१	४।१०।३०।१३	८।१६।४२।१०	८।२३।२४।२०	४६।००	२२।४२	०।३८	२।५१	५।०९	७।२५	९।४०	११।५७	१४।१४	१६।१९	१८।०५	१९।३६	२१।०५
१० र.	४।१०।०९।१८	४।००।३९।४९	७।२२।२७।२२	४।११।४४।१२	८।१६।३९।५२	८।२३।२१।०९	४५।५८	२२।३८	०।३४	२।४७	५।०५	७।२१	९।३६	११।५३	१४।१०	१६।१५	१८।०१	१९।३२	२१।०१
११ चं.	४।१०।४७।५२	४।०२।२३।०९	७।२२।२९।२५	४।१२।५८।११	८।१६।३७।४०	८।२३।१७।५८	४५।५६	२२।३५	०।३१	२।४४	५।०२	७।१८	९।३३	११।५०	१४।०७	१६।१२	१७।५८	१९।२९	२०।५८
१२ मं.	४।११।२६।२६	४।०४।०७।१५	७।२२।३१।४१	४।१४।१२।११	८।१६।३५।३३	८।२३।१४।४८	४५।५४	२२।३१	०।२७	२।४०	४।५८	७।१४	९।२९	११।४६	१४।०३	१६।०८	१७।५४	१९।२५	२०।५४
१३ बु.	४।१२।०५।००	४।०५।५२।०१	७।२२।३४।०७	४।१५।२६।१२	८।१६।३३।३३	८।२३।११।३७	४५।५३	२२।२७	०।२३	२।३६	४।५४	७।१०	९।२५	११।४२	१३।५९	१६।०४	१७।५०	१९।२१	२०।५०
१४ गु.	४।१२।४३।३५	४।०७।३७।२२	७।२२।३६।४६	४।१६।४०।१४	८।१६।३१।३८	८।२३।०८।२६	४५।५२	२२।२४	०।२०	२।३३	४।५१	७।०७	९।२२	११।३९	१३।५६	१६।०१	१७।४७	१९।१८	२०।४७
३० शु.	४।१३।२२।०९	४।०९।२३।१९	७।२२।३९।३६	४।१७।५४।१७	८।१६।२९।४९	८।२३।०५।१५	४५।५०	२२।२०	०।१६	२।२९	४।४७	७।०३	९।१८	११।३५	१३।५२	१५।५७	१७।४३	१९।१४	२०।४३

विविधविषयाः:-भाद्रकृष्णचतुर्थ्यां बहुलापूजा। सा च तृतीयायुता ग्राह्या, **परयुक्ताया** दोषश्रवणात्। भादों कृष्ण चौथ को बहुला पूजा होती है, यह तृतीया युक्तग्राह्य है। परयुक्त दोषावह कहा गया है। भाद्रकृष्णाष्टम्यां **कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्**-तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतं **उदयव्यापिन्यां** कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि** मात्स्ये- कुष्माण्डं महिषीक्षीरं विल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले **समुत्पन्ने** पितरो यान्त्यनाश्रिताः। **श्राद्धे प्रशस्तानि**-उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्र कुतुपस्तिलाः। **महिष्यादिप्रसवदोष**:-माघे बुधे च महिषी श्रावणे **बडवा** दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति। **भादो मे गायप्रसव दोषकारक होता है**- भानौ सिंहगते चैव यस्य गौसम्प्रसूयते। मरणान्तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः।। **मांसाभक्षणफलं महाभारते**- मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर।। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपरतप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, **नन्दिपुराणे**-कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्।। **श्रेष्ठव्रतानि**-ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ शु.	दि.८:४७-१२:०१।	रा.६:१४-१०:३८।
२ श.	सा.५:३४-७:११ दि.१:३८-३:१४ दि.४:५०-३:२६	रा६:२६-७:५० रा१:२५-२:४८ रा४:११-५:३४
३ र.	दि.१०:२५-१:३८।	रा.१०:३८-१२:०२। रा.१:२५-२:४८।
४ चं.	दि.७:११-८:४७ दि.३:१२-४:४६।।	रा.१०:३४-११:५८। रा.२:४६-४:१०।
५ मं.	दि.७:१२-८:४८। दि.१:३६-३:१२।	रा.७:४८-९:१२।
६ बु.	दि.८:४८-१०:२४। दि.१२:००-१:३६।	रा.१२:००-१:२४। रा.२:४८-४:१२।
७ गु.	दि.३:१३-६:२३।	रा.१२:०२-१:२६। रा.४:१४-५:३८।
८ शु.	दि.८:५०-१२:०२।	रा.९:१२-१०:३७।
९ श.	दि.५:३९-७:१५ दि.१:३६-३:११। दि.४:४६:६:२१	रा६:२१-७:४६ रा१:२६-२:५१। रा४:१५-५:३९
१० र.	दि.१०:२६-१:३६।	रा.१०:३६-१२:०१। रा.१:२६-२:५१।
११ चं.	दि.७:१५-८:५०। दि.३:१०-४:४५।	रा.१०:३५-१२:००। रा.२:५०-४:१५।
१२ मं.	दि.७:१६-८:५१। दि.१:३६-३:११।	रा.७:४५-९:११।
१३ बु.	दि.८:५२-१०:२७। दि.१२:०२-१:३६।	रा.१२:०२-१:२७ रा.२:५२-४:१७।
१४ गु.	दि.३:१०-६:१८।	रा.१२:०२-१:२७। रा.४:१७-५:४२।
३० शु.	दि.८:५३-१२:०१।	रा.९:१२-१०:३५।

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.४ चन्द्र सा.६।११ तः ति.६बुध रा.१०।१२ या.।
आश्लेषा/मघा ति.१३ बुध रा.९।४२ तः ति.३० शुक्र सा.६।३५ या.।

कृष्ण दर्शन मन्त्र- हाथ मे फूल देकर
ॐ अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्।
वराहं पुण्रीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्।।
दामोदरं पद्मनाभं केशवं गरुड़ध्वजम्।
गोविन्दमच्युतं कृष्णमनन्तमपराजितम्।।
अधोक्षजं जगद्बीजं सृष्टिस्थित्यन्तकारकम्।
अनादिनिधनं विष्णुं त्रिलोकेशं त्रिविक्रमम्।।
श्रीवत्साकं जगत्सेतुं श्रीपतिं श्रीधरं हरिम्।
प्रणतोऽस्मि सदा देवं देवदेवं जगत्पतिम्।।
नामान्येतानि संकीर्त्य ईप्सितं प्राप्नुयान्नरः।
त्राहि मां देवदेवेश ! हरे ! संसारसागरात्।।

कुशोत्पाटन-मन्त्रः-
कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः।
कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।।
कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितःपुरा।
देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।
वर्ज्यकुशाः-चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु।
स्तरणासन पिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।।

कृष्णाष्टमी व्रत संकल्प-(उपवासक संकल्प)
ॐ अद्य अमुक गोत्र/गोत्रा (व्रती क गोत्र) अमुकशर्मा/देव्या (व्रती क नाग) भाद्रकृष्णाष्टम्यां मनोवांछित फल प्राप्त्यर्थं श्रीकृष्ण पूजनोपवास- व्रतमहमाचरिष्यामि।

कृष्णाष्टमी पूजन संकल्प-(रात्रि मे पूजन संकल्प)
ॐ अद्य भाद्र मासि कृष्णे पक्षे रोहिणी युक्त अष्टम्यां तिथौ अमुक गोत्रस्य अमुक शर्मणः(स्त्री हेतु—अमुकी गोत्रायाः अमुकी देव्याः)कोटिजन्मावच्छिन्न-बाल्य-कौमारयौवन वार्धक्यकृतकायिक-वाचिक-मानसिक- ज्ञाताज्ञात- सकलपातक- क्षयपूर्वक सहस्रमन्वन्तर-ब्रह्मप्रीतिपूर्वक प्रेतयोनिगत - पितृगणोद्धारणपूर्वक शतवर्षकृतगयाद्धिकरणक पिण्डदान जन्यफल- समफलसहस्र कपिलादान जन्यफलसमफल युगादि दिनकृत यावत् पुण्यफल-समफल-कल्पवासरकृत- यावत्पुण्य फलकोटि-गुणाधिकफल-समफल-मथुराद्धिकरणक- सहस्रसुवर्ण- भारदान-जन्यफलसमफल-प्राप्ति-पूर्वान्तकालिक- श्रीकृष्ण- सायुज्यमुक्तिकामः सपरिवार- श्रीकृष्ण पूजनं तदंग देवता पूजनं च अहं करिष्ये।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द. प.	समा.कालः घं. मि.	योगाः	योगः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१	श.	२०।३४	दि.१।५५	पूर्वाफाल्गुनी	२८।०४	दि.४।५५	सिद्ध	२८।५७	बव	-।३४	सिंह ४२।०२	रा.१०।३०	४।१३।१९।१५	३१।३६	५।४१	६।१९	९	१४	३१
२	र.	१४।२७	दि.११।२६	उत्तराफाल्गुनी	२३।५७	दि.३।१७	साध्य	२१।१९	कौलव	१४।२४	कन्या	अहोरात्रं	४।१४।१७।१३	३१।३२	५।४२	६।१८	१०	१५	१
३	चं.	०८।३३	दि.९।०७	हस्त	२०।०३	दि.१।४३	शुभ	१३।४९	गर	८।३३	कन्या ४८।२०	रा.१।०२	४।१५।१५।११	३१।२८	५।४२	६।१८	११	१६	२
४	मं.	०३।०५	प्रा.६।५७	चित्रा	१६।३७	दि.१२।२२	शुक्ल	०६।४३	भद्रा	३।०५	तुला	अहोरात्रं	४।१६।१३।०९	३१।२४	५।४३	६।१७	१२	१७	३
६	बु.	५४।०९	रा.३।२४	स्वाती	१३।५१	दि.११।१६	ब्रह्म	००।०८	कौलव	२६।११	तुला ५७।२६	रा.४।४३	४।१७।११।०७	३१।२०	५।४४	६।१६	१३	१८	४
७	गु.	५१।०३	रा.२।१०	विशाखा	११।५८	दि.१०।३२	वैधृति	४६।०३	गर	२२।२६	वृश्चिक	अहोरात्रं	४।१८।०९।१९	३१।१६	५।४५	६।१५	१४	१९	५
८	शु.	४९।०१	रा.१।२२	अनुराधा	१०।५७	दि.१०।०६	विष्कुम्भ	४४।४४	भद्रा	१९।३२	वृश्चिक	अहोरात्रं	४।१९।०७।३१	३१।१२	५।४६	६।१४	१५	२०	६
९	श.	४८।१३	रा.१।०३	ज्येष्ठा	११।०८	दि.१०।१३	प्रीति	४१।२५	बालव	१८।३७	वृश्चिक ११।०८	दि.१०।१३	४।२०।०५।४४	३१।०८	५।४६	६।१४	१६	२१	७
१०	र.	४८।४१	रा.१।१५	मूल	१२।३३	दि.१०।४८	आयुष्मान	३९।०५	तैतिल	१८।२७	धनु	अहोरात्रं	४।२१।०३।५७	३१।०४	५।४७	६।१३	१७	२२	८
११	चं.	५०।३५	रा.२।०२	पूर्वाषाढ़ा	१५।१३	दि.११।५३	सौभाग्य	३७।४९	वणिज्	१९।३८	धनु ३१।११	सा.६।१६	४।२२।०२।१०	३१।००	५।४८	६।१२	१८	२३	९
१२	मं.	५३।३१	रा.३।१३	उत्तराषाढ़ा	१९।०५	दि.१।२७	शोभन	३७।२३	बव	२२।०३	मकर	अहोरात्रं	४।२३।००।२३	३०।५६	५।४९	६।११	१९	२४	१०
१३	बु.	५७।३४	रा.४।५१	श्रवण	२४।०४	दि.३।२७	अतिगण्ड	३७।५०	कौलव	२५।३३	मकर५६।५९	रा.४।३७	४।२३।५८।३६	३०।५३	५।४९	६।११	२०	२५	११
१४	गु.	६०।००	समस्त	धनिष्ठा	२९।५४	दि.५।४८	सुकर्मा	३८।५६	गर	२९।५६	कुम्भ	अहोरात्रं	४।२४।५७।०३	३०।५०	५।५०	६।१०	२१	२६	१२
१४	शु.	०२।१८	प्रा.६।४६	शतभिषा	३६।१६	रा.८।२१	धृति	४०।२५	वणिज्	२।१८	कुम्भ	अहोरात्रं	४।२५।५५।३१	३०।४६	५।५१	६।०९	२२	२७	१३
१५	श.	०७।२१	दि.८।५१	पूर्वाभाद्रपद	४२।४७	रा.१०।५९	शूल	४१।५८	नव	७।२८	कुम्भ २६।०९	दि.४।२०	४।२६।५३।५९	३०।४२	५।५२	६।०८	२३	२८	१४

भाद्रशुक्लपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२६, दक्षिणायनं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, उत्तर कालः, अशुद्धः। दिनांक ३१ अगस्त तः १४ सितम्बर यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः, वक्री शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पश्चिमास्तः; मार्गी बुधः पूर्वोदितः।

ने.	अं.	
१४	३१	**रुद्रव्रतम्।** चन्द्रदर्शनम्। मु.४५ समर्घताकरम्। शिववासः दि.१।५५ उ., अमृतयोगः दि.१।५५ या., पूर्वफल्गुन्यो रविः ४६।३५ रा.१२।३६। स्त्री स्त्री. सू.सू. योगो अश्ववाहनं नीरानाड़ीशुक्रवायुवृष्टियोगः,
१५	१	**सितम्बर ६।** रविव्रतं, शिववासः-अग्निवासः दि.११।२६ या., सिद्धियोगः दि.११।२६ उ., त्रिपुष्करयोगः दि.११।२६ या.। पुष्टशुक्र ४८।२६। पूर्वफल्गुन्यां बुध १३।०३।
१६	२	**हरितालीका ३(तीज) व्रतं,** वाराहावतार३, **चतुर्थीचन्द्रपूजनं(चौरचन),** श्रीगणेश४ व्रतं, रुद्रसावर्णिमन्वादि, अग्निवासः दि.६।०७ उ., भद्रा ३।४६ उ.,
१७	३	पञ्चमीतिथिमानं ५५।०७ रा.३।४६, **ऋषिपञ्चमी,** सप्तर्षिपूजनं, पञ्चगव्यप्राशनञ्च। श्रीगणेशपूजारम्भः,अग्निवासः प्रातः ६।२७ या. ततः शिववासः, राज्यप्रदयोगः प्रा.६।२७ या., भद्रा ३।०५ या.,
१८	४	ऐन्द्रयोगमानं ५४।०३, श्रीलोलार्क६ व्रतं, सूर्यपूजनम्। शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः,
१९	५	अपराजिता ७। सन्तानसप्तमी। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।३२ उ., भद्रा ५१।०३ उ.,
२०	६	**दूर्वा ८ व्रतं, राधाष्टमी।** महालक्ष्मीव्रतारम्भ १६ दिनात्मक। अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।०६ या., ♍
२१	७	**महानन्दानवमी** ९ व्रतम्। शिववासः, सिद्धियोगः। ♍ भद्रा १९।३२ या.। उत्तरफल्गुन्या शुक्रः५।४१।
२२	८	**रविव्रतं,** पौराणिक अगस्त्योदयः, अग्निवासः, अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।४८ या., उत्तरफल्गुन्यां बुध
२३	९	**कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषाम्।** हरेःपार्श्वपरिवर्त्तनं। सिद्धियोगः, भद्रा १८।३८ तः ५०।३५ या.।
२४	१०	कुष्माण्डेनपारणा, श्रीवामन१२, वामनावतार, **इन्द्रपूजारम्भः,** शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः, त्रिपुष्करयोगः दि.१।२७ या.,
२५	११	**प्रदोष१३ व्रत।** पञ्चकारम्भः(**भदवा**) दि.३।२७ उ., शिववासः, मृत्युयोगः, कन्यायां बुध२९।२५।
२६	१२	प्रदोष१४ व्रत। **अनन्त १४ व्रतं, अनन्तपूजनं,** तद्डोरकधारणञ्च। श्रीगणेशविसर्जनम्। अग्निवासः, मृत्युयोगः ३८।२०, कन्यायां शुक्र४७।३२।
२७	१३	व्रतादी पूर्णिमा १५, अमृतयोगः प्रा.६।४६ या., भद्रा २१८ तः ३४।५३ या., ←**उत्तरफल्गुन्यो रविः ३१।०० सा.६।१६।** पु.स्त्री.सू.सू.योगो चातकवाहनं नीरानाड़ी तदिशोशुक्रः वायुवृष्टिश्च,
२८	१४	भाद्रीपूर्णिमा१५,स्नानदानादि। **अगस्त्यार्घदानं,** श्रीशिवपूजनं, महालयारम्भः। पितृपक्षीयतर्पणपार्वणारम्भः। प्रतिपदएकोदिष्ट। अग्निवास दि.८।५१ या. ततः शिववासः। मृत्युयोगः दि.८।५१ या. ततः अमृतयोगः, ←

अनन्त-धारणमन्त्र-अनन्तसंसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धरवासुदेव।
अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपायनभोनमस्ते।।

अगस्त्य-अर्घ्यदान-मन्त्रः-कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानिविविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

अगस्त्य-प्रार्थनामन्त्रः-आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः।
समुद्रःशोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ श.	४।१४।००।४४	४।११।०६।३५	७।२२।४२।२७	४।१९।०८।२०	८।१६।२८।०८	८।२३।०२।०४	४५।४८
२ र.	४।१४।३६।२०	४।१२।५६।२१	७।२२।४५।५०	४।२०।२२।२४	८।१६।२६।३१	८।२२।५८।५३	४५।४६
३ चं.	४।१५।१७।५५	४।१४।४३।२८	७।२२।४९।१५	४।२१।३६।२९	८।१६।२५।०१	८।२२।५५।४३	४५।४४
४ मं.	४।१५।५६।३०	४।१६।३०।५४	७।२२।५२।५०	४।२२।५०।३४	८।१६।२३।३७	८।२२।५२।३२	४५।४२
६ बु.	४।१६।३५।०८	४।१८।१८।३५	७।२२।५६।२७	४।२४।०४।४०	८।१६।२२।१९	८।२२।४९।२१	४५।४०
७ गु.	४।१७।१३।४१	४।२०।०६।२८	७।२३।००।३५	४।२५।१९।४७	८।१६।२१।०७	८।२२।४६।१०	४५।३८
८ शु.	४।१७।५२।१९	४।२१।५४।२९	७।२३।०४।४५	४।२६।३२।५५	८।१६।२०।०१	८।२२।४२।५९	४५।३६
९ श.	४।१८।३०।५५	४।२३।४२।३६	७।२३।०९।०५	४।२७।४७।०४	८।१६।१९।००	८।२२।३९।४८	४५।३४
१० र.	४।१९।०९।३१	४।२५।३०।५६	७।२३।१३।३६	४।२९।०१।१३	८।१६।१८।०७	८।२२।३६।२८	४५।३२
११ चं.	४।१९।४८।०७	४।२७।१८।५६	७।२३।१८।१७	५।००।१५।२३	८।१६।१७।२२	८।२२।३३।२७	४५।३०
१२ मं.	४।२०।२६।४३	४।२९।०७।०१	७।२३।२३।१०	५।०१।२९।३३	८।१६।१६।४०	८।२२।३०।१६	४५।२८
१३ बु.	४।२१।०५।२०	५।००।५५।०२	७।२३।२८।१२	५।०२।४३।४५	८।१६।१६।०६	८।२२।२७।०५	४५।२६
१४ गु.	४।२१।४३।५६	५।०२।४२।४०	७।२३।३३।२६	५।०३।५७।५६	८।१६।१५।४०	८।२२।२४।५४	४५।२५
१४ शु.	४।२२।२२।३१	५।०४।३०।१२	७।२३।३८।४६	५।०५।१२।०६	८।१६।१५।१७	८।२२।२०।४३	४५।२३
१५ श.	४।२३।०१।०८	५।०६।१७।१५	७।२३।४४।२३	५।०६।२६।२२	८।१६।१५।०४	८।२२।१७।३२	४५।२१

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ श.	२२।१६	००।१२	२।२५	४।४३	६।५९	९।१४	११।३१	१३।४८	१५।५३	१७।३६	१९।१०	२०।३६
२ र.	२२।१३	००।०९	२।२२	४।४०	६।५६	९।११	११।२८	१३।४५	१५।५०	१७।३६	१९।०७	२०।३६
३ चं.	२२।०९	००।०५	२।१८	४।३६	६।५२	९।०७	११।२४	१३।४१	१५।४६	१७।३२	१९।०३	२०।३२
४ मं.	२२।०५	००।०१	२।१४	४।३२	६।४८	९।०३	११।२०	१३।३७	१५।४२	१७।२८	१८।५९	२०।२८
६ बु.	२२।०२	२३।५८	२।११	४।२९	६।४५	९।००	११।१७	१३।३४	१५।३९	१७।२५	१८।५६	२०।२५
७ गु.	२१।५८	२३।५४	२।०७	४।२५	६।४१	८।५६	११।१३	१३।३०	१५।३५	१७।२१	१८।५२	२०।२१
८ शु.	२१।५४	२३।५०	२।०३	४।२१	६।३७	८।५२	११।०९	१३।२६	१५।३१	१७।१७	१८।४८	२०।१७
९ श.	२१।५१	२३।४७	२।००	४।१८	६।३४	८।४९	११।०६	१३।२३	१५।२८	१७।१४	१८।४५	२०।१४
१० र.	२१।४७	२३।४३	१।५६	४।१४	६।३०	८।४५	११।०२	१३।१९	१५।२४	१७।१०	१८।४१	२०।१०
११ चं.	२१।४३	२३।३९	१।५२	४।१०	६।२६	८।४१	१०।५८	१३।१५	१५।२०	१७।०६	१८।३७	२०।०६
१२ मं.	२१।४०	२३।३६	१।४९	४।०७	६।२३	८।३८	१०।५५	१३।१२	१५।१७	१७।०३	१८।३४	२०।०३
१३ बु.	२१।३६	२३।३२	१।४५	४।०३	६।१९	८।३४	१०।५१	१३।०८	१५।१३	१६।५९	१८।३०	१९।५९
१४ गु.	२१।३२	२३।२८	१।४१	३।५९	६।१५	८।३०	१०।४७	१३।०४	१५।०९	१६।५५	१८।२६	१९।५५
१४ शु.	२१।२९	२३।२५	१।३८	३।५६	६।१२	८।२७	१०।४४	१३।०१	१५।०६	१६।५२	१८।२३	१९।५२
१५ श.	२१।२५	२३।२१	१।३४	३।५२	६।०८	८।२३	१०।४०	१२।५७	१५।०२	१६।४८	१८।१९	१९।४८

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	प्रा.५:४४-७:१८।१:३४-३:०८ दि.४:४२-६:१६	रा.६:१६-७:४२ रा.१:२६-२:५८।४:१८-५:४५।
२ र.	दि.१०:२७-१:३५।	रा.१०:३३-११:५९। रा.१:२५-२:५१।
३ चं.	दि.७:१९-८:५३। दि.३:०९-४:४३।	रा.१०:३३-११:५९। रा.२:५१-४:१७।
४ मं.	दि.७:१९-८:५२।१:३४-३:०७।	रा.७:४१-९:०८।
६ बु.	दि.८:५५-१०:२८। दि.१२:०१-१:३४।	रा.१२:०१-१:२८।रा.२:५५-४:२१।
७ गु.	दि.३:०६-६:१२।	रा.१२।००-१:२७।रा.४:२१-५:४८।
८ शु.	दि.८:५४-१२:००।	रा.९:०६-१०:३३।
९ श.	दि.५:४६-७:३२।१:३४-३:०७। ४:३९-६:११।	रा.६:११-७:३९।रा.१:२८-२:५५।४:२२-५:५०
१० र.	दि.१०:२९-१:३४।	रा.१०:३१-११:५८। रा.१:२५-२:५३।
११ चं.	दि.७:२३-८:५५। दि. ३:०३-४:३८।	रा.१०:३३-१२:०१। रा.२:४८-४:२३।
१२ मं.	दि.७:२४-८:५६। दि. १:३२-३:०४।	रा.७:३६-९:०४।
१३ बु.	दि.७:२४-८:५६। दि.१:३२-३:०४।	रा.१२:००-१:२८। रा.२:५६-४:२४।
१४ गु.	दि.८:५६-१०:२८। दि.१२:००-१:३२।	रा.१२:०१-१:२९।रा.४:२५-५:५४।
१४ शु.	दि.८:५८-१२:०२।	रा.९:०४-१०:३३
१५ श.	प्रा५:५५-७:२७ दि१:३१-३:२०। दि४:३३-६:०५	रा६:५-७:३४। रा१:३०-२:५६ रा४:२७-५:५६

श्रीहरि-पार्श्व-परिवर्तन-मन्त्रः-

भद्राविचारः-ज्येष्ठ... मूल... दि.१०।६ ... १७ ... दि.१०।४६ या.,

प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।।

शंख मे फल-पुष्प-दुध लय चन्द्रार्घ्यदानमंत्र-

आत्रिनेत्रसमुद्भूत क्षीरोदार्णवसम्भव। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितप्रभो।। इदं दुग्धार्घ्यं नमो रोहिणीसहितभाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्राय नमः।

भाद्रचतुर्थी-चन्द्रदर्शन मन्त्रः- दही आ डाली तमके एका-एकी हाथमे लऽ निम्न मंत्र पढथि। **नमः सिंहः प्रसेनमवधीतसिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यन्मतकः।**

तदुत्तर आगुक मन्त्र सँ प्रणाम करी- **नमः शुभ्रांशवे तुभ्यं द्विजराजाय ते नमः। रोहिणीपतये तुभ्यं लक्ष्मीभ्रात्रे नमोऽस्तु ते।। दिव्यशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।**

प्रार्थना-मृगांकरोहिणीनाथ शम्भोः शिरसि भूषण। **व्रतं सम्पूर्णतां यातु सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।। रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवन् देहिमे। धर्मान् देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहिमे।।**

अथ संकल्प-(१)हरितालिका व्रत संकल्प-

नमोऽस्यां रात्रौ भाद्रमासीय-शुक्लपक्षीय तृतीयायां तिथौ अमुकगोत्राया अनुकीदेव्यांमम दीर्घायुष्ट्व-पुत्रपौत्रादि-चिरजीवित्व- जन्मजन्मान्तरार्जित - सकल- पापक्षय पूर्वक श्रीगौरि-प्रीतिकामनया यथा वर्षपर्यन्तं भाद्रशुक्ल- तृतीयायां हरितालिका-व्रतं गौरीपूजन तदंग देवता पूजनं च अहं करिष्ये।

(२)भाद्रशुक्लचतुर्थी सिद्धिविनायक पूजन संकल्पः-

(सिद्धिविनायक क पूजन जाहि दिन चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्य थीक) ॐ अद्य भाद्रे मासे शुक्ले पक्षे चतुर्थ्यां तिथौ अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणो-मम विद्याधन -जय- पुत्रपौत्रादि-सौभाग्य-लाभपूर्वकं श्री सिद्धिविनायक- प्रीतिकामः- श्रीसिद्धिविनायक पूजनं तदंग देवता पूजनं च अहं करिष्ये।

(३)चौठचन्द्र पूजन संकल्पः-कुश-तिल- जल-द्रव्य- सुपारी-फूल आदि लय-नमोऽस्यां रात्रौ भाद्रपद मासि शुक्लेपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ अमुक गोत्राया अमुकी देव्याः सपरिवारस्य सकल- दुरितोपसर्गापच्छान्ति-पूर्वक सकल-मनोरथ-सिद्ध्यर्थ यथाशक्ति गन्ध – पुष्प–धूप–दीप– नैवेद्यादिभिः पूर्वाङ्गीकृत रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र पूजनं महं करिष्ये।

६ बुधे वल्लीः८।२६।१३।०६ अयनांशः २२।४८।१८

ल.१ 12 11 10; २ रा.; ३; ९; गु.; ४ मं बु; ५; ६ चं.; ७ गु.; ८ श के.

१३ बुधे वल्लीः८।३६।१३।१३ अयनांशः २२।४८।१९

ल.१ रा. १२ ११ १० ९ चं.; २; ८; ३ मं; शु.४ बु; ५; ६ गु.; ७ श के.

धर्मशास्त्र-**हरितालिका**-चतुर्थीसहिता यातु सातृतीया फलप्रदा। अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। तिथितत्त्वचिन्तामणि- कृतिसागराघवाधुनिकनिबन्धे साचतुर्थीयुताग्राह्या। हरितालिका व्रतस्यैव नामान्तरं लोके तीज इति। कलाकाष्ठा मुहूर्त्ताऽपि द्वितीया यदि दृश्यते। सा तृतीया न कर्तव्या कर्तव्या गणसंयुता।।

चतुर्थीचन्द्र-प्रदोषव्यापिनीयं ग्राह्य उभयदिने प्रदोषव्याप्तौ पंचमी युक्ता "युगाग्निकृतभूतानि" इत्यादि निगमात्। **अर्थात्** चतुर्थी प्रदोष व्यापिनी ग्राह्य हैं यदि दोनो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो पंचमी युक्त ही ग्राह्य हैं।

भाद्रशुक्लषष्ठी-सूर्यषष्ठी। सा च सर्वमते स्कन्दव्रताातिरिक्ता परयुता ग्राह्या युग्मात्। नागविद्धा न कर्तव्या षष्ठी चैव कदाचन।। इति स्कन्दे। **राधाव्रतं**- राधाव्रतं सप्तमीयोगेन कार्यम्।।

दूर्वाष्टमी- भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाख्या सा च पूर्व युता ग्राह्या।

आश्विनकृष्णपक्षः।।

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२६, दक्षिणायनं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः ति.४ तः शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः, अशुद्ध/शुद्ध।
दिनांक १५ सितम्बर तः २८ सितम्बर यावत् सन्२०१९ ई। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पशिस्तः; मार्गी बुधः पूर्वोदितः।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः नि.	अं.	
१	र.	१२।३२	दि.१०।५३	उत्तराभाद्रपद	४६।०१	रा.१।२८	गण्ड	४३।१३	कौलव	१२।३२	मीन		अहोरात्रं	४।२७।५२।२७	३०।३८	५।५२	६।०८	२२	२९	१५	आश्विनेदुग्धं त्यजेत्, अशून्यशयन २ व्रतं, रविव्रत शिववासः दि.१०।५३ या. ततः अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.१०।५३ या.। ← राज्यप्रदयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.शे.५।३६ या., भद्रा२०।५८ या.,
२	चं.	१७।०८	दि.१२।४४	रेवती	५४।३६	रा.३।४३	वृद्धि	४४।०१	गर	१७।०८	मीन	५४।३६	रा.३।४३	४।२८।५०।५५	३०।३४	५।५३	६।०७	२३	३०	१६	एकोदिष्टं २, पञ्चक(भदवा)समाप्तिः रा.३।४३ उपरि, अग्निवासः दि.१२।४४ या., मृत्युयोगः दि.१२।४४ या., भद्रा ४६।०३ उ.। हस्ते बुध५।२५, हस्ते शुक्र ५२।३५।
३	मं.	२०।५८	दि.२।१७	अश्विनी	५६।१६	रा.शे५।३६	ध्रुव	४४।०५	भद्रा	२०।५८	मेष		अहोरात्रं	४।२९।४९।२३	३०।३०	५।५४	६।०६	२४	३१	१७	ललितादेवीयात्रा, इन्द्रविसर्जनं, एकोदिष्टं३, श्रीगणेश४ व्रतं, शिववासः–अग्निवासः दि.२।१७ उ., कन्यायां रविः५६।१० रा.४।२२, मु.३० समासमताकरम्, मासान्तः, सिद्धियोगः दि.२।१७ या. ततः ←
४	बु.	२३।३७	दि.३।२२	भरणी	६०।००	समस्त	व्याघात	४३।१९	बालव	२३।३७	मेष		अहोरात्रं	५।००।४७।५०	३०।२६	५।५५	६।०५	२५	१	१८	एकोदिष्टं४। भरणीश्राद्धं, षडशीतिसंक्रान्तिःपुण्यकालः दि.१२।०० यावत् पुण्याहः। विश्वकर्मापूजा, शुद्धारम्भः, शरदऋतुः। नेपाली आश्विनमासारम्भः। शिववासः, अग्निवासः दि.३।२२ या.,
५	गु.	२५।१२	दि.४।०१	भरणी	०२।४८	दि.०७।०३	हर्षण	४१।२६	तैतिल	२५।१२	मेष	१८।२२	दि.१।१७	५।०१।४६।३३	३०।२२	५।५६	६।०४	२६	२	१९	मासदिः। एकोदिष्टं५, शिववासः दि.४।०१ या. ततः अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.४।०१ या., मीलचालनं, वस्तुनां विक्रयः, धान्यछेदनं। ♍ बीजवपनं, बीजस्थापनं, धान्यछेदनं, उत्तरफल्गुन्यां मंगल ३८।५८।
६	शु.	२५।२७	दि.४।०७	कृत्तिका	०५।०५	दि.७।५८	वज्र	३८।४३	वणिजु	२५।२७	वृष		अहोरात्रं	५।०२।४५।१९	३०।१८	५।५६	६।०४	२७	३	२०	श्रीचन्द्रषष्ठीव्रतं, एकोदिष्टं ६। रात्र्यन्ते स्त्रीणां विशेष भोजनं (ओठगन), अग्निवासः दि.४।०७ या., सिद्धियोगः दि.४।०७ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा २५।२७ तः ५४।५५ या., वृक्षादिरोपणं, विपणि, ♍
७	श.	२४।२३	दि.३।४२	रोहिणी	०६।०३	दि.०८।२२	सिद्धि	३४।५६	बव	२४।२३	वृष	३५।५७	रा.८।२०	५।०३।४३।५९	३०।१४	५।५७	६।०३	२८	४	२१	एकोदिष्टं७, महालक्ष्मीव्रतं, जीमूतवाहन व्रतं(जितिया)। जीमूतवाहनपूजा, शिववासः–अग्निवासः दि.३।४२ उ., द्विपुष्करयोगः दि.८।२२ तः दि.३।४२ या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।२२ या., विपणि।
८	र.	२२।०८	दि.२।४९	मृगशिरा	०५।५१	दि.८।१८	व्यतीपात	३०।१३	कौलव	२२।०८	मिथुन		अहोरात्रं	५।०४।४२।४२	३०।१०	५।५८	६।०२	२९	५	२२	एकोदिष्टं८। महालक्ष्मी, जीमूतवाहन व्रतस्यपारणा दिन २।४९ उपरि, शिववासः दि.२।४९ या., सिद्धियोगः दि.२।४९ या., विपणि दि.८।१८ या., स्वामीसेवारम्भः। ★ भद्रा १४।४० या.। कन्यायां मंगल५२।४२
९	चं.	१८।५१	दि.१।३१	आर्द्रा	०४।३२	दि.७।४८	वरीयान्	२४।४०	गर	१८।५१	मिथुन	४७।५६	रा.१।०९	५।०५।४१।२५	३०।०६	५।५९	६।०१	३०	६	२३	मातृकानवमी, अन्वष्टकाश्राद्ध। एकोदिष्टं९। अग्निवासः दि.१।३१ उ., अमृतयोगः दि.१।३१ उ., भद्रा४९।४९ उ.। चित्रायां बुध४८।२२
१०	मं.	१४।४०	दि.११।५२	पुनर्वसु	०२।२४	प्रा.६।५८	परिघ	१८।२७	भद्रा	१४।४०	कर्क		अहोरात्रं	५।०६।४०।०९	३०।०२	६।००	६।००	३१	७	२४	पुष्ययोगमानं ५६।५८ रा.४।४७, एकोदिष्ट१०–११। शिववासः दि.११।५२ उ., मृत्युयोगः दि.११।५२ उ.,★
११	बु.	०९।४०	दि.९।५२	आश्लेषा	५५।४६	रा.४।१८	शिव	११।३४	बालव	९।४०	कर्क	५५।४६	रा.४।१८	५।०७।३८।५३	२९।५८	६।००	६।००	१	८	२५	इन्दिराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः,मीलचालनं-विक्रयः दि.९।५२ या.।
१२	गु.	०४।०९	दि.७।४१	मघा	५१।४७	रा.२।४४	सिद्ध	०४।१४	तैतिल	४।०९	सिंह		अहोरात्रं	५।०८।३७।५२	२९।५४	६।०१	५।५९	२	९	२६	त्रयोदशीतिथिमानं ५४।०९ रा.३।३९, साध्ययोगमानं ५२।२२,गुड़ेनपारणा, एकोदिष्ट१२–१३,मघाश्राद्धं, प्रदोष १३ व्रत्। शिववासःदि.७।४१ या., अमृतयोगःदि.७।४१ उ.,भद्रा५१।१५ उ.,
१४	शु.	५२।१०	रा.२।५४	पूर्वाफाल्गुनी	४७।३७	रा.०१।०५	शुभ	४८।५०	भद्रा	२५।१३	सिंह		अहोरात्रं	५।०९।३६।५१	२९।५०	६।०२	५।५८	३	१०	२७	प्रदोष १४ व्रत,एकोदिष्टं१४। शास्त्रादिहतानां श्राद्ध,अग्निवासः, अमृतयोगः, भद्रा २५।१३ या.। तुलायां बुध ५१।२४, चित्रायां शुक्र३८।२४। ♍ मृत्युयोगः रा.१२।२९ या. ततः अमृतयोगः,
३०	श.	४६।०५	रा.१२।२९	उत्तराफाल्गुनी	४३।२७	रा.११।२६	शुक्ल	४१।०५	चतुरष्न	१९।०८	सिंह	१।३६	प्रा.६।४२	५।१०।३५।५०	२९।४६	६।०३	५।५७	४	११	२८	स्नान-दान श्राद्धादौ अमावस्या। आश्विनअमावस्या। महालयासमाप्तिः, नितृपक्षीयपार्वणान्तः। हस्ते रविः ८।४२ दि.९।२७, स्त्री.स्त्री.सू.सू. योगो नागवाहनं नीरानाड़ी तदीशोशुक्र वायुवृष्टियोगोः। शिववासः। ♍

मूलविचार–रेवती/अश्विनी ति.१ रवि रा.१।२८ तः ति.३ मंगल रा.शे५।३६ या। आश्लेषा/मघा ति.१० मंगल रा.४।४७ उ.ति.१२ गुरु रा.२।४४या.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ र.	४।२३।३९।४५	५।०८।०४।०६	७।२३।५०।०७	५।०७।४०।४२	८।१९।१४।५५	८।२२।१४।२२	४५।१९
२ चं.	४।२४।१८।२२	५।०९।५०।२९	७।२३।५६।००	५।०८।५४।५७	८।१९।१४।५२	८।२२।११।११	४५।१७
३ मं.	४।२४।५७।००	५।११।३६।१९	७।२४।०२।०५	५।१०।०९।१२	८।१९।१५।००	८।२२।०८।००	४५।१५
४ बु.	४।२५।३५।३७	५।१३।२१।४०	७।२४।०८।१९	५।११।२३।२९	८।१९।१५।१०	८।२२।०४।४९	४५।१३
५ गु.	४।२६।१४।१५	५।१५।०६।२५	७।२४।१४।४३	५।१२।३७।४९	८।१९।१५।२८	८।२२।०१।३८	४५।११
६ शु.	४।२६।५२।५३	५।१६।५०।३२	७।२४।२१।१९	५।१३।५२।०३	८।१९।१५।५२	८।२१।५८।२७	४५।०९
७ श.	४।२७।३१।३१	५।१८।३३।५७	७।२४।२७।५९	५।१५।०६।२२	८।१९।१६।२३	८।२१।५५।१६	४५।०७
८ र.	४।२८।१०।१०	५।२०।१६।३६	७।२४।३४।५१	५।१६।२०।४१	८।१९।१७।००	८।२१।५२।०६	४५।०५
९ चं.	४।२८।४८।४८	५।२१।५८।२५	७।२४।४१।५२	५।१७।३५।०१	८।१९।१७।४४	८।२१।४८।५५	४५।०३
१० मं.	४।२९।२७।२७	५।२३।३९।२०	७।२४।४९।०३	५।१८।४९।२१	८।१९।१८।३६	८।२१।४५।४४	४५।०१
११ बु.	५।००।०६।०६	५।२५।१९।१९	७।२४।५६।२३	५।२०।०३।४२	८।१९।१९।३०	८।२१।४२।३३	४४।५९
१२ गु.	५।००।४४।४५	५।२६।५८।०९	७।२५।०३।५१	५।२१।१८।०४	८।१९।२०।३३	८।२१।३९।२२	४४।५७
१४ शु.	५।०१।२३।२४	५।२८।३५।५५	७।२५।११।२९	५।२२।३२।२६	८।१९।२१।४५	८।२१।३६।११	४४।५५
३० श.	५।०२।०२।०४	६।००।१२।२७	७।२५।१९।१५	५।२३।४६।४९	८।१९।२२।५८	८।२१।३३।०१	४४।५३

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अ. घं.मि.	मि.अ. घं.मि.	क.अ. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ र.	२१।२२	२३।१८	१।३१	३।४९	६।०५	८।२०	१०।३७	१२।५४	१४।५९	१६।४५	१८।१६	१९।४५
२ चं.	२१।१८	२३।१४	१।२७	३।४५	६।०१	८।१६	१०।३३	१२।५०	१४।५५	१६।४१	१८।१२	१९।४१
३ मं.	२१।१५	२३।११	१।२४	३।४२	५।५८	८।१३	१०।३०	१२।४७	१४।५२	१६।३८	१८।०९	१९।३८
४ बु.	२१।११	२३।०७	१।२०	३।३८	५।५४	८।०९	१०।२६	१२।४३	१४।४८	१६।३४	१८।०५	१९।३४
५ गु.	२१।०७	२३।०३	१।१६	३।३४	५।५०	८।०५	१०।२२	१२।३९	१४।४४	१६।३०	१८।०१	१९।३०
६ शु.	२१।०४	२३।००	१।१३	३।३१	५।४७	८।०२	१०।१९	१२।३६	१४।४१	१६।२७	१७।५८	१९।२७
७ श.	२१।०१	२२।५६	१।०९	३।२७	५।४३	७।५८	१०।१५	१२।३२	१४।३७	१६।२३	१७।५४	१९।२३
८ र.	२०।५६	२२।५२	१।०६	३।२३	५।३९	७।५४	१०।११	१२।२८	१४।३३	१६।१९	१७।५०	१९।१९
९ चं.	२०।५३	२२।४९	१।०२	३।२०	५।३६	७।५१	१०।०८	१२।२५	१४।३०	१६।१६	१७।४७	१९।१६
१० मं.	२०।४९	२२।४५	०।५८	३।१६	५।३२	७।४७	१०।०४	१२।२१	१४।२६	१६।१२	१७।४३	१९।१२
११ बु.	२०।४५	२२।४१	०।५४	३।१२	५।२८	७।४३	१०।००	१२।१७	१४।२२	१६।०८	१७।३९	१९।०८
१२ गु.	२०।४२	२२।३८	०।५१	३।०९	५।२५	७।४०	९।५७	१२।१४	१४।१९	१६।०५	१७।३६	१९।०५
१४ शु.	२०।३८	२२।३४	०।४७	३।०५	५।२१	७।३६	९।५३	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१९।०१
३० श.	२०।३४	२२।३०	०।४३	३।०१	५।१७	७।३२	९।४९	१२।०६	१४।११	१५।५७	१७।२८	१८।५७

४ बुधे वल्ली८।३९।३१।१९
अयनांशाः २२।४८।२०

१२, चं. ११, १०, रा. ल.१, ९, २, ८, ३ मं., ४ सू., शु.बु, ५, ६ गु., श ७ के.

११ बुधे वल्ली८।३९।३१।२९
अयनांशाः २२।४८।२१

१२, ११, १०, रा. ल.१, ९, २, ८, ३ चं., ४ मं सू, शु.बु, ५, ६ गु., श ७ के.

धर्मशास्त्रम्–आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति **प्रथमकल्पः**। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। **हेमाद्री**-आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे सूर्ये यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवन्। **श्राद्धकालः**-पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्ने तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्।
श्राद्धसमय-कुतुपकाल- द्वौ यामौ घटिकान्यूनौ द्वौ यामौ घटिकाधिकौ। स कालः कुतुपो ज्ञेयः पितृणां दत्तमक्षयम्।।
श्राद्धेनिषिद्धवस्तुनि(मात्स्य-पुराणे)- कूष्माण्डं, महिषीक्षीरं, विल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकालेसमुत्पन्ने-पितरो यान्त्यनाश्रिताः।
श्राद्धेप्रशस्तानि-उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	र.	दि.१०:२९–१:३१।	रा.१०:३१–१२:००। रा.१:२९–२:५८।
२	चं.	दि.७:२७–८:५८। दि.३:२–४:३३।	रा.१०:३१–१२:००। रा.२:५८–४:२७।
३	मं.	दि.७:२८–८:५९। दि.१:३२–३:०३।	रा.७:३२–९:०१।
४	बु.	दि.९:००–१०:३१। दि.१२:०२–१:३२।	रा.११:५८–१:२८। रा.२:५८–४:२८।
५	गु.	दि.३:०१–६:०१	रा.१२:०१–१:३१। रा.४:३०–६:००।
६	शु.	दि.९:००–१२:००।	रा.९:००–१०:३०।
७	श.	दि ६:०–७:३०। दि१:३०–३:० दि४:३०–६:०	सा.६:०–७:२० रा१:३०–३:० रा.४:३०–६:०।
८	र.	दि.१०:३१–१:३१।	रा.१०:३१–१२:०१। रा.१:३१–३:०१।
९	चं.	दि.७:३२–९:०२ दि.३:००–४:२९।	रा.१०–३१–१२:०२। रा.३:०२–४:३२।
१०	मं.	दि.७:३२–९:०२। दि.१:३१–३:००।	रा.७:२९–९:३०।
११	बु.	दि.९:०३–१०:३३। दि.१२:०२–१:३१।	रा.१२:०१–१:३२। रा.३–०२–४:३२।
१२	गु.	दि.२:५८–५:५९।	रा.१२:००–१:३१। रा.४:३३–६:०५।
१४	शु.	दि.९:०३–१२:०१।	रा.८:५७–१०:२८।
३०	श.	प्र.६:६–७:३५। दि.१०:३३–१२:०२ सं.४:२९–५:५४	सं.५:५४–७:२६ रा.१:३३–३:०४ रा.४:३५–६:०६

नवम्यामन्वष्टकाश्राद्धम्- अन्वष्टकासु नवभिः पिण्डैः श्राद्धमुदाहृतम्। पित्रादि मातृमध्यञ्च ततो मातामहान्तकम्। **जीतमूतवाहनव्रतं**-इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यःस नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया।।
खञ्जन दर्शनमन्त्रः- नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।। **फलम्**-तद्दर्शनमाकाश- दपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्व शुभम्। **पुनश्च**- अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

मिथिलादेशीय सदाचार पद्धति

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

मनुक एहि वचनक अनुसार धर्म अर्थात् कर्तव्य कर्म कें बुझबाक वास्ते वेद, स्मृति= धर्मशास्त्र, सदाचार आ आत्मतुष्टि एहि चारि साधन कें प्रत्यक्ष साधन कहल गेल छैक। अहू चारू मे सदाचारक स्थान सर्वोपरि मानल गेल छैक, कियैक तऽ वेद, स्मृति आ आत्मतुष्टि मे बहुतो स्थल मे विविधताक स्थिति मे सदाचारक निर्णायक भूमिका होइत अछि। जेना कि श्रीमद्भगवद्गीता मे कहल गेल छैक-

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

महाभारत मे कहल गेल अछि- **श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतियो विभिन्ना नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।**
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः।।

सदाचार ककरा कही ? विष्णुपुराणक वचनानुसार-

साधवः क्षीणदोषाः स्युः सच्छब्दः साधुवाचकः। तेषामाचरणं यत्स्यात् सदाचारः स उच्यते।।

अर्थ-दोषरहित पुरुष कें साधु कहल जाइत छैक। सदाचार शब्द मे **"सत्"** शब्दक अर्थ अछि- साधु। तैं **"सताम् आचारः"** इति सदाचारः एहि व्युत्पत्तिक अनुसार साधु पुरुषक जे आचरण अर्थात् व्यवहार ओ **"सदाचार"** कहबैत अछि।

परिस्थिक अनुसार भिन्न- भिन्न स्थानक सदाचारो मे विविधता देखल जाइत अछि। एहेन स्थिति मे कोन जगहक सदाचार कें प्रमाण मानैत अपनावी ? एहि जिज्ञासाक समाधान मे आचार-मर्मज्ञ आचार्य देवलक कथनं छैन्ह जे जाहि देश मे जे व्यवहार परम्परा सँ आबि रहल अछि आ ओ व्यवहार यदि वेद आ स्मृतिक अविरोधी हो तऽ तत्तद् देशवासी कें ओकरे अनुपालन करक चाही-

यस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः। श्रुतिस्मृत्यविरुद्धश्च तमनुष्ठातुमर्हति।। (देवल)

सदाचारक प्रसंग मे मनु सेहो लगभग इएह बात कहने छथि-

यस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः।वर्णानां सान्तरालानां स सदाचारः उच्यते।।

इएह कारण अछि जे वेद, पुराण, धर्मशास्त्र आदि सर्वमान्य ग्रन्थ सभक.....। **क्रमशः कार्तिककृष्णपक्ष मे**

आश्विनशुक्लपक्षः ।।

शक१६४१, संवत्२०७६, सन् १४२६, दक्षिणायनं, उत्तरगोलः, उत्तरे कालः, शुद्धः । **वैदेहीपञ्चाङ्ग**
दिनांक २९ सितम्बर तः १३ अक्टूबर यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः, मार्गी शनिः पूर्वोदितः, मार्गी कुजः पश्चिमास्तः, मार्गी बुधः पश्चिमोदितः।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	र.	४०।१७	रा.१०।११	हस्त	३६।३०	रा.६।५२	ब्रह्म	३३।३०	किंगस्तुघ्न	१३।११	कन्या	अहोरात्रं	५।११।३४।४६	२६।४२	६।०४	५।५६	५
२	चं.	३४।५०	रा.८।००	चित्रा	३५।५८	रा.८।२०	ऐन्द्र	२६।१२	बालव	७।३४	कन्या ७।४४	दि.६।१०	५।१२।३३।४८	२६।३८	६।०४	५।५६	६
३	मं.	३०।००	सा.६।०५	स्वाती	३३।०१	रा.७।१७	वैधृति	१६।२५	तैतिल	२।२५	तुला	अहोरात्रं	५।१३।३२।४७	२६।३४	६।०५	५।५५	७
४	बु.	२६।००	दि.४।३०	विशाखा	३०।५७	सा.६।२६	विष्कुम्भ	१३।१५	भद्रा	२६।००	तुला १६।२८	दि.१२।४१	५।१४।३१।४७	२६।३०	६।०६	५।५४	८
५	गु.	२२।५७	दि.३।१८	अनुराधा	२६।४३	सा.६।००	प्रीति	०७।४६	बालव	२२।५७	वृश्चिक	अहोरात्रं	५।१५।३१।०१	२६।२६	६।०७	५।५३	६
६	शु.	२०।५६	दि.२।३२	ज्येष्ठा	२६।३६	सा.५।५८	आयुष्यमान	०२।१२	तैतिल	२०।५६	वृश्चिक २६।३६	सा.५।५८	५।१६।३०।१५	२६।२२	६।०८	५।५२	१०
७	श.	२०।१३	दि.२।१३	मूल	३०।३६	सा.६।२४	शोभन	५६।५३	वणिज्	२०।१३	धनु	अहोरात्रं	५।१७।२६।२६	२६।१८	६।०८	५।५२	११
८	र.	२०।४३	दि.२।२६	पूर्वाषाढ़ा	३३।०२	रा.७।२२	अतिगण्ड	५५।१३	बव	२०।४३	धनु ४८।५६	रा.१।४४	५।१८।२८।४४	२६।१४	६।०६	५।५१	१२
९	चं.	२२।४२	दि.३।१५	उत्तराषाढ़ा	३६।३६	रा.८।५०	सुकर्मा	५४।२६	कौलव	२२।४२	मकर	अहोरात्रं	५।१६।२७।५६	२६।१०	६।१०	५।५०	१३
१०	मं.	२५।४२	दि.४।२८	श्रवण	४१।२१	रा.१०।४३	धृति	५४।४०	गर	२५।४२	मकर	अहोरात्रं	५।२०।२७।१४	२६।०६	६।११	५।४६	१४
११	बु.	२६।४६	सा.६।०७	धनिष्ठा	४७।००	रा.१२।५६	शूल	५५।३१	भद्रा	२६।४६	मकर १४।११	दि.११।५१	५।२१।२६।२६	२६।०३	६।११	५।४६	१५
१२	गु.	३४।३७	रा.८।०३	शतभिषा	५३।१७	रा.०३।३१	गण्ड	५६।४६	बव	२।१३	कुम्भ	अहोरात्रं	५।२२।२५।५६	२६।००	६।१२	५।४८	१६
१३	शु.	३६।५२	रा.१०।१०	पूर्वाभाद्रपद	५६।४६	रा.शे६।०६	वृद्धि	५८।११	कौलव	७।१५	कुम्भ	अहोरात्रं	५।२३।२५।२६	२८।५६	६।१३	५।४७	१७
१४	श.	४५।०४	रा.१२।१६	उत्तराभाद्रपद	६०।००	समस्त	ध्रुव	५६।२८	गर	१२।२८	कुम्भ ४६।३४	रा.२।०४	५।२४।२४।५६	२८।५२	६।१४	५।४६	१८
१५	र.	४६।४४	रा.२।०८	उत्तराभाद्रपद	०६।०६	दि.८।४२	व्याघात	६०।००	भद्रा	१७।२४	मीन	अहोरात्रं	५।२५।२४।२६	२८।४८	६।१४	५।४६	१६

दिनांकाः ने.	अं.	
१२	२६	शारदीयनवरात्रारम्भः, **कलशस्थापनं**, नवरात्रव्रतारम्भः, गजरुढा भगवत्याः आगमनं फलं वृष्टिप्रद। केशसंस्कार द्रव्याणिप्रदद्यात्प्रतिपदिने। शैलपुत्रीदर्शनं। अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.६।५२ या. ←
१३	३०	**श्रीरेमन्त पूजा**। ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनं। पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयम हेतवे। **चन्द्रदर्शनं** मु३० समताकरम्। शिववासः रा.८।०० या., मृत्युयोगः रा.८।०० या. **विपणिः**, वस्त्रनांकन, हलप्रवहण बीजवपन, यानादिचालन
१४	१	**अक्टूबर१०**, श्रीगणेश४ व्रतं, दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा। चित्रघण्टा देवी दर्शन। अग्निवासः, सिद्धियोगः सा.६।०५ या. ततः गज्जरयोगः, भद्रा५८।०० उ., हलप्रवहण। स्वात्यां बुध१०।१०।
१५	२	**श्रीगणेशपूजनं**। कुष्माण्डादेवी दर्शनं, मधुपर्क चतुर्थ्यातु तिलकं नेत्रमण्डनम्। शिववासः दि.४।३० उ., सर्वार्थसिद्धियोगः सा.६।२६ उ., भद्रा २६।०० या., **बोरिंगटंकी प्रभृतिस्थापनं**। तुलायां शुक्र००।२०।
१६	३	स्कन्दमातादर्शनं, पंचम्यामंगराग च शक्त्यालंकरणानि च। शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.३।१८ या., सर्वार्थसिद्धियोगः सा.६।०० या., विपणि, हलप्रवहणं, बीजवपनं, स्वामीसेवारम्भ।
१७	४	सौभाग्ययोगमानं ५७।२०, **विल्वाभिमन्त्रणं**, गजपूजा, शिववासः दि.२।३२ या., सिद्धियोगः दि.२।३२ या. ततः मृत्युयोगः, यानादिचालनं।
१८	५	नवपत्रिकाप्रवेशः, **महारात्रिर्निशापूजा**, रात्रिजागरण, मूलेसरस्वत्याः आवाहन,भगवतीदर्शन। **अन्नपूर्णापरिक्रमारम्भः**। अग्निवासः, भद्रा२०।१३ तः ५०।२८ या.।
१९	६	**महाष्टमी ८ व्रतं**, दीक्षाग्रहणं, महागौरीदेवीदर्शनं, श्रीदुर्गाष्टमी८ व्रतम्। शिववासः-अग्निवासः दि.२।२६ उ., सिद्धियोगः दि.२।२६ या.,धान्यछेदनं।
२०	७	**महानवमी ९ व्रतं**। त्रिशूलनीपूजा, प्रभूततरबलिदानं,दीक्षाग्रहणं, **हवनादिः**। शिववासः-अग्निवासः दि.३।१५ या., अमृतयोगः दि.३।१५ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।५० उ., विपणि।
२१	८	**विजयादशमी१०, नवरात्रव्रतपारण**, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, अपराजितापूजा, समीपूजा, नीलकण्ठदर्शनम्। सीमोल्लंघनम्। चरणायुद्ध(मुर्गा)वाहनया देव्याः गमनं फलं विकला प्रद। **दक्षसावर्णिमन्वादि** ♍
२२	९	**पाशांकुशएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्**। अग्निवासः सा.६।०७ या., अमृयोगः, सिद्धियोगः, भद्रा२६।४६ या.।
२३	१०	गुडेन पारणा, **श्रीपद्मनाभ १२**। शिववासः, अग्निवासः रा.८।०३ उ., अमृतयोगः रा.८।०३ उ.। हस्ते मंगल २१।०३।
२४	११	**प्रदोष १३ व्रतं**,शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.१०।१० उ., बोरिंगटंकी प्रभृतिस्थापनं, **चित्रायां रविः ३८।५६ रा.६।४७**, पु.स्त्री.सु.सृ-योगोः मंडुकवाहनं नीगनाड़ी तदीशोः शुक्रः वायुवृष्टि।
२५	१२	प्रदोष १४ व्रतं, सिद्धियोगः रा.१२।१६ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा ४५।०४ उ.। विशाखायां बुध २५।११।
२६	१३	शदत्पूर्णिमा१५,स्नानदान-व्रतादौ, कौमदीमहोत्सव(**कोजागरा**), श्रीमहालक्ष्मीपूजा। दीक्षाग्रहणम्। **आदिकविवाल्मीकिजयन्ती**। अमृतयोगः रा.२।०८ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा१७।२४ या., **विपणि**।

♍ **पञ्चकारम्भः**(भदवा) रा.१०।४३ उ.। अग्निवासः दि.४।२८ उ., मृत्युयोगः दि.४।२८ उ., भद्रा५७।४६ उ.,स्वात्यां शुक्र२३।१०।

← मृत्युयोगः रा.१०।११ या. ततः द्विपुष्करयोगः, **विपणि**, धान्यछेदनं, स्वामीसेवारम्भः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	र.	५।०२।४०।४६	६।०१।४७।४१	७।२५।२१।१०	५।२५।०१।१२	८।१६।२४।२२	८।२१।२६।५०	४४।५१
२	चं.	५।०३।१६।२६	६।०३।२१।३१	७।२५।३५।१३	५।२६।१५।३६	८।१६।२५।५१	८।२१।२६।३६	४४।४६
३	मं.	५।०३।५८।०६	६।०४।५३।५०	७।२५।४३।२५	५।२७।३०।०१	८।१६।२७।२५	८।२१।२३।२८	४४।४७
४	बु.	५।०४।३६।४७	६।०६।२४।३२	७।२५।५१।४५	५।२८।४४।२६	८।१६।२६।०६	८।२१।२०।१७	४४।४५
५	गु.	५।०५।१५।२८	६।०७।५३।३१	७।२६।००।१३	५।२६।५८।५२	८।१६।३०।४३	८।२१।१७।०६	४४।४३
६	शु.	५।०५।५४।०६	६।०६।२०।३८	७।२६।०८।४६	६।०१।१३।१८	८।१६।३२।१७	८।२१।१३।५५	४४।४१
७	श.	५।०६।३२।५०	६।१०।४५।४६	७।२६।१७।३३	६।०२।२७।४५	८।१६।३४।४६	८।२१।१०।४५	४४।३६
८	र.	५।०७।११।३२	६।१२।०८।४६	७।२६।२६।२५	६।०३।४२।१२	८।१६।३६।५२	८।२१।०७।३४	४४।३७
९	चं.	५।०७।५०।१४	६।१३।२६।३०	७।२६।३५।२५	६।०४।५६।४०	८।१६।३६।०४	८।२१।०४।२३	४४।३५
१०	मं.	५।०८।२८।५६	६।१४।४७।४७	७।२६।४४।३२	६।०६।११।०६	८।१६।४१।२२	८।२१।०१।१२	४४।३३
११	बु.	५।०६।०७।३६	६।१६।०३।२७	७।२६।५३।४६	६।०७।२५।३८	८।१६।४३।४५	८।२०।५८।०१	४४।३१
१२	गु.	५।०६।४६।२१	६।१७।१६।२०	७।२७।०३।०८	६।०८।४०।०७	८।१६।४६।१५	८।२०।५४।५०	४४।३०
१३	शु.	५।१०।२५।०४	६।१८।२६।१३	७।२७।१२।३७	६।०६।५४।३७	८।१६।४८।५१	८।२०।५१।४०	४४।२८
१४	श.	५।११।०३।४८	६।१६।३२।५४	७।२७।२२।१४	६।११।०६।१८	८।१६।५१।३३	८।२०।४८।२६	४४।२६
१५	र.	५।११।४२।३१	६।२०।३६।११	७।२७।३१।५७	६।१२।२३।३८	८।१६।५४।२०	८।२०।४५।१८	४४।२४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	२०।३१	२२।२७	०।४०	२।५८	५।१४	७।२६	६।४६	१२।०३	१४।०८	१५।५४	१७।२५	१८।५४
२	२०।२७	२२।२३	०।३६	२।५४	५।१०	७।२५	६।४२	११।५६	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।५०
३	२०।२३	२२।१६	०।३२	२।५०	५।०६	७।२१	६।३८	११।५५	१४।००	१५।४६	१७।१७	१८।४६
४	२०।२०	२२।१६	०।२६	२।४७	५।०३	७।१८	६।३५	११।५२	१३।५७	१५।४३	१७।१४	१८।४३
५	२०।१६	२२।१२	०।२५	२।४३	४।५६	७।१४	६।३१	११।४८	१३।५३	१५।३६	१७।१०	१८।३६
६	२०।१२	२२।०८	०।२१	२।३६	४।५५	७।१०	६।२७	११।४४	१३।४६	१५।३५	१७।०६	१८।३५
७	२०।०६	२२।०५	०।१८	२।३६	४।५२	७।०७	६।२४	११।४१	१३।४६	१५।३२	१७।०३	१८।३२
८	२०।०५	२२।०१	०।१४	२।३२	४।४८	७।०३	६।२०	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५६	१८।२८
९	२०।०१	२१।५७	०।१०	२।२८	४।४४	६।५६	६।१६	११।३३	१३।३८	१५।२४	१६।५५	१८।२४
१०	१६।५८	२१।५४	०।०७	२।२५	४।४१	६।५६	६।१३	११।३०	१३।३५	१५।२१	१६।५२	१८।२१
११	१६।५४	२१।५०	०।०३	२।२१	४।३७	६।५२	६।०६	११।२६	१३।३१	१५।१७	१६।४८	१८।१७
१२	१६।५०	२१।४६	२३।५६	२।१७	४।३३	६।४८	६।०५	११।२२	१३।२७	१५।१३	१६।४४	१८।१३
१३	१६।४७	२१।४३	२३।५६	२।१४	४।३०	६।४५	६।०२	११।१६	१३।२४	१५।१०	१६।४१	१८।१०
१४	१६।४३	२१।३६	२३।५२	२।१०	४।२६	६।४१	८।५८	११।१५	१३।२०	१५।०६	१६।३७	१८।०६
१५	१६।३६	२१।३५	२३।४८	२।०८	४।२२	६।३७	८।५४	११।११	१३।१६	१५।०२	१६।३३	१८।०२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	र.	दि.१०:३३-१:३०।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.१:३३-३:०४।
२	चं.	प्रा.७:३६-६:०५ दि.२:५७-४:२५।	रा.१०:२६-१२:०१ रा.३:०५-४:३६।
३	मं.	प्रा.७:३६-६:०४ दि.१५:२८-२:५६।	रा.७:२४-८:५६।
४	बु.	दि.६:०५-१०:३३ दि.१२:०१-१:२६।	रा.१२:०१-१:३३ रा.३:०५-४:३७।
५	गु.	सं.२:५५-५:५०।	रा.१२:०२-१:३४ रा.४:३८-६:१०।
६	शु.	दि.६:०५-१२:०१।	रा.८:५६-१०:२६।
७	श.	प्र.६:११-७:३६ दि.१:२८-२:५५ सं.४:२२-५:४६।	सं.५:४६-७:२२ रा.१:३४-३:०७ रा.४:३६-६:१२
८	र.	दि.१०:३३-१:२७।	रा.१०:२८-१२:०१ रा.३:०७-४:४०।
९	चं.	प्रा.७:४०-६:०७ दि.२:२५-४:२१।	रा.१०:२७-१२:०० रा.१:३३-३:०६।
१०	मं.	प्रा.७:४१-६:०८ दि.१:२८-२:५०।	रा.७:२०-८:५४।
११	बु.	दि.६:०८-१०:३५ दि.१२:०२-१:२८।	रा.१२:०२-१:३५ रा.३:०८-४:४१।
१२	गु.	सं.२:५३-५:४५।	रा.१२:०१-१:३५ रा.४:४३-६:१७।
१३	शु.	दि.६:०८-१२:००।	रा.८:५२-१०:२६।
१४	श.	प्र.६:१७-७:४३ दि.१:२७-२:५३ सं.४:१८-५:४३।	सं.५:४३-७:२८ रा.१:३५-३:०६ रा.४:४३-६:१८
१५	र.	दि.१०:३६-१:२७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.१:३६-३:१०।

४ बुधे वल्ली८।२६।३१।३२ अयनांशाः २२।४८।२२

रा. ल.१, १२, ११, १०, ६, २, ८, ३, ४ मं.सू., ५ बु., शु., ६ गु.च., श ७ के.

११ बुधे वल्ली८।३६।३१।३६ अयनांशाः २२।४८।२३

रा. ल.१, १२, ११, १०, चं.६, २, ८, ३, ४ मं.सू., ५ बु., शु., ६ गु., श ७ के.

दुर्गा-आगमन-शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौशुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता। **फल**- गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्। **दुर्गा-गमनफल**-शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुध यानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा,सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा।

अपराजिता **पूजन** निर्णय-आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेत्ततः। एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्। अपराजिता **धारण मन्त्र**-ॐ जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये।।

शमी की पूजाकर यात्रा करनी चाहिए। मन्त्र-शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टका। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी।। करिष्यमाणा या यात्रा यथाकालं सुखं मया। तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते।। **कोजागरा-कौमदी** निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोति यः।।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.५ गुरु सा.६।०० उ. ति.७ शनि सा.६।२४ या.। **रेवती/अश्विनी** ति.१५ रवि दि.८।४२ उ.......।

❖कलशस्थापन का संकल्पः-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भागवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मवर्तैकदेशे पुण्य **विहारप्रदेशे मिथिलांचले....अमुक मण्डले**(जिला)... **अमुकग्रामे**(गाम), **स्वगृहे**(यदिअपनाघर में हो),**अमुक देवालय**(यदिमन्दिर में हो)प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने **परिधावि** नामसंवत्सरे, **दक्षिणायने, उत्तरगोले,** महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे **आश्विने** मासे, **शुक्ले** पक्षे, **प्रतिपदायां** तिथौ, **सूर्यः** वासरान्वितायां, **हस्त** नक्षत्रे **ब्रह्म** योगे, **किंगस्तुघ्न** करणे, **कन्या** राशिस्थिते श्रीसूर्ये, **कन्या** राशिस्थिते श्रीचन्द्रे,यथा-यथा राशिस्थितेषु भौम- बुध-गुरु-शुक्र-शनिषु सत्सु शुभे योगे शुभे करणे एवं गुण-गण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः*अमुकगोत्रोत्पन्नः (**यजमानक गोत्र**), अमुकशर्मा (**यजमानक नाम**)अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्री वान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत-राजकृत-सर्वविधपीडा- निवृत्ति-पूर्वकं- नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिः धनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति- सर्वाभीष्ट फलावाप्ति-धर्मार्थ- काम-मोक्ष- चतुर्विध -पुरुषार्थप्राप्त्यर्थं **साङ्गसायुध सवाहनसपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजा अङ्गभूतकलशस्थापनं पूजनं च अहं करिष्ये।**

* **यदि सामाजिकसम्मिलितपूजा** हो तो- अमूकग्रामवासीनाम(**गामक नाम**) नानानां गोत्राणां सकल जनानामेतत्पूजोपकारकाणामन्यग्रामवासिनां च उपस्थितशरीराविरोधेन श्रीनवदुर्गानुग्रहतो...।

कार्त्तिककृष्णपक्षः ।।

शक१९४१, सवत्२०७६, सन् १४२७, दाक्षिणायन, उत्तरगोलः ति.५ तः दक्षिण गोलः, शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः, शुद्धः ।
दिनांक १४ अक्टूबर तः २८ यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्र पश्चिमोदित; मार्गी शनि पूर्वोदितः, मार्गी कुज पश्चिमास्त; मार्गी बुध पश्चिमोदित।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द.प.	घं.मि.	नक्षत्र	द.प.	घं.मि.	योगाः	द.प.	करण द.प.	चन्द्रराशयः राशिः द.प.	समाप्तिकाल घ.मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द.प.	सूर्योदयः घं.मि.	सूर्यास्तः घं.मि.	रा.	दिनांक ने.	अं.	
१	च.	५३।४१	रा.३।४३	रेवती	११।५५	दि.११।०१	व्याघात्	००।२०	वालव २१।४३	मीन ११।५५	दि.१०।४५	५।२६।२४।००	२८।४४	६।१५	५।४५	२०	२७	१४	कार्त्तिकेद्विदलं त्यजेत्। कार्त्तिकेयमुनास्नानं महापुण्यप्रदं, **पञ्चकसमाप्तिः(भदवा) दि.११।१ उ.।** शिववास, अग्निवास, **विपणि,** यानादिचालनं, सिद्धियोगः रा.३।४३या. ततः मृत्युयोगः। उत्तरयात्रा दि११।१ या. ततःपूर्वाविनायात्रा
२	म.	५६।२६	रा.४।५०	अश्विनी	१६।५०	दि.०१।००	हर्षण	००।३४	तैतिल २५।०४	मेष	अहोरात्रं	५।२७।२३।३१	२८।४०	६।१६	५।४४	२१	२८	१५	वज्रयोगः ५६।१६, **अशून्यशयन २ व्रतं,** अमृतयोगः रा.४।५० या., अमृतयोगः, यानादिचालनं, वस्तुनाक्रय, हलप्रवहण, उत्तराविनयायात्रा दि.१।०० या.।
३	बु.	५८।०७	रा.शे५।३२	भरणी	२०।३३	दि.२।३०	सिद्धि	५८।२३	वणिज् २७।१७	मेष ३६।१४	रा.८।४६	५।२८।२३।०२	२८।३६	६।१७	५।४३	२२	२९	१६	अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.५।३२ या., भद्रा२७।१७ तः ५८।०७ या., मीलचालनं, वस्तुना विक्रयः दि.२।३० या.।
४	गु.	५८।२७	रा.शे५।४१	कृत्तिका	२३।१५	दि.३।३६	व्यतीपात	५५।५०	वव २८।१७	वृष	अहोरात्रं	५।२९।२२।४४	२८।३२	६।१८	५।४२	२३	३०	१७	मासान्तः, **करकचतुर्थी(करवाचौठ),** श्रीकृष्णपिंगाक्ष४ व्रतं, शिववासः, मृत्युयोगः। ★ शिववासः दि.४।४२ या. ततः अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.४।४२ या.। **स्वात्यां रविः २।३७।**
५	शु.	५७।२९	रा.शे५।१८	रोहिणी	२४।३५	दि.४।०८	वरीयान्	५२।१६	कौलव २७।५८	वृष ५४।३९	रा.४।०९	६।००।२२।३०	२८।२८	६।१८	५।४२	२४	१	१८	**तुलायां रविः २१।४० दि.२।५८।** मु.४५ फलं समर्घताकरम्,**धान्यविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालः दि.११।०० उपरि सूर्यास्तं यावत् पुण्याह। सिमरियाधाम्नि कल्पवासारम्भः, कार्तिकस्नानारम्भः। दक्षिणगोलारम्भः,** ←
६	श.	५५।१८	रा.४।२६	मृगशिरा	२४।४२	दि.४।१२	परिघ	४७।४४	गर २६।२४	मिथुन	अहोरात्रं	६।०१।२२।१६	२८।२४	६।१९	५।४१	२५	२	१९	मासादिः, **अशोकचन्दन ६।** अमृतयोगः रा.४।२६ या., भद्रा५५।१८ उ.। विशाखायां शुक्रः७।३५। ← **ने.कार्तिकमासारम्भः।** शिववासः, अग्निवासः।
७	र.	५२।०३	रा.३।०९	आर्द्रा	२३।३९	दि.३।४८	शिव	४२।२२	भद्रा २३।४१	मिथुन	अहोरात्रं	६।०२।२२।०२	२८।२०	६।२०	५।४०	२६	३	२०	अहोई ८ व्रतं, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.३।०६ उ., त्रिपुष्करयोगः दि.३।४८ तः रा.३।०६ या., भद्रा२३।४१ या.।
८	च.	४७।५५	रा.१।३१	पुनर्वसु	२१।४३	दि.३।०२	सिद्ध	३६।१६	वालव १९।५९	मिथुन ७।१२	दि.९।१४	६।०३।२१।४९	२८।१६	६।२१	५।३९	२७	४	२१	श्रीराधाजयन्ती ८, श्रीराधाष्टमी ८, शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।०२ उ.। पश्चिमयात्रा दि.३।०० ततः पूर्वाविनायात्रा।
९	म.	४३।०१	रा.११।३४	पुष्य	१८।५४	दि.१।२६	साध्य	२९।३२	तैतिल १५।२८	कर्क	अहोरात्रं	६।०४।२१।३६	२८।१२	६।२२	५।३८	२८	५	२२	अग्निवासः, राज्यप्रदयोगः रा.११।३४ या.। उत्तराविनायात्रा दि.१।५६ या.।
१०	बु.	३७।३५	रा.६।२४	आश्लेषा	१५।२८	दि.१२।३३	शुभ	२२।१६	वणिज् १०।१८	कर्क १५।२८	दि.१२।३३	६।०५।२१।२३	२८।०८	६।२२	५।३८	२९	६	२३	अमृतयोगः रा.६।२४ उ., भद्रा१०।१८ तः ३७।३५ या., मीलचालनं।
११	गु.	३१।४६	रा.७।०५	मघा	११।३२	दि.११।००	शुक्ल	१४।३९	वव ४।४१	सिंह	अहोरात्रं	६।०६।२१।२४	२८।०४	६।२३	५।३७	३०	७	२४	रम्भाएकादशी११ **व्रतं सर्वेषां,** शिववासः, अग्निवासः रा.७।०५ या.।
१२	शु.	२५।४४	दि.४।४२	पूर्वाफाल्गुनी	०७।२४	दि.८।२२	ब्रह्म	०६।५२	तैतिल २५।४४	सिंह २१।२१	दि.१४।५६	६।०७।२१।२५	२८।००	६।२४	५।३६	१	८	२५	ऐन्द्रयोगमानं५२।०८, विल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं, **प्रदोष१३ व्रत,** गोवत्सद्वादशी१२। श्रीधनवन्तरिजयन्तो(**धनतेरस**)। **ब्रह्मवैवर्ते**-नारायणांशो भगवान् स्वयं धन्वन्तरिर्महान्। पुरा समुद्रमंथने समुत्तस्थौ महोदधेः। ★
१३	श.	१९।४४	दि.२।१९	उत्तराफाल्गुनी	०३।१०	दि.७।४१	वैधृति	५१।१६	वणिज् १९।४४	कन्या	अहोरात्रं	६।०८।२१।२६	२७।५६	६।२५	५।३५	२	९	२६	हस्तनक्षत्रमानं ५५।५७ रा.४।४९। **प्रदोष १४ व्रतं,** यमदीपदानं, हनुमद्ध्वजदानं, हनुमज्जन्मोत्सवः। अग्निवासः दि.२।१९ या., सिद्धियोगः दि.२।१९ उ., भद्रा १९।४४ तः ४९।५२ या.।
१४	र.	१४।००	दि.१२।०२	चित्रा	५५।२७	रा.४।३७	विष्कुम्भ	४३।४९	शकुनी १४।००	कन्या २७।१७	सा.५।२१	६।०९।२१।२७	२७।५२	६।२६	५।३४	३	१०	२७	अग्निवासः दि.१२।०२ या. **दीपावली,** सुखरात्रिः, प्रदोषे रा.७।१६ यावद्रात्री लक्ष्मि-कूबेरपूजा, उल्काभ्रमण,रात्रीशेषे दरिद्रनिःसारणं,दीक्षाग्रहण, **कालीपूजा,** निशीथे कालीतारामुवनेश्वरीप्रादुर्भावः। वृश्चिकेशुक्रः ५६।०४।
३०	च.	०८।३९	दि.९।५४	स्वाती	५२।१८	रा.३।२१	प्रीति	३६।४९	नाग ८।३९	तुला	अहोरात्रं	६।१०।२१।२८	२७।४९	६।२६	५।३४	४	११	२८	कार्तिकी३०,स्नानदानादिः, सोमवत्तीअमावस्या ३०, सामवारीव्रतं, शिववासः दि.९।५४ या.। गोपूजा। **गोक्रीडा,** गोवर्धनपूजा, वृषभेऔषधियदानं, अन्नकूटः, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं। मूलेधनुषि गुरु ४।०७।

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.२ मंगल दि.१।०० यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.९ मंगल दि.१।५६ तः ति.११ गुरु दि.११।०० यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुधः राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	च.	५।१२।२१।१५	६।२१।३५।४६	७।२७।४१।४७	६।१३।३८।१०	८।१६।५७।१३	८।२०।४२।०७	४४।२२	१९।३६	२१।३२	२३।४५	२।०३	४।१९	६।३४	८।५१	११।०८	१३।१३	१४।५९	१६।३०	१७।५९
२	म.	५।१२।५९।५७	६।२२।३१।३३	७।२७।५१।४४	६।१४।५२।४१	८।१७।००।१२	८।२०।३८।५६	४४।२०	१९।३२	२१।२८	२३।४१	१।५६	४।१५	६।३०	८।४७	११।०४	१३।०९	१४।५५	१६।२९	१७।५५
३	बु.	५।१३।३८।४२	६।२३।२३।०७	७।२८।०१।४८	६।१६।०७।१४	८।१७।०३।१७	८।२०।३५।४५	४४।१८	१९।२९	२१।२५	२३।३८	१।५६	४।१२	६।२७	८।४४	११।०१	१३।०६	१४।५२	१६।२३	१७।५२
४	गु.	५।१४।१७।२७	६।२४।१०।२०	७।२८।११।५८	६।१७।२१।४६	८।१७।०६।२८	८।२०।३२।३४	४४।१६	१९।२५	२१।२१	२३।३४	१।५२	४।०८	६।२३	८।४०	१०।५७	१३।०२	१४।४८	१६।१९	१७।४८
५	शु.	५।१४।५६।१२	६।२४।५२।५०	७।२८।२२।१४	६।१८।३६।१९	८।१७।०९।४४	८।२०।२९।२४	४४।१४	१९।२१	२१।१७	२३।३०	१।४८	४।०४	६।१९	८।३६	१०।५३	१२।५८	१४।४४	१६।१५	१७।४४
६	श.	५।१५।३४।५८	६।२५।३०।२६	७।२८।३२।३७	६।१९।५०।५२	८।१७।१३।०५	८।२०।२६।१३	४४।१२	१९।१७	२१।१३	२३।२६	१।४४	४।००	६।१५	८।३२	१०।४९	१२।५४	१४।४०	१६।११	१७।४०
७	र.	५।१६।१३।४३	६।२६।०२।५१	७।२८।४३।०६	६।२१।०५।२६	८।१७।१६।३२	८।२०।२३।०२	४४।१०	१९।१३	२१।०९	२३।२२	१।४०	३।५६	६।११	८।२८	१०।४५	१२।५०	१४।३६	१६।०७	१७।३६
८	चं.	५।१६।५२।३०	६।२६।२९।४४	७।२८।५३।४१	६।२२।२०।००	८।१७।२०।०५	८।२०।१९।५१	४४।०८	१९।०९	२१।०५	२३।१८	१।३६	३।५२	६।०७	८।२४	१०।४१	१२।४६	१४।३२	१६।०३	१७।३२
९	म.	५।१७।३१।१७	६।२६।५०।५७	७।२९।०४।२३	६।२३।३४।३४	८।१७।२३।४३	८।२०।१६।४०	४४।०६	१९।०५	२१।०१	२३।१४	१।३२	३।४८	६।०३	८।२०	१०।३७	१२।४२	१४।२८	१५।५९	१७।२८
१०	बु.	५।१८।१०।०४	६।२७।०६।१३	७।२९।१५।१०	६।२४।४९।०९	८।१७।२७।२६	८।२०।१३।२९	४४।०४	१९।०१	२०।५७	२३।१०	१।२८	३।४४	५।५९	८।१६	१०।३३	१२।३८	१४।२४	१५।५५	१७।२४
११	गु.	५।१८।४८।५१	६।२७।१५।२२	७।२९।२६।०३	६।२६।०३।४४	८।१७।३१।१४	८।२०।१०।१९	४४।०२	१८।५७	२०।५३	२३।०६	१।२४	३।४०	५।५५	८।१२	१०।२९	१२।३४	१४।२०	१५।५१	१७।२०
१२	शु.	५।१९।२७।३९	६।२७।१८।१६	७।२९।३७।०१	६।२७।१८।१९	८।१७।३५।०८	८।२०।०७।०८	४४।००	१८।५४	२०।५०	२३।०३	१।२१	३।३७	५।५२	८।०९	१०।२६	१२।३१	१४।१७	१५।४८	१७।१७
१३	श.	५।२०।०६।२७	६।२७।१४।४६	७।२९।४८।०५	६।२८।३२।५५	८।१७।३९।०७	८।२०।०३।५७	४३।५८	१८।५०	२०।४६	२२।५९	१।१७	३।३३	५।४८	८।०५	१०।२२	१२।२७	१४।१३	१५।४४	१७।१३
१४	र.	५।२१।२४।०४	६।२७।०४।५४	७।२९।५९।१५	६।२९।४७।३०	८।१७।४३।११	८।२०।००।४६	४३।५६	१८।४६	२०।४२	२२।५५	१।१३	३।२९	५।४४	८।०१	१०।१८	१२।२३	१४।०९	१५।४०	१७।०९
३०	चं.	५।२१।२४।०६	६।२६।४८।४४	८।००।१०।३०	७।०१।०२।०६	८।१७।४७।२०	८।१९।५७।३५	४३।५४	१८।४२	२०।३८	२२।५१	१।०९	३।२५	५।४०	७।५७	१०।१४	१२।१९	१४।०५	१५।३६	१७।०५

कार्त्तिकविशेष- कार्त्तिके [illegible] कार्त्तिके वर्जयेन्मधुः। कार्त्तिके वर्जयेन्मासं कार्त्तिके शुक्तसन्धितम्। **धातृ छाया में ब्राह्मणभोजन फल-**धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं [illegible] आकाशदीपदानफलम्- तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसंपदः।। **कार्तिकस्नानः-** कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी [illegible] हविष्यभुक् शान्त सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **स्नानमन्त्रः-**कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह।।
[illegible]मायां लक्ष्मीपूजा- [illegible] सकत्य मम गृहेऽचललक्ष्मी निवासाय लक्ष्मी पूजनम् अहं करिष्ये। विहितोपचारैः संपूज्यान्ते **प्रार्थना** -नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।
[illegible] कार्तिके मासि स्नातस्य विधिसम्मतम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजेन्द्रनिषूदन।। नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने। गृहाणार्घ्यंमया दत्तं राधया सहितो हरेः।। **दीपदानमन्त्रः-** दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।। **उल्काभ्रमणमन्त्रः**-जरवा योग्य खढ़ सनकाठी सँ बनाओल उक मे एक दिशि आगि लगाऽ घर क बाहर दक्षिण मुँह ठाढ़भऽउल्का भ्रमण करथि। मन्त्र- **शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।।** तखन दक्षिण दिशि आकाश मे उक देख वैत आगाँ मन्त्र पढ़थि- **अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मन। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।।** विसर्जनक मन्त्र-**ॐ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।** ई कहि दक्षिण दिशि उक के फेकि देथि। नीचा केवल फेकल उक के तीनि वेरि नांघि ओहि में सँ अधजरल सनकाठी गोंआओन क लग राखथि ओहि [illegible] सूप वजेवाक व्यवहार अछि।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा१ घण्टा मिनट
१ च.	प्रा.७:४४-९:१० दि.२:५२-४:१७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.३:१०-४:४४।
२ म.	प्रा.७:४५-९:११ दि.१:२६-२:५१।	सं.७:१६-८:५१।
३ बु.	दि.९:१०-१०:३५ दि.१२:००-१:२५।	रा.१२:००-१:३५ रा.३:१०-४:४५।
४ गु.	दि.२:५१-५:३६।	रा.१२:०१-१:३६ रा.४:४६-६:२२।
५ शु.	दि.९:१२-१२:०२।	रा.८:५०-१०:२६।
६ श.	प्र.६:२२-७:४७ दि.१:२६-२:५० सं.४:१४-५:३८।	सं.५:३८-७:१४ रा.१:३७-३:१२ रा.४:४७-६:२३
७ र.	दि.१०:२७-१:२५।	रा.१०:२५-१२:०१ रा.१:३७-३:१२।
८ चं.	प्रा.७:४८-९:१२ दि.२:४८-४:१२।	रा.१०:२४-१२:०० रा.३:१२-४:४८।
९ म.	प्रा.७:४९-९:१३ दि.१:२५-२:४९।	रा.७:१२-८:४९।
१० बु.	दि.९:१४-१०:३८ दि.१२:०२-१:२५।	रा.१२:०२-१:३८ रा.३:१४-४:५०।
११ गु.	दि.२:४८-५:३४।	रा.१२:०२-१:३८ रा.४:५०-६:२७।
१२ शु.	दि.९:१५-१२:०१।	रा.८:४७-१०:२४।
१३ श.	प्र.६:२७-७:५१ दि.१:२४-२:४७ सं.४:१०-५:३३।	सं.५:३३-७:१० रा.१:३८-३:०३ रा.४:५१-६:२८
१४ र.	दि.१०:३७-१:२३।	रा.१०:२३-१२:०० रा.१:३७-३:१४।
३० च.	प्रा.७:५१-९:१४ दि.२:४६-४:०९।	रा.१०:२३-१२:०० रा.३:१४-४:५१।

३ बुधे वल्ली८।३९।३१।४६
अयनांशाः २२।४८।२४

च. ११, रा. १२, १०, ९, ८, ल.१, ७, २, शु. ४ बु, श ६ के., ३ मं सू, ५ गु.

१० बुधे वल्ली८।३९।३१।५३
अयनांशाः २२।४८।२५

११, रा. १२, १०, ९, ८, ल.१, ७, २ चं., सू शु. ४ बु, श ६ के., ३ मं, ५ गु.

आश्विन कृष्ण पक्ष के अवशेष-

रहितहुँ तत्तद्देशीय आचार्य लोकनि तत्तद्देशीय आचार-व्यवहारक अनुसार धर्मशास्त्रीय निबन्ध आ पूजापाठ आदिक पद्धति सभक रचना करैत छथि। इएह धर्मशास्त्रीय निबन्ध आ पद्धति स्थानभेदक आधार पर **दाक्षिणात्य, गौड आ मैथिल निबन्ध** तथा पद्धतिक नाम सँ जानल जाइत अछि।

मिथिलाक सदाचार सँ सम्बन्धित समय-समय पर अनेको निबन्ध आ पद्धतिक रचना होइत रहल, जकरा सभक उद्धरण कतेको ग्रन्थ मे उपलब्ध होइत अछि। पुन, आजुक तिथि मे प्राचीन निबन्ध-ग्रन्थक रूप मे श्रीदत्तोपाध्यायक **"आचारादर्शः"** वाजसनेयीक लेल आ **"छन्दोगाह्निकम्"** छन्दोगक लेल आ महामहोपाध्याय अयाची मिश्रक पुत्र म.म. शंकर मिश्रक ग्रन्थ **"छन्दोगाह्निकोद्धारः"** छन्दोगक लेल सर्वसुलभ अछि।

एहि सदाचारक प्रकाशन मे अनेको प्राचीन पद्धति आ निबन्ध क आधार पर विद्वज्जनक सहयोग सँ मैथिली मे निर्देशसहित एहि मैथिलक सदाचार-पद्धति कें अपने सभक समक्ष प्रस्तुत करैत हम आइ आत्म-सन्तुष्टिक अनुभव कए रहल छी। एहि ग्रन्थक परिशिष्टक रूप मे विविध आवश्यक व्यवहारोपयोगी मन्त्र आ ज्ञातव्य विविध विषयेक समावेश कएल गेल अछि। संगहि कर्त्तव्य सन्ध्यावन्दनादि कृत्यक विविध सम्बन्ध मे ज्ञातव्य आधारक सम्बन्ध मे अनेको उद्धारण देल गेल अछि।

मिथिला मे सदाचार के रूप मे सन्ध्यावन्दन, तर्पण, देवपूजा आदिक संगे देवता सभक स्तुतिक प्राचीन परम्परा रहल अछि। स्तुतियो सभ मे **"सूर्यादि-द्वादशस्तवी"** जे **"गोसाई नाम"** सँ प्रसिद्ध अछि, कार्तिक, माघ आ वैशाख स्नान के समय प्रातः काल मैथिल महिला लोकनिक मध्य सुनबाक अविरल परम्परा रहल अछि। देखू संगहि संग आनो कतेक स्तुति एहि ठाम जन-जन केर कण्ठ मे आइयो विराजमान अछि। ... आगु पौषकृष्णपक्ष मे

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, दक्षिणायनं, दक्षिणगोलः, शरद् ऋतुः। उत्तरे क्रान्तः।
दिनांक २९ अक्टूबरतः १२ नवम्बर यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पश्चिमोदित; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधः पश्चिमोदित।

तिथयः	वार	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांका ने.	अं.
१	मं.	०३।५५	दि.८।०१	विशाखा	५०।०२	रा.२।२८	आयुष्मान	३०।४५	बव३।५५	तुला २५।३६	दि.४।४१	६।११।२१।२६	२७।४६	६।२७	५।३३	५	१३	२९
२	बु.	००।०१	प्रा.६।२८	अनुराधा	४८।३१	रा.१।५१	सौभाग्य	२४।३९	कौलव ००।०१	वृश्चिक	अहोरात्रं	६।१२।२१।३१	२७।४३	६।२७	५।३३	६	१४	३०
४	गु.	५५।१२	रा.४।३३	ज्येष्ठा	४८।०७	रा.१।४३	शोभन	१९।४३	वणिज् २६।०८	वृश्चिक४८।०७	रा.१२।४७	६।१३।२१।४७	२७।४०	६।२८	५।३२	७	१५	३१
५	शु.	५४।३२	रा.४।१८	मूल	४८।५५	रा.२।०३	अतिगण्ड	१५।४१	बव २४।५२	धनु	अहोरात्रं	६।१४।२२।०३	२७।३६	६।२९	५।३१	८	१६	१
६	श.	५५।०९	रा.४।३३	पूर्वाषाढ़ा	५०।५६	रा.२।५१	सुकर्मा	१२।३९	कौलव २४।५१	धनु	अहोरात्रं	६।१५।२२।१९	२७।३३	६।२९	५।३१	९	१७	२
७	र.	५७।१२	रा.५।२३	उत्तराषाढ़ा	५४।१६	रा.४।१२	धृति	१०।३६	गर २६।११	धनु ६।४६	दि.९।१२	६।१६।२२।३५	२७।३०	६।३०	५।३०	१०	१८	३
८	चं.	६०।००	समस्त	श्रवण	५८।४४	रा.शे६।०१	शूल	०९।३४	भद्रा २८।४५	मकर	अहोरात्रं	६।१७।२२।५१	२७।२७	६।३१	५।२९	११	१९	४
८	मं.	००।१८	प्रा.६।३८	धनिष्ठा	६०।००	समस्त	गण्ड	०९।२१	बव ००।१८	मकर ३१।२८	रा.७।०६	६।१८।२३।०७	२७।२४	६।३१	५।२९	१२	२०	५
९	बु.	०४।२९	दि.८।२०	धनिष्ठा	०४।११	दि.८।१२	वृद्धि	०९।५४	कौलव ४।२९	कुम्भ	अहोरात्रं	६।१९।२३।२३	२७।२१	६।३२	५।२८	१३	२१	६
१०	गु.	०९।२४	दि.१०।१८	शतभिषा	१०।१८	दि.१०।४६	ध्रुव	१०।५५	गर ९।२४	कुम्भ	अहोरात्रं	६।२०।२३।५०	२७।१८	६।३२	५।२८	१४	२२	७
११	शु.	१४।४३	दि.१२।२६	पूर्वाभाद्रपद	१६।४८	दि.१।१६	व्याघात	१२।१७	भद्रा १४।४३	कुम्भ००।११	प्रा.६।३७	६।२१।२४।१७	२७।१४	६।३३	५।२७	१५	२३	८
१२	श.	१९।५९	दि.२।३४	उत्तराभाद्रपद	२३।१३	दि.३।५१	हर्षण	१३।३६	बालव १९।५९	मीन	अहोरात्रं	६।२२।२४।४५	२७।११	६।३४	५।२६	१६	२४	९
१३	र.	२४।४६	दि.४।२८	रेवती	२९।१०	सा.६।१४	वज्र	१४।३४	तैतिल २४।४६	मीन २९।१०	सा.६।१४	६।२३।२५।१३	२७।०८	६।३४	५।२६	१७	२५	१०
१४	चं.	२८।४४	सा.६।०५	अश्विनी	३४।२१	रा.८।१९	सिद्धि	१४।५७	वणिज् २८।४४	मेष	अहोरात्रं	६।२४।२५।४१	२७।०५	६।३५	५।२५	१८	२६	११
१५	मं.	३१।३४	रा.७।१४	भरणी	३८।२३	रा.९।५७	व्यतीपात्	१४।३२	भद्रा ००।०९	मेष ५४।०७	रा.४।१५	६।२५।२६।०९	२७।०२	६।३६	५।२४	१९	२७	१२

दिनांक ने.	अं.	विवरण
१३	२९	मातृद्वितीया(भईयादूज), चित्रगुप्तपूजा, यमुनास्नानं, भगिनीगृहे भोजनम्। महाकविकालीदासजयन्ती, उच्चैठग्रामे जन्मस्थले उज्जयिन्यां,चन्द्रदर्शनं, मु.३० समासमताकरम्। सौम्यश्रृंगं सुभिक्षकरम्। शिववासः दि.८।०१ उ.←
१४	३०	तृतीयातिथिमानं ५७।०३ रा.शे.५।१६,कदुमहुली३। प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां निरामिषभोजनं, अग्निवासः, सिद्धियोगः प्रा.६।२८ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः , विपणि,स्वामीसेवारम्भः,हलप्रवहणं,★
१५	३१	श्रीगणेश४ व्रतं, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां संयमः(नहाय-खाय)। मृत्युयोगः रा.४।३३ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा २६।०८ तः ५५।१२ या.। ◆मीलचालनं-वस्तुनाविक्रयः-बीजस्थापनं दि.१०।४६ उ.।
१६	१	प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं(खरना)। ज्ञानपंचमी। शिववासः, अग्निवासः, पूर्व-उत्तरयात्रा। बोरिंगटंकीप्रभृतियापनं, हलप्रवहणं, धान्यछेदनं, बीजस्थापनं। ★ बीजवपनं,चित्रायां मंगल२८।५०
१७	२	प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदान, डाला-छठ। स्कन्दषष्ठी ६ व्रतं। शिववासः, अमृतयोगः रा.४।३३ या.। उत्तरयात्रा।
१८	३	प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, समापूजारम्भः, जगद्धातृपूजारम्भः, सिद्धियोगः रा.५।२३ उ., त्रिपुष्करयोगः रा.४।१२ या., भद्रा२७।१२ उ.,विपणि, धान्यछेदनं,
१९	४	गोपाष्टमी, गवादीनां पूजनम्। गोशालामेलारम्भः सन्हौली-खगड़िया। अग्निवासः, पञ्चकारम्भः(मदवा) रा.शे.६।०१ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः, भद्रा २८।४५ या.,यानादिचालनं, बीजवपनं, पूर्वविनायात्रा।
२०	५	अग्निवासः प्रा.६। २८ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः प्रा.६।३८ या. ततः राज्यप्रदयोगः। रवियोगः। ♍ सिद्धियोगः दि.४।२८ या., सर्वार्थसिद्धियोगः सा.६।१४ उ., विपणिः दि.४।२८ या., स्वामीसेवारम्भः,
२१	६	अक्षयनवमी,सत्ययुगादि, गंगास्नानादि, धातृमूलेभोजनं दीक्षाग्रहणं। शिववासः दि.८।२० या.ततः अग्निवासः, गृहारम्भः- गृहप्रवेशः दशम्यां दि.८।२० उ.। स्वत्यां बुध ५८।४०।
२२	७	जगद्धातृविसर्जनं, कृष्णविजयोत्सव(ब्रज)। अग्निवासः दि.१०।१८ या., विशाखायां रविः २०।०१ दि.२।३२। गृहारम्भः-गृहप्रवेशः शतभिषायां दि.१०।४६ या.। सिद्धियोगः दि.१०।१८ या., भद्रा ४२।०४ उ.।◆
२३	८	देवोत्थानएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां, भीष्मपञ्चकारम्भः। शिववासः-अग्निवासः दि.१२।२६ उ., सिद्धियोगः दि.१२।२६ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा १४।४३ या., यानादिचालनं-वृक्षादिरोपणं-विपणी दि.१।१६ उ.,
२४	९	विल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं, दामोदर१२, तामसमन्वादिः। चातुर्मास्यव्रतपारणं, तुलसीविवाहः। प्रदोष१३ व्रतं। शिववासः, अग्निवासः दि.२।३४ या., विपणिः, गृहारम्भः-गृहप्रवेशः उत्तराभाद्रे दि.३।५१ या. तत दग्धतिथि।
२५	१०	विद्यापतिस्मृतिदिवसः। प्रदोष१४ व्रतं, बाबासाहेबरामदासपरमहंसस्य स्मृतिदिवसः। श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, शिववासः दि.४।२८ या., अग्निवासः, पञ्चकसमाप्तिः(मदवा) सा.६।१४ उ.। ♍
२६	११	श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी१४ व्रतं। सामाविसर्जनं, कार्त्तिकेयावतारः, कार्त्तिकेयपूजनं, गृहप्रवेशः अश्विनीपूर्णिमायां च सा.६।०५ तः रा.८।१६ या.। अमृतयोगः सा.६।०५ उ., भद्रा २८।४४ उ०,
२७	१२	कार्तिकपूर्णिमा१५ स्नानदान-व्रतादौ, औतममन्वादिः,सर्वदेव-देव्युत्थापनं, भीष्मपञ्चक समाप्तिः। काश्यादिषुदीपावली। सोनपुरमेला, हरिहरक्षेत्रस्नानं पूजनादिः, पुष्करक्षेत्रस्नानं, अग्निवासः रा.७।१४ या., भद्रा ००।०६ या.।

← मृत्युयोगः दि.८।०१ या. ततः अमृतयोगः, त्रिपुष्करयोगः दि.८।०१ तः रा.२।२८ या., हलप्रवहणं।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ मं.	५।२२।०२।५३	६।२६।२६।२५	८।००।२१।४८	७।०२।१६।४०	८।१७।५१।३३	८।१९।०६।४२	४३।५२
२ बु.	५।२२।४१।४३	६।२५।५८।१७	८।००।३३।१३	७।०३।३१।१६	८।१७।५५।५२	८।१९।०३।३१	४३।५१
४ गु.	५।२३।२०।३३	६।२५।२४।४५	८।००।४४।४३	७।०४।४५।५३	८।१८।००।१६	८।१९।००।२०	४३।५०
५ शु.	५।२३।५९।२३	६।२४।४६।२०	८।००।५६।१८	७।०६।००।२८	८।१८।०४।४२	८।१८।५७।०९	४३।४८
६ श.	५।२४।३८।१४	६।२४।०३।४२	८।०१।०७।५८	७।०७।१५।०८	८।१८।०९।१५	८।१८।५३।५८	४३।४६
७ र.	५।२५।१७।०५	६।२३।१७।४०	८।०१।१९।४३	७।०८।२९।४३	८।१८।१३।५३	८।१८।५०।४८	४३।४४
८ चं.	५।२५।५५।५७	६।२२।२९।०९	८।०१३।१।३३	७।०९।४४।२१	८।१८।१८।३५	८।१८।४७।३७	४३।४२
८ मं.	५।२६।३४।४९	६।२१।३९।०४	८।०१४।३।२६	७।१०।५८।५५	८।१८।२३।२४	८।१८।४४।२६	४३।४१
९ बु.	५।२७।१३।४०	६।२०।४८।३५	८।०१५।५।२५	७।१२।१३।३५	८।१८।२८।१५	८।१८।४१।१५	४३।४०
१० गु.	५।२७।५२।३४	६।१९।५८।५३	८।०२।०७।२६	७।१३।२८।१२	८।१८।३३।०९	८।१८।३८।०४	४३।३९
११ शु.	५।२८।३१।२७	६।१९।१०।५८	८।०२।१९।३४	७।१४।४२।४७	८।१८।३८।०६	८।१८।३४।५४	४३।३७
१२ श.	५।२९।१०।२१	६।१८।२५।५२	८।०२।३१।४५	७।१५।५७।२३	८।१८।४३।१३	८।१८।३१।४३	४३।३५
१३ र.	५।२९।४९।१७	६।१७।४४।२५	८।०२।४४।००	७।१७।१२।००	८।१८।४८।२०	८।१८।२८।३२	४३।३३
१४ चं.	६।००।२८।१०	६।१७।०७।२३	८।०२।५६।१९	७।१८।२६।३६	८।१८।५३।३६	८।१८।२५।२१	४३।३१
१५ मं.	६।०१।०७।०५	६।१६।३५।२५	८।०३।०८।४३	७।१९।४१।१३	८।१८।५८।५२	८।१८।२२।१०	४३।३०

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि, दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ मं.	१८।३८	२०।३४	२२।४७	१।०५	३।२१	५।३६	७।५३	१०।१०	१२।१५	१४।०१	१५।३२	१७।०१
२ बु.	१८।३४	२०।३०	२२।४३	१।०१	३।१७	५।३२	७।४९	१०।०६	१२।११	१३।५७	१५।२८	१६।५७
४ गु.	१८।३०	२०।२६	२२।३९	०।५७	३।१३	५।२८	७।४५	१०।०२	१२।०७	१३।५३	१५।२४	१६।५३
५ शु.	१८।२६	२०।२१	२२।३५	०।५३	३।०९	५।२४	७।४१	९।५८	१२।०३	१३।४९	१५।२०	१६।४९
६ श.	१८।२३	२०।१५	२२।३२	०।५०	३।०६	५।२१	७।३८	९।५५	१२।००	१३।४६	१५।१७	१६।४६
७ र.	१८।१९	२०।११	२२।२८	०।४६	३।०२	५।१७	७।३४	९।५१	११।५६	१३।४२	१५।१३	१६।४२
८ चं.	१८।१५	२०।०७	२२।२४	०।४२	२।५८	५।१३	७।३०	९।४७	११।५२	१३।३८	१५।०९	१६।३८
८ मं.	१८।११	२०।०३	२२।२०	०।३८	२।५४	५।०९	७।२६	९।४३	११।४८	१३।३४	१५।०५	१६।३४
९ बु.	१८।०७	१९।५९	२२।१६	०।३४	२।५०	५।०५	७।२२	९।३९	११।४४	१३।३०	१५।०१	१६।३०
१० गु.	१८।०३	१९।५५	२२।१२	०।३०	२।४६	५।०१	७।१८	९।३५	११।४०	१३।२६	१४।५७	१६।२६
११ शु.	१७।५९	१९।५२	२२।०८	०।२६	२।४२	४।५७	७।१४	९।३१	११।३६	१३।२२	१४।५३	१६।२२
१२ श.	१७।५६	१९।४८	२२।०५	०।२३	२।३९	४।५४	७।११	९।२८	११।३३	१३।१९	१४।५०	१६।१९
१३ र.	१७।५२	१९।४४	२२।०१	०।१९	२।३५	४।५०	७।०७	९।२४	११।२९	१३।१५	१४।४६	१६।१५
१४ चं.	१७।४८	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३१	४।४६	७।०३	९।२०	११।२५	१३।११	१४।४२	१६।११
१५ मं.	१७।४४	१९।३६	२१।५३	०।११	२।२७	४।४२	६।५९	९।१६	११।२१	१३।०७	१४।३८	१६।०७

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ मं.	प्रा.७:५२-९:१५ दि.१:२४-२:४७।	रा.७:०९-८:४७।
२ बु.	दि.९:१६-१०:३९ दि.१२:०२-१:२४।	रा.१२:०२-१:३९ रा.३:१६-४:५३।
४ गु.	दि.२:४६-५:३०।	रा.१२:०२-१:३९ रा.४:५३-६:३१।
५ शु.	दि.९:१७-१२:०१।	रा.८:४५-१०:२३।
६ श.	प्र.६:३२-७:५४ दि.१:२२-२:४४ सं.४:०६-५:२८	स.५:२८-७:०६ रा.१:३८-३:१६ रा.४:५४-६:३३
७ र.	दि.१०:३८-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०० रा.१:३८-३:१६।
८ चं.	प्र.७:५५-९:१७ दि.२:४५-४:०६।	रा.१०:२३-१२:०१ रा.३:१७-४:५५।
८ मं.	प्र.७:५६-९:१८ दि.१:२३-२:४४।	रा.७:०५-८:४४।
९ बु.	दि.९:१८-१०:४० दि.१२:०२-१:२३।	रा.१२:०२-१:४० रा.३:१८-४:५६।
१० गु.	दि.२:४३-५:२५।	रा.१२:०१-१:४० रा.४:५७-६:३६।
११ शु.	दि.९:१८-१२:००।	रा.८:४२-१०:२१।
१२ श.	प्र.६:३६-७:५७ दि.१:२१-२:४२ सं.४:०३-५:२४	स.५:२४-७:०३ रा.१:३९-३:१८ रा.३:२०-६:३०
१३ र.	दि.१०:४०-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०१ रा.१:४०-३:१९।
१४ चं.	प्र.७:५९-९:२० दि.२:४२-४:०२।	रा.१०:२२-१२:०२ रा.३:२०-४:५९।
१५ मं.	प्रा.७:५९-९:२० दि.१:२२-२:४२।	रा.७:०२-८:४२।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.२ बुध रा.१।५१ तः ति.५ शुक्र रा.४।१८ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.१२ शनि दि.३।५१ तः ति.१४ चन्द्र रा.८।१९ यावत्।

२ बुधे वल्ली८।३९।३२।०० अयनांशा: २२।४८।२६
११ ९ रा.१२ १० ८ ल.१ ७ २ सू ४ बु श. गु. ३ मं ५शु. च. के.६

९ बुधे वल्ली८।३९।३२।०७ अयनांशा: २२।४८।२७
११ ९ रा.१२ १० चं.८ ल.१ ७ २ सू ४ बु श. गु. ३ मं ५ शु. के.६

विविधविषयाः-कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गांश्च पूजयेत्।
गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः-गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव।।
गोपूजनमन्त्रः-लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु।। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः-भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।। ज्येष्ठभ्रातरि सति-भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।। एकादश्यां **विष्णूत्थापनमन्त्रः** ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।।

प्रतिहारषष्ठी(छठ)पूजा- नित्यक्रियादि समाप्य नदी-तलावतटे सायंकाले सूर्याभिमुखी भूत्वा कुशत्रयजलान्यादाय- नमो अद्य कार्त्तिके मासे शुक्लेपक्षे षष्ठ्यां तिथौ अमुकगोत्राया (अपनगोत्र) ममाऽमुकीदेव्या इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुःखदारिद्र्य-सकलपातकक्षय- अपस्मारकुष्ठादि महाव्याधि सकलरोगक्षय-चिरञ्जीविपुत्र-पौत्रादिलाभ-गोधन धान्यादि-समृद्धि-सुखसौभाग्य-अवैधव्य-सकलकामना सिद्ध्यर्थम् अद्य-श्वश्च सूर्याय अर्घ्यम् अहं दास्ये। इति संकल्प।। अक्षत ले आवाहन करें- नमो भगवन् सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। नानाफल-दूर्वा- रक्तचन्दन-अक्षत- घृत- पाचितान्युत-ताम्रपात्रस्थ अर्घ्यमादाय- मन्त्र- नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे। त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृह्ण, गृह्ण देवाधिदेवाय नमो नमस्ते।। नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे दत्तमर्घ्यं मया भानो त्वं गृहाण नमोऽस्तु ते।। ज्योतिर्मयविभोसूर्य तेजोराशे जगत्पते।। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ।। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितप्रभो। एतान्मन्त्रान् समुच्चाय उत्तिष्ठन्ती अर्घ्यं दद्यात्। ततः(आगु)रक्तचन्दन-रक्तअक्षत्-रक्तपुष्प-दूर्वा-बिल्वपत्र-वस्त्र- यज्ञोपवीत-ताम्बूल- नानाविधनैवेद्यैस्सम्पूज्य- प्रदक्षिणं कृत्वा प्रणमेदेभिः- जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारि सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्।। प्रणाम कर डला के श्रीसूर्यभगवान् के समर्प्य कथा सुनना चाहिए। कथा उपरान्त सूर्यभागवान का प्रणाम कर ब्राह्मण को दक्षिणा दें-कुश-तिल-यव-द्रव्य-नमोऽद्य कृतैतत्प्रतिहारषष्ठीव्रतकरणतत्कथा- श्रवणकर्मप्रतिष्ठार्थमतावद्द्रव्य- मूल्यक-हिरण्यमग्निदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे। इति

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शक१६४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, दक्षिणायन, दक्षिणगोलः, शरद् ऋतुः । उत्तर/पूर्व कालः ।
दिनांक १३ नवम्बरतः २६ यावत् सन् २०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पश्चिमोदित; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधः पश्चिमोदित।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१ बु.	३३।१७	रा.७।५५	कृत्तिका	४१।२०	रा.११।०८	वरीयान्	१३।१६	बालव	२।२६	वृष		अहोरात्रं	६।२६।२६।३७	२६।५६	६।३६	५।२४	२०	२८	१३
२ गु.	३३।३९	रा.८।०५	रोहिणी	४२।५९	रा.११।४९	परिघ	१०।५९	तैतिल	३।२८	वृष		अहोरात्रं	६।२७।२७।१७	२६।५६	६।३७	५।२३	२१	२९	१४
३ शु.	३२।४४	रा.७।४४	मृगशिरा	४३।२४	रा.१२।००	शिव	०७।४०	वणिज्	२।४२	वृष	१३।१२	दि.१०।३९	६।२८।२७।५७	२६।५२	६।३८	५।२२	२२	३०	१५
४ श.	३०।३६	सा.६।५२	आर्द्रा	४२।३८	रा.११।४१	सिद्ध	०३।२४	बव	१।४०	मिथुन		अहोरात्रं	६।२९।२८।३८	२६।४८	६।३८	५।२२	२३	३१	१६
५ र.	२७।२४	दि.५।३७	पुनर्वसु	४०।५१	रा.१०।५९	शुभ	५२।२१	तैतिल	२७।२४	मिथुन	२६।१८	सा.५।१०	७।००।२९।१९	२६।४४	६।३९	५।२१	२४	१	१७
६ चं.	२३।२०	दि.४।००	पुष्य	३८।१३	रा.९।५९	शुक्ल	४५।४४	वणिज्	२३।२०	कर्क		अहोरात्रं	७।०१।३०।००	२६।४१	६।४०	५।२०	२५	२	१८
७ मं.	१८।२६	दि.२।०२	आश्लेषा	३४।५४	रा.८।३८	ब्रह्म	३८।३३	बव	१८।२६	कर्क	३४।५४	रा.८।३८	७।०२।३०।४१	२६।३८	६।४०	५।२०	२६	३	१९
८ बु.	१३।०१	दि.११।५३	मघा	३१।०७	रा.७।०८	ऐन्द्र	३१।०२	कौलव	१३।०१	सिंह		अहोरात्रं	७।०३।३१।२२	२६।३५	६।४१	५।१९	२७	४	२०
९ गु.	७।१४	दि.९।३५	पूर्वाफाल्गुनी	२७।००	सा.५।२९	वैधृति	२३।१५	गर	७।१४	सिंह	४०।५६	रा.९।४१	७।०४।३२।१४	२६।३२	६।४१	५।१९	२८	५	२१
१० शु.	१।२०	दि.७।१४	उत्तराफाल्गुनी	२२।४३	दि.३।४७	विष्कुम्भ	१५।१९	भद्रा	१।२०	कन्या		अहोरात्रं	७।०५।३३।०६	२६।३०	६।४२	५।१८	२९	६	२२
१२ श.	४९।४५	रा.२।३६	हस्त	१८।३८	दि.२।०९	प्रीति	०७।३०	कौलव	२२।३५	कन्या	४६।४६	रा.१२।००	७।०६।३३।५९	२६।२८	६।४२	५।१८	३०	७	२३
१३ र.	४४।३०	रा.१२।३१	चित्रा	१४।५३	दि.१२।४०	आयुष्मान	००।५४	गर	१७।०८	तुला		अहोरात्रं	७।०७।३४।५२	२६।२६	६।४३	५।१७	३१	८	२४
१४ चं.	३९।५१	रा.१०।३९	स्वाती	११।३६	दि.११।२१	शोभन	४६।००	भद्रा	१२।११	तुला	५४।४२	रा.४।३६	७।०८।३५।४५	२६।२४	६।४३	५।१७	१	९	२५
३० मं.	३६।०४	रा.९।१०	विशाखा	०९।०४	दि.१०।२२	अतिगण्ड	३९।५९	चतुरघ्न	७।५८	वृश्चिक		अहोरात्रं	७।०९।३६।३८	२६।२२	६।४४	५।१६	२	१०	२६

ने.	अं.	
२८	१३	शिववासः रा.७।५५ या., अमृतसिद्धियोगः , सर्वार्थसिद्धियोगः रा.११।०८ उ.। ◆नं.मार्गशीर्षमासारम्भः। हेमन्त ऋतुः। पूर्वकालः, वास्तु वायव्यकोणे। शिववासः दि.५।३७ या. ततः अग्निवासः,♓,
२९	१४	गृहारम्भः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.८।०५ उ., वृक्षादिरोपणं, विपणि, वस्तुनांक्रयः, यानादिचालनं, बीजवपनं, पूर्वयात्रा रा.११।४९ या. ततः दक्षिणा विनायात्रा।
३०	१५	सौभाग्यसुन्दरी व्रत३, गृहारम्भ, शिववासः रा.७।४४ उ., अमृतयोगः रा.७।४४ उ., भद्रा २।४२ तः ३२।४४ या., स्वामीसेवारम्भः, यानादिचालनं, विपणि, वृक्षादिरोपणं,
३१	१६	साध्ययोगमानं ५४।५२, मासान्तः। गजानन ४ व्रतं, चतुर्थ्यां पञ्चम्यां वा मेघदर्शनं वर्षती वृष्टिप्रदम्। शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः सा.६।५२ या. ततः ३२।४४ या.,
१	१७	वीडपञ्चमी, मनसादेवीशयनं, विषहरापूजनं, वृश्चिके रविः १४।२३ दि.१२।२४ मु.४५ समर्हर्घताकरम्। विष्णुपदीसंक्रान्ति पुण्यकालः दि.६।११ तः दि.३।३५ यावत्। सिमरियाग्नि कल्पवाससमाप्तिः,कार्तिकस्नान समाप्ति। ←
२	१८	मासादिः, अग्निवासः दि.४।०० या., सिद्धियोगः दि.४।०० या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.९।५९ या., भद्रा २३।२० तः ५०।५३ या.। ← कार्तिकव्रताकाशदीपदानव्रत-तुलसी व्रतोद्यापनानि। ◆
३	१९	कालभैरवाष्टमी निशीथे कालभैरवावतारः, अष्टकाश्राद्ध। अग्निवासः दि.२।०२ उ., अमृतसिद्धियोगः। मार्गी बुधः२८।३३।
४	२०	अन्वष्टकाऽ,विवाहः अष्टम्यां दि.११।५३ या.दिवालग्न, अनुराधायां रविः३२।०३ रा.७।३०। शिववासः-अग्निवासःदि.११।५३ या, मृत्युयोगः दि११।५३ या। मूले धनुषिशुक्रः१७।४६, स्वात्यां मंगल३०।४०,
५	२१	अग्निवासः दि.९।३५ उ., मृत्युयोगः दि.९।३५ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा ३४।१७ उ., दशमीदग्धातिथि। ♓रविपुष्ययोगः रा.१०।५९ उ.। अमृतयोगः दि.५।३७ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।५९ उ.
६	२२	एकादशीतिथिमानं५४।०५। उत्पन्नाएकादशी ११ व्रतं स्मार्त्तानां। दशमीदग्धतिथि, विवाहः एकादश्यां दि.७।१४ उ.। अग्निवासः दि.७।१४ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः दि.७।१४ उ., भद्रा १।२० या., यानादिचालनं,⛴
७	२३	गोमूत्रेणपारणं, वैष्णवानां ११ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः, द्विपुष्करयोगः दि.२।०९ तः रा.२।३६ या., विपणि। पूर्व-दक्षिणयात्रा। ⛴ विपणि, धान्यरोपणं, बीजवपनं, धान्यरोपणं,
८	२४	सौभाग्ययोगमानं ५१।४७। प्रदोष१३ व्रत, विवाहः त्रयोदश्यां रा.१२।३१ या.। सिद्धियोगः रा.१२।३१ या., भद्रा४४।३० उ, विपणि-स्वामिसेवारम्भः दि.१२।४० या.। दक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
९	२५	प्रदोष १४ व्रतं, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.१०।३९ उ., भद्रा १२।११ या.,
१०	२६	अग्रहायणी३०, स्नानदानश्राद्धादौ पुण्यतमा अमावस्या। अशुभवारान्वितेदर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। शिववासः रा.९।१० या., मृत्युयोगः रा.९।१० उ.। विशाखायां बुधः३१।०६।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	वक्री बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ बु.	६।०१।४६।०१	६।१६।०६।००	८।०३।२१।०९	७।२०।५५।४५	८।१९।०४।१३	८।१९।०९।४२
२ गु.	६।०२।२४।५७	६।१५।४८।३०	८।०३।३३।३६	७।२२।१०।२२	८।१९।०९।३५	८।१९।०३।३१
३ शु.	६।०३।०९।५२	६।१५।३४।१३	८।०३।४६।११	७।२३।२४।५८	८।१९।१५।०३	८।१९।००।२०
४ श.	६।०३।४२।५०	६।१५।२९।१५	८।०३।५८।४७	७।२४।३९।३५	८।१९।२०।३५	८।१८।५७।०९
५ र.	६।०४।२१।४७	६।१५।२४।३९	८।०४।११।२८	७।२५।५४।१०	८।१९।२६।१०	८।१८।५३।५८
६ चं.	६।०५।००।४५	६।१५।२९।२५	८।०४।२४।११	७।२७।०८।४३	८।१९।३१।५०	८।१८।५०।४८
७ मं.	६।०५।३९।४३	६।१५।४०।२२	८।०४।३६।५८	७।२८।२३।१९	८।१९।३७।३२	८।१८।४७।३७
८ बु.	६।०६।१८।४३	६।१५।५७।२३	८।०४।४९।५८	७।२९।३७।५०	८।१९।४२।१८	८।१८।४४।२६
९ गु.	६।०६।५७।४५	६।१६।२०।१५	८।०५।०२।४०	८।००।५२।५४	८।१९।४९।०८	८।१८।४१।१५
१० शु.	६।०७।३६।४५	६।१६।४८।४०	८।०५।१५।३५	८।०२।०७।००	८।१९।५५।००	८।१८।३८।०४
१२ श.	६।०८।१५।४४	६।१७।२२।२९	८।०५।२८।३४	८।०३।२१।३०	८।२०।००।५७	८।१८।३४।५४
१३ र.	६।०८।५४।४६	६।१८।०१।२२	८।०५।४१।३६	८।०४।३६।०६	८।२०।०६।५५	८।१८।३१।४३
१४ चं.	६।०९।३३।४७	६।१८।४५।०५	८।०५।५४।३९	८।०५।५०।३९	८।२०।१३।००	८।१८।२८।३२
३० मं.	६।१०।१२।४८	६।१९।३३।१८	८।०६।०७।४५	८।०७।०५।०७	८।२०।१९।०५	८।१८।२५।२१

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ बु.	४३।२९	१७।४०	१९।३६	२१।४९	०।०७	२।२३	४।३८	६।५५	९।१२	११।१७	१३।०३	१४।३४	१६।०३
२ गु.	४३।२८	१७।३६	१९।३२	२१।४५	०।०३	२।१९	४।३४	६।५१	९।०८	११।१३	१२।५९	१४।३०	१५।५९
३ शु.	४३।२६	१७।३३	१९।२९	२१।४२	०।००	२।१६	४।३१	६।४८	९।०५	११।१०	१२।५६	१४।२७	१५।५६
४ श.	४३।२४	१७।२९	१९।२५	२१।३८	२३।५६	२।१२	४।२७	६।४४	९।०१	११।०६	१२।५२	१४।२३	१५।५२
५ र.	४३।२२	१७।२५	१९।२१	२१।३४	२३।५२	२।०८	४।२३	६।४०	८।५७	११।०२	१२।४८	१४।१९	१५।४८
६ चं.	४३।२०	१७।२०	१९।१६	२१।२९	२३।४७	२।०३	४।१८	६।३५	८।५२	१०।५७	१२।४३	१४।१४	१५।४३
७ मं.	४३।१८	१७।१६	१९।१२	२१।२५	२३।४३	१।५९	४।१४	६।३१	८।४८	१०।५३	१२।३९	१४।१०	१५।३९
८ बु.	४३।१७	१७।१२	१९।०८	२१।२१	२३।३९	१।५५	४।१०	६।२७	८।४४	१०।४९	१२।३५	१४।०६	१५।३५
९ गु.	४३।१६	१७।०७	१९।०३	२१।१६	२३।३४	१।५०	४।०५	६।२२	८।३९	१०।४४	१२।३०	१४।०१	१५।३०
१० शु.	४३।१५	१७।०३	१८।५९	२१।१२	२३।३०	१।४६	४।०१	६।१८	८।३५	१०।४०	१२।२६	१३।५७	१५।२६
१२ श.	४३।१४	१६।५९	१८।५५	२१।०८	२३।२६	१।४२	३।५७	६।१४	८।३१	१०।३६	१२।२२	१३।५३	१५।२२
१३ र.	४३।१३	१६।५४	१८।५०	२१।०३	२३।२१	१।३७	३।५२	६।०९	८।२६	१०।३१	१२।१७	१३।४८	१५।१७
१४ चं.	४३।१२	१६।५०	१८।४६	२०।५९	२३।१७	१।३३	३।४८	६।०५	८।२२	१०।२७	१२।१३	१३।४४	१५।१३
३० मं.	४३।११	१६।४६	१८।४२	२०।५५	२३।१३	१।२९	३।४४	६।०१	८।१८	१०।२३	१२।०९	१३।४०	१५।०९

१ बुधे वल्ली८।३९।३२।१४
अयनांशाः २२।४८।२८

चं.११ ९ रा.१२ १० ८ ल.१ ७ २ सू मं ४ बु ५ शु. श गु. के.६ ३

८ बुधे वल्ली८।३९।३२।२१
अयनांशाः २२।४८।२९

११ ९ रा.१२ १० ८ २ ७ ल. चं. १ मं ४ बु श गु. के.६ ३ ५ शु. सू

विविधः—रविव्रत- आदौ वृश्चिकमेषान्ते रविवारो यदा भवेत्। तदा रविव्रतारम्भविसर्गौ शास्त्रसम्मती। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात् सम्यग्देवस्य भास्वतः।। मार्गशीर्ष काल भैरवाष्टमी- सा च रात्रिव्यापिनी ग्राह्या । मार्गशीर्षसिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ। उपोष्य जागरणं कुर्वन् सर्व पापैः प्रमुच्यते।। इतिकाशीखण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगतेः। 'रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्त्तव्या सम्मुखीतिथिः'। इतिब्रह्मवैवर्तेउच्यते।

शनिस्तोत्र-पिप्पलाद उवाच -नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्वराय नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरुदेवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ बु.	दि.९:२१-१०:४१ दि.१२:०१-१:२१।	रा.१२:०१-१:४१ रा.३:२१-५:००।
२ गु.	दि.२:४०-५:२०।	रा.१२:००-१:४० रा.५:००-६:४१।
३ शु.	दि.९:२०-१२:००।	रा.८:४०-१०:२०।
४ श.	प्र.६:४१-८:०१ दि.१:२१-२:४१ सं.४:००-५:१९।	सं.५:१९-७:०० रा.१:४१-३:२१ रा.५:०१-६:४२।
५ र.	दि.१०:४१-१:२१।	रा.१०:२१-१२:०१ रा.१:४१-३:२१।
६ चं.	दि.८:०२-९:२२ दि.२:४०-३:५९।	रा.१०:२१:१२:०२ रा.३:२२-५:०२।
७ मं.	दि.८:०२-९:२२ दि.१:२१-२:४०।	रा.६:५९-८:४०।
८ बु.	दि.९:२३-१०:४२ दि.१२:०१-१:२०।	रा.१२:०१-१:४२ रा.३:२३-५:०३।
९ गु.	दि.२:३९-५:१७।	रा.१२:०१-१:४२ रा.५:०३-६:४४।
१० शु.	दि.९:२२-१२:००।	रा.८:३८-१०:१९।
१२ श.	प्र.६:४४-८:०३ दि.१:१९-२:३८ सं.३:५७-५:१६।	सं.५:१६-६:५७ रा.१:४१-३:२२ रा.५:०३-६:४४।
१३ र.	दि.१०:४१-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०० रा.१:४१-३:२२।
१४ चं.	दि.८:०३-९:२२ दि.२:३८-३:५७।	रा.१०:१९-१२:०० रा.३:२२-५:०३।
३० मं.	दि.८:०४-९:२३ दि.१:२०-२:३९।	रा.६:५७-८:३९।

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति.६ चन्द्र रा.९।५९ तः ति.८ बुध रा.०७।०८ यावत्।

ब्राह्मणक उत्पत्ति

सृष्टिक प्रारम्भमे ब्रह्माक मुखसँ ब्राह्मणक प्रादुर्भाव भेल। ओहि समयक ब्राह्मणक एक रूप छल। तदन्तर देश-भेदसँ दू प्रकारक भेलाह। प्रथम **पंच गौड़, द्वितीय पंच द्रविड।** • **पंच गौड़म**- सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौर, उत्कल आ मैथिल, ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ उत्तर रहैत छलाह एतदर्थ पंच गौड़ कहबैत छथि। **द्वितीय पंचम**:- कर्णाट, तेलांग, महाराष्ट्र, द्रविड़, गुर्जर ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ दक्षिण रहने पंच द्राविड़ कहौलन्हि, ई दसो ब्राह्मण षट् कर्मक अधिकारी भेलाह। आओर ८४ चौरासी प्रकारक ब्राह्मण सम्पूर्ण भारत खण्डमे छथि। ओहो लोकनि षट्कर्मक अधिकारी छथि। हिनका लोकनिमे मूल ओ ग्राम नाहि छन्हि, केवल गोत्र मात्र छन्हि। ब्रह्माजी सृष्टि करवाक समय पहिने मरीचिके उत्पन्न कएलन तदन्तर अत्रि, अंगिरा, पुलस्त, पुलहस्त, क्रतु, प्रचेता, बसिष्ठ, भृगु, नारद, दक्षिणनेत्र सँ अत्रि क, वामनेत्र सँ क्रतु, नासिका सँ वरूण, मुह सँ अंगिरा आ रूचिके, दक्षिणपर्श्वसँ दक्ष, बाम पार्श्वसँ भृगु, स्कन्यसँ मरीचि, जिह्वासँ वसिष्ठ आ ओष्ठसँ प्रचेताके उत्पन्न कए हिनका लोकनिके सृष्टि-करक हेतु आदेश देलगेल। **ब्राह्मण्यां ब्राह्मनो ह्येवमुत्पन्नो ब्राह्मणः स्मृतः।** अर्थात् - ब्राह्मणी द्वारा ब्राह्मणसँ उत्पन्न ब्राह्मण होइत छथि-**सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः।** सवर्णसँ सवर्ण स्त्रीमे सजातीय उत्पन्न होइत छथि-**तपःश्रुतञ्च योनिश्चेत्येतद् ब्राह्मणकारकम्। तपःश्रुताभ्यां यो हीनो याति ब्राह्मण एव सः।। विप्रो वृक्षस्तस्य मूलञ्च सन्ध्या। वेदाः शाखा धर्म्मकर्माणि पत्रम्।। तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयम्। छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।। न विप्रपादोदककर्दमानि न वेदशास्त्रप्रतिघोषितानि। स्वाहा, स्वधा स्वस्ति विवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि।।**

वाजसनेयि के भेलाह- याज्ञवल्क्यक पिता " ब्रह्मरात" महानकुलपति छ्लाह। ई असंख्य विद्यार्थी लोकनिक भरण-पोषण करैत रहथि। तेँ हिनका- **"वाजसानि"** सेहो कहल जाइत रहनि। वाजसानि शब्दक अर्थ होइत अछि जकरा दानक अन्नसँ यज्ञ होइक **"वाजसानि यस्य सः"** तनिक पुत्र होएबाक कारण याज्ञवल्क्यके वाजसनेय सेहो कहल जाइत छलन्हि। याज्ञवल्क्यक अर्थ होइत अछि यज्ञक प्रवक्ता। ओ व्यासशिष्य वैशम्पायनसँ यजुर्वेदक अध्ययन कयलन्हि। एक दिन दुनु गुरुशिष्यमे शास्त्रार्थ भऽ गेलन्हि। गुरु रुष्ट भऽ शाप देलथिन्ह जे हमरासँ पढ़ल विद्या लुप्त भऽ जाय। हुनकासँ पढ़ल विद्या वमन कऽ देल। तखन वैशम्पायन यजुर्वेद तैत्तिरीय साखा कहौलक। तदुत्तर महर्षि याज्ञवल्क्य मुर्खवत् भय गेलाह। तखन सूर्य भगवान् सँ प्रार्थना कैलनि। सूर्य भगवान मध्य दिनमे घोड़ा रूपमे आबि मन्त्र ग्रहण कराओल। ओहि मन्त्रक जप कैलासँ पुनः पूर्णताके प्राप्त कैलनि। **याज्ञवल्क्य उवाच-कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्। गुरुशापात् स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम्।। ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्या शक्तिप्रबोधिनीम्। ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम्।।**

अग्रहायणशुक्लपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, दक्षिणायनं, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः। पूर्वे अस्तः।
दिनांक २७ नवम्बरतः १२ दिसम्बर यावत् सन्२०१९ इ। मार्गी गुरु पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधः पश्चिमोदितः।

तिथयः	विनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः नें.	अं.	
१	बु.	३३।१४	रा.८।०२	अनुराधा	०७।२१	दि.६।४०	सुकर्मा	३४।४४	किंस्तुघ्न	४।३६	वृश्चिक		अहोरात्रं	७।१०।३७।३१	२६।२०	६।४४	५।१६	३	११	२७	हरिशोव्रतं, रुद्रव्रतम्। अमृतसिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।४० या.। विवाह दिवालग्नं-द्विरागमनं-कर्णवेधः अनुराधायां दि.६।४० या.। विपणि-स्वामिसेवारम्भः दि.६।४० या.।
२	गु.	३१।३०	रा.७।२०	ज्येष्ठा	०६।४०	दि.६।२४	धृति	३०।१९	बालव	२।२२	वृश्चि	०६।४०	दि.६।२४	७।११।३८।३३	२६।१८	६।४४	५।१६	४	१२	२८	मुण्डनं ज्येष्ठायां दि.६।२४ या.। विवाहः-द्विरागमनं-नवान्नपार्वण मूले दि.६।२४ उ., वधूप्रवेशः, चन्द्रदर्शनम्। मु.३० समासमताकरम्। सौम्यशृङ्ग सुभिक्षकरम्। शिववासः-अग्निवासः रा.७।२० या., उत्तरयात्रा अन्येगत्र, ←
३	शु.	३०।५८	रा.७।०८	मूल	०७।११	दि.६।३७	शूल	२६।५५	तैतिल	१।१४	धनु		अहोरात्रं	७।१२।३९।३५	२६।१६	६।४५	५।१५	५	१३	२९	विवाह दिवालग्नं-द्विरागमनं मूले दि.६।३७ या.। पूर्व-उत्तरयात्रा। अमृतयोगः रा.७।०८ उ.,। नवान्नपार्वण मूले दि.६।२४ उ.। पूर्वविनायात्रा दि.११।३३ तः रा.८।२० या.।
४	श.	३१।४५	रा.७।२६	पूर्वाषाढ़ा	०८।५५	दि.१०।१६	गण्ड	२४।२८	वणिज्	१।२२	धनु	२४।४१	सा.४।३७	७।१३।४०।३८	२६।१४	६।४५	५।१५	६	१४	३०	श्रीगणेश४ व्रतं। अग्निवासः रा.७।२६ या., सिद्धियोगः रा.७।२६ या. ततः मृत्युयोग,भद्रा १।२२ तः ३१।४५ या। ← पश्चिमयात्रा दि.६।२४ या. ततः पूर्वयात्रा। यानादिचालनं दि.६।२४ या. ततः बोरिंगटंकीप्रभृतिस्थापनं
५	र.	३३।५५	रा.८।२०	उत्तराषाढ़ा	११।५७	दि.११।३३	वृद्धि	२३।०३	बव	२।५०	मकर		अहोरात्रं	७।१४।४१।४१	२६।१२	६।४६	५।१४	७	१५	१	षाण्मासिक रविव्रतारंभ, विवाहपञ्चमी, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः जनकपुरे-सीतामढ्यां च श्रीसीतारामदर्शनं, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं पञ्चम्यां रा.८।२० या.। नवान्नपार्वणं, गोस्वामीश्रीतुलसीदास(बबाजी)जयन्ती- ◆
६	चं.	३७।०६	रा.६।३८	श्रवण	१६।०५	दि.१।१२	ध्रुव	२६।०८	कौलव	५।३२	मकर	४८।४२	रा.२।१५	७।१५।४२।४४	२६।११	६।४६	५।१४	८	१६	२	स्कन्दषष्ठी६, चम्पकषष्ठी व्रतं। शिववासः विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं षष्ठ्यां रा.६।३८ या., गृहप्रवेशः, कर्णवेधः, ,पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.१।१२ उ.। पूर्वविनायात्रा दि.१।१२ या.। सिद्धियोगः रा.६।३८ या.♍
७	मं.	४१।२७	रा.११।२१	धनिष्ठा	२१।१९	दि.३।१८	व्याघात	२२।४७	गर	६।१८	कुम्भ		अहोरात्रं	७।१६।४३।४७	२६।१०	६।४६	५।१४	९	१७	३	ज्येष्ठायां रविः ३६।२२ रा.१०।३१। अग्निवासः, अमृतसिद्धियोगः, द्विपुष्करयोगः दि.३।१८ या., भद्रा ४१।२७ उ.। ♍ ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।१२ या., यानादिचालनं दि.१।१२ या.,
८	बु.	४६।२९	रा.१।२२	शतभिषा	२७।१७	सा.५।४१	हर्षण	२३।३८	भद्रा	१३।५८	कुम्भ		अहोरात्रं	७।१७।४४।४९	२६।०९	६।४६	५।१४	१०	१८	४	बुधाष्टमीपर्व,सूर्यग्रहण सत्रिभा, मृत्युयोगः रा.१।२२ या., भद्रा १३।५८ या.। ◆स्मृतिदिवसश्च। शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.८।२० या. ततः मृत्युयोगः, विपणि दि.११।३३ या., इष्टिकारम्भ,
९	गु.	५१।५४	रा.३।३२	पूर्वाभाद्रपद	३३।४४	रा.८।१६	वज्र	२४।५४	बालव	१९।१२	कुम्भ	१७।०७	दि.१२।०५	७।१८।४५।५९	२६।०८	६।४६	५।१४	११	१९	५	महानन्दानवमी ९ व्रतं, देवीपूजनेन विष्णुलोकप्राप्तिः। शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.३।२२ या. ततः सिद्धियोगः, बोरिंगटंकीप्रभृतिस्थापनं। वृश्चिके बुधः२२।३०।
१०	शु.	५७।१३	राशे५।४०	उत्तराभाद्रपद	४०।१५	रा.१०।५३	सिद्धि	२६।१६	तैतिल	२४।३४	मीन		अहोरात्रं	७।१९।४७।०९	२६।०६	६।४७	५।१३	१२	२०	६	सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।५३ उ., दशमी दग्धतिथि। गृहप्रवेशः-द्विरागमनं एकादश्यां रा.शे.५।४० उ.।
११	श.	६०।००	समस्त	रेवती	४६।२०	रा.१।१९	व्यतीपात	२७।१९	वणिज्	२६।३७	मीन	४६।२०	दि.१।२९	७।२०।४८।१९	२६।०५	६।४७	५।१३	१३	२१	७	गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, अग्निवासः, अमृतयोगः, भद्रा २६।३७ उ., पञ्चकसमाप्तिः(भदवा) रा.१।१६ उ.,। सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।२८ या., भद्रा २।०१ या., विपणि,स्वामिसेवारम्भः, इष्टिकारम्भः,
११	र.	०२।०१	दि.७।३५	अश्विनी	५१।४३	रा.३।२८	वरीयान्	२७।५७	भद्रा	२।०१	मेष		अहोरात्रं	७।२१।४९।२९	२६।०४	६।४७	५।१३	१४	२२	८	मोक्षदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। गीताजयन्ती। विवाहः अश्विन्यां रा.३।२८ या.। द्विरागमनं द्वादशीआश्विन्यां च दि.७।३५ तः रा.३।२८ या., शिववासः दि.७।३५ उ., मृत्युयोगः दि.७।३५ या.,
१२	चं.	०६।०२	दि.६।१२	भरणी	५६।०४	रा.शे५।१३	परिघ	२७।४९	बालव	६।०२	मेष		अहोरात्रं	७।२२।५०।४०	२६।०३	६।४७	५।१३	१५	२३	९	केशव१२, गोमूत्रेणपारणं, मत्स्यद्वादशीव्रतं, धरणीव्रतं,सोमप्रदोष १३ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.६।१२ या.,मीलचालनं दि.६।१२ उ.,
१३	मं.	८।५२	दि.१०।२१	कृत्तिका	५९।१९	रा.शे६।३२	शिव	२६।४८	तैतिल	८।५२	मेष	११।५३	दि.९।५७	७।२३।५१।५१	२६।०२	६।४८	५।१२	१६	२४	१०	प्रदोष १४ व्रतं, शिववासः दि.१०।२१ या., सिद्धियोगः दि.१०।२१ या. ततः राज्यप्रदयोगः। यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, विपणि। क्षीणो गुरु अशुद्धारम्भ २३।०८ उ।
१४	बु.	१०।३४	दि.११।०२	रोहिणी	६०।००	समस्त	सिद्ध	२४।५०	वणिज्	१०।३४	वृष		अहोरात्रं	७।२४।५३।०१	२६।०१	६।४८	५।१२	१७	२५	११	व्रतायपूर्णिमा१५,अग्निवासः, गृहारम्भः-विवाहः-द्विरागमनं पूर्णिमायां दि.११।२ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः, भद्रा १०।३४तः ४०।४५ या., विपणि-वस्तुनां क्रयः दि.११।०२ उ.। उत्तराषाढे शुक्रः४७।५२, विशाखायां मंगल०।३०
१५	गु.	१०।५५	दि.११।१०	रोहिणी	०१।१६	दि.७।१८	साध्य	२१।५२	बव	१०।५५	वृष	३१।३८	सा.५।५१	७।२५।५४।१८	२६।००	६।४८	५।१२	१८	२६	१२	मार्गी१५ स्नानदानादि पूर्णिमा। हरिहरक्षेत्रस्नानं, हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं। दत्तात्रेयावतारः। शिववासः दि.११।१० उ., सिद्धियोगः दि.११।१० या.। विवाहः-द्विरागमनं-गृहारम्भः २३।०८ या.। इष्टिकारम्भः,

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ बु.	६।१०।५१।५०	६।२०।२५।४३	८।०६।२०।५४	८।०८।१६।३५	८।२०।२५।१३	८।१८।२२।०८	४३।१०
२ गु.	६।११।३०।५२	६।२१।२२।१३	८।०६।३४।०५	८।०९।३४।०४	८।२०।३१।२४	८।१८।१९।००	४३।०९
३ शु.	६।१२।०९।५७	६।२२।२२।२७	८।०६।४७।१८	८।१०।४८।३२	८।२०।३७।२८	८।१८।१५।४६	४३।०८
४ श.	६।१२।४९।०१	६।२३।२६।११	८।०७।००।३४	८।१२।०३।००	८।२०।४३।४५	८।१८।१२।३८	४३।०७
५ र.	६।१३।२८।०६	६।२४।३३।१३	८।०७।१३।५१	८।१३।१७।२५	८।२०।५१।१४	८।१८।०९।२७	४३।०६
६ चं.	६।१४।०७।१२	६।२५।४३।१९	८।०७।२७।११	८।१४।३१।५०	८।२०।५६।२८	८।१८।०६।१६	४३।०५
७ मं.	६।१४।४६।१८	६।२६।५६।१७	८।०७।४०।३२	८।१५।४६।१४	८।२१।०३।०१	८।१८।०३।०६	४३।०४
८ बु.	६।१५।२५।२३	६।२८।११।५३	८।०७।५३।५५	८।१७।००।३९	८।२१।०९।२०	८।१७।५९।५५	४३।०४
९ गु.	६।१६।०४।३२	६।२९।३०।०१	८।०८।०७।२०	८।१८।१५।०१	८।२१।१५।५७	८।१७।५६।४४	४३।०४
१० शु.	६।१६।४३।३९	७।००।५०।२७	८।०८।२०।४७	८।१९।२९।२१	८।२१।२२।३०	८।१७।५३।३३	४३।०३
११ श.	६।१७।२२।४९	७।०२।१३।०२	८।०८।३४।१५	८।२०।४३।४१	८।२१।२९।०४	८।१७।५०।२२	४३।०२
११ र.	६।१८।०१।५७	७।०३।३७।३९	८।०८।४७।४६	८।२१।५८।०१	८।२१।३५।४०	८।१७।४७।१२	४३।०१
१२ चं.	६।१८।४१।०७	७।०५।०४।१२	८।०९।०१।१५	८।२३।१२।१९	८।२१।४२।१८	८।१७।४४।०१	४३।००
१३ मं.	६।१९।२०।१७	७।०६।३२।३१	८।०९।१४।४८	८।२४।२६।३४	८।२१।४८।५८	८।१७।४०।५०	४३।००
१४ बु.	६।१९।५९।२७	७।०८।०२।२८	८।०९।२८।२१	८।२५।४०।४८	८।२१।५५।४०	८।१७।३७।३९	४३।००
१५ गु.	६।२०।३८।४०	७।०९।३३।५७	८।०९।४१।५६	८।२६।५५।०१	८।२२।०२।२५	८।१७।३४।२८	४३।००

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४३।१०	१६।४१	१८।३७	२०।५०	२३।०८	१।२४	३।३६	५।५६	८।१३	१०।१८	१२।०४	१३।३५	१५।०४
४३।०९	१६।३७	१८।२९	२०।४६	२३।०४	१।२०	३।३५	५।५२	८।०९	१०।१४	१२।००	१३।३१	१५।००
४३।०८	१६।३३	१८।२४	२०।४२	२३।००	१।१६	३।३१	५।४८	८।०५	१०।१०	११।५६	१३।२७	१४।५६
४३।०७	१६।२८	१८।२०	२०।३७	२२।५५	१।११	३।२६	५।४३	८।००	१०।०५	११।५१	१३।२२	१४।५१
४३।०६	१६।२४	१८।१६	२०।३३	२२।५१	१।०७	३।२२	५।३९	७।५६	१०।०१	११।४७	१३।१८	१४।४७
४३।०५	१६।२०	१८।११	२०।२९	२२।४७	१।०३	३।१८	५।३५	७।५२	०९।५७	११।४३	१३।१४	१४।४३
४३।०४	१६।१५	१८।०७	२०।२४	२२।४२	०।५८	३।१३	५।३०	७।४७	०९।५२	११।३८	१३।०९	१४।३८
४३।०४	१६।११	१८।०३	२०।२०	२२।३८	०।५४	३।०९	५।२६	७।४३	०९।४८	११।३४	१३।०५	१४।३४
४३।०४	१६।०७	१७।५८	२०।१६	२२।३४	०।५०	३।०५	५।२२	७।३९	०९।४४	११।३०	१३।०१	१४।३०
४३।०३	१६।०२	१७।५४	२०।११	२२।२९	०।४५	३।००	५।१७	७।३४	०९।३९	११।२५	१२।५६	१४।२५
४३।०२	१५।५८	१७।५०	२०।०७	२२।२५	०।४१	२।५६	५।१३	७।३०	०९।३५	११।२१	१२।५२	१४।२१
४३।०१	१५।५४	१७।४५	२०।०३	२२।२१	०।३७	२।५२	५।०९	७।२६	०९।३१	११।१७	१२।४८	१४।१७
४३।००	१५।४८	१७।४१	१९।५८	२२।१६	०।३२	२।४७	५।०४	७।२१	०९।२६	११।१२	१२।४३	१४।१२
४३।००	१५।४५	१७।३७	१९।५४	२२।१२	०।२८	२।४३	५।००	७।१७	०९।२२	११।०८	१२।३९	१४।०८
४३।००	१५।४१	१७।३३	१९।५०	२२।०८	०।२४	२।३९	४।५६	७।१३	०९।१८	११।०४	१२।३५	१४।०४
४३।००	१५।३६	१७।२८	१९।४५	२२।०३	०।१९	२।३४	४।५१	७।०८	०९।१३	१०।५९	१२।३०	१३।५९

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ बु.	दि.९:२३-१०:४२ दि.१२:०१-१:२०।	रा.१२:०१-१:४२ रा.३:२३-५:०४।
२ गु.	दि.२:३८-५:१४।	रा.१२:०२-१:४३ रा.५:०५-६:४६।
३ शु.	दि.९:२४-१२:०२।	रा.८:३८-१०:२०।
४ श.	प्र.६:४६-८:०५ दि.१:२०-२:३८ सं.३:५६-५:१४	सं.५:१४-६:५६ रा.१:४३-३:२४ रा.५:०५-६:४६।
५ र.	दि.१०:४३-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०१ रा.१:४३-३:२५।
६ चं.	दि.८:०६-९:२५ दि.२:३७-३:५५।	रा.१०:१९-१२:०१ रा.३:२५-५:०६।
७ मं.	दि.८:०६-९:२५ दि.१:१९-२:३७।	रा.६:५५-८:३७।
८ बु.	दि.९:२४-१०:४२ दि.१२:००-१:१८।	रा.१२:००-१:४२ रा.३:२४-५:०६।
९ गु.	दि.२:३६-५:१२।	रा.१२:००-१:४२ रा.५:०६-६:४८।
१० शु.	दि.९:२४-१२:००।	रा.८:३६-१०:१८।
११ श.	प्र.६:४८-८:०६ दि.१:१८-२:३६ सं.३:५४-५:१२	सं.५:१२-६:५४ रा.१:४२-३:२४ रा.५:०६-६:४८।
११ र.	दि.१०:४२-१:१८।	रा.१०:१८-१२:०० रा.१:४२-३:२४।
१२ चं.	दि.८:०६-९:२४ दि.२:३६-३:५४।	रा.१०:१८-१२:०० रा.५:०६-६:४८।
१३ मं.	दि.८:०७-९:२५ दि.१:१९-२:३७।	रा.६:५४-८:३७।
१४ बु.	दि.९:२५-१०:४३ दि.१२:०१-१:१९।	रा.१२:०१-१:४३ रा.३:२५-५:०७।
१५ गु.	दि.२:३६-५:१०।	रा.१२:०२-१:४४ रा.५:०८-६:५०।

मूलविचारः– ज्येष्ठा/मूल ति.१ बुध दि.६।४० तः दि.३ शुक्र दि.६।३७ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.१० शुक्र रा.१०।५३ तः ति.११ रवि रा.३।२८ यावत्

छन्दोगी के भेलाह :– छन्दासि गायन्तीति छन्दोगाः ।

मैथिल ब्राह्मणमे दुई वेद प्रचलित अछि। सामवेद आ यजुर्वेद।(छन्दोगिया) शाण्डिल्य मुनि सामवेद पढ़ि ओहि मन्त्र द्वारा देवयज्ञ तथा पितृयज्ञ करैत छलाह तथा हुनक शिष्य प्रशिष्य पृथक अनुसरण कएलनि। सामवेदमे छन्दक गान होइत अछि। एहि हेतु सामवेदी छन्दोगिया कहबैत छथि।

कश्यपो वत्सशाण्डिल्यौ कौशिकश्च धनञ्जयः।

षडेते सामगा विप्राः शेषाः वाजसनेयिनः।। उपर्युक्त गोत्रवालाके सामवेदी होमक चाही किन्तु सामवेद श्याम वर्णक छलाह। यजुर्वेद शुक्ल वर्ण एतदर्थ स्वकीय वर्णक धारण कएलन्हि।

सामः श्यामं यजुः शुक्ल शुक्लवर्णाः द्विजोत्तमाः।

स्ववर्णग्राहकत्वेनाभूवन् वाजसनेयिनः।।

गोभिल गृह्य सूत्रमे प्रथम शिखा तथा बाम पाद प्रच्छालन विहित अछि।

१ बुधे वल्ली८।३६।३२।२८
अयनांशाः २२।४८।३०

(कुण्डली: रा.११, १०, ९, ८, ७, १२, ६, ल.१, मं, २, ३ बु, चं. ४ सू, श गु. शु के.५)

८ बुधे वल्ली८।३६।३२।३५
अयनांशाः २२।४८।३१

(कुण्डली: रा.११, १०, ९, ८, चं.७, १२, ६, ल.१, मं, २, ३ बु, ४ सू, श गु. शु के.५)

१४ बुधे वल्ली८।३६।३२।४२
अयनांशाः २२।४८।३२

(कुण्डली: १०, ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, ल.१, १२, रा.११, चं., मं, बु, सू, श गु. शु के.)

विविधविषयाः–रवौ त्याज्यवस्तूनि-क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि** - पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। **रात्रौ लग्नज्ञानम्**- ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्**- तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च।।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	शु.	१०।०१	दि.१०।४८	मृगशिरा	०१।५६	दि.७।३६	शुभ	१७।५३	कौलव१०।०१	मिथुन	आहोरात्रं	७।२६।५५।३५	२५।५८	६।४८	५।१२	१९
२	श.	०७।५३	दि.९।५८	आर्द्रा	०१।२९	दि.७।२५	शुक्ल	१३।००	तैतिल ०७।५३	मिथुन ४४।५६	रा.१२।४७	७।२७।५६।५२	२५।५६	६।४९	५।११	२०
३	र.	०४।४१	दि.८।४१	पुष्य	५७।३२	रा.शे.५।५०	ब्रह्म	०७।१६	भद्रा ४।४१	कर्क	आहोरात्रं	७।२८।५८।०९	२५।५४	६।४९	५।११	२१
४	चं.	००।३८	दि.७।०४	आश्लेषा	५४।२३	रा.४।३४	ऐन्द्र	००।५३	वालव००।३८	कर्क ५४।२३	रा.४।३४	७।२९।५९।२७	२५।५३	६।४९	५।११	२२
६	मं.	५०।२६	रा.३।००	मघा	५०।४४	रा.३।०८	विष्कुम्भ	४६।२२	गर२३।०७	सिंह	आहोरात्रं	८।०१।००।४५	२५।५२	६।५०	५।१०	२
७	बु.	४४।४१	रा.१२।४२	पूर्वाफाल्गुनी	४६।३२	रा.१।२७	प्रीति	३८।३८	भद्रा१७।३४	सिंह ००।३१	प्रा.७।०२	८।०२।०२।०३	२५।५१	६।५०	५।१०	२४
८	गु.	३८।४७	रा.१०।२१	उत्तराफाल्गुनी	४२।२८	रा.११।४९	आयुष्यमान	३०।४२	वालव ११।४४	कन्या	आहोरात्रं	८।०३।०३।२५	२५।५०	६।५०	५।१०	२५
९	शु.	३२।५५	रा.८।००	हस्त	३८।२३	रा.१०।११	सौभाग्य	२२।४८	तैतिल ५।५१	कन्या ६।२८	दि.६।२५	८।०४।०४।४७	२५।४९	६।५०	५।१०	२६
१०	श.	२७।१९	सा.५।४६	चित्रा	३४।३२	रा.८।३९	शोभन	१५।०७	वणिज् ००।०७	तुला	आहोरात्रं	८।०५।०६।१९	२५।४९	६।५०	५।१०	२७
११	र.	२२।०८	दि.३।४१	स्वाती	३१।०९	रा.७।१८	अतिगण्ड	०७।४१	वालव २२।०८	तुला १४।०६	दि.१२।२८	८।०६।०७।३१	२५।४९	६।५०	५।१०	२८
१२	चं.	१७।३५	दि.१।५२	विशाखा	२८।२५	रा.६।१२	सुकर्मा	००।४५	तैतिल १७।३५	वृश्चिक	आहोरात्रं	८।०७।०८।५३	२५।४८	६।५०	५।१०	२९
१३	मं.	१३।५३	दि.१२।२३	अनुराधा	२६।३४	सा.५।२८	शूल	४९।५५	वणिज्१३।५३	वृश्चिक २५।३९	आहोरात्रं	८।०८।१०।१६	२५।४८	६।५०	५।१०	३०
१४	बु.	११।०९	दि.११।१८	ज्येष्ठा	२५।३९	सा.५।०६	गण्ड	४४।११	शकुनी११।०९	धनु	सा.५।०६	८।०९।११।३९	२५।४८	६।५०	५।१०	१
३०	गु.	०९।३४	दि.१०।४०	मूल	२५।५३	सा.५।११	वृद्धि	४०।२३	नाग ९।३४	धनु	आहोरात्रं	८।१०।१३।०४	२५।४८	६।५०	५।१०	२

पौषकृष्णपक्षः

शक१९४१, सवत२०७६, सन १४२७, दक्षिणायन, हेमन्तऋतु। पूर्वे कन्त। शुद्धः ति.६ तः अशुद्धः।
दिनांक १३ दिसम्बरतः २६ दिसम्बर यावत् सन्२०१९ ई.। मार्गी गुरु पूर्वोदित; मार्गी शुक्र पश्चिमोदित; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पूर्वोदितः; मार्गी बुधः पश्चिमोदित।

दिनांकाः ने.	अं.	
२७	१३	**पौषे कौशिकी स्नानं महापुण्यप्रदं,** शिववासः दि.१०।४८ या., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.१०।४८ या. तत मृत्युयोग।
२८	१४	पुनर्वसुनक्षत्रमानं ५८।२५ रा.शे.६।११। त्रिपुष्करयोगः दि.७।२५ उ., भद्रा ३६।१७ उ., मकरे शुक्रः२६।५०।
२९	१५	**श्रीगणेश ४ व्रतं, रविपुष्ययोगः अहोरात्रं,** अग्निवासः दि.८।४१ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः दि.८।४१ या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.५।५० या., भद्रा ४।४१ या.। **पश्चिमास्तः गुरुः२३।०८।**
३०	१६	मासान्तः। पञ्चमीतिथिमानं ५५।०६ रा.४।५३। वैधृतियोगमानं ५२।५६, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगः दि.७।०४ उ.। **मूले धनुषि च रविः ४२।३० रा.१२।१३।** ज्येष्ठायां बुधः २८।५५।
१	१७	**षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकाल** दि.१२।०० यावत् पुण्याह। अशुद्धारम्भः, खरमासारम्भः, नेपाली पौषमासारम्भः। मृत्युयोगः रा.३।०० या. ततः अमृतयोगः, भद्रा ५०।२६ या.,
२	१८	**मासादिः। सप्तम्यां मेघदर्शने** सत्यार्द्रायां श्रावण्यां च सुवृष्टिः।
३	१९	**अष्टकाश्राद्धं,** शिववासः, अमृतयोगः,
४	२०	अग्निवासः, अमृतयोगः,
५	२१	पौषदशमी१०। श्रीपार्श्वनाथजयन्ती। मृत्युयोगः सा.५।४६ या. ततः अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।३६ उ., भद्रा ००।०७ तः २७।१९ या.,
६	२२	**सफला एकादशी ११ व्रतं सर्वेषां,** शिववासः, अग्निवासः दि.३।४१ या., मृत्युयोगः दि.३।४१ या., श्रवणायां शुक्रः ३६।००।
७	२३	धृतियोगमानं ५३।४५। गोमयेन पारणा। **प्रदोष१३ व्रतं,** शिववासः दि.१।५२ या. ततः अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.१।५२ या., सर्वार्थसिद्धियोगः,
८	२४	**प्रदोष१४ व्रतं,** अग्निवासः दि.१२।२३ या., सिद्धियोगः दि.१२।२३ या. ततः राज्यप्रदयोग, भद्रा १३।५३ तः ४२।३१ या., मूले धनुषि च बुधः २३।५०।
९	२५	**दशतारकारम्भः सा.५।०६ उ.।** तत्र वाताभ्रगर्जनतडिदुदकशीतादिमिरग्रिमवर्षस्य वृष्टिविचारो विधेयः। **क्रिसमसडे-बड़ादिन।** शयवासः दि.११।१८ उ., अग्निवासः। **←वृश्चिके मंगल २७।३५**
१०	२६	**पौषीअमावस्या३०, स्नान-दानश्राद्धादौ, पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्ष च प्रजाभयम्।** शिववासः दि.१०।४० या., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.१०।४० या., **गंगासागर कुम्भयोगः, सूर्यग्रहण स्पर्श दि.९।०७ मोक्ष दि.१२।३२,←**

शकुनं- पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यांतिथौ तोयधरो हि दृश्यः।
तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।

मूलविचारः-
आश्लेषा/मघा ति.३ रवि रा.शे.५।५० तः ति ६ मंगल रा.३।०८ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१२ गुरु सा.५।२८ तः ति.३० गुरु दि.१०।४० यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ शु.	६।२१।१७।५१	७।११।०६।५०	८।०९।५५।३२	८।२८।०९।१४	८।२२।०९।१२	८।१७।३१।१८
२ श.	६।२१।५७।०४	७।१२।४१।०३	८।१०।०९।०९	८।२९।२३।२४	८।२२।१५।५८	८।१७।२८।०७
३ र.	६।२२।३६।१७	७।१४।१६।२९	८।१०।२२।४७	९।००।३७।२९	८।२२।२२।४७	८।१७।२४।५६
४ चं.	६।२३।१५।३१	७।१५।५३।०३	८।१०।३६।२५	९।०१।५१।३५	८।२२।२९।३८	८।१७।२१।४५
६ मं.	६।२३।५४।४६	७।१७।३०।४४	८।१०।५०।०५	९।०३।०५।४०	८।२२।३६।३०	८।१७।१८।३३
७ बु.	६।२४।३४।०१	७।१९।०९।२१	८।११।०३।४५	९।०४।१९।४२	८।२२।४३।२७	८।१७।१५।२४
८ गु.	६।२५।१३।१७	७।२०।४८।५१	८।११।१७।२६	९।०५।३३।४२	८।२२।५०।२०	८।१७।१२।१३
९ शु.	६।२५।५२।३४	७।२२।२९।११	८।११।३१।०७	९।०६।४७।४०	८।२२।५७।१७	८।१७।०९।०२
१० श.	६।२६।३१।५२	७।२४।१०।१७	८।११।४४।४९	९।०८।०१।३५	८।२३।०४।१२	८।१७।०५।५२
११ र.	६।२७।११।१०	७।२५।५२।०५	८।११।५८।३०	९।०९।१५।२८	८।२३।११।१३	८।१७।०२।४१
१२ चं.	६।२७।५०।२८	७।२७।३४।३१	८।१२।१२।१३	९।१०।२९।१८	८।२३।१८।१४	८।१६।५९।३०
१३ मं.	६।२८।२९।५१	७।२९।१७।३१	८।१२।२५।५५	९।११।४३।०६	८।२३।२५।१५	८।१६।५६।१९
१४ बु.	६।२९।०९।०७	८।०१।०१।०४	८।१२।३९।३८	९।१२।५६।५०	८।२३।३१।१७	८।१६।५३।०७
३० गु.	६।२९।४८।२९	८।०२।४२।०१	८।१२।५३।२०	९।१४।१०।२१	८।२३।३९।२०	८।१६।४९।५७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४३।२९	१७।४०	१९।३६	२१।४६	००।०७	२।२३	४।३८	६।५५	९।१२	११।१७	१३।०३	१४।३४	१६।०३
४३।२८	१७।३६	१९।३२	२१।४५	००।०३	२।१९	४।३४	६।५१	९।०८	११।१३	१२।५९	१४।३०	१५।५९
४३।२६	१७।३३	१९।२९	२१।४२	००।००	२।१६	४।३१	६।४८	९।०५	११।१०	१२।५६	१४।२७	१५।५६
४३।२४	१७।२९	१९।२५	२१।३८	२३।५६	२।१२	४।२७	६।४४	९।०१	११।०६	१२।५२	१४।२३	१५।५२
४३।२२	१७।२५	१९।२१	२१।३४	२३।५२	२।०८	४।२३	६।४०	८।५७	११।०२	१२।४८	१४।१९	१५।४८
४३।२०	१७।२०	१९।१६	२१।२९	२३।४७	२।०३	४।१८	६।३५	८।५२	१०।५७	१२।४३	१४।१४	१५।४३
४३।१८	१७।१६	१९।१२	२१।२५	२३।४३	१।५९	४।१४	६।३१	८।४८	१०।५३	१२।३९	१४।१०	१५।३९
४३।१७	१७।१२	१९।०८	२१।२१	२३।३९	१।५५	४।१०	६।२७	८।४४	१०।४९	१२।३५	१४।०६	१५।३५
४३।१६	१७।०७	१९।०३	२१।१६	२३।३४	१।५०	४।०५	६।२२	८।३९	१०।४४	१२।३०	१४।०१	१५।३०
४३।१५	१७।०३	१८।५९	२१।१२	२३।३०	१।४६	४।०१	६।१८	८।३५	१०।४०	१२।२६	१३।५७	१५।२६
४३।१४	१६।५९	१८।५५	२१।०८	२३।२६	१।४२	३।५७	६।१४	८।३१	१०।३६	१२।२२	१३।५३	१५।२२
४३।१३	१६।५४	१८।५०	२१।०३	२३।२१	१।३७	३।५२	६।०९	८।२६	१०।३१	१२।१७	१३।४८	१५।१७
४३।१२	१६।५०	१८।४६	२०।५९	२३।१७	१।३३	३।४८	६।०५	८।२२	१०।२७	१२।१३	१३।४४	१५।१३
४३।११	१६।४६	१८।४२	२०।५५	२३।१३	१।२९	३।४४	६।०१	८।१८	१०।२३	१२।०९	१३।४०	१५।०९

७ बुधे वल्ली८।३९।३२।४९
अयनांशाः २२।४८।३३

१४ बुधे वल्ली८।३९।३२।५६
अयनांशाः २२।४८।३४

(कुण्डली १) १० ८ ९ ७ | रा. ११ | १२ | शु. ६ | ल.१ | मं. ३ | गु. सू. श.के. ५ | २ चं. | ४ बु.

(कुण्डली २) १० ८ ९ ७ | रा. ११ | १२ | शु. ६ चं. | ल.१ | मं. ३ | गु. सू. बु. श.के. ५ | २ | ४

शकुनम्-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यांतिथौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिःप्रवाच्या नियमेन विज्ञैः। **दशतारकविचारः**-पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।
गर्भपुष्टिविचारः-वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टेगर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिहीने चाल्पा वृष्टिरिति। **गोवरशन्यादिविचारः**- द्विजन्मनि पंचम- सप्तमगाश्चतुराष्टक द्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्य- विनाशकरा रविराहुशनैश्चर भूमिसुताः।
कौशिकिस्नानमन्त्रः- गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुने श्वसः। ऋचिकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ शु.	दि.९:२६-१२:०२।	रा ८:३६-१०:१९।
२ श.	प्र.६:५०-८:०८ दि.१:१९-२:३६ सं.३:५३-५:१०	सं.५:१०-६:५३ रा.१:४४-३:२६ रा.५:०८-६:५०।
३ र.	दि.१०:४४-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.१:४४-३:२६।
४ चं.	दि.८:०८-९:२६ दि.२:३६-३:५३।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.३:२६-५:०८।
६ मं.	दि.८:०८-९:२६ दि.१:१९-२:३६।	रा.६:५३-८:३६।
७ बु.	दि.९:२६-१०:४४ दि.१२:२-१:१९।	रा.१२:०२-१:४४ रा.३:२६-५:०८।
८ गु.	दि.२:३६-५:१०।	रा.१२:०२-१:४४ रा.५:०८-६:५०।
९ शु.	दि.९:२६-१२:०२।	रा.८:३६-१०:१९।
१० श.	प्र.६:५०-८:०८ दि.१:१९-२:३६ सं.३:५३-५:१०	सं.५:१०-६:५३ रा.१:४४-३:२६ रा.५:०८-६:५०
११ र.	दि.१०:४४-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.१:४४-३:२६।
१२ चं.	दि.८:०८-९:२६ दि.२:३६-३:५३।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.३:२६-५:०८।
१३ मं.	दि.८:०८-९:२६ दि.१:१९-२:३६।	रा.६:५३-८:३६।
१४ बु.	दि.९:२६-१०:४४ दि.१२:०२-१:१९।	रा.१२:०२-१:४४ रा.३:२६-५:०८।
३० गु.	दि.२:३७-५:११।	रा.१२:०१-१:४३ रा.५:०७-६:४९

संध्या-वन्दन नै कयलासँ दोष

संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता। जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वान् चाभिजायते।।१।। (दे.भा.११।१६।०७)
संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु। यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत्।।२।।(दक्षस्मृति २।२७)

जे ब्राह्मन संध्याक ज्ञान नै कयला, जे संध्या उपसना नै कयला उ ब्राह्मण जीवित रहितो शूद्र कहवैत छथि आ मृत्यु पश्चात् कुत्तादि क योनि प्राप्त करैत छथि।।१।। संध्या विहीन ब्राह्मन अपवित्र होइत छैथ हुनका कोनो पुण्यकर्म कयलाक फल नहि प्राप्त होइत छैनि।

संध्या-स्तुति

विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र संध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा।।(देवीभा.११।१६।६)

ब्रह्मणरूपी वृक्षक मूल संध्या अछि, चारो वेद शाखा, धर्म-कर्म पत्ता अछि। तैं मूलक रक्षा यत्नसँ करवाक चाही।
स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुधा भवेत्। अकाले सेविता सा च संध्या वन्ध्या वधूरिव।।(मित्रकल्प)
समयपर कयल गेल संध्या इच्छानुसार फल देत छैथि आ बिना समय कयल गेल संध्या वन्ध्या(बाझ) स्त्रीक समान होइत छैथि।
प्रातः संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्। ससूर्यां पश्चिमां संध्यां तिस्रः संध्या उपासते।।(देवीभा.११।१६।२-३)

प्रातःकालमें ताराके रहैत, मध्याह्नमे सूर्य आकाशके मध्यमें जखन रहत, सायंकालमें सूर्यास्तके पहिने ही एहीना तीनो संध्या करवाक चाही। **गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्। अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ सिद्धिमवाप्नुयात्।।** गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्रीकें आदिमें ॐ क उच्चारण कय जप करी आ अन्तमें ॐ क उच्चारण नै करी, किया त अन्त मे उच्चारण कयलासँ सिद्धि नै मिलैत अछि। **गृहेषु तत्समा संध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता। नद्यां शतगुणा प्रोक्ता अनन्ता शिवसंनिधौ।।**(लघुशतातपस्मृ०११४) । घरमें संध्या-वन्दन कयलासँ एक, गोस्थानमे सौ, नदी-किनारे लाख आ शिव के समीप कयला सँ अनन्त गुना फल मिलैत अछि। **पादशेषं पीतशेषं संध्याशेषं तथैव च। शुनो मूत्रसमं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत्।।** पैर धोयल,पीयल आ संध्या कयलासँ वचल जल श्वानके मूत्र समान होइत अछि, ओहि जल क पुन उपयोग नै करी।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१ शु.	०६।१०	दि.१०।३०	पूर्वाषाढ़ा	२७।२२	रा.५।४७	ध्रुव	३७।३६	वव ६।१०	धनु ४३।०४	रा.१२।०३	८।११।१४।२६	२५।४६	६।५०	५।१०	३
२ श.	१०।०५	दि.१०।५२	उत्तराषाढ़ा	३०।०८	रा.६।५३	व्याघात	३५४६	कौलव १०।०५	मकर	आहोरात्रं	८।१२।१५।५४	२५।५०	६।५०	५।१०	४
३ र.	१२।२३	दि.११।४७	श्रवण	३४।०२	रा.८।२७	हर्षण	३४।५८	गर १२।२३	मकर	आहोरात्रं	८।१३।१७।१६	२५।५१	६।५०	५।१०	५
४ चं.	१५।४६	दि.१।०८	धनिष्ठा	३६।०५	रा.१०।२८	वज्र	३४।५६	भद्रा १५।४६	मकर ६।३४	दि.६।२७	८।१४।१८।४४	२५।५२	६।५०	५।१०	६
५ मं.	२०।१२	दि.२।५४	शतभिषा	४४।५७	रा.१२।४८	सिद्धि	३५।४२	वालव २०।१२	कुम्भ	आहोरात्रं	८।१५।२०।०६	२५।५४	६।४६	५।११	७
६ बु.	२५।१८	दि.४।५६	पूर्वाभाद्रपद	५१।२३	रा.३।२२	व्यतीपात्	३६।५०	तैतिल २५।१८	कुम्भ३४।४७	रा.८।४४	८।१६।२१।३५	२५।५६	६।४६	५।११	८
७ गु.	३०।४५	रा.७।०६	उत्तराभाद्रपद	५७।५७	रा.५।५६	वरीयान्	३८।११	वणिज् ३०।४५	मीन	आहोरात्रं	८।१७।२३।००	२५।५८	६।४८	५।१२	९
८ शु.	३६।०३	रा.६।१३	रेवती	६०।००	अहोरात्र	परिघ	३६।२५	भद्रा ३।२४	मीन	आहोरात्रं	८।१८।२४।२५	२६।००	६।४८	५।१२	१०
९ श.	४०।४६	रा.११।०८	रेवती	०४।११	दि.८।२८	शिव	४०।१०	वालव ८।२६	मीन ४।११	दि.८।२८	८।१९।२५।५०	२६।०१	६।४८	५।१२	११
१० र.	४४।४६	रा.१२।४२	अश्विनी	०६।४७	दि.१०।४३	सिद्ध	४०।२०	तैतिल१२।४८	मेष	आहोरात्रं	८।२०।२७।१६	२६।०२	६।४८	५।१२	१२
११ चं.	४७।३२	रा.१।४८	भरणी	१४।२६	दि.१२।३३	साध्य	३९।३७	वणिज्१६।०९	मेष ३०।१९	सा.६।५५	८।२१।२८।४२	२६।०३	६।४७	५।१३	१३
१२ मं.	४९।०८	रा.२।२६	कृत्तिका	१७।५९	दि.१।५९	शुभ	३८।०२	वव १८।२०	वृष	आहोरात्रं	८।२२।३०।०८	२६।०४	६।४७	५।१३	१४
१३ बु.	४९।२३	रा.२।३२	रोहिणी	२०।१७	दि.२।५४	शुक्ल	३५।२४	कौलव१९।१६	वृष ५०।४७	रा.३।०६	८।२३।३१।३४	२६।०५	६।४७	५।१३	१५
१४ गु.	४८।२४	रा.२।०६	मृगशिरा	२१।१७	दि.३।१८	ब्रह्म	३१।४७	गर १८।५४	मिथुन	आहोरात्रं	८।२४।३२।५७	२६।०६	६।४७	५।१३	१६
१५ शु.	४६।११	रा.१।१४	आर्द्रा	२१।०५	दि.३।१२	ऐन्द्र	२७।१०	भद्रा १७।१८	मिथुन	आहोरात्रं	८।२५।३४।२०	२६।०८	६।४६	५।१४	१७

पौषशुक्लपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, दक्षिणायनं, दक्षिणगोलः, हेमन्त, पूर्वे कालः। अशुद्धः।

दिनांक २७ दिसम्बरतः १० जनवरी यावत् सन्२०२० ई.। मार्गी गुरुःपश्चिमास्तः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गीशनिःपश्चिमास्तः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः,

दिनांकाः ने.	अं.	
११	२७	चन्द्रदर्शनम्। सौम्यश्रृंगं सुभिक्षकरम्। मु.४५ समर्घताकरम्। अग्निवासः दि.१०।३० या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः दि.१०।३० या. ततः मृत्युयोगः। दग्धतिथि दि.१०।३० उ.। पूर्वाषाढे शुक्रः५६।५०।
१२	२८	शिववासः दि.१०।५२ या. ततः अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.६।५३ उ.। दग्धतिथि दि.१०।५२ या.।
१३	२९	**श्रीगणेश ४ व्रतं,** सिद्धियोगः दि.११।४७ या., भद्रा ४४।०५ उ., पञ्चकारम्भः(मदवा) रा.८।२७ उ.। **पूर्वाषाढायां रविः ४५।३३ रा.१।०३।** रवियोगः रा.८।२७ उ.।
१४	३०	शिववासः दि.१।०८ उ., अग्निवासः दि.१।०८ या, अमृतयोगः दि.१।०८ उ., भद्रा १५।४६ या., रवियोगः रा.११।२८ या.।
१५	३१	शिववासः दि.४।५६ या., मृत्युयोगः दि.२।५४ उ., अनुराधायां मंगल२१।५०, रवियोगः पूर्वाभाद्रपदायां।
१६	१	**जनवरी२०२० खीष्ट्रीय नववर्षदिनम्।** शिववासः दि.४।५६ या., अग्निवासः, अमृतसिद्धियोगः, धनिष्ठायां शुक्र २६।०३।
१७	२	गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती। अमृतयोगः रा.७।०६ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.५।५६ उ., भद्रा ३०।४५ उ.,
१८	३	अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः, अमृतयोगः रा.६।१३ उ ., भद्रा ३।२४ या.,
१९	४	शिववासः, सिद्धियोगः रा.११।०८ या. ततः मृत्युयोगः, पञ्चकसमाप्तिः(**मदवा**) दि.८।२८ उ.।
२०	५	**कर्मा१०, विश्वकर्मार्चा, दशतारकान्तो दि.१०।४३ उ.।** अग्निवासः, अमृतयोगः रा.१२।४२ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः, भद्रा ३।२४ या.,
२१	६	**पुत्रदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। धर्मसावर्णिमन्वादिः।** अग्निवासः, रा.१।४८ उ., सिद्धियोगः रा.१।४८ या., भद्रा १६।०६ तः ४७।३२ या.,
२२	७	नारायण १२, गोमयेनपारणं। शिववासः, अग्निवासः, अमृतसिद्धियोगः, त्रिपुष्करयोगः दि.१।५६ या., कुम्भेशुक्रः५७।५०
२३	८	**प्रदोष१३ व्रतं,** शिववासः, मृत्युयोगः रा.२।३२ या. सर्वार्थसिद्धियोगः, उत्तराषाढायां बुधः३८।५०।
२४	९	**प्रदोष १४ व्रतं,** अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.२।०६ या. ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः। ← भद्रा १७।१८ या., मकरे बुध५५।१०।
२५	१०	**पौषीपूर्णिमा१५,** स्नानदान-व्रतादौ,। कौशिकीस्नानं **तन्मन्त्रश्च-गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः स्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्थे पापं मे हर कौशिकि।।** शाकम्भरीजयन्ती। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।१२ उ.,←

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ शु.	७।००।२७।५१	८।०४।२९।२४	८।१३।०७।०५	९।१५।२४।०५	८।२३।४६।२५	८।१६।४६।४७	४२।५५
२ श.	७।०१।०७।१४	८।०६।१४।०६	८।१३।२०।४८	९।१६।३७।४०	८।२३।५३।२८	८।१६।४३।३६	४२।५६
३ र.	७।०१।४६।३७	८।०७।५९।०७	८।१३।३४।३१	९।१७।५१।११	८।२४।००।३५	८।१६।४०।२६	४२।५७
४ चं.	७।०२।२६।०१	८।०९।४४।२२	८।१३।४८।१३	९।१९।०४।३८	८।२४।०७।४०	८।१६।३७।१५	४२।५८
५ मं.	७।०३।०५।२५	८।११।२९।४८	८।१४।०१।५५	९।२०।१८।००	८।२४।१४।४५	८।१६।३४।०४	४२।५९
६ बु.	७।०३।४४।५०	८।१३।१५।२३	८।१४।१५।३८	९।२१।३१।२०	८।२४।१४।४८	८।१६।३०।५४	४२।५९
७ गु.	७।०४।२४।१८	८।१५।०१।०१	८।१४।२९।२२	९।२२।४४।३६	८।२४।२९।०१	८।१६।२७।४३	४२।५९
८ शु.	७।०५।०३।४२	८।१६।४६।३७	८।१४।४३।०५	९।२३।५७।४८	८।२४।३६।०८	८।१६।२४।३०	४३।००
९ श.	७।०५।४३।११	८।१८।३१।१०	८।१४।५६।५०	९।२५।१०।५७	८।२४।४३।१७	८।१६।२१।२१	४३।०१
१० र.	७।०६।२२।४०	८।२०।१७।३६	८।१५।१०।३३	९।२६।२४।०४	८।२४।५०।२६	८।१६।१८।११	४३।०२
११ चं.	७।०७।०२।१२	८।२२।०२।५०	८।१५।२४।१७	९।२७।३७।०५	८।२४।५७।३४	८।१६।१५।००	४३।०३
१२ मं.	७।०७।४१।४०	८।२३।४७।५०	८।१५।३८।०१	९।२८।५०।०२	८।२५।०४।४३	८।१६।११।४९	४३।०३
१३ बु.	७।०८।२१।११	८।२५।३२।३५	८।१५।५१।४५	१०।००।०२।५४	८।२५।११।५१	८।१६।०८।३८	४३।०३
१४ गु.	७।०९।००।४४	८।२७।१६।५८	८।१६।०५।२९	१०।०१।१५।४२	८।२५।१९।००	८।१६।०५।२८	४३।०३
१५ शु.	७।०९।४०।१८	८।२९।००।५७	८।१६।१९।१२	१०।०२।२८।२५	८।२५।२६।०८	८।१६।०२।१७	४३।०४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४२।५५	१४।३२	१६।२८	१८।४१	२०।५६	२३।१५	१।३०	३।४७	६।०४	८।०६	९।५५	११।२६	१२।५५
४२।५६	१४।२८	१६।२४	१८।३७	२०।५५	२३।११	१।२६	३।४३	६।००	८।०५	९।५१	११।२२	१२।५१
४२।५७	१४।२३	१६।१९	१८।३२	२०।५०	२३।०६	१।२१	३।३८	५।५५	८।००	९।४६	११।१७	१२।४६
४२।५८	१४।१९	१६।१५	१८।२८	२०।४६	२३।०२	१।१७	३।३४	५।५१	७।५६	९।४२	११।१३	१२।४२
४२।५९	१४।१४	१६।१०	१८।२३	२०।४१	२२।५७	१।१२	३।२९	५।४६	७।५१	९।३७	११।०८	१२।३७
४२।५९	१४।१०	१६।०६	१८।१९	२०।३७	२२।५३	१।०८	३।२५	५।४२	७।४७	९।३३	११।०४	१२।३३
४२।५९	१४।०६	१६।०२	१८।१५	२०।३३	२२।४९	१।०४	३।२१	५।३८	७।४३	९।२९	११।००	१२।२९
४३।००	१४।०१	१५।५७	१८।१०	२०।२८	२२।४४	०।५९	३।१६	५।३३	७।३८	९।२४	१०।५५	१२।२४
४३।०१	१३।५७	१५।५३	१८।०६	२०।२४	२२।४०	०।५५	३।१२	५।२९	७।३४	९।२०	१०।५१	१२।२०
४३।०२	१३।५३	१५।४९	१८।०२	२०।२०	२२।३६	०।५१	३।०८	५।२५	७।३०	९।१६	१०।४७	१२।१६
४३।०३	१३।४८	१५।४४	१७।५७	२०।१५	२२।३१	०।४६	३।०३	५।२०	७।२५	९।११	१०।४२	१२।११
४३।०३	१३।४४	१६।४०	१७।५३	२०।११	२२।२७	०।४२	२।५९	५।१६	७।२१	९।०७	१०।३८	१२।०७
४३।०३	१३।४०	१६।३६	१७।४९	२०।०७	२२।२३	०।३८	२।५५	५।१२	७।१७	९।०३	१०।३४	१२।०३
४३।०३	१३।३५	१६।३१	१७।४४	२०।०२	२२।१८	०।३३	२।५०	५।०७	७।१२	८।५८	१०।२९	११।५८
४३।०४	१३।३१	१५।२७	१७।४०	१९।५८	२२।१४	०।२९	२।४६	५।०३	७।०८	८।५४	१०।२५	११।५४

विविधः-**वैष्णवानामेकादशी व्रत निर्णयः**- दशमी पञ्चपञ्चाशत् घटीकाचेत् प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। सुरागविन्दुपातेन त्याज्या गंगा घटो यथा। **नारदपुराणानुसारेण**-क्षये वाप्यथवृद्धौ संप्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यां तु पारणम्। कुर्मपुराणानुसारेण -तिथिक्षये तु संप्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन। भविष्ये- दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्याद् अरुणोदयः। **बुधाष्टमी पर्व**- सूर्यग्रहण सन्निभा। पौषे मासि यदा देविशुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत्। तदा तु सा महापुण्या महाभद्रेति कीर्तिता।। तस्यां स्नानं जपो होमस्तर्पणं विप्रभोजनम्। मत्प्रीतयेकृतं देविशत- साहस्त्रकं भवेत्।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ शु.	दि.९:२५–१२:०१।	रा.८:३७–१०:१६।
२ श.	प्र.६:४१–८:०७ दि.११९–२:३७ दि.३:५४–५:११।	सं.५:११–६:५४ रा.१:४३–३:०५ रा.५:०७–६:४६।
३ र.	दि.१०:४३–१:१९।	रा.१०:१६–१२:०१ रा.१:४३–३:२५।
४ चं.	दि.८:०६–९:२४ दि.२:३६–३:५४।	रा.१०:१८–१२:०० रा.३:२४–५:०६।
५ मं.	दि.८:०६–९:२४ दि.१:१८–२:३६।	रा.६:५४–८:३६।
६ बु.	दि.९:२४–१०:४२ दि.१२:००–१:१८।	रा.१२:००–१:४२ रा.३:२४–५:०६।
७ गु.	दि.२:३७–५:१३।	रा.१२:०१–१:४३ रा.५:०६–६:४७।
८ शु.	दि.९:२५–१२:०१।	रा.८:३७–१०:१६।
९ श.	प्र.६:४७–८:०६ दि.११९–२:३७ सं.३:५५–५:१३।	सं.५:१३–५:५५ रा.१:४३–३:२५ रा.५:०६–६:४७।
१० र.	दि.१०:४३–१:१९।	रा.१०:१६–१२:०१ रा.१:४३–३:२५।
११ चं.	दि.८:०५–९:२४ दि.२:३८–३:५६।	रा.१०:२०–१२:०२ रा.३:२४–५:०५।
१२ मं.	दि.८:०५–९:२४ दि.१:२०–२:३८।	रा.६:५६–८:३८।
१३ बु.	दि.९:२४–१०:४३ दि.१२:०२–१:२०।	रा.१२:०२–१:४३ रा.३:२४–५:०५।
१४ गु.	दि.२:३९–५:१५।	रा.१२:०१–१:४२ रा.५:०४–६:४५।
१५ शु.	दि.९:२३–१२:०१।	रा.८:३६–१०:२०।

स्त्रीपुरूष की कुण्डलीज्ञानविधि- जन्म लग्न के अंक सूर्य मंगल और राहु जिस राशि में स्थित हो उनके अंकों को जोडकर उसमें ३ का भाग दें यदि शेष अंक विषम हो तो पुरूष की कुण्डली और सम हो तो स्त्री की कुण्डली समझनी चाहिए।

जीवितं अथवा मृत का कुण्डली ज्ञान-जन्म लग्न और अष्टम स्थान की राशि के अंकों में प्रश्न लग्न के अंक जोडकर, अष्टमेश जिस राशि में स्थित हो उस राशि से उक्त अंकों को गुणा करें। उस गुणनफल में लग्नेश जिस राशि में हो उस राशि के अंक से भाग दें। यदि शेष विषम अंक वचे तो जीवित की कुण्डली और सम अंक वचे तो मृतक की कुण्डली समझनी चाहिए।

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.७ गुरु रा.५।५६ तः ति.१० रवि दि.१०।४३ यावत्।

६ बुधे वल्ली८।३६।३३।०३
अयनांशाः २२।४८।३५

१० ८ चं. रा.११ ९ ७ १२ शु. ६ गु.सू. ल.१ श.के.बु. २ ३ मं ४ ५

१३ बुधे वल्ली८।३६।३३।१०
अयनांशाः २२।४८।३६

चं.रा.११ १० ९ ८ शु.७ १२ ६ गु.सू. ल.१ श.के. २ ३ मं ४ ५

अथ उपयोगी मन्त्र :-

यज्ञोपवीत धारण मन्त्रः-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

गायत्री मन्त्र :- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।

सावित्री मन्त्र :-

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहिधियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

दूनू मन्त्र तीन बेर पढ़ि यज्ञोपवीत धारण करी।

जीर्णयज्ञोपवीतत्याग मन्त्रः-

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।

माघकृष्णपक्षः ।।

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, दक्षिणायण/उत्तरायण, दक्षिणगोलः, शिशिरः ऋतु । पूर्वे कालः। अशुद्धः ति.५ तः शुद्धः।

दिनांक ११ जनवरीतः २४ यावत् सन्२०२० ई। मार्गी गुरुःपश्चिमास्तः ति.२ तः पूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गीशनिःपश्चिमास्तः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः,

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करण	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१	श.	४२।५४	रा.११।५६	पुनर्वसु	१८।४८	दि.२।४१	वैधृति	२१।४६	बालव	१४।३३	मिथुन ५।०७	दि.८।४६	८।२६।३५।४३	२६।१०	६।४६	५।१४	१८	२६	११
२	र.	३८।४७	रा.१०।१७	पुष्य	१७।४०	दि.१।५०	विष्कुम्भ	१५।३५	तैतिल	१०।५१	कर्क	आहोरात्रं	८।२७।३७।०६	२६।१२	६।४६	५।१४	१९	२७	१२
३	चं.	३३।५५	रा.८।१९	आश्लेषा	१४।३८	दि.१२।३६	प्रीति	०८।४६	वणिज्	६।२१	कर्क १४।३८	दि.१२।३६	८।२८।३८।२९	२६।१३	६।४५	५।१५	२०	२८	१३
४	मं.	२८।३१	सा.६।०९	मघा	११।०६	दि.११।११	आयुष्यमान	०१।२८	बव	१।१३	सिंह	आहोरात्रं	८।२९।३९।५२	२६।१४	६।४५	५।१५	२१	२९	१४
५	बु.	२२।४६	दि.३।५१	पूर्वाफाल्गुनी	०७।०९	दि.९।३७	शोभन	४५।५६	तैतिल	२२।४६	सिंह २१।०७	दि.३।१२	९।००।४१।१६	२६।१५	६।४५	५।१५	२२	१	१५
६	गु.	१६।५२	दि.१।३०	उत्तराफाल्गुनी	०३।००	दि.७।५७	अतिगण्ड	३८।०२	वणिज्	१६।५२	कन्या	आहोरात्रं	९।०१।४२।३९	२६।१६	६।४५	५।१५	२३	२	१६
७	शु.	११।०३	दि.११।०९	चित्रा	५४।५६	रा.४।४२	सुकर्मा	३०।१४	बव	११।०३	कन्या २६।५३	सा.५।२९	९।०२।४४।०२	१६।१८	६।४४	५।१६	२४	३	१७
८	श.	०५।३१	दि.८।५६	स्वाती	५१।२६	रा.३।१८	धृति	२२।४३	कौलव	५।३१	तुला	आहोरात्रं	९।०३।४५।२५	१६।२०	६।४४	५।१६	२५	४	१८
९	र.	००।२५	प्रा.६।५४	विशाखा	४८।३३	रा.२।०९	शूल	१५।३८	गर	००।२५	तुला ३४।१६	रा.८।२७	९।०४।४६।४८	२६।२२	६।४४	५।१६	२६	५	१९
११	चं.	५२।२१	रा.३।३६	अनुराधा	४६।३४	रा.१।२१	गण्ड	०९।०९	बव	२४।१०	वृश्चिक	आहोरात्रं	९।०५।४८।११	२६।२४	६।४३	५।१७	२७	६	२०
१२	मं.	४९।४४	रा.२।३७	ज्येष्ठा	४५।२४	रा.१२।५३	वृद्धि	०३।२१	कौलव	२१।०३	वृश्चिक४५।२४	रा.१२।५३	९।०६।४९।३४	२६।२६	६।४३	५।१७	२८	७	२१
१३	बु.	४८।१५	रा.२।००	मूल	४६।००	रा.१।०६	व्याघात	५४।१५	गर	१९।००	धनु	आहोरात्रं	९।०७।५०।५८	२६।२८	६।४२	५।१८	२९	८	२२
१४	गु.	४७।५९	रा.१।५४	पूर्वाषाढ़ा	४६।३३	रा.१।१९	हर्षण	५१।०८	भद्रा	१८।०७	धनु	आहोरात्रं	९।०८।५२।०७	२६।३०	६।४२	५।१८	१	९	२३
३०	शु.	४९।०४	रा.२।१९	उत्तराषाढ़ा	४९।०१	रा.२।१७	वज्र	४९।००	चतुरघ्न	१८।३२	धनु २।७०	दि.७।३३	९।०९।५३।१५	२६।३३	६।४१	५।१९	२	१०	२४

ने.	अं.	
२६	११	माघे कमलास्नानं महापुण्यप्रदं, लक्ष्मणसंवत्‌९०६ प्रारम्भः। प्रयागमाघमेलारम्भः। उत्तराषाढ़ायां रविः ४७।१६ रा.१।४०। शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः, विपणि दि.२।४१ उ.,♐
२७	१२	अग्निवासः, रविपुष्ययोगः दि.१।५० या.। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।५० या., सिद्धियोगः रा.१०।१७ उ., धान्यछेदनं, स्वामिसेवारम्भः, विपणि दि.१।५० या.। पूर्वोदितः गुरु ४५।०८। पश्चिमां विनायात्रा दि.१।५० या.।
२८	१३	भालचन्द्र ४ व्रतं, श्रीगणेशावतारः, गणेशपूजनं, भद्रा ६।२१ तः ३३।५५ या., धान्यछेदनं, मीनचालनं दि.१२।३६ या.। गर्तामियायां शुक्र २८।२५। गण्डान्त६।२६-१८।०५ यावत्।
२९	१४	सौभाग्ययोगममानं ५३।४७। मासान्तः। शिववासः, अग्निवासः, राज्यप्रदयोग। ⛢ प्रयागे कल्पवासारम्भः, नै.माघमासारम्भः। शुद्धारम्भः। धरमाससमाप्तिः; शिशिर-ऋतुः। पुष्टगुरु ४५।०८।
१	१५	शिववासः दि.३।५१ या. अमृतयोगः दि.३।५१ उ., मकरे रविः २।४८ दि.७।५२। मु.३० सममर्घताकरं, मकरसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.७।५२ तः २।१६ यावत् पुण्याहः। तिलसंक्रान्तिः, माघस्नानारम्भः, ⛢
२	१६	मासादिः। हस्तनत्रमानं ५५।५० रा.शे.५।०५। अग्निवासः, भद्रा १६।५२ तः ४३।५८ या., श्रवणेबुधः २८।०२। ♐ दक्षिणयात्रा दि.८।४६ या. ततः उत्तरयात्रा, पश्चिमयात्रा अहोरात्रम्।
३	१७	श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती, अपूपाष्टका, विवाहः, शिववासः दि.११।०६ उ., मृत्युयोगः दि.११।०६ या. ततः पूर्व-दक्षिणयात्रा। हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, स्वामिसेवारम्भः, वृक्षादिरोपणं, विपणिः दि.११।०६ या.,
४	१८	अन्वष्टका, शिववासः दि.८।५६ या., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.८।५६ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।१८ या.। ◆हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं
५	१९	दशमीतिथिमानं ५५।३३ रा.४।५७, विवाहः अनुराधायां रा.२।०६ उ.। अग्निवासः प्रा.६।५४ उ., अमृतयोगः प्रा.६।५४ उ., भद्रा २७।५६ तः ५५।५८ उ.,
६	२०	षट्‌तिलाएकादशी ११ व्रतं स्मार्त्तानां, दग्धतिथि रा. ३।३६ उ.। विवाहः- अनुराधायां रा.१।२१ या.। वधूप्रवेशः। शिववासः, सिद्धियोगः रा.३।३६ या. पश्चिम-उत्तरयात्रा, सर्वार्थसिद्धियोग। ♋
७	२१	ध्रुवयोगमान ५५।००। वैष्णवानां एकादशी व्रतं, गोदुग्धेन पारणं, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगसिद्धियोगः। दग्धतिथि रा.२।३७ या.। ♋ उत्तराषाढ़ायां शनि १९।२५। ज्येष्ठायां मंगल३४।०५।
८	२२	प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः मूले रा.१।०६ या.। मृत्युयोगः, भद्रा ४८।१५ उ., हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं। ♎ धनिष्ठायां बुधः२५।०५, पूर्वाभाद्रे शुक्र २६।४०।
९	२३	प्रदोष १४ व्रतं, नरकनिवारण १४ व्रतं, प्रदोषे शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, कुशेश्वर-कपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनम्। अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.१।५४ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा १८।०७ या.,
१०	२४	माघीं अमावस्या, मौनीअमावस्या, स्नानदानश्राद्धादौ पुण्यतमा,। कलियुगादिः, कलिगताब्दाः५१२०,कलिभोग्याब्दाः४२६८८२। शिववासः, विवाहः प्रतिपदायां रा.२।१९ उ.। श्रवणे रविः ४६।५५ रा.२।३६। ♎

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ श.	७।१०।१९।४९	९।००।४४।२८	८।१६।३२।५५	१०।०३।४०।०३	८।२५।३३।१५	८।१५।५९।०६	४३।०५
२ र.	७।१०।५९।२३	९।०२।२७।३०	८।१६।४६।३७	१०।०४।५३।२८	८।२५।४०।२३	८।१५।५५।५६	४३।०६
३ चं.	७।११।३८।५८	९।०४।०९।५५	८।१७।००।१९	१०।०६।०६।०८	८।२५।४७।३१	८।१५।५२।४५	४३।०७
४ मं.	७।१२।१८।३४	९।०५।५१।४५	८।१७।१४।००	१०।०७।१८।२२	८।२५।५४।४१	८।१५।४९।३४	४३।०८
५ बु.	७।१२।५८।१२	९।०७।३२।५०	८।१७।२४।४१	१०।०८।३०।५२	८।२६।०१।५०	८।१५।४६।२३	४३।०८
६ गु.	७।१३।३७।५०	९।०९।१३।१०	८।१७।४१।२५	१०।०९।४३।०९	८।२६।०८।५७	८।१५।४३।१२	४३।०८
७ शु.	७।१४।१७।२८	९।१०।५२।४०	८।१७।५५।०१	१०।१०।५५।१५	८।२६।१६।०६	८।१५।४०।००	४३।०९
८ श.	७।१४।५७।०७	९।१२।३१।१२	८।१८।०८।४१	१०।१२।०७।११	८।२६।२३।१५	८।१५।३६।५०	४३।१०
९ र.	७।१५।३६।४५	९।१४।०८।४३	८।१८।२२।२०	१०।१३।१९।१७	८।२६।३०।२३	८।१५।३३।४०	४३।११
११ चं.	७।१६।१६।२८	९।१५।४५।१०	८।१८।३५।५५	१०।१४।३१।१०	८।२६।३५।३१	८।१५।३०।२८	४३।१२
१२ मं.	७।१६।५६।१०	९।१७।२०।२७	८।१८।४९।३१	१०।१५।४२।५६	८।२६।४४।४०	८।१५।२७।१८	४३।१३
१३ बु.	७।१७।३५।५३	९।१८।५४।२४	८।१९।०३।०४	१०।१६।५४।३९	८।२६।५१।४५	८।१५।२४।०७	४३।१४
१४ गु.	७।१८।१५।३५	९।२०।२६।५६	८।१९।१६।४०	१०।१८।०६।१३	८।२६।५८।५२	८।१५।२०।५६	४३।१५
३० शु.	७।१८।५५।२३	९।२१।५८।००	८।१९।३०।१२	१०।१९।१७।४२	८।२७।०६।००	८।१५।१७।४७	४३।१७

५ बुधे वल्ली८।२६।३३।१७
अयनांशाः २२।४८।३७

रा.१० ९ ७ शु.६ ८ ११ बु ५ सू गु. श के.४ १२ २ चं.ल.१ मं ३

१३ बुधे वल्ली८।२६।३३।२४
अयनांशाः २२।४८।३८

रा.६ ८ ७ ६ शु.५ १० बु ४ सू के.गु. श चं.३ ११ ल.१ १२ मं २

दैनिकलग्नसारणी चक्र

तिथि, दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ श.	१३।२६	१५।२२	१७।३५	१९।५३	२२।०९	००।२४	२।४१	४।५८	७।०३	८।४६	१०।२०	११।४९
२ र.	१३।२२	१५।१८	१७।३१	१९।४९	२२।०५	००।२०	२।३७	४।५४	६।५९	८।४५	१०।१६	११।४५
३ चं.	१३।१७	१५।१३	१७।२६	१९।४४	२२।००	००।१५	२।३२	४।४९	६।५४	८।४०	१०।११	११।४०
४ मं.	१३।१३	१५।०९	१७।२२	१९।४०	२१।५६	००।११	२।२७	४।४५	६।५०	८।३६	१०।०७	११।३६
५ बु.	१३।०८	१५।०४	१७।१७	१९।३५	२१।५१	००।०६	२।२३	४।४०	६।४५	८।३१	१०।०२	११।३१
६ गु.	१३।०४	१५।००	१७।१३	१९।३१	२१।४७	००।०२	२।१९	४।३६	६।४१	८।२७	९।५८	११।२७
७ शु.	१३।००	१४।५६	१७।०९	१९।२७	२१।४३	२३।५८	२।१५	४।३२	६।३७	८।२३	९।५४	११।२३
८ श.	१२।५६	१४।५२	१७।०५	१९।२३	२१।३९	२३।५४	२।११	४।२८	६।३३	८।१९	९।५०	११।१९
९ र.	१२।५२	१४।४८	१७।०१	१९।१९	२१।३५	२३।५०	२।०७	४।२४	६।२९	८।१५	९।४६	११।१५
११ चं.	१२।४८	१४।४४	१६।५७	१९।१५	२१।३१	२३।४६	२।०३	४।२०	६।२५	८।११	९।४२	११।११
१२ मं.	१२।४३	१४।३९	१६।५२	१९।१०	२१।२६	२३।४१	१।५८	४।१५	६।२०	८।०६	९।३७	११।०६
१३ बु.	१२।३९	१४।३५	१६।४८	१९।०६	२१।२२	२३।३७	१।५४	४।११	६।१६	८।०२	९।३३	११।०२
१४ गु.	१२।३५	१४।३१	१६।४४	१९।०२	२१।१८	२३।३३	१।५०	४।०७	६।१२	७।५८	९।२९	१०।५८
३० शु.	१२।३१	१४।२७	१६।४०	१८।५८	२१।१४	२३।२९	१।४६	४।०३	६।०८	७।५४	९।२५	१०।५४

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	प्र.६:४५-८:०४ दि.१:२०-२:३९ दि.३:५७-५:१५	स.५:१५-६:५७ रा.१:४२-३:२३ रा.५:०४-६:४५
२ र.	दि.१०:४२-१२:१।	रा.१०:२०-१२:०१ रा.१:४२-३:२३।
३ चं.	दि.८:०३-९:२२ दि.२:३८-३:५७।	रा.१०:१९-१२:०० रा.३:२२-५:०३।
४ मं.	दि.८:०३-९:२२ दि.१:१९-२:३८।	रा.६:५७-८:३८।
५ बु.	दि.९:२२-१०:४१ दि.१२:००-१:१९।	रा.१२:०० १:४१ रा.३:२२ ५:०३।
६ गु.	दि.२:३९-५:१७।	रा.१२:०१-१:४२ रा.५:०३-६:४३।
७ शु.	दि.९:२३-१२:०१।	रा.८:३९-१०:२०।
८ श.	प्र.६:४२-८:२ दि.१:२१-२:४० दि.३:५९-५:१८	स.५:१८-६:५९ रा.१:४२-३:२२ रा.५:०२-६:४२
९ र.	दि.१०:४२-१:२१।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.१:४२-३:२२।
११ चं.	दि.८:०२-९:२२ दि.२:४०-३:५९।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.३:२२-५:०२।
१२ मं.	दि.८:०१-९:२१ दि. १:२१-२:४१।	रा.७:००-८:४१।
१३ बु.	दि९:२०-१०:४० दि.१२:००-१:२०।	रा.१२:००-१:४० रा.३:२० ५:००।
१४ गु.	दि.२:४०-४:००।	रा.१२:००-१:४० रा.५:००-६:३९।
३० शु.	दि.९:२१-१२:०१।	रा.८:४१-१०:२१।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति. २ रवि दि.१।५० तः ति. ४ मंगल दि.११।११ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.११ सोम रा.१।२१ तः ति.१३ बुध रा.१।०६ यावत्।

विविधविषयाः:-माघे **प्रातःस्नानफलं**-यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। मकरार्के **प्रातःस्नानमन्त्रः**:- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। माघे कुत्रापि **स्नानफलम्**-स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।।

चतुर्थ्यां **गणेशोत्पत्तिः**:- सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्।

चतुर्दश्यां नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतं- चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

अथ प्रातः कृत्य स्तुति :-

सूर्योदय सँ चारि घड़ी अर्थात् ९६ मिनट पूर्व जे ब्रह्ममुहूर्त्त कहबै ठेक, ओहि मे उठ कऽ चाहि। ओछाओन सँ उठि निम्नलिखित मन्त्र सँ करदर्शन करी- **ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।।**

तकर बाद निम्नलिखित मन्त्र सँ पृथ्वी के प्रणाम करी-
ॐ समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

तकर बाद अपन सुविधा अनुसार **प्रातः स्मरण** करी।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।१।।
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः, सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।२।।
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च, सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।३।।
पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः, स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ- ब्रह्मा,विष्णु,शिव सूर्य चन्द्रमा, मंगल,बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि राहु आ केतु- ई सब देवता हमर प्रातः कालक मंगल करथि।।१।। सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, आसुरि आ पिंगल ई सब ऋषिगण, षड्ज, ऋषभ,गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद ई सप्त स्वर, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल आ पाताल ई सातों कुलपर्वत, सप्तर्षिगण, सातों वन आ सातों द्वीप, भूर्लोक, भुवर्लोक आदि सातो लोक हमर प्रातःकालक मंगलमय करथि।।२।। गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु, प्रज्वलित तेज, शब्दसहित आकाश आ महत्तत्त्व- ई सभ हमर प्रातःकालक मंगल करथि।।३।।

शौचाचार-

शौचे यत्नः सदा कार्यः शौचमूलो द्विजः स्मृतः।
शौचाचार विहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः।।

शौचाचारमें सदा प्रयत्नशील रहक चाहि, किया त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यक मूल शौचचारे अछि।शौचाचारक पालन नै कयलापर सभ क्रिया निष्फल भ जाइत अछि।

शौच-विधिः-

शौच बाहर जयवाक होय त गाँगसँ **नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकं भुवः**। अर्थात् नैर्ऋत्यकोण (दक्षिण आ पश्चिमकें बीच) कनिक दूर जाय। घर में शौचालय होयत अपन सुविधानुसार मूत्र-पुरीषक उत्सर्ग करी। जनऊ क दहिना कानपर चढ़ा लेथि। शौच **दिवा सुध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः। कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु रात्रौ च दक्षिणामुखः।** दिन में उत्तर दिश मुह क आ राति मे दक्षिण दिश मुह

माघशुक्लपक्षः।।

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिरः ऋतुः । पूर्वे कालः। शुद्धः।
दिनांक २५ जनवरीतः ९ फरवरी यावत् सन्२०२० ई। मार्गी गुरुः पौदितः; मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः, मार्गीशनिः पश्चिमास्तः, मार्गी कुजः पूर्वोदितः; मार्गी बुधः पूर्वास्तः,

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	श.	५१।२८	रा.३।१६	श्रवण	५२।४५	रा.३।४७	सिद्धि	४७।५५	किंगस्तुघ्न२०।१६	मकर	आहोरात्रं	६।१०।५४।२३	२६।३६	६।४१	५।१९	३
२	र.	५४।५६	रा.४।४०	धनिष्ठा	५७।५६	रा.शे५।५२	व्यतीपात	४७।४२	बालव २३।१४	मकर रा.१।२२	सा.४।४६	६।११।५५।३१	२६।३९	६।४०	५।२०	४
३	चं.	५६।२६	रा.शे६।२८	शतभिषा	६०।००	अहोरात्र	वरीयान्	४८।१५	तैतिल २७।१४	कुम्भ	आहोरात्रं	६।१२।५६।३६	२६।४२	६।४०	५।२०	५
४	मं.	६०।००	अहोरात्र	शतभिषा	०३।१७	दि.७।५८	परिघ	४६।१८	वणिज् ३२।०३	कुम्भ ५३।०१	रा.३।५१	६।१३।५७।४७	२६।४५	६।३९	५।२१	६
४	बु.	०४।३७	दि.८।२६	पूर्वाभाद्रपद	०९।३६	दि.१०।२८	शिव	५०।३९	भद्रा ४।३७	मीन	आहोरात्रं	६।१४।५८।५५	२६।४८	६।३८	५।२२	७
५	गु.	१०।०६	दि.१०।३६	उत्तराभाद्रपद	१६।११	दि.१।०५	सिद्ध	५१।५९	बालव १०।०६	मीन	आहोरात्रं	६।१६।००।००	२६।५२	६।३७	५।२३	८
६	शु.	१५।२४	दि.१२।४७	रेवती	२२।३४	दि.३।३६	साध्य	५२।५८	तैतिल १५।२४	मीन २२।३४	दि.३।३६	६।१७।०१।०५	२६।५६	६।३७	५।२३	९
७	श.	२०।०७	दि.२।३६	अश्विनी	२८।२०	सा.५।५६	शुभ	५३।२५	वणिज् २०।०७	मेष	आहोरात्रं	६।१८।०२।१०	२६।५९	६।३६	५।२४	१०
८	र.	२३।५७	दि.४।११	भरणी	३३।१४	रा.७।५४	शुक्ल	५३।००	बव २३।५७	मेष४६।११	रा.२।१७	६।१९।०३।१५	२७।०२	६।३६	५।२४	११
९	चं.	२६।३५	सा.५।१३	कृत्तिका	३७।०३	रा.९।२४	ब्रह्म	५१।४९	कौलव२६।३५	वृष	आहोरात्रं	६।२०।०४।१९	२७।०५	६।३५	५।२५	१२
१०	मं.	२८।०२	सा.५।४७	रोहिणी	३९।३७	रा.१०।२५	ऐन्द्र	४९।३५	गर २८।०२	वृष	आहोरात्रं	६।२१।०५।२३	२७।०८	६।३४	५।२६	१३
११	बु.	२८।०६	सा.५।५०	मृगशिरा	४०।५४	रा.१०।५६	वैधृति	४६।१६	भद्रा २८।०६	वृष १०।१६	दि१०।४०	६।२२।०६।२८	२७।११	६।३४	५।२६	१४
१२	गु.	२७।००	सा.५।२१	आर्द्रा	४१।००	रा.१०।५७	विष्कुम्भ	४२।०५	बालव २७।००	मिथुन	आहोरात्रं	६।२३।०७।२४	२७।१४	६।३३	५।२७	१५
१३	शु.	२४।३८	दि.४।२३	पुनर्वसु	३९।५५	रा.१०।३०	प्रीति	३७।००	तैतिल२४।३८	मिथुन २५।११	सा.४।३७	६।२४।०८।२०	२७।१८	६।३२	५।२८	१६
१४	श.	२१।१५	दि.३।०२	पुष्य	३७।५८	रा.९।४३	आयुष्यमान	३१।०५	वणिज् २१।१५	कर्क	आहोरात्रं	६।२५।०९।१६	२७।२२	६।३२	५।२८	१७
१५	र.	१७।०१	दि.१।१६	आश्लेषा	३५।१०	रा.८।३५	सौभाग्य	२४।३०	बव १७।०१	कर्क३५।१०	रा.८।३५	६।२६।१०।१२	२७।२६	६।३१	५।२९	१८

दिनांकाः ने.	अं.	
११	२५	शिशिरनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, पंचकारम्भः(भदवा) रा.३।४७ उ., वधूप्रवेशः, पञ्चकारम्भ(भदवा) रा.३।४७ उ., अमृतयोगः रा.३।१६ या., पूर्वाविनायात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।४७ या.,
१२	२६	विवाहः धनिष्ठायां, देवादिप्रतिष्ठा, चन्द्रदर्शनं,मु३० फलं समम्। रेमन्त पूजा, शिववासः, अग्निवासः, पूर्वयात्रा। द्विपुष्करयोगः रा.४।४० या.। भारतीय गणतन्त्रदिवसः। द्विपुष्करयोगः रा.३।४७ उ., यानादिचालनं,
१३	२७	वदरी३, कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, मुण्डनं, उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, हलप्रवहणं। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।०५ उ., बीजवपनं, धान्यछेदनं, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, विपणि।
१४	२८	श्रीगणेश४ व्रतं, अग्निवासः, राज्यप्रदयोगः, भद्रा ३२।०३ उ.। ♍ दग्धतिथि सा.५।५० उ.। अमृतसिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।५७ उ., हलप्रवहणं, बीजवबवनं, धान्यछेदनं, बीजस्थापनं, स्वामिसेवारम्भः, विपणि,
१५	२९	शिववासः दि.८।२६ उ., उपनयनं पञ्चम्यां दि.८।२६ उ., विवाहः-देवादिप्रतिष्ठा उत्तराभाद्रपदायां दि.१०।२८ उ.। भद्रा ४।३७ या.। कुम्भेबुधः ३९।४०।
१६	३०	वसन्तपञ्चमी, सरस्वतीपूजनं, तक्षकपूजा, उत्तराभिमुख हलप्रवाहः। शिववासः, अग्निवासः,विवाहः दिवारात्री, उपनयनं पञ्चम्यां दि:१०।३६ या.। देवादिप्रतिष्ठा-कर्णवेधः, वधूप्रवेशः। सिद्धियोगः दि.१०।३६ या.,
१७	३१	शीतलाषष्ठी। गजपूजा, विल्वाभिमन्त्रणं, शिववासः दि.१२।४७ या.,मुण्डनं सप्तम्यां, विवाहः दिवारात्री, कर्णवेध, देवादिप्रतिष्ठा, वधूप्रवेशः, पञ्चकसमाप्तिः(भदवा) दि.३।३६ उ., उत्तरयात्रा दि.३।३६ या.।
१८	१	ब्रह्मयोग५६।१७। पत्रिकाप्रवेशः, महारात्रिर्निशापूजा, रात्रिजागरण, ब्रह्मसावर्णिमन्वादि, अचलासप्तमी ७ व्रतं, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमं फलदं। भीष्माष्टमी, ◆
१९	२	महाष्टमीव्रतं, अग्निवासः-शिववासः दि.४।११ उ., सिद्धियोगः दि.४।११ या., धान्यछेदनं। ◆मध्याह्नव्यापिनीग्राह्य, भीष्मतर्पण, अग्निवासः, भद्रा २०।०७ तः ५२।०२ या., यानादिचालनं, विपणि, ♎।
२०	३	महानन्दानवमी ९। महानवमीव्रतम्। श्रीहरसूब्रह्मदेवजयन्ती ९। शिववासः-अग्निवासः सा.५।१३ या., विवाहः रोहिण्यां रा.९।२४ उ.। अमृतयोगः सा.५।१३ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.९।२४ उ., मीनेशुक्रः ३।१२।
२१	४	विजयादशमी, गुप्तनवरात्रस्य पारणा। छन्दोगानां उपनयनं। अग्निवासः सा.५।४७ उ., मृत्युयोगः सा.५।४७ उ., भद्रा ५८।०६ उ., पूर्व-दक्षिणयात्रा सा.५।५० या.। हलप्रवहणं, यानादिचालनं, ❖
२२	५	भैमीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां,व्रतोद्यापनं,श्रीमाधव१२,सन्तान१२। मुण्डनं, उपनयनं,देवादिप्रतिष्ठा, कर्णवेध, विवाहः रोहिण्यां रा.१०।५६ उ.। उत्तराविनायात्रा। अग्निवासः सा.५।५० या ततः शिववासः, ♍
२३	६	गोदुग्धेनपारण। प्रदोष१३ व्रतं। धनिष्ठायां रविः ५६।०२ रा.४।५८। शिववासः, अग्निवास सा.५।२१ उ., दग्धतिथि सा.५।२१ या.। अमृतयोगः सा.५।२१ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।५७ उ., धान्यछेदनं,
२४	७	प्रदोष १४ व्रतम्। शिववासः-अग्निवासः दि.४।२३ या., मुण्डनं, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, अमृतयोगः दि.४।२३ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।३० या., दक्षिणयात्रा। हलप्रवहणं।
२५	८	अग्निवासः दि.३।०२ उ., सिद्धियोगः, राज्यप्रदयोगः दि.३।०२ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा २१।१५ तः ४४।०८ या.। पूर्वाविनायात्रा दि.३।०२ या.।
२६	९	माघीपूर्णिमा१५ स्नानदानादिः, गोशालाघट्टे कमलायां जीवछघट्टे जीववत्सायां स्नानदानशिवार्चनादिकं। श्रीरविदासजयन्ती। शिववासः दि.१।१६ उ., विवाह मघायां रा.८।३५ उ.। अमृतयोगः दि.१।१६ या.ततः♋

♋ मृत्युयोग। मूलेधनुषिमंगल ३९।५५। सिद्धियोगः दि.१२।४७ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्धसिद्धियोगः, स्वामिसेवारम्भः, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, विपणि।
❖शतभिषायां बुधः१८।५१, उत्तरभाद्रशुक्र५४।०३।
♎पूर्वाविनायात्रा सा.५।५६ या.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ श.	७।१६।३८।०८	६।२३।२७।२७	८।१६।४३।४२	१०।२०।२६।०३	८।२७।१०।०४	८।१५।१४।३७
२ र.	७।२०।१४।५५	६।२४।५५।१०	८।१६।५७।१०	१०।२१।४०।२२	८।०७।२०।११	८।१५।११।२६
३ चं.	७।२०।५४।४४	६।२६।२०।५८	८।२०।१०।३६	१०।२२।५१।२३	८।२७।२७।१३	८।१५।०८।१५
४ मं.	७।२१।३४।३०	६।२७।४४।४७	८।२०।२४।०३	१०।२४।०२।३७	८।२७।३४।१५	८।१५।०४।०५
४ बु.	७।२२।१४।२०	६।२९।०६।२५	८।२०।३७।२५	१०।२५।१३।३४	८।२७।४१।२०	८।१५।०१।५४
५ गु.	७।२२।५४।१०	१०।००।२५।४०	८।२०।५०।४७	१०।२६।२४।२४	८।२७।४८।२०	८।१४।५८।४३
६ शु.	७।२३।३४।०२	१०।०१।४२।२५	८।२१।०४।०७	१०।२७।३५।०८	८।२७।५५।२२	८।१४।५५।३३
७ श.	७।२४।१३।५४	१०।०२।५६।२८	८।२१।१७।२५	१०।२८।४५।४६	८।२८।०२।२२	८।१४।५२।२२
८ र.	७।२४।५३।५३	१०।०४।०७।३५	८।२१।३०।४०	१०।२९।५६।१३	८।२८।०९।१८	८।१४।४९।११
९ चं.	७।२५।३३।३९	१०।०५।१५।४०	८।२१।४३।५५	११।०१।०६।३३	८।२८।१६।१६	८।१४।४६।०१
१० मं.	७।२६।१३।३३	१०।०६।२०।२५	८।२१।५७।०६	११।०२।१६।४८	८।२८।२३।१०	८।१४।४२।५०
११ बु.	७।२६।५३।३०	१०।०७।२१।३३	८।२२।१०।१३	११।०३।२६।५४	८।२८।३०।०४	८।१४।३९।४०
१२ गु.	७।२७।३३।२५	१०।०८।१८।५०	८।२२।२३।२०	११।०४।३६।५२	८।२८।३६।५७	८।१४।३६।२९
१३ शु.	७।२८।१३।२३	१०।०९।१२।०५	८।२२।३६।२३	११।०५।४६।४२	८।२८।४३।४८	८।१४।३३।१८
१४ श.	७।२८।५३।२४	१०।१०।००।५८	८।२२।४९।२३	११।०६।५६।२४	८।२८।५०।३८	८।१४।३०।०८
१५ र.	७।२९।३३।२३	१०।१०४५।१४	८।२३।०२।२२	१०।८०५।५७	८।२८५७२५	८।१४।२६।५७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४३।१६	१२।२७	१४।२३	१६।३६	१८।५४	२१।१०	२३।२५	१।४२	३।५८	६।०४	७।५०	९।२१	१०।५०
४३।२१	१२।२२	१४।१८	१६।३१	१८।४९	२१।०५	२३।२०	१।३७	३।५४	५।५९	७।४५	९।१६	१०।४५
४३।२३	१२।१८	१४।१४	१६।२७	१८।४५	२१।०१	२३।१६	१।३३	३।५०	५।५५	७।४१	९।१२	१०।४१
४३।२४	१२।१४	१४।१०	१६।२३	१८।४१	२०।५७	२३।१२	१।२९	३।४६	५।५१	७।३७	९।०८	१०।३७
४३।२५	१२।१०	१४।०६	१६।१९	१८।३७	२०।५३	२३।०८	१।२५	३।४२	५।४७	७।३३	९।०४	१०।३३
४३।२६	१२।०६	१४।०२	१६।१५	१८।३३	२०।४९	२३।०४	१।२१	३।३८	५।४३	७।२९	९।००	१०।२९
४३।२८	१२।०२	१३।५८	१६।११	१८।२९	२०।४५	२३।००	१।१७	३।३४	५।३९	७।२५	८।५६	१०।२५
४३।३०	११।५८	१३।५४	१६।०७	१८।२५	२०।४१	२२।५६	१।१३	३।३०	५।३५	७।२१	८।५२	१०।२१
४३।३२	११।५३	१३।४९	१६।०२	१८।२०	२०।३६	२२।५१	१।०८	३।२५	५।३०	७।१६	८।४७	१०।१६
४३।३४	११।४९	१३।४५	१५।५८	१८।१६	२०।३२	२२।४७	१।०४	३।२१	५।२३	७।१२	८।४३	१०।१२
४३।३५	११।४५	१३।४१	१५।५४	१८।१२	२०।२८	२२।४३	१।००	३।१७	५।२२	७।०८	८।३९	१०।०८
४३।३६	११।४१	१३।३७	१५।५०	१८।०८	२०।२४	२२।३९	०।५६	३।१३	५।१८	७।०४	८।३५	१०।०४
४३।३७	११।३७	१३।३३	१५।४६	१८।०४	२०।२०	२२।३५	०।५२	३।०९	५।१४	७।००	८।३१	१०।००
४३।३९	११।३३	१३।२९	१५।४२	१८।००	२०।१६	२२।३१	०।४८	३।०५	५।१०	६।५६	८।२७	०९।५६
४३।४१	११।२८	१३।२४	१५।३७	१७।५५	२०।११	२२।२६	०।४३	३।००	५।०५	६।५१	८।२२	०९।५१
४३।४३	११।२४	१३।२०	१५।३३	१७।५१	२०।०७	२२।२२	०।३९	२।५६	५।०१	६।४७	८।१८	०९।४७

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	प्रा.६:३९–८:०० दि.१:२१–२:४१ सं.४:०१–५:२१।	सं.५:२१–७:०९ ।रा.१:४१–३:२१ ।रा.५:००–६:३८।
२ र.	दि.१०:४१–१:२२।	रा.१०:२२–१२:०२ ।रा.१:४१–३:२०।
३ चं.	दि.७:५८–९:१६ ।दि.२:४३–४:०३।	रा.१०:२२–१२:०१ ।रा.३:१६–४:५८।
४ मं.	दि.७:५७–९:१८ ।दि.१:२१–२:४२।	रा.७:०३–८:४२।
४ बु.	दि.९:१८–१०:३९ ।दि.१२:००–१:२१।	रा.१२:००–१:३६ ।रा.३:१८–४:५७।
५ गु.	दि.२:४३–५:२५।	रा.१२:०१–१:४० ।रा.४:५७–६:३४।
६ शु.	दि.९।१८–१२।०२	रा.८:४४–१०:२३।
७ श.	प्रा.६:३४–७:५६ दि.१:२२–२:४४ सं.४:०५–५:२६।	सं.५:२६–७:०५ ।रा.१:४०–३:१८ ।रा.४:५६–६:३३।
८ र.	दि.१०:३९–१:२३।	रा.१०:२३–१२:०१ ।रा.१:३६–३:१७।
९ चं.	दि.७:५४–९:१६ ।दि.२:४४–४:०६।	रा.१०:२२–१२:०० ।रा.३:१६–४:५४।
१० मं.	दि.७:५४–९:१६ ।दि.१:२२–२:४४।	रा.७:०६–८:४४।
११ बु.	दि.९:१७–१०:३९ ।दि.१२:०१–१:३३।	रा.१२:०१–१:३६ ।रा.३:१७–४:५४।
१२ गु.	दि.२:४६–५:३०।	रा.१२:०२–१:३६ ।रा.४:५३–६:२६।
१३ शु.	दि.९:१६–१२:०२।	रा.८:४६–१०:२४।
१४ श.	प्रा.६:२९–७:५२ दि.१:२४–२:४७ सं.४:०९–५:३१।	सं.५:३१–७:०६ ।रा.१:३८–३:१५ ।रा.४:५२–६:२६।
१५ र.	दि.१०:३८–१:२४।	रा.१०:२४–१२:०१ ।रा.१:३८–३:१५।

माघी पूर्णिमा-परयुताग्राह्या। यथोक्तं ब्रह्मवैवर्ते "भूतविद्धे न कर्तव्ये दशपूर्णे कदाचन।। माघरथयोश्च जीवेन्द्वोमहामाघीति कथ्यते। ज्योतिषे मेषपृष्ठे यदासौरिः सिंहे च गुरु चन्द्रमाः। भास्करः श्रवणर्क्षे च महामाघीति सा स्मृता।। अचलासप्तम्या- सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र।। स्नानमन्त्रः-यद्यज्जन्मकृतं पापं मयासप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्चशोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाता ज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्त विधं पापं स्नानं मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवी हर माकरि सप्तमी।। सूर्य का अर्घ्य दें-सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। अर्घ्योपरान्त प्रणाम करें-जननी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्य मूर्तये।। अष्टम्यां भीष्मतर्पण मन्त्रः- वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रवरायच। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्म वर्मणे।। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्राति कर्त्तव्यम्।

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.५ गुरु दि.१।०५ तः ति.७ शनि सा.५।५६ या.। आश्लेषा/मघा ति.१४ शनि रा.९।४३ तः.....।

४ बुधे वल्ली८।३६।३३।३१
अयनांशाः २२।४८।३६

रा.९ | ८ | ९ चं. | शु.५ | ७ | १० | बु ४ सू | ११ | गु. | श के. | ल.१ | १२ | मं २ | ३

११ बुधे वल्ली८।३६।३३।३८
अयनांशाः २२।४८।४०

रा.९ चं. | ८ | ९ शु. | बु ५ | ७ | १० | ४ सू | ११ | गु. | श के. | ल.१ | १२ | मं २ | ३

क बैसि शौच त्याग करी। शौचकाल नै बजवाक चाही, नै जोर सँ सांस लेवाक चाही आ नै थूकवाक चाही। शौचोपरान्त मिटटी, अथवा यथोपलव्य बस्तु सँ हाथ पैर ठीक सँ साफ कय आचमन करी।

दन्तधावन(दातमनि) विधि- (आह्निकसूत्रावली)

मुखे पर्युषिते नित्यं भवत्यप्रयतो नरः। दन्तधावनमुद्दिष्टं जिह्वोल्लेखनिका तथा।। अतो मुखविशुद्ध्यर्थं गृह्णीयाद् दन्तधावनम्। आचान्तोऽप्यशुचिर्नित्यमकृत्वा दन्तधावनम्।।

अर्थात् मुखशुद्धिकें विना पूजा-पाठ, मन्त्र-जप आदि निष्फल होइत अछि, अतः प्रतिदिन मुख-शुद्ध्यर्थ दन्तधावन अथवा मंजनादि अवश्य करवा क चाहि। शौचादिक बाद पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैसि अगिला मन्त्र पढ़ि दातमनि क अभिमन्त्रित करी।

मन्त्र-ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।।
मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानां च विशुद्धये।
ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि	द. प	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	सङ्क्रान्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	चं.	१२।०६	दि.११।२०	मघा	३१।४४	रा.७।१२	शोभन	१७।२३	कौलव	१२।०६	सिंह		आहोरात्रं	०६।२७।११।०७	२७।२६	६।३०	५।३०	१९
२	मं.	०६।३७	दि.६।०६	पूर्वाफाल्गुनी	२७।५३	सा.५।३६	अतिगण्ड	०६।५१	गर	६।३७	सिंह	११।१४	दि.११।००	०६।२८।१२।०२	२७।३२	६।३०	५।३०	२०
३	बु.	००।४६	प्रा.६।४६	उत्तराफाल्गुनी	२३।४५	दि.३।५६	सुकर्मा	०२।०५	भद्रा	००।४६	कन्या		आहोरात्रं	०६।२९।१२।५७	२७।३५	६।२९	५।३१	२१
५	गु.	४६।०७	रा.२।०७	हस्त	१६।३६	दि.२।१८	शूल	४६।२२	कौलव	२१।३४	कन्या	४७।३७	रा.१।३१	१०।००।१३।४१	२७।३८	६।२८	५।३२	२२
६	शु.	४३।३४	रा.११।५४	चित्रा	१५।३८	दि.१२।४३	गण्ड	३८।४८	गर	१६।२१	तुला		आहोरात्रं	१०।०१।१४।२५	२७।४२	६।२८	५।३२	२३
७	श.	३८।३२	रा.६।५२	स्वाती	१२।०४	दि.११।१७	वृद्धि	३१।३७	भद्रा	११।०३	तुला	५४।४८	रा.१।३१	१०।०२।१५।०६	२७।४५	६।२७	५।३३	२४
८	र.	३४।०८	रा.८।०५	विशाखा	०६।०२	दि.१०।०३	ध्रुव	२४।५६	बालव	५।२०	वृश्चिक		आहोरात्रं	१०।०३।१५।५३	२७।४८	६।२६	५।३४	२५
९	चं.	३०।३३	रा.६।३९	अनुराधा	०६।५२	दि.९।११	व्याघात	१९।००	तैतिल	२।२१	वृश्चिक		आहोरात्रं	१०।०४।१६।३६	२७।५१	६।२६	५।३४	२६
१०	मं.	२७।५७	सा.५।३६	ज्येष्ठा	०५।३०	दि.८।३७	हर्षण	१३।४८	भद्रा	२७।५७	वृश्चिक	५।३०	दि.८।३७	१०।०५।१७।१९	२७।५४	६।२५	५।३५	२७
११	बु.	२६।३३	सा.५।०२	मूल	०५।१३	दि.८।३०	वज्र	०९।२५	बालव	२६।३३	धनु		आहोरात्रं	१०।०६।१८।३३	२७।५७	६।२५	५।३५	२८
१२	गु.	२६।२४	दि.४।५८	पूर्वाषाढ़ा	०६।१०	दि.८।५२	सिद्धि	०६।३३	तैतिल	२६।२४	धनु	२१।४३	दि.३।०५	१०।०७।१८।३३	२८।००	६।२४	५।३६	२९
१३	शु.	२७।३३	सा.५।२४	उत्तराषाढ़ा	०८।२०	दि.९।४३	व्यतीपात	०४।०२	वणिज्	२७।३३	मकर		आहोरात्रं	१०।०८।१९।०५	२८।०४	६।२३	५।३७	१
१४	श.	२९।५९	रा.६।२२	श्रवण	११।४८	दि.११।०५	वरीयान्	०२।२२	शकुनी	२९।५९	मकर	४४।०६	दि.१२।००	१०।०९।१९।३७	२८।०८	६।२२	५।३८	२
३०	र.	३३।३३	रा.७।४७	धनिष्ठा	१६।२४	दि.१२।५६	परिघ	०१।५२	चतुष्पद	१।४६	कुम्भ		आहोरात्रं	१०।१०।२०।०६	२८।१२	६।२२	५।३८	३

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, उत्तरायण, दक्षिणगोलः, शिशिर ऋतुः, पूर्वे कालः ति.५ ततः दक्षिणे कालः। शुद्धः। दिनांक १० फरवरीतः २३ यावत् सन्२०२० ई.। मार्गी गुरु पूर्वोदित, मार्गी शुक्र पश्चिमोदित, मार्गी शनि पूर्वोदित, मार्गी कुज पूर्वोदित, मार्गी बुध पश्चिमोदित,

ने.	अं.	
२७	१०	फाल्गुने वाङ्मतिस्नानं महापुण्यप्रदं, विवाहः मघायां रा.७।१२ या.। शिववासः दि.११।२० या. ततः अग्निवासः सिद्धियोगः दि.११।२० या. ततः मृत्युयोगः।
२८	११	अमृतयोगः दि.६।०६ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा ३३।४३ उ.। पूर्वयात्रा अहोरात्र, दक्षिणयात्रा दि.११।०० उ.। ♍ सिद्धियोगः रा.२।०७ या.।
२९	१२	चतुर्थीतिथिमानं ५४।०१। ध्रुवयोग ५२।०५। मासान्तः, श्रीहेरम्ब४ व्रतं, शिववासः प्रा.६।४६ उ., अग्निवासः, मृत्युयोग प्रा.६।४६ या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।५६ उ., भद्रा ००।४६ या.। दग्धतिथि प्रा.६।४६ उ.।
१	१३	कुम्भे रविः३०।१६ सा.६।३६, । मु.३० समासमताकरम्। विष्णुपदिसंक्रान्तिपुण्यकालो दि.१२।०० उ. दुस्वाहः। ग्रीष्म ऋतुः, माघस्नानसमाप्तिः, प्रयागे कल्पवाससमाप्तिः। नेपाली फाल्गुनमासारम्भः, शिववासः, ♍,
२	१४	मासादिः, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.११।५४ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा ४३।३४ उ.। ← प्रतिष्ठादिनं,सिद्धेश्वरमेनापकः। अग्निवासः. पश्चिमां विनायात्रा दि.६।४३ उ.। अमृतयोगः सा.५।२४ उ.,
३	१५	श्रीहनुमत्पूजनोत्सवः नौलागढ़। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।१७ या, त्रिपुष्करयोगः दि.११।१७ ततः रा.६।५२ या., भद्रा ११।३ या.। दक्षिण-पश्चिमयात्रा। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।४३ उ.,भद्रा २७।३३ ततः ५८।४६ या.।
४	१६	शाकाष्टका। विवाहः अष्टमीअनुराधायां च दि.१०।०३ ततः रा.८।०५ या.। शिववासः, सिद्धियोगः रा.८।०५ या.। रेवत्यां शुक्रः२७।३४। उत्तरयात्रा।
५	१७	अन्वष्टका, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.६।३६ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।११ या., भद्रा ४६।१५ उ.। ☒ दि.८।३७ या. ततः पूर्वयात्रा सा.५।३६ या.।
६	१८	मार्च३। स्वामी दयानन्दसरस्वती जयन्ती। शिववासः सा.५।३६ उ., मृत्युयोगः सा.५।३६ उ., भद्रा २७।५७ या.। मकरे शनि २६।०४। पश्चिमयात्रा ☒
७	१९	विजयाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। विवाह दिवालग्नं मूले दि.८।३० या.। शिववासः, अग्निवासः, अमृतसिद्धियोगः। पूर्वयात्रा।
८	२०	विवाहः उत्तराषाढायां दि.८।५२ उ.। वधूप्रवेशः, गोदश्मापारणं, प्रदोष १३ व्रतं, शतभिषायां रवि५।२७ दि.८।३५। शिववासः दि.४।५८ या. अमृतयोगः दि.४।५८ उ.। उत्तरयात्रा दि.३।०५ या. पूर्वयात्रा सा.५।३६ या.।
९	२१	विवाहः त्रयोदश्यां सा.५।२४ या.। प्रदोष१४ व्रतं,नक्तव्रतं, महाशिवरात्रिव्रतं प्रदोषे यावद्रात्रौ तत्र शिवार्चनं सकलस्वनेयसमफलदं, श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः, श्रीशिवदर्शनं, श्रीरावणेश्वरवैद्यनाथ-सिंहेश्वरनाथयोः ←
१०	२२	शिवरात्रिव्रतस्यपारणा। शिववासः रा.६।२२ उ., पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.११।०५ उ.। राज्यप्रद-सिद्धियोगश्च रा.६।२२ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।०५ या.। वक्रीबुध।
११	२३	फाल्गुनीअमावस्या स्नानदानादिः, गोसहस्रिका३०, शिववासः रा.७।४७ या., अग्निवासः, अमृतयोगः रा.७।४७ या. ततः मृत्युयोगः।

मूलादिकारः- आश्लेषा/मघा ति.१ सोम रा.७।१२ यावत्। ज्येष्ठा/मूल ति.९ सोम दि.९।१२ ततः ति ११ बुध दि.८।०० यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ चं.	८।००।१३।२४	१०।११।२४।३५	८।२३।१५।१७	११।०६।१५।२१	८।२९।०४।१२	८।१४।२३।४६	४३।४५	११।२०	१३।१६	१५।२६	१७।४७	२०।०३	२२।१८	०।३५	२।५२	४।५७	६।४३	८।१४	९।४३
२ मं.	८।००।५३।२६	१०।११।५८।४६	८।२३।२८।१०	११।१०।२४।३९	८।२९।१०।५६	८।१४।२०।३६	४३।४७	११।१६	१३।१२	१५।२५	१७।४३	१९।५९	२२।१४	०।३१	२।४८	४।५३	६।३९	८।१०	९।३९
३ बु.	८।०१।३३।२८	१०।१२।२७।२८	८।२३।४१।००	११।११।३३।४५	८।२९।१७।३८	८।१४।१७।२५	४३।४८	११।१२	१३।०८	१५।२१	१७।३९	१९।५५	२२।१०	०।२७	२।४४	४।४९	६।३५	८।०६	९।३५
५ गु.	८।०२।१३।३२	१०।१२।५०।२७	८।२३।५३।४५	११।१२।४२।४२	८।२९।२४।२०	८।१४।१४।१४	४३।४९	११।०७	१३।०३	१५।१६	१७।३४	१९।५०	२२।०५	०।२२	२।३९	४।४४	६।३०	८।०१	९।३०
६ शु.	८।०२।५३।३६	१०।१३।०९।२९	८।२४।०६।२८	११।१३।५१।३०	८।२९।३०।५८	८।१४।११।०४	४३।५१	११।०३	१२।५९	१५।१२	१७।३०	१९।४६	२२।०१	०।१८	२।३५	४।४०	६।२६	७।५७	९।२६
७ श.	८।०३।३३।४१	१०।१३।१८।१७	८।२४।१९।०८	११।१५।००।०९	८।२९।३७।३५	८।१४।०७।५३	४३।५३	१०।५९	१२।५५	१५।०८	१७।२६	१९।४२	२१।५७	०।१४	२।३१	४।३६	६।२२	७।५३	९।२२
८ र.	८।०४।१३।४८	१०।१३।२२।४६	८।२४।३१।४४	११।१६।०८।३५	८।२९।४४।०९	८।१४।०४।४२	४३।५५	१०।५५	१२।५१	१५।०४	१७।२२	१९।३८	२१।५३	०।१०	२।२७	४।३२	६।१८	७।४९	९।१८
९ चं.	८।०४।५३।५५	१०।१३।२०।४७	८।२४।४४।१७	११।१७।१६।४२	८।२९।५०।४२	८।१४।०१।३२	४३।५७	१०।५१	१२।४७	१५।००	१७।१८	१९।३४	२१।४९	०।०६	२।२३	४।२८	६।१४	७।४५	९।१४
१० मं.	८।०५।३४।०४	१०।१३।१२।२१	८।२४।५६।४६	११।१८।२४।५६	८।२९।५७।१०	८।१३।५८।२१	४३।५८	१०।४८	१२।४४	१४।५७	१७।१५	१९।३१	२१।४६	०।०३	२।२०	४।२५	६।११	७।४२	९।११
११ बु.	८।०६।१४।१३	१०।१२।५७।२४	८।२५।०९।११	११।१९।३२।५५	९।००।०३।३८	८।१३।५५।१०	४३।५९	१०।४४	१२।४०	१४।५३	१७।११	१९।२७	२१।४२	२३।५९	२।१६	४।२१	६।०७	७।३८	९।०७
१२ गु.	८।०६।५४।२३	१०।१२।३६।१३	८।२५।२१।३३	११।२०।४०।४०	९।००।१०।०२	८।१३।५२।००	४४।००	१०।४०	१२।३६	१४।४९	१७।०७	१९।२३	२१।३८	२३।५५	२।१२	४।१७	६।०३	७।३४	९।०३
१३ शु.	८।०७।३४।३५	१०।१२।०९।०७	८।२५।३३।५३	११।२१।४८।१३	९।००।१६।२५	८।१३।४८।४९	४४।०२	१०।३६	१२।३२	१४।४५	१७।०३	१९।१९	२१।३४	२३।५१	२।०८	४।१३	५।५९	७।३०	८।५९
१४ श.	८।०८।१४।४७	१०।११।३९।२१	८।२५।४६।०९	११।२२।५५।३५	९।००।२२।४३	८।१३।४५।३८	४४।०४	१०।३२	१२।२८	१४।४१	१६।५९	१९।१५	२१।३०	२३।४७	२।०४	४।०९	५।५५	७।२६	८।५५
३० र.	८।०८।५५।००	१०।११।०८।३८	८।२५।५८।१९	११।२४।०२।४५	९।००।२९।००	८।१३।४२।२८	४४।०६	१०।२८	१२।२४	१४।३७	१६।५५	१९।११	२१।२६	२३।४३	२।००	४।०५	५।५१	७।२२	८।५१

३ बुधे वल्ली८।३६।३३।४५
अयनांशाः २२।४८।४१

(कुण्डली: रा. ६, ८, शु. ६, बु ५, ७, १०, ४ सू, ११, ल. १, श के. ३ गु. मं, चं. १२, २)

११ बुधे वल्ली८।३६।३३।५२
अयनांशाः २२।४८।४२

(कुण्डली: ७, रा. ८, शु. ५, सू बु ४, ६, ९, ३, १०, १२, श के. २ चं. गु., ११, मं ल. १)

विविधविषयाः-माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।। **तथा च** - उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्। **गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः** - त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ चं.	दि.७:५१-९:१४ दि.२:४६-४:०९।	रा.१०:२३-१२:०० रा.३:१४-४:५१।
२ मं.	दि.७:५१-९:१५ दि.१:२४-२:४७।	रा.७:१०-८:४७।
३ बु.	दि.९:१४-१०:३८ दि.१२:०२-१:२५।	रा.१२:०२-१:३८ रा.३:१४-४:५०।
५ गु.	दि.२:४८-५:३४।	रा.१२:०२-१:३८ रा.४:५०-६:२६।
६ शु.	दि.९:१३-१:२५।	रा.८:४९-१०:२५।
७ श.	प्रा.६:२४-७:४८ दि.१:२४-२:४८ सं.४:१२-५:३६।	सं.५:३६-७:१२ रा.१:३६-३:१२ रा.४:४८-६:२४।
८ र.	दि.१०:३६-१:२४।	रा.१०:२४-१२:०० रा.१:३६-३:१२।
९ चं.	दि.७:४८-९:१३ दि.२:४९-४:१३।	रा.१०:२५-१२:०१ रा.३:१३-४:४८।
१० मं.	दि.७:४७-९:१२ दि.१:२६-२:५०।	रा.७:१४-८:५०।
११ बु.	दि.९:१२-१०:३७ दि.१२:०२-१:२६।	रा.१२:०२-१:३७ रा.३:१२-४:४८।
१२ गु.	दि.२:५१-५:३९।	रा.१२:०१-१:३६ रा.४:४६-६:२१।
१३ शु.	दि.९:१०-१२:००।	रा.८:५०-१०:२५।
१४ श.	प्रा६:१९-७:४५ दि.१:२६-२:५१ सं.४:०६-५:४१।	सं.५:४१-७:१६ रा.१:३६-३:११ रा.४:४५-६:१८।
३० र.	दि.१०:३६-१:२७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.१:३६-३:१०।

समुद्रस्नानमन्त्रः - त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः।। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।। **गंगास्नानमन्त्रः** - ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव।। **गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे** - गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।। **पुनश्च** - इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। करे विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।।

मन्त्र पढ़ि मौन भऽ दन्त दातमनि करी। **ग्राह्य दातुनः**- चिड़चिड़ि, गूलर, आम, नीम, बेल, करैया, करंज, खैर आदि क दातुन उत्तम मानल जाइत अछि। दूध आ कण्टक वाला वृक्षक दातुन से हो शास्त्र विहित अछि। **सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्च विशेषतः।।** (मनोस्मृति)

क्षौर कर्म :-एकादशी, अमावास्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतीपात, यात्रा समय एवं पुण्य-कार्यमे तथा प्रातः संध्या कऽ लेलाक बाद क्षौर कर्म नहि करी।

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनुः। भौमश्चाष्टौ वितरति **शुभान् बोधनः पञ्चमासम्।। सप्तैवेन्दुर्दशसुरगुरुः शुक्र एकादशेति। प्राहुर्गर्गप्रभृति मुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ।।**

अर्थ- रविदिन क्षौर कैलासँ १ मास, मंगलकेँ ८मास एवं शनि दिन ७ मास आयु क्षीण होइत अछि। बुध दिन ५मास, सोम दिन७ मास, गुरुवारकेँ १० मास शुक्रवार केँ ११ मास आयु वढ़ैत अछि। किन्तु एक पुत्रवाला सोम क्षौर दिन नहि कराथि।

तैलः- षष्ठी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत एवं श्राद्ध दिन तैल नहि लगाबी।

इन्दुक्षयेऽपि संक्रान्तौ रवौ पाते दिनक्षये।
अत्राभ्यङ्गो न दोषाय प्रातः पापापनुत्तये।।

अर्थ-कार्तिक कृष्ण पक्षक १४ दिन तैल अवश्य लगयबाक चाही। ओहि दिन यदि अमावस्या, संक्रान्ति, रविवार तथा रात्रि भऽ गेल हो तइयो दोष नहि। प्रातः काल लगौलासँ सब पाप दूर भऽ जाइत अछि।

तैलाभ्यंगे रवौ तापं सोमे शोभा कुजे मृतिः।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्।।
रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका।
गोमये शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गो न दोषभाक्।।

अर्थ- तैल रविदिन लगौलासँ ताप, मंगलदिन मृत्यु, गुरुवारकेँ हानि एव शुक्रवारके दुःख होइत अछि। यदि निषेध दिनमे लगयबाक हो त रविदिन तैलमे पुष्प, गुरुवारमे दूर्वा, मंगलदिन मृत्तिका, शुक्रदिन गोबर, दऽ क तैल लगौलासँ दोष नहि लगैत अछि। किन्तु एक पुत्र बालाकेँ सोमदिन नहि लगाबक चाही।

आचमन विधि :-

सभ कार्यमे आचमनक विधान अछि।

एवं स ब्राह्मणो नित्यमुपस्पर्शनमाचरेत्।
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत् स परितर्पयेत्।।

अर्थात् आचमनसँ अपनाशुद्धि के संग ब्रह्मा सँ लक तृण पर्यन्त तृप्त कऽ दैत अछि। **यः क्रियां कुरुते मोहादनाचम्यैव नास्तिकः।**
भवन्ति हि वृथा तस्य क्रियाः सर्वा न संशयः।।

अर्थात् आचमन नै कयलासँ अपन सभ कृत्य व्यर्थ भऽ जाइत छैक तैं शौचक उपरान्त आचमनक विधान अछि।

आचमन वास्ते जलक मात्रा- आचमन वास्ते हाथ मे जल एतवा ली जाहिसँ(**हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः। शुध्येरन् स्त्री च शूद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः।।** याज्ञवल्क्यस्मृति क वचन) ब्राह्मणकेँ

फाल्गुनशुक्लपक्षः।।

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिरः ऋतुः । दक्षिणे कालः। शुद्धः।
दिनांक २४ फरवरीतः ६ मार्च यावत् सन्२०२० इ। मार्गी गुरुः पूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधः पश्चिमास्तः,

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	
१	चं.	३८।०४	रा.६।३५	शतभिषा	२१।५७	दि.३।०८	शिव	०२।१९	किंगस्तुघ्न५।४९	कुम्भ	आहोरात्रं	१०।११।२०।४०	२८।१६	६।२१	५।३९	४	१२	२४	कल्याणेश्वरराज्जनकपुर परिक्रमारम्भः। श्रीरामकृष्णपरमहंसजयन्ती। द्विरागमनं शतभिषायां दि.३।०८ उ.। अग्निवासः रा.६।३५ या., सिद्धियोगः रा.६।३५ या. ततः मृत्युयोगः,
२	मं.	४३।१४	रा.११।३८	पूर्वाभाद्रपद	२८।०६	सा.५।३६	सिद्ध	०३।१५	बाल१०।३९	कुम्भ ११।३९	दि.१०।५८	१०।१२।२१।११	२८।२०	६।२०	५।४०	५	१३	२५	चन्द्रदर्शनम् ४५ याम्यश्रृंगफलं साम्यं, शिववासः, अमृतयोगः रा.११।३८ या. ततः सिद्धियोगः, त्रिपुष्करयोग सा.५।३६ या, दक्षिणयात्रा दि.१०।५८या., पश्चिमयात्रा अहोरात्रम्।● भद्रा २।१०या। उत्तरयात्रा दि.७।४ या।
३	बु.	४८।३८	रा.१।४६	उत्तराभाद्रपद	३४।४३	रा.८।१२	साध्य	०४।३७	तैतिल१५।५९	मीन	आहोरात्रं	१०।१३।२१।४२	२८।२४	६।१९	५।४१	६	१४	२६	उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, विवाहः तृतीयायां रा.१।४६ या.। अग्निवासः, मृत्युयोगः। उत्तराषाढे गुरुः २८।१८। पूर्वाभाद्रपदायां रविः२०।३५ दि.२।२८। पश्चिमयात्रा प्रा.६।४२ उ.।
४	गु.	५३।५२	रा.३।५१	रेवती	४१।१३	रा.१०।४७	शुभ	०६।०५	वणिज्२१।२०	मीन ४१।१३	रा.१०।४७	१०।१४।२२।०२	२८।२८	६।१८	५।४२	७	१५	२७	श्रीगणेश ४ व्रतं, विवाहः-द्विरागमनं पञ्चमयां रा.३।५१ उ.। पञ्चकसमाप्तिः(भदवा) रा.१०।४७ उ.। मृत्युयोगः रा.३।५१ या. ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।४७ या., भद्रा २१।२० तः ५३।५२ या.,
५	शु.	५८।२८	रा.शे५।४७	अश्विनी	४७।०८	रा.१।०६	शुक्ल	०७।१९	बव २६।१०	मेष	आहोरात्रं	१०।१५।२२।२२	२८।३२	६।१८	५।४२	८	१६	२८	शिववासः, अग्निवासः, मुण्डनं, कर्णवेधः, उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, विवाहः-द्विरागमनं अश्विन्यां रा.१।०६ या.। वधूप्रवेशः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१।०६ या., पश्चिमां विनायात्रा रा.१।०६ या.।
६	श.	६०।००	अहोरात्रं	भरणी	५२।१८	रा.३।१२	ब्रह्म	०८।००	कौलव ३०।२०	मेष	आहोरात्रं	१०।१६।२२।४२	२८।३६	६।१७	५।४३	९	१७	२९	गोरुपिणीषष्ठी। शिववासः, अमृतयोगः। पूर्वाषाढे मंगल ३४।४०। गृहारम्भः-गृहप्रवेशः द्विरागमनं एकादश्यां दि.७।४ या.। शिववासः-अग्निवासः दि.७।०४ उ., सिद्धियोगः दि.७।०४ या. ततः मृत्युयोगः,●
६	र.	०२।११	दि.७।०८	कृतिका	५६।२०	रा.४।४८	ऐन्द्र	०७।५९	तैतिल २।११	मेष ८।१९	दि.९।३५	१०।१७।२३।३१	२८।४०	६।१६	५।४४	१०	१८	१	मार्च ३। विवाहः-द्विरागमनं रोहिण्यां रा.४।४८ उ.। शिववासः-अग्निवासः दि.७।०८ या., मृत्युयोगः दि.७।०८ या., त्रिपुष्करयोगः दि.७।०८ तः रा.४।४८ या., ज्येष्ठायां केतुः ३५।४०।
७	चं.	०४।४४	दि.८।०६	रोहिणी	५९।१२	राशे५।५६	वैधृति	०७।०२	वणिज् ४।४४	वृष	आहोरात्रं	१०।१८।२३।२०	२८।४४	६।१५	५।४५	११	१९	२	कामदासप्तमी ७ व्रतं। मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं अष्टम्यां दि.८।०६ उ.। गृहारम्भः-गृहप्रवेशः-देवादिप्रतिष्ठा सप्तम्यां दि.८।०६ या.। अग्निवासः दि.८।०६ उ., मृत्युयोगः दि.८।६ या. ततः ←
८	मं.	०६।०३	दि.८।३६	मृगशिरा	६०।००	अहोरात्रं	विष्कुम्भ	०५।१०	बव ०६।०३	वृष ३०।०१	सा.६।१४	१०।१९।२३।३९	२८।४८	६।१४	५।४६	१२	२०	३	होलाष्टकारम्भः। अग्निवासः दि. ८।३६ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः रा.८।३६ या. ततः राज्यप्रदयोगः। उत्तरां विना यात्रा। ←दक्षिणयात्रा। सर्वार्थसिद्धियोगः रा.५।५६ या., भद्रा ४।४४ तः ३५।२४ या.,
९	बु.	०५।५९	दि.८।३८	मृगशिरा	००।४९	प्रा.६।३४	प्रीति	०२।१७	कौलव ५।५९	मिथुन	आहोरात्रं	१०।२०।२३।५८	२८।५२	६।१४	५।४६	१३	२१	४	आयुष्यमानयोग ५६।०७। उपनयनं दशम्यां दि.८।३८ उ.। शिववासः दि.८।३८ या. ततः अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.६।३४ या.। धनिष्ठायां बुधः २८।२०। अश्विन्यां मेषे च शुक्रः २८।३५।
१०	गु.	०४।४०	दि.८।०५	आर्द्रा	०१।१२	प्रा.६।४२	सौभाग्य	५३।३५	गर ४।४०	मिथुन ४५।३९	रा.१२।२७	१०।२१।२४।०३	२८।५६	६।१३	५।४७	१४	२२	५	मुण्डनं-द्विरागमनं-गृहारम्भः-गृहप्रवेशः पुनर्वसौ प्रा.६।४२ उ.। उपनयनं क्षत्रिय-वैश्यानां, अग्निवासः दि.८।०५ या. सिद्धियोगः दि.८।०५ या., सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.६।४२ उ., भद्रा ३३।२५ उ.,
११	शु.	०२।१०	दि.७।०४	पुनर्वसु	००।२४	प्रा.६।२२	शोभन	४७।५७	भद्रा २।१०	कर्क	आहोरात्रं	१०।२२।२४।०८	२९।००	६।१२	५।४८	१५	२३	६	द्वादशीतिथि ५६।२६ रा.४।४८। पुष्यनक्षत्र५८।१३, आमलकीएकादशी११ व्रतं सर्वेषाम्। रात्रौव्रतोद्यापनं, जनकपुर-अन्तर्गृहीयपरिक्रमारम्भः। रंगभरीएकादशी, श्रीकाशीविश्वनाथश्रृंगारदिनम्। मुण्डनं, उपनयनं, कर्णवेधः,
१३	श.	५४।१७	रा.३।५४	आश्लेषा	५५।५९	रा.४।३५	अतिगण्ड	४१।३९	कौलव २६।२८	कर्क ५५।५९	रा.४।३५	१०।२३।२४।१३	२९।०४	६।११	५।४९	१६	२४	७	गोविन्द१२, श्रीनृसिंह१२, गोदघ्नापारणं, समुद्रस्नानं,श्रीजगन्नाथदर्शनं, प्रदोष१३ व्रतं, पुत्रार्थिभिरत्रव्रतारम्भो विधेयः। शिववासः रा.३।५४ या., सिद्धियोगः रा.३।५४ या., राज्यप्रदयोगश्च,
१४	र.	४९।१६	रा.१।५२	मघा	५२।४२	रा.३।१५	सुकर्मा	३४।४४	गर २१।४७	सिंह	आहोरात्रं	१०।२४।२४।१८	२९।०८	६।१०	५।५०	१७	२५	८	प्रदोष१४ व्रतं, अग्निवासः,विवाहः मघायांपूर्णिमायां च रा.१।५२ तः रा.३।१५ या.। अमृतयोगः रा.१।५२ उ., भद्रा ४९।१६ उ.। ◆अमृतयोगः रा.११।३८ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा १६।२९(दि.१२।४६) या.,
१५	चं.	४३।४१	रा.११।३८	पूर्वाफाल्गुनी	४८।५३	रा.१।४३	धृती	२७।१९	भद्रा १६।२९	सिंह	आहोरात्रं	१०।२५।२४।२३	२९।१२	६।१०	५।५०	१८	२६	९	फाल्गुनीपूर्णिमा१५, स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः। कुलदेवताभ्यः सिन्दूरार्पणः पातरिदानं। जनकपुरपरिक्रमासमाप्तिः,श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती। होलिकादाहः रा.७।२६ तः रा.११।३८ या.। उत्तरयात्रा अहोरात्रम् ◆

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ चं.	८।०६।३५।१२	१०।१०।१९।३७	८।२६।१०।२१	११।२५।०६।४४	९।००।३५।१९	८।१३।३९।१७	४४।०८
२ मं.	८।१०।१५।२८	१०।०९।३१।०५	८।२६।२२।२२	११।२६।१६।३०	९।००।४१।२७	८।१३।३६।०६	४४।१०
३ बु.	८।१०।५५।४५	१०।०८।४३।००	८।२६।३४।१९	११।२७।२३।०३	९।००।४७।३६	८।१३।३२।५५	४४।१२
४ गु.	८।११।३६।०४	१०।०७।५३।२३	८।२६।४६।१०	११।२८।२९।२२	९।००।५३।४१	८।१३।२९।४४	४४।१४
५ शु.	८।१२।१६।२२	१०।०७।०३।२६	८।२६।५७।५९	११।२९।३५।२८	९।००।५९।४४	८।१३।२६।३४	४४।१६
६ श.	८।१२।५६।४०	१०।०६।१४।२५	८।२७।०९।४०	००।००।४१।२०	९।०१।०५।४३	८।१३।२३।२४	४४।१८
६ र.	८।१३।३७।०२	१०।०५।२७।२३	८।२७।२१।१९	००।०१।४६।५८	९।०१।११।३९	८।१३।२०।१३	४४।२०
७ चं.	८।१४।१७।२३	१०।०४।४३।२४	८।२७।३२।५२	००।०२।५२।२१	९।०१।१७।३२	८।१३।१७।०२	४४।२२
८ मं.	८।१४।५७।४५	१०।०४।०३।१२	८।२७।४४।२०	००।०३।५७।२८	९।०१।२३।२२	८।१३।१३।५२	४४।२४
९ बु.	८।१५।३८।०५	१०।०३।२७।४२	८।२७।५५।४३	००।०५।०२।२१	९।०१।२९।०८	८।१३।१०।४१	४४।२६
१० गु.	८।१६।१८।३२	१०।०२।५७।३०	८।२८।०७।०१	००।०६।०६।५७	९।०१।३४।५१	८।१३।०७।३०	४४।२८
११ शु.	८।१६।५८।४७	१०।०२।३३।०६	८।२८।१९।१३	००।०७।११।१७	९।०१।४०।३०	८।१३।०४।१९	४४।३०
१३ श.	८।१७।३९।२५	१०।०२।१४।५४	८।२८।२९।२०	००।०८।१५।२०	९।०१।४६।०९	८।१३।०१।०९	४४।३२
१४ र.	८।१८।१९।५३	१०।०२।०३।००	८।२८।४०।२०	००।०९।१९।०६	९।०१।५१।३८	८।१२।५७।५८	४४।३४
१५ चं.	८।१९।००।२०	१०।०१।५७।४१	८।२८।५१।१९	००।१०।२२।३३	९।०१।५७।०९	८।१२।५४।४८	४४।३६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि, दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ चं.	१०।२५	१२।२१	१४।३४	१६।५२	१९।०८	२१।२३	२३।४०	१।५७	४।०२	५।४८	७।१९	८।४८
२ मं.	१०।२१	१२।१७	१४।३०	१६।४८	१९।०४	२१।१९	२३।३६	१।५३	३।५८	५।४४	७।१५	८।४४
३ बु.	१०।१७	१२।१३	१४।२६	१६।४०	१९।००	२१।१५	२३।३२	१।४९	३।५४	५।४०	७।११	८।४०
४ गु.	१०।१३	१२।०९	१४।२२	१६।३७	१८।५६	२१।११	२३।२८	१।४५	३।५०	५।३६	७।०७	८।३६
५ शु.	१०।१०	१२।०२	१४।१९	१६।३३	१८।५३	२१।०८	२३।२५	१।४२	३।४७	५।३३	७।०४	८।३३
६ श.	१०।०६	११।५८	१४।१५	१६।२९	१८।४९	२१।०४	२३।२१	१।३८	३।४३	५।२९	७।००	८।२९
६ र.	१०।०२	११।५४	१४।०७	१६।२५	१८।४५	२१।००	२३।१७	१।३४	३।३९	५।२५	६।५६	८।२५
७ चं.	९।५८	११।५१	१४।०४	१६।२२	१८।४२	२०।५६	२३।१३	१।३०	३।३५	५।२१	६।५२	८।२१
८ मं.	९।५५	११।४७	१४।००	१६।१८	१८।३८	२०।५३	२३।१०	१।२७	३।३२	५।१८	६।४९	८।१८
९ बु.	९।५१	११।४३	१३।५६	१६।१४	१८।३४	२०।४९	२३।०६	१।२३	३।२८	५।१४	६।४५	८।१४
१० गु.	९।४७	११।४०	१३।५३	१६।११	१८।३०	२०।४५	२३।०२	१।१९	३।२४	५।१०	६।४१	८।१०
११ शु.	९।४४	११।३६	१३।४९	१६।०७	१८।२७	२०।४२	२२।५९	१।१६	३।२१	५।०७	६।३८	८।०७
१३ श.	९।४०	११।३२	१३।४५	१६।०३	१८।२३	२०।३८	२२।५५	१।१२	३।१७	५।०३	६।३४	८।०३
१४ र.	९।३६	११।२८	१३।४१	१५।५९	१८।१९	२०।३४	२२।५१	१।०८	३।१३	४।५९	६।३०	७।५९
१५ चं.	९।३२	११।२४	१३।३७	१५।५५	१८।१५	२०।३०	२२।४७	१।०४	३।०९	४।५५	६।२६	७।५५

१ बुधे वल्लीः८।३९।३३।५९ अयनांशाः २२।४८।४३

रा. ८	७	शु. ५ च.	सू ४ बु
९	६	३ श	मं गु. के. २
१०	११	१२	ल.१

६ बुधे वल्लीः८।३९।३४।०६ अयनांशाः २२।४८।४४

रा. चं. ८	७	६ शु. ५	सू ४ बु
९		३ श	मं गु. के. २
१०	११	१२	ल.१

होलिकादाहविशेष- तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत। धृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जलपन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्टादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्।
ध्यानमन्त्रः-असृग्भयावसन्त्रस्तैः कृत्वा त्वं होलि बालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव। ततो 'होलिकायै नमः' इति मन्त्रेण यथोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ चं.	दि.७:४४-९:१० दि.२:५२-४:१७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.३:१०-४:४४।
२ मं.	दि.७:४३-९:०९ दि.१:२७-२:५३।	रा.७:१८-८:५३।
३ बु.	दि.९:०८-१०:३४ दि.१२:००-१:२६।	रा.१२:००-१:३४ रा.३:०८-४:४२।
४ गु.	दि.२:५३-५:४५।	रा.१२:०१-१:३५ रा.४:४२-६:१४।
५ शु.	दि.९:०८-१२:०२।	रा.८:५४-१०:२८।
६ श.	प्र.६:१४-७:४१ दि.१:२८-२:५४ दि.४:२०-५:४६।	सं.५:४६-७:२० रा.१:३५-३:०८ रा.४:४१-६:१३
६ र.	दि.१०:३४-१:२८।	रा.१०:२८-१२:०१ रा.१:३४-३:०७।
७ चं.	दि.७:३९-९:०६ दि.२:५४-४:२१।	रा.१०:२७-१२:०० रा.३:०६-४:४६।
८ मं.	दि.७:३९-९:०७ दि.१:२८-२:५५।	रा.७:२२-८:५५।
९ बु.	दि.९:०६-१०:३४ दि.१२:०२-१:३६।	रा.१२:०२-१:३४ रा.३:०६-४:३८।
१० गु.	दि.२:५६-५:५०।	रा.१२:०२-१:३४ रा.४:३८-६:१०।
११ शु.	दि.९:०५-१२:०१।	रा.८:५७-१०:२९।
१३ श.	प्र.६:०८-७:३६ दि.१:२८-२:५६ सं.४:२४-७:५२।	सं.५:२२-७:२४ रा.१:३२-३:०४ रा.४:३६-६:०७
१४ र.	दि.१०:३३-१:२९।	रा.१०:२९-१२:०१ रा.१:३३-३:०५।
१५ चं.	दि.७:३५-९:०४ दि.२:५८-४:२६।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.३:०४-४:३५।

होलिका प्रदीपमन्त्रः-दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। **होलिका दाहे वायु विचार-** होलिकादाहे पूर्ववायौ राजाप्रजासुखम् अग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टिः वायव्ये वायुवृद्धिः उत्तरैशान्योः सुभिक्षं, निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः।

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.३ बुध रा.८।१२ तः ति.५ शुक्र रा.१।०६ यावत्। आश्लेषा/मघा ति.११ शुक्र रा.४।३७ तः ति.१४ रवि रा.३।१५ यावत।

हृदय धरि, क्षत्रियकें कण्ठ धरि, वेश्यकें तालु धरि आ शूद्र तथा महिला के जीभ धरि पहुँच जाय। हथेलीक मोडि गायक कानसदृश बना कनिष्ठा आ अंगूठा आंगुर अलग कऽ ब्राह्मतीर्थसँ निम्नलिखित एक- एक मन्त्रक उच्चारण कऽ आचमन करी। आचमनकऽ करैत काल (शुर) अवाज नै हैवाक चाही। **ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** आचमन पश्चात् अंगुठाक मूलभागसँ ओठ दू बेरि पोछि **ॐ हृषीकेशाय नमः** बाजि हाथ धो ली। पुनः अंगुठासँ नाक, आँख आ कान स्पर्श करी। छींक अयलापर, थूकलापर, शयनसँ उठलापर, वस्त्र पहिरलापर, अश्रु अयलापर आचमन करी अथवा दहिना कानकें स्पर्श कयलासँ आचमन क विधि पूरा भ जाइत अछि। आचमन बैसिक करबाक चाहि।

संकल्प- (मार्कण्डेयपुराण)

संकल्प्य च तथा कुर्यात् स्नानदानव्रतादिकम्।
अन्यथा पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि।।

स्नान, सन्ध्या, दान,देवपूजन आ कोनो सत्कर्मक प्रारम्भमें संकल्प आवश्यक अछि। अन्यथा सभ कयल कर्म निष्फल भ जाइत अछि। हाथमे पवित्री धारण क हाथ मे जल लय संकल्प करी- **ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्य.** ...(महिना)**मासे,**...(कृष्ण/शुक्ल पक्ष) **पक्षे** ....(ओहिदिनक तिथि) **तिथौ,** .....(दिन) **वासरे,** ....(अपन) **गोत्रः,**.....(अपन नाम)**शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहम् प्रातः सर्वकर्मसु शुद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं च अमुक कर्म करिष्ये।**

• **स्नानः-** प्रातःकाल स्नानक पश्चात् मनुष्य शुद्ध भऽ जप, पूजा-पाठ आदि समस्त कार्यक योग्य बनैत छथि तै प्रातः स्नानक प्रशंसा कयल जाइत अछि।

प्रातः स्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकरं हि तत्।
सर्वमर्हति शुद्धात्मा प्रातः स्नायी जपादिकम्।

मनुष्यक शरीरमे नव छिद्र होइत अछि ओ रातिमे शयन कैलासँ अपवित्र भऽ जाइत अछि। एहि हेतु सूर्योदयसँ पूर्व उठि मल-मूत्र त्याग कैल वस्त्र बदलि गंगादि तीर्थमे स्नान करी।

अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः।
स्रवत्येष दिवारात्रौ प्रातः स्नानं विशोधनम्।।

प्रातःकाल स्नान करवला मनुष्यक लग दुष्ट(भूत-प्रेत आदि) नै अवैत अछि। दृष्टफल- शरीरक स्वच्छता आ अदृष्टफल-पापक नाश तथा पुण्य प्राप्ति। ई दू प्रकारक फल

चैत्रकृष्णपक्षः

शक१९४१, संवत्२०७६, सन् १४२७, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिर ऋतुः । दक्षिणे कालः। शुद्धः ति. ४ शुक्रवारतः अशुद्धः, खरमासः।
दिनांक १० मार्चतः २४ यावत् सन्२०२० इ। । मार्गी गुरुः पूर्वोदितः; मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पूर्वोदितः; मार्गी बुधः पश्चिमोदितः.

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घ. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१	मं.	३७।४६	रा.६।१७	उत्तराफाल्गुनी	४४।५०	रा.१२।०५	धृति	१६।३६	बालव	१०।४५	सिंह	२।५२	दि.७।१८	१०।२६।२४।२७	२६।१६	६।०६	५।५१	१९	२७	१०
२	बु.	३१।४६	रा.६।५२	हस्त	४०।४०	रा.१०।२४	शूल/गण्ड	११।५२	तैतिल	४।४६	कन्या		आहोरात्रं	१०।२७।२४।३१	२६।२०	६।०८	५।५२	२०	२८	११
३	गु.	२५।५६	दि.४।२६	चित्रा	३६।३६	रा.०८।[illegible]	वृद्धि	०४।०७	भद्रा	२५।५६	कन्या	८।४०	दि.६।३५	१०।२८।२४।२२	२६।२४	६।०७	५।५३	२१	२९	१२
४	शु.	२०।२२	दि.२।१५	स्वाती	३२।५७	रा.०७।[illegible]	व्याघात	४६।१८	बालव	२०।२२	तुला		आहोरात्रं	१०।२९।२४।१२	२६।२८	६।०६	५।५४	२२	३०	१३
५	श.	१५।१६	दि.१२।१२	विशाखा	२६।४७	रा.६।[illegible]	हर्षण	४२।३१	तैतिल	१५।१६	तुला	१५।३५	दि.१२।२०	११।००।२४।०२	२६।३२	६।०६	५।५४	२३	१	१४
६	र.	१०।५३	दि.१०।२६	अनुराधा	२७।२६	रा.५।[illegible]	वज्र	३६।२५	वणिज्	१०।५३	वृश्चिक		आहोरात्रं	११।०१।२३।५२	२६।३६	६।०५	५।५५	२४	२	१५
७	चं.	०७।२०	दि.६।००	ज्येष्ठा	२५।५१	दि.०४।२४	सिद्धि	२१।०२	बव	७।२०	वृश्चिक	२५।५१	दि.४।२४	११।०२।२३।४२	२६।४०	६।०४	५।५६	२५	३	१६
८	मं.	०४।४६	दि.७।५७	मूल	२५।२०	दि.०१।[illegible]	व्यतीपात	२६।२८	कौलव	४।४६	धनु		आहोरात्रं	११।०३।२३।३२	२६।४४	६।०३	५।५७	२६	४	१७
९	बु.	०३।२२	दि.७।२३	पूर्वाषाढ़ा	२६।०१	दि.०१।२६	वरीयान्	२२।५२	गर	३।२२	धनु	४१।३०	रा.१०।३८	११।०४।२३।२२	२६।४८	६।०२	५।५८	२७	५	१८
१०	गु.	०३।१२	दि.७।१६	उत्तराषाढ़ा	२७।५७	रा.०५।[illegible]	परिघ	२०।१७	भद्रा	३।१२	मकर		आहोरात्रं	११।०५।२२।५७	२६।५२	६।०२	५।५८	२८	६	१९
११	शु.	०४।२१	दि.७।४५	श्रवण	३१।१०	रा.०६।[illegible]	शिव	१८।४५	बालव	४।२१	मकर		आहोरात्रं	११।०६।२२।३२	२६।५६	६।०१	५।५९	२९	७	२०
१२	श.	०६।४६	दि.८।४२	धनिष्ठा	३५।२६	रा.[illegible]	सिद्ध	१८।०२	तैतिल	६।४६	मकर	३।२०	दि.७।२०	११।०७।२२।०७	३०।००	६।००	६।००	३०	८	२१
१३	र.	१०।१६	दि.१०।०७	शतभिषा	४०।५२	रा.१०।[illegible]	साध्य	१७।१७	वणिज्	१०।१६	कुम्भ		आहोरात्रं	११।०८।२१।४२	३०।०४	५।५९	६।०१	१	९	२२
१४	चं.	१४।४६	दि.११।५२	पूर्वाभाद्रपद	४६।५६	रा.[illegible]	शुभ	१६।११	शकुनी	१४।४६	कुम्भ	३०।२७	सा.६।०९	११।०९।२१।१६	३०।०८	५।५८	६।०२	२	१०	२३
३०	मं.	१९।५३	दि.१।५५	उत्तराभाद्रपद	५३।३३	रा.०३।[illegible]	शुक्ल	२०।३२	नाग	१९।५३	मीन		आहोरात्रं	११।१०।२०।५०	३०।१२	५।५८	६।०२	३	११	२४

दिनांकाः	व्रत-पर्व-विवरण
२७ । १०	होलिकाभस्मधारणं,सचैलस्नानं, होली, सप्तडोकरवन्धनं। चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदं, शिववासः-अग्निवासः रा.६।१७ या., मृत्युयोगः रा.६।१७ या. ततः अमृतयोगः, त्रिपुष्करयोगः रा.८।१७ तः रा.१२।०५ या.,
२८ । ११	गृहारम्भः, विवाहः हस्ते चित्रायां सूर्यविधः, मण्डनं, कर्णवेधः, द्विरागमनं, सिद्धियोगः-पूर्वदक्षिणयात्रा रा.६।५२ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।२४ या., भद्रा ५८।५३ उ., भरण्यां शुक्रः४६।२०।
२९ । १२	ध्रुवयोगमानं ५२।२६। श्रीविकटचतुर्थी ४ व्रतं, मुण्डनं, विवाहः-द्विरागमनं-गृहारम्भ तृतीयायां दि.४।२६ या.। अग्निवासः दि.४।२६ या. ततः शिववासः, अमृतयोगः दि.४।२६ या. ततः मृत्युयोगः, भद्रा २५।५६ या.।
३० । १३	मासान्तः। शिववासः, अग्निवासः दि.२।१५ उ., अमृतयोगः दि.२।१५ या.। ❖सर्वार्थसिद्धियोग., पश्चिमां विना यात्रा एकादश्यां। उत्तराषाढे मंगल १६।४०।
१ । १४	रंगपञ्चमी ५ व्रतं, मीने रविः २०।४० दि.२।२२। मु.१५ जघन्यामहर्घताकरम्। साम्यषडशीतिसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.२।३१ यावत् पुण्याह।
२ । १५	मासादिः, स्कन्दषष्ठी, अग्निवासः, मृत्युयोगः दि.१०।२६ या., भद्रा १०।५३ तः ३६।०७ या.। चैत्रेमेघाच्छन्नत्वं शोभनम्। मकरे गुरु ३०।२०।
३ । १६	भानुसप्तमी, शिववासः दि.६।०० उ., मृत्युयोगः दि.६।०० या.। ♋राज्यप्रदयोगश्च दि.७।५७ या.। मकरराशि निचांशगतगुरु दोषात् अशुद्धारंभः२५।४२।
४ । १७	शीतलाष्टमी ८ व्रतं, काश्यांवृद्धअंगारकपर्व(बुढवामंगल), उत्तराभाद्रपदायां रविः४१।१८ रा.१०।३५। शिववासः दि.७।५७ या., अग्निवासः सिद्धियोगः-♋
५ । १८	श्रीऋषभनाथ जी जयन्ती। भद्रा ३३।०७ उ.। पूर्वयात्रा दि.७।२३ उ.। खरमासारम्भः। वसन्तऋतु,ने.चैत्रमासारम्भ शिववासः-अग्निवासः दि.१२।१२ या.,
६ । १९	शिववासः दि.७।१६ उ., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.७।१६ या., भद्रा ३।१२ या., दक्षिणां विना यात्रा श्रवणे, शतभिषायां बुधः १।३५।
७ । २०	पापमोचनीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्, शिववासः, पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.६।२६ उ.। पश्चिमांविनायात्रा सिद्धियोगः दि.७।४५ या. ततः मृत्युयोगः, ❖
८ । २१	गोघृतेनपारणं, दोष१३व्रतं, । शिववासः दि.८।४२ या., अग्निवासः, द्विपुष्करयोगः दि.८।४२ या., पश्चिमयात्रा दि.७।२० उ.।
९ । २२	प्रदोष१४ व्रतं, वारुणीयोगः दि.१०।०७ या.। अग्निवासः दि.१०।०७ उ., सिद्धियोगः दि.१०।०७ या., भद्रा १०।१६ तः ४२।३३ या.।
१० । २३	सोमवतीअमावस्या दि.११।५२ उ., सोमवारीव्रतं, शिववासः दि.११।५२ उ., अग्निवासः दि.११।५२ या., अमृतयोगः दि.११।५२ उ.।
११ । २४	चैत्रीअमावस्या३०, स्नानदानादी पुण्यतमा। विक्रमसंवत्२०७७ प्रारम्भोऽमान्तात्। शिववासः दि.१।५५ या., मृत्युयोगः दि.१।५५ उ.।

वारुणीपर्वयोग– वारुणी पर्व योग मधुकृष्ण (चैत्रकृष्ण)में त्रयोदशीतिथि शतभिषा नक्षत्र से युक्त होने पर सम्पन्न होता है। इस योग में गंगास्नान करने पर कोटि(करोड़) सूर्यग्रहण के समकक्ष फल मिलता है। उपयुक्त योग यदि शनिवार को हो तो महावारुणी होता है। यदि त्रयोदशी शतभिषा शनिवार के साथ शुभ योग हो तो महा महा वारुणी नाम से विख्यात है तथा यह योग तीन करोड़ कुल का उद्धार करता है। आज के दिन गंगा स्नान से उपयुक्त फल प्राप्त होता है। चैत्रकृष्ण चतुर्दशी को जो मनुष्य शिव सानिध्य में गंगा स्नान करता है। उसे कभी भी प्रेत योनी प्राप्त नहीं होती है।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	मं.	८।१६।४०।१५	१०।०१।५८।५५	८।२६।०२।०५	००।११।२५।४२	९।०२।०२।३१	८।१२।५१।३८	४४।३८
२	बु.	८।२०।२१।१७	१०।०२।०६।२७	८।२६।१२।४६	००।१२।२८।४२	९।०२।०७।५०	८।१२।४८।२१	४४।४०
३	गु.	८।२१।०१।४७	१०।०२।२०।४०	८।२६।२३।२६	००।१३।३१।०२	९।०२।१३।०६	८।१२।४५।१६	४४।४२
४	शु.	८।२१।४२।२२	१०।०२।४०।५४	८।२६।३३।५८	००।१४।३३।१३	९।०२।१८।२०	८।१२।४२।०६	४४।४४
५	श.	८।२२।२२।५७	१०।०३।०७।०५	८।२६।४४।२३	००।१५।३५।०२	९।०२।२३।२७	८।१२।३८।५५	४४।४६
६	र.	८।२३।०३।३१	१०।०३।३६।००	८।२६।५४।४२	००।१६।३६।४०	९।०२।२८।३१	८।१२।३५।४४	४४।४८
७	चं.	८।२३।४४।०२	१०।०४।१६।२१	९।००।०४।५४	००।१७।३७।२६	९।०२।३३।३१	८।१२।३२।३४	४४।५०
८	मं.	८।२४।२४।३८	१०।०४।५८।५२	९।००।१५।००	००।१८।३८।१८	९।०२।३८।२७	८।१२।२९।२३	४४।५२
९	बु.	८।२५।०५।१५	१०।०५।४६।१८	९।००।२५।००	००।१९।३८।३८	९।०२।४३।१८	८।१२।२६।१२	४४।५४
१०	गु.	८।२५।४५।५२	१०।०६।३८।२१	९।००।३४।५१	००।२०।३८।४३	९।०२।४८।०५	८।१२।२३।०२	४४।५६
११	शु.	८।२६।२६।३२	१०।०७।३४।४६	९।००।४४।३७	००।२१।३८।०२	९।०२।५२।४७	८।१२।१९।५१	४४।५८
१२	श.	८।२७।०७।११	१०।०८।३५।१७	९।००।५४।१५	००।२२।३७।०५	९।०२।५७।२५	८।१२।१६।४०	४५।००
१३	र.	८।२७।४७।५१	१०।०९।३९।४०	९।०१।०३।४७	००।२३।३५।५३	९।०३।०१।५८	८।१२।१३।३०	४५।०२
१४	चं.	८।२८।२८।३३	१०।१०।४७।२७	९।०१।१३।०६	००।२४।३३।२०	९।०३।०६।२६	८।१२।१०।१९	४५।०४
३०	मं.	८।२९।०९।१५	१०।११।५८।५६	९।०१।२२।२६	००।२५।३१।३०	९।०३।१०।५०	८।१२।०७।०९	४५।०६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४४।३८	९।२८	११।२४	१३।३७	१५।५५	१८।११	२०।२६	२२।४३	१।००	३।०५	४।५१	६।२२	७।५१
४४।४०	९।२५	११।२१	१३।३४	१५।५२	१८।०८	२०।२३	२२।४०	०।५७	३।०२	४।४८	६।१९	७।४८
४४।४२	९।२१	११।१७	१३।३०	१५।४८	१८।०४	२०।१९	२२।३६	०।५३	२।५८	४।४४	६।१५	७।४४
४४।४४	९।१७	११।१३	१३।२६	१५।४४	१८।००	२०।१५	२२।३२	०।४९	२।५४	४।४०	६।११	७।४०
४४।४६	९।१३	११।०९	१३।२२	१५।४०	१७।५६	२०।११	२२।२८	०।४५	२।५०	४।३६	६।०७	७।३६
४४।४८	९।१०	११।०६	१३।१९	१५।३७	१७।५३	२०।०८	२२।२५	०।४२	२।४७	४।३३	६।०४	७।३३
४४।५०	९।०६	११।०२	१३।१५	१५।३३	१७।४९	२०।०४	२२।२१	०।३८	२।४३	४।२९	६।००	७।२९
४४।५२	९।०२	१०।५८	१३।११	१५।२९	१७।४५	२०।००	२२।१७	०।३४	२।३९	४।२५	५।५६	७।२५
४४।५४	८।५९	१०।५५	१३।०८	१५।२६	१७।४२	१९।५७	२२।१४	०।३१	२।३६	४।२२	५।५३	७।२२
४४।५६	८।५५	१०।५१	१३।०४	१५।२२	१७।३८	१९।५३	२२।१०	०।२७	२।३२	४।१८	५।४९	७।१८
४४।५८	८।५१	१०।४७	१३।००	१५।१८	१७।३४	१९।४९	२२।०६	०।२३	२।२८	४।१४	५।४५	७।१४
४५।००	८।४७	१०।४३	१२।५६	१५।१४	१७।३०	१९।४५	२२।०२	०।१९	२।२४	४।१०	५।४१	७।१०
४५।०२	८।४४	१०।४०	१२।५३	१५।११	१७।२७	१९।४२	२१।५९	०।१६	२।२१	४।०७	५।३८	७।०७
४५।०४	८।४०	१०।३६	१२।४९	१५।०७	१७।२३	१९।३८	२१।५५	०।१२	२।१७	४।०३	५।३४	७।०३
४५।०६	८।३६	१०।३२	१२।४५	१५।०३	१७।१९	१९।३४	२१।५१	०।०८	२।१३	३।५९	५।३०	६।५९

५ बुधे
पल्ली: १६।३४।१३
अयनांशाः २२।४८।१७

७ | ५ | सू. बु. ४ | रा. ८ | ६ गु. | ३ श | ९ | मं. गु. के. २ | १० | १२ | ११ चं. | ल.१

६ बुधे
पल्ली:८।३६।३४।१६
अयनांशाः २२।४८।१६

७ | ५ सू. | बु. ४ | रा. ८ | ६ गु. | गु. ३ श | ९ | चं. मं. के. २ | १० | १२ | ११ | ल.१

विविधः-प्रयागे केशवपनफलम्:-किं गयापिंडदानेन काश्यां वा मरणेन किम् । किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। दिक्क्रमेण प्रहराद्धवशेन च गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन-सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्यपानसकेतवः। केतवः कपटः, पिनसो, मुहुर्नासाश्रावी। रत्नावलीरत्नकलापयोः प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतम् अवश्यमेव वर्जनीयम्। रत्न कलापे- अग्रे क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः पश्चात् क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षुतम् सर्वशाकुने-. औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ मं.	दि.७:३५-९:०४ दि.१:३०-२:५८।	रा.७:२६-८:५८।
२ बु.	दि.९:०३-१०:३२ दि.१२:०१-१:३०।	रा.१२:०१-१:३२ रा.३:०३-४:३४।
३ गु.	दि.२:५८-५:५६।	रा.१२:००-१:३१ रा.४:३३-६:०३।
४ शु.	दि.९:०३-१२:०१।	रा.८:५९-१०:३०।
५ श.	प्र.६:०२-७:३२ दि.१:३१-३:०० सं.४:२९-५:५८।	सं.५:५८-७:२९ रा.१:३२-३:०२ रा.४:३२-६:०२।
६ र.	दि.१०:३२-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०२ रा.१:३२-३:०२।
७ चं.	दि.७:३१-९:०१ दि.३:०१-४:३०।	रा.१०:३१-१२:०१ रा.३:०१-४:३१।
८ मं.	दि.७:३०-९:०० दि.१:३०-३:००।	रा.७:३०-९:००।
९ बु.	दि.९:०१-१०:३१ दि.१२:०१-१:३१।	रा.१२:०१-१:३१रा.३:०१-४:३०।
१० गु.	दि.३:०२-६:०२।	रा.१२:०२-१:३१ रा.४:२९-५:५८।
११ शु.	दि.९:००-१२:०२।	रा.९:०२-१०:३२।
१२ श.	प्र.५:५७-७:२८ दि.१:३२-३:०३ सं.४:३३-६:०३।	सं.६:०३-७:३३ रा.१:३०-२:५९ रा.४:२८-५:५६।
१३ र.	दि.१०:२९-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०० रा.१:२९-२:५८।
१४ चं.	दि.७:२७-८:५६ दि.३:०३-४:३४।	रा.१०:३२-१२:०१ रा.२:५९-४:२७।
३० मं.	दि.७:२६-८:५८ दि.१:३३-३:०४।	रा.७:३५-९:०४।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.६ रवि सा.५।०३ तः ति. ८ मंगल दि.४।११ यावत्
रेवती/अश्विनी ति.३० मंगल स.३।३३ तः.......।

मिलेत अछि। तैं प्रातः स्नान करवाक चाहि।

प्रातः स्नानं चरित्वाय शुद्धे तीर्थे विशेषतः।
प्रातः स्नानाद्यतः शुद्ध्येत् कायोऽयं मलिनः सदा।।
नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातः स्नायिजनं क्वचित्।
दृष्टादृष्टफलं तस्मात् प्रातःस्नानं समाचरेत्।।

रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्नक नाश, तप आ मेधा ई दस गुण नित्य स्नान करवला व्यक्तिक प्राप्त होइत अछि।

गुणा दश स्नानपरस्य साधो ! रूपं च तेजश्च बलं च शौचम्।
आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मेधाः।।

वेद-स्मृतिमे कहल गेल सभकार्य स्नानमूल अछि, अतेव लक्ष्मी, पुष्टि आ आरोग्यक वृद्धि चाहवला मनुष्य नित्य स्नान करथि।

स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्युदिता नृणाम्।
तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्ट्यारोग्यवर्धनम्।।

• **स्नानक भेदः**-मन्त्रस्नान, भौमस्नान, अग्निस्नान, वायव्यस्नान, दिव्यस्नान,वारुणस्नान आ मानसिक स्नान-ई सात प्रकारके स्नान अछि।
१. **आपो हिष्ठा**....इत्यादि मन्त्रसँ मार्जन करनाई मन्त्र स्नान कहबैत अछि। २.समस्त शरीरमे मिट्टी लगायब ई भौमस्नान, ३. भस्म लगायब अग्निस्नान, ४.गायके खुरक धूलि लगायब वायव्यस्नान, ५. सूर्यकिरणमे वर्षाके जलसँ स्नान करव दिव्यस्नान कहबैत अछि। ६.जलमे डुबकी लगाक स्नान करव वारुणस्नान, ७.आत्मचिन्तन करव मानसिक स्नान कहबैत अछि।

मान्त्रं भौमं तथाग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च। वारुणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्।।
आपो हिष्ठादिभिर्मान्त्रं मृदालम्भस्तु पार्थिवम्। आग्नेयं भस्मना स्नानं वायव्यं गोरजः स्मृतम्।।
यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद् दिव्यमुच्यते। अवगाहो वारुणं स्यात् मानसं ह्यात्मचिन्तनम्।।

• **अशक्त व्यक्तिक लेल स्नान–** रोगादि कारण सँ स्नान में असमर्थ व्यक्ति सिरकें नीचासँ स्नान करवा क चाहि या भिजल वस्त्रसँ शरीरकें पोंछ लेव सेहो एक प्रकारक स्नान कहल गेल अछि।

अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम्।
आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः।।

स्नान विधि :-

उषःकालस्तु लोहितादिगुणलक्षितकालात् प्राक्कालः।

अर्थात् .उषाकाल सँ पहिने स्नान करव से उत्तम मानल गेल अछि। एहिसँ प्रजापत्यक फल प्राप्त होइत अछि। तेल लगाक आ देह मल-मलक नदी में नहायव मना अछि। अतः नदी सँ बाहर तटपर देह हाथ मलिक नहा लेथि, तखन नदीमें गोता लगावि **मलं प्रक्षालयेत्तीरे**

चैत्रशुक्लपक्षः।।

शक१९४२, संवत्२०७७, सन् १४२७, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, वसन्तः ऋतुः। दक्षिणे कालः। अशुद्धः।
दिनांक २५ मार्चतः ८ अप्रैल यावत् सन्२०२० ई। मार्गी गुरुः पूर्वोदितः; मार्गी शुक्रः पश्चिमोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पूर्वोदितः; मार्गी बुधः पश्चिमोदितः,

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१	बु.	२५।१२	दि.४।०२	रेवती	६०।००	अहोरात्रं	ब्रह्म	२३।०३	बव	२५।१२	मीन	आहोरात्रं	११।११।२०।२३	३०।१६	५।५७	६।०३	४	१२	२५
२	गु.	३०।१८	सा.०६।०३	रेवती	००।०४	प्रा०५।५८	ऐन्द्र	२३।०५	कौलव	३०।१८	मीन ००।०४	प्रा.५।५८	११।१२।१९।४२	३०।२०	५।५६	६।०४	५	१३	२६
३	शु.	३४।४६	रा.०७।४८	अश्विनी	०६।१०	दि.०८।२३	वैधृति	२४।२४	तैतिल	२।३२	मेष	आहोरात्रं	११।१३।१९।०१	३०।२४	५।५५	६।०५	६	१४	२७
४	श.	३८।२०	रा.६।१४	भरणी	११।३४	दि.१०।३२	विष्कुम्भ	२४।४०	वणिज्	६।३३	मेष २७।३८	दि.४।५७	११।१४।१८।२०	३०।२८	५।५४	६।०६	७	१५	२८
५	र.	४०।४६	रा.१०।१२	कृत्तिका	१५।५१	दि.१२।१४	प्रीति	२४।०२	बव	९।३३	वृष	आहोरात्रं	११।१५।१७।३९	३०।३२	५।५४	६।०६	८	१६	२९
६	चं.	४१।५५	रा.१०।३९	रोहिणी	१६।०१	दि.१।२९	आयुष्यमान	२२।३२	कौलव	११।२१	वृष ४६।५७	रा.१।५२	११।१६।१६।५७	३०।३६	५।५३	६।०७	९	१७	३०
७	मं.	४१।४६	रा.१०।३४	मृगशिरा	२०।५३	दि.१२।१३	सौभाग्य	२०।००	गर	११।५१	मिथुन	आहोरात्रं	११।१७।१६।१५	३०।४०	५।५२	६।०८	१०	१८	३१
८	बु.	४०।२२	रा.१०।००	आर्द्रा	२१।३१	दि.२।२७	शोभन	१६।२७	भद्रा	११।०४	मिथुन	आहोरात्रं	११।१८।१५।३३	३०।४४	५।५१	६।०९	११	१९	१
९	गु.	३७।४५	रा.८।५६	पुनर्वसु	२०।५७	दि.२।१३	अतिगण्ड	११।०९	बालव	९।०४	मिथुन ६।०६	दि.८।१६	११।१९।१४।३५	३०।४८	५।५०	६।१०	१२	२०	२
१०	शु.	३४।०८	रा.७।२९	पुष्य	१९।२१	दि.१।३४	सुकर्मा	०९।३६	तैतिल	५।५७	कर्क	आहोरात्रं	११।२०।१३।३७	३०।५२	५।५०	६।१०	१३	२१	३
११	श.	२९।३९	दि.५।४१	आश्लेषा	१६।५६	दि.१२।३५	धृति	००।३१	वणिज्	१।५४	कर्क १६।५६	दि.१२।३५	११।२१।१२।३८	३०।५६	५।४९	६।११	१४	२२	४
१२	र.	२४।३०	दि.३।३८	मघा	१३।४५	दि.११।१८	गण्ड	४६।३८	बालव	२४।३०	सिंह	आहोरात्रं	११।२२।११।३९	३१।००	५।४८	६।१२	१५	२३	५
१३	चं.	१८।५१	दि.१।१९	पूर्वाफाल्गुनी	१०।०४	दि.९।४६	वृद्धि	३९।०७	तैतिल	१८।५१	सिंह २५।०४	दि.३।४९	११।२३।१०।४०	३१।०४	५।४७	६।१३	१६	२४	६
१४	मं.	१२।५३	दि.१०।५५	उत्तराफाल्गुनी	०६।०३	दि.८।११	ध्रुव	३१।२६	वणिज्	१२।५३	कन्या	आहोरात्रं	११।२४।०९।४१	३१।०८	५।४६	६।१४	१७	२५	७
१५	बु.	०६।४६	दि.८।३०	हस्त	०२।५०	दि.६।५४	व्याघात	२३।३६	बव	६।४६	कन्या २८।५३	सा.५।१६	११।२५।०८।४२	३१।१२	५।४६	६।१४	१८	२६	८

(१२।२५) वसन्तनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, नवरात्रव्रतारम्भः, चन्द्रदर्शनं। मु.१५ याम्यश्रृंगं फलं महार्घं। शक१९४२ प्रारम्भः। शिववासः-अग्निवासः दि.४।०२ उ., अमृतयोगः दि.४।०२ या. ततः सिद्धियोगः, ☉

(१३।२६) श्रीरेमन्तपूजा, झूलेलालजयन्ती। शिववासः-अग्निवासः सा.६।०४ या., अमृतयोगः सा.६।०४ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः, दक्षिणाविनायात्रा प्रा.५।५८ उ.। पञ्चकसमाप्तिः(भदवा) प्रा.५।५८ उ.।

(१४।२७) श्रीगौरी३ व्रतं, **स्वायंभुवमन्वादिः**, अग्निवासः रा.७।४८ उ., अमृतयोगः रा.७।४८ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।२३ या., पश्चिमाविनायात्रा दि.८।२३

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.३ शुक्र प्रा.५।५८ यावत्। आश्लेषा/मघा ति.१० शुक्र दि.१।३४ तः ति.१२ रवि. दि.१।३४ या.

(१५।२८) श्रीगणेश४ व्रतं, श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्य **नहाय-खाय**। अग्निवासः, सिद्धियोग, वृषेशुक्रः४६।५२। भद्रा ६।३३ तः ३८।२० या.,

(१६।२९) श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकमुक्तं(खरना)। मीनावतारः,**श्रीरामराज्याभिषेकमहोत्सवः**। श्रीपञ्चमी, लक्ष्मीपूजनं, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.१०।१२ या. ततः मृत्युयोगः, पूर्वाभाद्रेबुधः ५५।१५। दक्षिणपूर्वयात्रा दि.१२।१४ उ.।

(१७।३०) **श्रीसूर्यषष्ठीव्रतं, सायंकालिकार्घदानं**,विल्वाभिमन्त्रणं, गजपूजा। शिववासः, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वा विनायात्रा। सिद्धियोगः रा.१०।३९ या. ततः मृत्युयोगः। ❖दि.५।४१ या., भद्रा १।५४ तः २९।३९ या.

(१८।३१) प्रातःकालिकार्घ्यदानं पारणञ्च। **नवपत्रिकाप्रवेशः**। निशापूजा, रात्रिजागरणं। **रेवत्यां रविः ८।४० दि.६।२०**। शिववासः, उत्तरा विनायात्रा दि.१२।१३ या.। सिद्धियोगः रा.१०।३८ या. ततः मृत्युयोग, सर्वार्थसिद्धियोगः,

(१९।१) **महाष्टमी ८ व्रतं**, अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं, ब्रह्मपुत्रस्नानं। मृत्युयोगः रा.१०।०० या., भद्रा ११।०४ या. ☉पश्चिमयात्रा, अमृतयोगः दि.८।३० उ.,सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.६।५४ या। श्रवणायां मंगल ५६।४०।

(२०।२) रामावतार,**श्रीरामनवमी ९ व्रतं सर्वेषाम्**। महानवमी व्रतं, नवम्यां हवनं, हनुमद्ध्वजदानं,शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.६।५६ या. ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः,

(२१।३) महानवमीव्रतस्य पारणं। **विजयादशमी१०**। नवरात्रव्रतपारणं, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारण, अपराजितापूजा, नीलकण्ठखञ्जनादिदर्शनम्। पश्चिमाविनायात्रा पुष्ये दि.१।३४ या.।

(२२।४) शूलयोगः ५३।१९। **तुलस्यश्वत्थाम्रादिवृक्षसेचनम्। कामदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्**। श्रीविष्णुदोलोत्सवः। शिववासः दि.५।४१ उ., अग्निवासः, अमृतयोगः ❖

(२३।५) श्रीविष्णु१२, गोघृतेनपारणं, **प्रदोष१३ व्रतं**, शिववासः, अग्निवासः दि.३।३६ उ., सिद्धियोगः दि.३।३६। मीनेबुधः १६।३०। पूर्व-उत्तरयात्रा दि.११।१८ उ.।

(२४।६) चैत्रावली, मदन१३ गोष्ठे सत्संगारम्भः,श्रीमदनपूजनं। **श्रीमहावीरजयन्ती, प्रदोष१४ व्रतं**, शिववासः-अग्निवासः दि.१।२२ या.। उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां दि.९।४६ या.।

(२५।७) मदनभञ्जिका१४। अग्निवासः दि.१०।५५ उ., राजयप्रदयोगः दि.१०।५५ या., भद्रा १२।५३ तः ३६।५१ या., उत्तरभाद्रेबुधः १५।३६। पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.१०।५५ उ.।

(२६।८) चित्रानक्षत्रमानं ५४।५६। **चैत्रीपूर्णिमा१५** स्नानदानादिः, **स्वारोचिषमन्वादिः**। अग्निवासः दि.८।३० या. ततः शिववासः,दक्षिणयात्रा अहोरात्रं. पूर्व सा.५।१६ या. ततः ☉

१५ बुधे वल्ली८।२६।३४।४०
अयनांशाः २२।४८।४९
रा.८ | ७ गु. | सू ५ | बु ४ | ९ | मं. | गु. ३ श | १० | १२ चं. | ११ | ल.१ | के.२

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ बु.	८।२९।५०।००	१०।१३।१३।२७	९।०१।३१।३३	००।२६।२८।३७	९।०३।१५।१०	८।१२।०३।५८	४५।०८	८।३२	१०।२८	१२।४१	१४।५८	१७।१५	१९।३७	२१।४७	०।०४	२।०९	३।५५	५।२६	६।५५
२ गु.	९।००।३०।४६	१०।१४।३०।५६	९।०१।४०।३३	००।२७।२५।१५	९।०३।१९।२४	८।१२।००।४७	४५।१०	८।२९	१०।२५	१२।३८	१४।५६	१७।१२	१९।२७	२१।४४	०।०१	२।०६	३।५२	५।२३	६।५२
३ शु.	९।०१।११।२८	१०।१५।५१।१४	९।०१।४९।२७	००।२८।२१।२२	९।०३।२३।३३	८।११।५७।३७	४५।१२	८।२५	१०।२१	१२।३४	१४।५२	१७।०८	१९।२३	२१।४०	२३।५७	२।०२	३।४८	५।१९	६।४८
४ श.	९।०१।५२।१३	१०।१७।१४।०७	९।०१।५८।१२	००।२९।१६।५९	९।०३।२७।३९	८।११।५४।२६	४५।१४	८।२१	१०।१७	१२।३०	१४।४८	१७।०४	१९।१९	२१।३६	२३।५३	१।५८	३।४४	५।१५	६।४४
५ र.	९।०२।३३।००	१०।१८।३९।२३	९।०२।०६।५०	०१।००।११।५५	९।०३।३१।३४	८।११।५१।१५	४५।१६	८।१७	१०।१३	१२।२६	१४।४४	१७।००	१९।१५	२१।३२	२३।४९	१।५४	३।४०	५।११	६।४०
६ चं.	९।०३।१३।४७	१०।२०।०६।४७	९।०२।१५।२०	०१।०१।०६।१८	९।०३।३५।२५	८।११।४८।०४	४५।१८	८।१४	१०।१०	१२।२३	१४।४१	१६।५७	१९।१२	२१।२९	२३।४६	१।५१	३।३७	५।०८	६।३७
७ मं.	९।०३।५४।३६	१०।२१।३६।३८	९।०२।२३।४०	०१।०२।००।०४	९।०३।३९।१६	८।११।४४।५३	४५।२०	८।१०	१०।०६	१२।१९	१४।३७	१६।५३	१९।०८	२१।२५	२३।४२	१।४७	३।३३	५।०४	६।३३
८ बु.	९।०४।३५।२३	१०।२३।०८।१८	९।०२।३१।५२	०१।०२।५३।१२	९।०३।४२।५८	८।११।४१।४३	४५।२२	८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३३	१६।४९	१९।०४	२१।२१	२३।३८	१।४३	३।२९	५।००	६।२९
९ गु.	९।०५।१६।१२	१०।२४।४१।५०	९।०२।३९।५५	०१।०३।४५।४१	९।०३।४६।३५	८।११।३८।३१	४५।२४	८।०२	९।५८	१२।११	१४।२९	१६।४५	१९।००	२१।१७	२३।३४	१।३९	३।२५	४।५६	६।२५
१० शु.	९।०५।५७।०३	१०।२६।१७।०७	९।०२।४७।५२	०१।०४।३७।२८	९।०३।५०।०६	८।११।३५।२१	४५।२६	७।५९	९।५५	१२।०८	१४।२६	१६।४२	१८।५७	२१।१४	२३।३१	१।३६	३।२२	४।५३	६।२२
११ श.	९।०६।३७।५२	१०।२७।५४।०१	९।०२।५५।४०	०१।०५।२८।३२	९।०३।५३।३३	८।११।३२।११	४५।२८	७।५५	९।५१	१२।०४	१४।२२	१६।३८	१८।५३	२१।१०	२३।२७	१।३२	३।१८	४।४९	६।१८
१२ र.	९।०७।१८।४३	१०।२९।३२।२८	९।०३।०३।१९	०१।०६।१८।५२	९।०३।५६।५६	८।११।२९।००	४५।३०	७।५१	९।४७	१२।००	१४।१८	१६।३४	१८।४९	२१।०६	२३।२३	१।२८	३।१४	४।४५	६।१४
१३ चं.	९।०७।५९।३५	११।०१।१२।१९	९।०३।१०।४५	०१।०७।०८।२५	९।०४।००।१२	८।११।२५।४९	४५।३२	७।४७	९।४३	११।५६	१४।१४	१६।३०	१८।४५	२१।०२	२३।१९	१।२४	३।१०	४।४१	६।१०
१४ मं.	९।०८।४०।२८	११।०२।५३।२९	९।०३।१८।०५	०१।०७।५७।१२	९।०४।०३।२३	८।११।२२।३८	४५।३४	७।४४	९।४०	११।५३	१४।११	१६।२७	१८।४२	२०।५९	२३।१६	१।२१	३।०७	४।३८	६।०७
१५ बु.	९।०९।२१।१८	११।०४।३५।५४	९।०३।२५।१८	०१।०८।४५।०६	९।०४।०६।२९	८।११।१९।२८	४५।३६	७।४०	९।३६	११।४९	१४।०७	१६।२३	१८।३८	२०।५५	२३।१२	१।१७	३।०३	४।३४	६।०३

विविधविषयाः-चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। **चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः** - त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिवामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं **लिंगपुराणे** - अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिवन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः।। **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः** ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनोः कुलसम्भवः। अमोघागर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर।। **चैत्रशुक्लनवम्यां** रामनवमीव्रतन्तत्रांगदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं** संपूज्यार्घ्यं **दद्यात्तन्मन्त्रः** - दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं बृहद्विष्णुपुराणे** - मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमात्रेण **जीवन्मुक्तो भवेन्नरः**। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।। चक्षुरक्षार्थं **पठनीयमन्त्रः** - शर्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ बु.	दि.८:५८-१०:३० दि.१२:०२-१:३३।	रा.१२:०२-१:३० रा.२:५८-४:२६।
२ गु.	दि.३:०५-६:०७।	रा.१२:०१-१:२९ रा.४:२५-५:५३।
३ शु.	दि.८:५६-१२:००।	रा.९:०४-१०:३२।
४ श.	प्र.५:५१-७:२४ दि.१:३३-३:०५ दि.४:३७-६:०९।	सं.६:०९-७:३७ रा.१:२९-२:५७ रा.४:२४-५:२१
५ र.	दि.१०:२९-१:३३।	रा.१०:३३-१२:०१ रा.१:२९-२:५७।
६ चं.	दि.७:२३-८:५६ दि.३:०६-४:३८।	रा.१०:३४-१२:०२ रा.२:५६-४:२३।
७ मं.	दि.७:२२-८:५५ दि.१:३४-३:०७।	रा.७:३९-९:०७।
८ बु.	दि.८:५४-१०:२७ दि.१२:००-१:३३।	रा.१२:००-१:२७ रा.२:५४-४:२१।
९ गु.	दि.३:०६-६:१२।	रा.१२:००-१:२७ रा.४:२१-५:४७।
१० शु.	दि.८:५५-१२:०१।	रा.९:०७-१०:३४।
११ श.	प्र.५:४६-७:२० दि.१:३५-३:०८ दि.४:४१-६:१४।	सं.६:१४-७:४१ रा.१:२८-२:५४ रा.४:२०-५:४५
१२ र.	दि.१०:२७-१:३५।	रा.१०:३५-१२:०१ रा.१:२७-२:५३।
१३ चं.	दि.७:१८-८:५२ दि.३:०८-४:४२।	रा.१०:३४-१२:०० रा.२:५२-४:१८।
१४ मं.	दि.७:१८-८:५२ दि.१:३४-३:०८	रा.७:४२-९:०८।
१५ बु.	दि.८:५३-१०:२७ दि.१२:०१-१:३५।	रा.१२:०१-१:२७ रा.२:५३-४:१८।

१ बुधे वल्ली८।२६।३४।२६ अयनांशाः २२।४८।४७
रा.८ | ७ | सू ५ चं. | बु ४ | ६ शु. | ९ | गु. ३ श | मं. के.२ | १० | १२ | ११ | ल.१

८ बुधे वल्ली८।२६।३४।३३ अयनांशाः २२।४८।४८
रा.८ चं. | ७ शु. | ६ | सू ५ | बु ४ | ९ | मं. | गु. ३ श | १० | १२ | ११ | ल.१ | के.२

ततः स्नानं समाचरेत्। शास्त्र मे एहि प्रकारक स्नान के मलापकर्षण स्नान कहल गेल अछि। ई स्नान अमन्त्रक होइत अछि। स्नान सँ स्वास्थ्य आ शुद्धता दुनु कें लेल उत्तम मानल गेल अछि।

प्रथम जलक बाहर ठाढ़ भऽ संकल्प करथि। तत्पसँ मृत्तिका लगाय अन्यान्य तीर्थक आवाहन नाभि पर्यन्त जलमे करथि। जलक ऊपर इन्द्रराजकश्राप देल ब्रह्महत्या रहैत छथि। एहि हेतु दुनू हाथे जल हिलाकऽ स्नान करी। किन्तु भागीरथी गंगामे अन्य तीर्थक आवाहन नहि करी केवल गंगाजीक प्रार्थना करी। यदि घरमे स्नान करी त पात्रमे जल तऽ पूर्वाभिमुख भऽ जलक प्रार्थना कऽ अन्य तीर्थक आवाहन कऽ संकल्प कऽ ओहि जलसँ स्नान करी।

अश्वक्रान्ते ! रथक्रान्ते ! विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके ! हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।

अर्थ-स्नान करबाक समय गंगादि तीर्थ मे मृत्तिका उपरोक्त मन्त्रसँ मस्तकसे लगाय नाभि पर्यन्त जलमे स्नान करी।

स्नान सँ पूर्व गंगाजी द्वारा उक्त श्लोक क स्मरण- **नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा। विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गात्रिपथगामिनी।। भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी। द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये।। स्नानोद्यतः स्मरेन्नित्यं यत्र तत्र वसाम्यहम्।।**

• जलक श्रेष्ठता :- (अग्निपुराण)

निपानदुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्। ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते।।
तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोऽधिकम्।। **अर्थ**- कुआसँ निकालल जलक अपेक्षा झरनाक जल, झरनाक जलक अपेक्षा सरोवरक जल, सरोवरक जलक अपेक्षा नदीक जल, नदीक जलक अपेक्षा तीर्थक जल आ तीर्थक जलक अपेक्षा गंगाजीक जल अधिक श्रेष्ठ मानल गेल अछि।

पाठविधि- न मानसं पठेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते। पुस्तके वाचनं शस्तं सहस्राधिकं यदि।। ततो न्यूनस्य तु भवेद्वाचनं पुस्तकं विना। सकामैः सम्पुटो जाप्यो निष्कामैः सम्पुटं विना।। **पाठक्रम**-गीतीशीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखितपाटकः। अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।। माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः। धैर्यं लयसमर्थश्च षडेते पाठकागुणाः।। **कुमारी पूजन में आयु प्रमाण**-एकवर्षा न कर्त्तव्या कन्यापूजाविधानतः। अज्ञातां सा तु भोगानां गन्धादीनां तु वालिका।। कुमारिका च सा प्रोक्ता द्विवर्षा या भवेदिह। त्रिमूर्त्तिनी त्रिवर्षा च कल्याणी चतुरब्दिका।। रोहिणी पञ्चवर्षा च कन्यका षष्ठवार्षिकी। चण्डिका सप्तवर्षा च अष्टवर्षा च शाम्भवी।। नववर्षा भवेद्दुर्गा सुभद्रा दशवार्षिकी। प्रतिपदादि नवम्यन्तं क्रमात्ताञ्च प्रपूजयेत्।। अत ऊर्ध्वं न कर्त्तव्या कन्या ताश्च विगर्हिताः। एभिश्च नामभिः पूजा कर्त्तव्या विधिसंयुतैः।।

वैशाखकृष्णपक्षः ।।

शके१९४२, संवत्२०७७, सन् १४२७, उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु ... अशुद्धः ति.६ तः शुद्धः।
दिनांक ६ अप्रैलतः २३ यावत् सन्२०२० ई। मार्गी गुरु प्रुर्वोदित, मार्गी शुक्र पश्चिमोदित, मार्गी शनि: पूर्वोदित:, मार्गी कुज:पूर्वोदित:, मार्गी बुध: पश्चिमोदित:,

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करण	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१	गु.	००।५१	प्रा.६।०५	स्वाती	५४।०२	रा.३।२२	हर्षण	१६।०५	कौलव	००।५७	तुला		अहोरात्रं	११।२६।०७।३२	३१।१६	५।४५	६।१५	१९	२७	६
३	शु.	५०।०४	रा.१।४५	विशाखा	५०।४६	रा.२।०२	वज्र	०८।४७	वणिज्	२२।३८	तुला	३६।३५	रा.८।२२	११।२७।०६।२२	३१।२०	५।४४	६।१६	२०	२८	१०
४	श.	४५।३६	रा.११।५७	अनुराधा	४८।१०	रा.१२।५९	सिद्धि	०१।०२	बव	१७।५०	वृश्चिक		अहोरात्रं	११।२८।०५।१२	३१।२४	५।४३	६।१७	२१	२९	११
५	र.	४२।०२	रा.१०।३१	ज्येष्ठा	४६।२४	रा.१२।१६	वरीयान्	४६।१२	कौलव	१३।४६	वृश्चिक	४६।२४	रा.१२।१६	११।२९।०४।०१	३१।२८	५।४२	६।१८	२२	३०	१२
६	चं.	३९।२४	रा.९।२८	मूल	४५।४०	रा.११।५८	परिघ	४५।०७	गर	१०।४३	धनु		अहोरात्रं	००।००।०२।५०	३१।३२	५।४२	६।१८	२३	१	१३
७	मं.	३७।५६	रा.८।५१	पूर्वाषाढ़ा	४६।०५	रा.१२।०७	शिव	४१।३८	भद्रा	८।४०	धनु		अहोरात्रं	००।०१।०१।३९	३१।३६	५।४१	६।१९	२४	२	१४
८	बु.	३७।४३	रा.८।४५	उत्तराषाढ़ा	४७।४६	रा.१२।४६	सिद्ध	३८।५३	बालव	७।५०	धनु	१।३०	प्रा.६।१६	००।०२।००।२८	३१।४०	५।४०	६।२०	२५	३	१५
९	गु.	३८।५०	रा.९।११	श्रवण	५०।४१	रा.०१।५५	साध्य	३७।०७	तैतिल	८।१७	मकर		अहोरात्रं	००।०२।५९।००	३१।४४	५।३९	६।२१	२६	४	१६
१०	शु.	४१।१०	रा.१०।०६	धनिष्ठा	५५।४४	रा.३।५६	शुभ	३६।२१	वणिज्	१०।००	मकर	२३।१३	दि.२।५५	००।०३।५७।३२	३१।४८	५।३८	६।२२	२७	५	१७
११	श.	४४।३६	रा.११।३०	शतभिषा	५९।५८	रा.शे.५।३७	शुक्ल	३६।२७	बव	१२।५५	कुम्भ		अहोरात्रं	००।०४।५६।०४	३१।५२	५।३८	६।२२	२८	६	१८
१२	र.	४९।००	रा.१।१३	पूर्वाभाद्रपद	६०।००	अहोरात्रं	ब्रह्म	३७।१७	कौलव	१६।५०	कुम्भ	४६।२९	रा.१।२४	००।०५।५४।३६	३१।५६	५।३७	६।२३	२९	७	१९
१३	चं.	५४।०३	रा.३।१३	पूर्वाभाद्रपद	०५।५६	दि.०७।५८	ऐन्द्र	३८।३६	गर	२१।३२	मीन		अहोरात्रं	००।०६।५३।०८	३१।५९	५।३६	६।२४	३०	८	२०
१४	मं.	५९।१६	रा.शे.५।१८	उत्तराभाद्रपद	१२।२६	दि.१०।३४	वैधृति	४०।१५	भद्रा	२६।४०	मीन		अहोरात्रं	००।०७।५१।३९	३२।०२	५।३६	६।२४	१	९	२१
३०	बु.	६०।००	अहोरात्रं	रेवती	१९।०४	दि.०१।१३	विष्कुम्भ	४१।४५	चतुष्पद	३१।४८	मीन	१९।०४	दि.१।१३	००।०८।५०।१०	३२।०५	५।३५	६।२५	२	१०	२२
३०	गु.	०४।१९	दि.७।१८	अश्विनी	२५।१४	दि.०३।४०	प्रीति	४२।५२	नाग	४।१९	मेष		अहोरात्रं	००।०९।४८।२७	३२।०८	५।३४	६।२६	३	११	२३

- २७ । ६ — द्वितीयातिथिमानं ५४।२३ रा.३।२६। **वैशाखे तैलं त्यजेत्**। अग्निवासः प्रा.६।०५ उ.। द्वितीया दग्धतिथि। कृत्तिकाया गुरु ११।५८। मकरे मंगल १४।३५। पश्चिम यात्रा प्रा.६।०५ या.।
- २८ । १० — भद्रा २२।३६ तः ५०।०४ या.। मकरस्थगुरुनिचांशगत दोषनिवृत्तिः ८।२६।
- २९ । ११ — व्यतीपात्५३।३५। **वक्रतुण्ड ४ व्रतं**,शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.११।५७ या. ततः मृत्युयोगः, पश्चिम-उत्तरयात्रा रा.११।५७ या.।
- ३० । १२ — मासान्तः। शिववासः, अमृतयोगः रा.१०।३१ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१२।१६ उ., वृषे शुक्रः
- १ । १३ — कोकिलाषष्ठी६,भद्रा ३६।२४ उ.। **अश्विन्योर्मेषे च रविः४३।२१ रा.११।०२**। मु.४५ फलं महर्घं **यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालः** दि.१२।०० पुण्याहः, **सतुआइन**, सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, प्रपागन्तिकादानं, ←
- २ । १४ — मासादिः। **जुड़िशीतल**, पर्युषितान्नपानादिभक्षणं; अमृतयोगः रा. ८।५१ या. ततः सिद्धियोगः, त्रिपुष्करयोगः रा.१२।०७ उ.। भद्रा ८।४० या.।
- ३ । १५ — श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्, **विवाहः** अष्टम्यां रा.८।४५ या.। शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.८।४५ या.,
- ४ । १६ — **विवाह-वधूप्रवेशः** दशम्यां रा.९।११ उ.। दपञ्चकारम्भः(**भदवा**) रा.१।५५ उ.। मृत्युयोगः रा.९।११ या. ततः सिद्धियोगः, दक्षिणदिनयात्रा रा.९।११ उ.।
- ५ । १७ — **विवाहः** धनिष्टायां रा.३।५६ या.। वधूप्रवेशः, भद्रा १०।०० तः ४१।१० या.। अग्निवासः रा.१०।०६ या. ततः सिद्धियोगः, पूर्वयात्रा दि.२।५५ या.।
- ६ । १८ — **वरूथिनीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्**। वल्लभाचार्यजयन्ती। शिववासः,अमृतयोगः रा.११।३० या.,
- ७ । १९ — कुशोदकेन पारणं, शिववासः, सिद्धियोगः रा.१।१३ उ., त्रिपुष्करयोगः,
- ८ । २० — **विवाहः** त्रयोदश्यां रा.३।१३ या.। **वधूप्रवेशः**, **प्रदोष १३ व्रतं**, अग्निवासः, भद्रा २९।०३ उ.।
- ९ । २१ — **प्रदोष १४ व्रतं**, राज्यप्रदयोगः, भद्रा २६।४० या.। पश्चिमयात्रा दि.१०।३४ उ.।
- १० । २२ — **श्राद्धादौ अमावस्या**, शिववासः, अग्निवासः, पञ्चकसमाप्तिः(**भदवा**) दि.१।१३ उ.।
- ११ । २३ — **वैशाखीअमावस्या३०, स्नानदानादि**। शिववासः, अग्निवासः, **विवाहः-द्विरागमनं** प्रतिपदा-अश्विन्यां च दि.७।१८ उ. दि.३।४० या.। सर्वार्थसिद्धियोगः, दक्षिणादिनयात्रा दि.७।१८ तः दि.३।४० या.।

←वैशाखस्नानारम्भः,हरिद्वारेकल्पवासारम्भः हनुमद्ध्वजदानं, आर्यभटजयन्ती, उत्तरगोलारम्भः, खरमाससमाप्तिः, नेपाली-हिन्दू नववर्षारम्भः२०७७। सृष्ट्यादिः, सृष्टिगताब्दाः१९७२९४९१२१, मांगाब्दाः२३४७३०२०८७६। पूर्वाभाद्रे बुधः ५५।०५।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	निरयन
१ गु.	०९।१०।०२।१०	११।०६।१९।२७	०९।०३।२२।१८	०१।०६।२२।१०	०९।०४।०९।२५	०८।११।१६।१८	४५।३८
३ शु.	०९।१०।४३।०४	११।०८।०४।०६	०९।०३।३९।१०	०१।१०।१८।२०	०९।०४।१२।१७	०८।११।१३।०८	४५।४०
४ श.	०९।११।२४।०१	११।०९।४६।४४	०९।०३।४५।५२	०१।११।०३।३४	०९।०४।१५।०४	०८।११।०९।२७	४५।४२
५ र.	०९।१२।०४।५२	११।११।३६।२२	०९।०३।५२।२३	०१।११।४७।५०	०९।०४।१७।४५	०८।११।०६।४६	४५।४४
६ चं.	०९।१२।४५।१८	११।१३।२३।४६	०९।०३।५८।१८	०१।१२।३१।०३	०९।०४।२०।२०	०८।११।०३।३६	४५।४६
७ मं.	०९।१३।२६।४२	११।१५।१२।०४	०९।०४।०५।००	०१।१३।१३।१७	०९।०४।२२।५०	०८।११।००।२५	४५।४८
८ बु.	०९।१४।०७।५८	११।१७।०१।०४	०९।०४।११।०४	०१।१३।५४।२३	०९।०४।२५।१२	०८।१०।५७।१४	४५।५०
९ गु.	०९।१४।४८।३२	११।१८।५०।४४	०९।०४।१६।५६	०१।१४।३४।२३	०९।०४।२७।३०	०८।१०।५४।०४	४५।५२
१० शु.	०९।१५।२९।३०	११।२०।४१।०२	०९।०४।२२।४३	०१।१५।१३।१०	०९।०४।२९।४१	०८।१०।५०।५३	४५।५४
११ श.	०९।१६।१०।२४	११।२२।३१।५४	०९।०४।२८।१८	०१।१५।५०।४२	०९।०४।३१।४७	०८।१०।४७।४२	४५।५६
१२ र.	०९।१६।५१।२०	११।२४।२३।१६	०९।०४।३३।३६	०१।१६।२७।००	०९।०४।३३।४५	०८।१०।४४।३२	४५।५८
१३ चं.	०९।१७।३२।१७	११।२६।१५।०६	०९।०४।३८।४७	०१।१७।०१।५६	०९।०४।३५।३८	०८।१०।४१।२१	४६।००
१४ मं.	०९।१८।१३।१३	११।२८।०७।२१	०९।०४।४३।४७	०१।१७।३५।३०	०९।०४।३७।२४	०८।१०।३८।११	४६।०२
३० बु.	०९।१८।५४।११	११।२९।५९।५८	०९।०४।४८।३७	०१।१८।०७।३७	०९।०४।३९।०५	०८।१०।३५।००	४६।०३
३० गु.	०९।१९।३५।०७	००।०१।५२।३५	०९।०४।५३।२७	०१।१८।३८।४३	०९।०४।४०।४५	०८।१०।३१।४९	४६।०४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि, दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ गु.	७।३६	९।३२	११।४५	१४।०३	१६।१६	१८।३४	२०।५१	२३।०८	१।१३	२।५६	४।३०	५।५६
३ शु.	७।३२	९।२८	११।४१	१३।५९	१६।१५	१८।३०	२०।४७	२३।०४	१।०९	२।५५	४।२६	५।५५
४ श.	७।२९	९।२५	११।३८	१३।५६	१६।१२	१८।२७	२०।४४	२३।०१	१।०६	२।५२	४।२३	५।५२
५ र.	७।२५	९।२१	११।३४	१३।५२	१६।०८	१८।२३	२०।४०	२२।५७	१।०२	२।४८	४।१९	५।४८
६ चं.	७।२१	९।१७	११।३०	१३।४८	१६।०४	१८।१९	२०।३६	२२।५३	०।५८	२।४४	४।१५	५।४४
७ मं.	७।१८	९।१४	११।२७	१३।४५	१६।०१	१८।१६	२०।३३	२२।५०	०।५५	२।४१	४।१२	५।४१
८ बु.	७।१४	९।१०	११।२३	१३।४१	१५।५७	१८।१२	२०।२९	२२।४६	०।५१	२।३७	४।०८	५।३७
९ गु.	७।१०	९।०६	११।१९	१३।३७	१५।५३	१८।०८	२०।२५	२२।४२	०।४७	२।३३	४।०४	५।३३
१० शु.	७।०६	९।०२	११।१५	१३।३३	१५।४९	१८।०४	२०।२१	२२।३८	०।४३	२।२९	४।००	५।२९
११ श.	७।०२	८।५८	११।११	१३।२९	१५।४५	१८।००	२०।१७	२२।३४	०।३९	२।२५	३।५६	५।२५
१२ र.	६।५८	८।५४	११।०७	१३।२५	१५।४१	१७।५६	२०।१३	२२।३०	०।३५	२।२१	३।५२	५।२१
१३ चं.	६।५४	८।५१	११।०४	१३।२२	१५।३८	१७।५३	२०।१०	२२।२७	०।३२	२।१८	३।४९	५।१८
१४ मं.	६।५१	८।४७	११।००	१३।१८	१५।३४	१७।४९	२०।०६	२२।२३	०।२८	२।१४	३।४५	५।१४
३० बु.	६।४७	८।४३	१०।५६	१३।१४	१५।३०	१७।४५	२०।०२	२२।१९	०।२४	२।१०	३।४१	५।१०
३० गु.	६।४३	८।३९	१०।५२	१३।१०	१५।२६	१७।४१	१९।५८	२२।१५	०।२०	२।०६	३।३७	५।०६

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ गु.	दि.३:१०-६:१८।	रा.१२:०२-१:२७ रा.४:१७-५:४१।
३ शु.	दि.८:५१-१२:०१।	रा.९:११-१०:३६।
४ श.	प्र.५:४०-७:१५ दि.१:३५-३:१० दि.४:४५-६:२०।	स.६:२०-७:५५ रा.१:२५-२:५० रा.४:१५-५:४०।
५ र.	दि.१०:२५-१:३५।	रा.१०:३५-१२:०० रा.१:३५-२:५०।
६ चं.	दि.७:१५-८:५१ दि.१:३६-३:११।	रा.१०:३६-१२:०१ रा.२:५१-४:१५।
७ मं.	दि.७:१४-८:५० दि.१:३७-३:१२।	रा.७:४७-९:१२।
८ बु.	दि.८:४९-१०:२५ दि.१२:०१-१:३७।	रा.१२:०१-१:२५ रा.२:४९-४:१३।
९ गु.	दि.३:१२-६:२४।	रा.१२:००-१:२४ रा.४:१२-५:३५।
१० शु.	दि.८:४८-१२:००।	रा.९:१२-१०:३६।
११ श.	प्र.५:३५-७:१२ दि.१:३७-३:१३ दि.४:३९-६:२५।	स.६:२५-७:४९ रा.१:२५-२:४९ रा.४:१२-५:३६।
१२ र.	दि.१०:२५-१:३७।	रा.१०:३७-१२:०१ रा.१:२५-२:४९।
१३ चं.	दि.७:११-८:४८ दि.३:१४-४:५०।	रा.१०:३८-१२:०२ रा.२:४८-४:११।
१४ मं.	दि.७:१०-८:४७ दि.१:३८-३:१५।	रा.७:५१-९:१५।
३० बु.	दि.८:४७-१०:२४ दि.१२:०१-१:३८।	रा.१२:०१-१:२४ रा.२:४७-४:१०
३० गु.	दि.३:१४-६:२८।	रा.१२:००-१:२३ रा.४:०९-५:३२।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूलः- ति.४ शनि रा.१२।५९ तः ति.६ सोम रा.११।५८ यावत्।
रेवती/अश्विनीः- ति.१४ मंगल दि.१०।३४ तः ति.३० गुरु दि.३।४० यावत्।

१ बुधे
लग्नांशाः ११।१८।४४।४७
अयनांशाः २२।४८।५०

रा.७, ६ गु., बु ४, सू ५, ३, ८, मं. शु.२ श, चं., ल.१, ९, ११, के., १०, १२

१० बुधे
लग्नांशाः ११।१८।४४।४८
अयनांशाः २२।४८।५१

रा.७, ६ गु., बु ४, सू ५ चं., ३, ८, मं. शु.२ श, ल.१, ९, ११, के., १०, १२

विविधविषयाः-वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः-वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। **प्रातःस्नानसमयः** - उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।। **वैशाखे त्याज्यवस्तूनि**-कांस्य मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवस्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने।।
वैशाखे दानवस्तूनि - प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्।। जलपात्राणि देयानि तथापुष्पगृहाणि च।। **तिथितत्त्वे** - ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। **मासविशेषे स्नानम्**-कौशिकी माघवे स्नायान्माघे वै करतोयका। दुग्धा बिल्ववती नर्मदा कार्त्तिके फाल्गुनी तथा।। भूयसी गैरिका चैत्रमार्गे फलदा मता। भद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता। इक्षुमती तथा पौषे चैत्रे वै तस्मणा शुभा।। वाड्मती फाल्गुने श्वेता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषे , गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः।। गंगा तु सर्वदेति।

वासाम्सि धावतो यत्र पतन्ति जलबिन्दवः।
तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलांकितम्।।

अर्थ-रजक(धोबीक) वस्त्र धोएबाक पाथर तथा जतेक दूर जलमे वस्त्रक छींटा पड़ैत छैक ओ अपवित्र होइत अछि।

पश्चात् नाभिपर्यन्त जलमे जाक, **निरुध्य कर्णौ नासां च त्रिः कृत्वोन्मज्जनं ततः**। अर्थात् कान आ नाक मुनि जलक प्रवाह दिश या सूर्य दिश मुह कक स्नान करी। तीन, पाँच, सात या बारह डुबकि लगावि, डुबकी लगाव सँ पहिने शिख खोल ली, गंगाक जल में वस्त्र निचोड़बाक नहि चाहि आ नहि त मल मूत्र त्याग करबाक चाहि।

• **वस्त्रः-**

द्विजाति एक वस्त्र धारण कऽ भोजन देव पूजन-तर्पणादि नहि करथि। दोसर वस्त्र गमछा राखि लेथि।

वृथादिप्यार्चनं प्रोक्तं वृथा श्राद्धं न संशयः।
यज्जले शुष्कवस्त्रेण शुष्के चैवार्द्र वाससा।।

अर्थ- सुखैल वस्त्र धारण कऽ जलमे तथा भीजल वस्त्र धारण कऽ स्थलमे सूर्य पूजन तथा श्राद्धादि नहि करथि यदि करताह तऽ निष्फल हैतन्हि।

वस्त्र धारण मन्त्रः-

परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।
शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषम भिसंव्ययिष्ये।।

• **आसन**

कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च।
दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्।।

कुश, कम्बल, मृगचर्म, व्याघ्रचर्म आ रेशम क आसन पर जपादि उत्तम मानल गेल अछि।

वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिरेव च।
धरण्यां तु भवेद् दुःखं दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।।
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः।
गोशकृन्मृन्मयं भित्रं तथा पालाशपिप्पलम्।।
लोहबद्धं सदैवार्कं वर्जयेदासनं बुधः।।

बाँस, मिट्टि, पत्थर, तृण, घास, पात, गोबर, पलास, पीपल आ जाहि आसन में लोहका प्रयोग कयल गेल होय एतादृश आसनपर नै बैसी।

मृगचर्म प्रयत्नेन वर्जयेत् पुत्रवान् गृही
पुत्रवान् गृहस्थ मृगचर्मपर नै बैसी।

वैशाखशुक्लपक्षः।।

शक१९४२, संवत्२०७७, सन् १४२७, उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु । दक्षिणे शानः।
दिनाक २४ अप्रैलतः ७ मई यावत् सन२०२० इ। शुद्धः।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	ने.	अं.
१	शु.	०८।४०	दि.६।०२	भरणी	३२।४७	सा.६।४१	आयुष्मान	४३।२४	बव ८।४०	मेष ४८।२५	रा.१२।५६	००।१०।४६।४४	३२।१२	५।३४	६।२६	२४	१२	२४
२	श.	१२।०६	दि.१०।२५	कृत्तिका	३५।२०	रा.७।४४	सौभाग्य	४३।०३	कौलव १२।०६	वृष	अहोरात्रं	००।११।४५।००	३२।१५	५।३३	६।२७	२५	१३	२५
३	र.	१४।३१	दि.११।२०	रोहिणी	३८।४८	रा.६।०३	शोभन	४१।५३	गर १४।३१	वृष	अहोरात्रं	००।१२।४३।१६	३२।१८	५।३२	६।२८	२६	१४	२६
४	चं.	१५।३६	दि.११।४६	मृगशिरा	४०।५७	रा.६।५५	अतिगण्ड	३६।३६	भद्रा१५।३६	वृष ६।५३	दि.६।२६	००।१३।४१।३२	३२।२१	५।३२	६।२८	२७	१५	२७
५	मं.	१५।१८	दि.११।३८	आर्द्रा	४१।५०	रा.१०।१५	सुकर्मा	३६।२५	वालव १५।१८	मिथुन	अहोरात्रं	००।१४।३६।४८	३२।२४	५।३१	६।२६	२८	१६	२८
६	बु.	१३।४७	दि.११।०२	पुनर्वसु	४१।३३	रा.१०।०८	धृति	३२।११	तैतिल १३।४७	मिथुन २६।३७	सा.४।१०	००।१५।३८।०४	३२।२७	५।३१	६।२६	२९	१७	२९
७	गु.	११।०४	दि.६।५६	पुष्य	४०।०८	रा.६।३३	शूल	२७।०७	वणिज्११।०४	कर्क	अहोरात्रं	००।१६।३६।०७	३२।३०	५।३०	६।३०	३०	१८	३०
८	शु.	०७।२१	दि.८।२५	आश्लेषा	३७।५७	रा.८।४०	गण्ड	२१।१६	बव ७।२१	कर्क३७।५७	रा.८।४०	००।१७।३४।१०	३२।३४	५।२९	६।३१	१	१९	१
९	श.	०२।५०	दि.६।३७	मघा	३४।५५	रा.७।२७	वृद्धि	१४।४४	कौलव२।५०	सिंह	अहोरात्रं	००।१८।३२।१२	३२।३७	५।२९	६।३१	२	२०	२
११	र.	५१।५४	रा.२।१४	पूर्वाफाल्गुनी	३१।१८	सा.५।५९	ध्रुव	०७।४०	वणिज्२४।४५	सिंह४५।१९	रा.११।३५	००।१९।३०।१[illegible]	३२।४०	५।२८	६।३२	३	२१	३
१२	चं.	४५।५२	रा.११।४८	उत्तराफाल्गुनी	२७।२०	दि.४।२३	व्याघात्	००।१५	बव १८।५३	कन्या	अहोरात्रं	००।२०।२८।१६	३२।४३	५।२७	६।३३	४	२२	४
१३	मं.	३९।४६	रा.९।२१	हस्त	२३।११	दि.२।४३	वज्र	४४।५६	कौलव१२।४९	कन्या ५१।०६	रा.१।५४	००।२१।२६।१८	३२।४६	५।२७	६।३३	५	२३	५
१४	बु.	३३।४४	सा.६।५६	चित्रा	१९।०६	दि.१।०४	सिद्धि	३७।२०	गर ६।४५	तुला	अहोरात्रं	००।२२।२४।२०	३२।४९	५।२६	६।३४	६	२४	६
१५	गु.	२८।०२	दि.४।३८	स्वाती	१५।१२	दि.११।३०	व्यतीपात्	३०।०१	भद्रा१।५३	तुला ५७।३८	रा.४।२८	००।२३।२२।१०	३२।५२	५।२५	६।३५	७	२५	७

ने.	अं.	
१२	२४	श्रीशिवाजी जयन्ती। चन्द्रदर्शनं मु.१५ याम्यश्रृंगफलं महार्घ, अग्निवासः दि.६।०२ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः [illegible] या. ततः मृत्युयोगः। ▢ पश्चिमयात्रा दि.११।३० या.।
१३	२५	शिववासः दि.१०।२५ या. ततः अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.७।४४ उ, त्रिपुष्करयोगः रा.७।४४ या., दक्षिणयात्रा रोहिण्या। वधूप्रवेशः रोहिण्यां रा.७।४४ उ.। ▢ सिद्धियोगः दि.११।२० या.। भद्रा ४५।०४ उ.।
१४	२६	अक्षयतृतीया, गंगास्नानादिः, त्रेतायुगादिः, परशुरामावतारः, श्रीपरशुरामजयन्ती। श्रीगणेश ४ व्रतं, विवाहः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा [illegible] दि.११।२० या.। पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.११।२० या.। ▢
१५	२७	द्विरागमनं-उपनयनं-मुण्डनं-कर्णवेधः-देवादिप्रतिष्ठा-वधूप्रवेशः पञ्चम्यां दि.११।४६ उ.। पूर्वा विनायात्रा मृगशीर्षे। शिववासः दि.११।४६ उ., अग्निवासः, अमृतयोगः दि.११।४६ उ, सर्वार्थसिद्धियोगः, ←
१६	२८	छन्दोगानां उपनयनं पञ्चम्यां दि.११।३८ या.। षष्ठीदग्धतिथि। श्रीशंकराचार्यजयन्ती। श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती। शिववासः, मृत्युयोग दि.११।३८ उ.। ← मरणीषु रविः २४।०० दि.३।०८। भद्रा १५।३६ या.।
१७	२९	गृहप्रवेशः-द्विरागमनं-मुण्डनं-कर्णवेधः-देवादिप्रतिष्ठा सप्तम्यां दि.११।०२ उ.। षष्ठीदग्धतिथि। शिववासः दि.११।०२ या., अग्निवासः, अमृतयोगः दि.११।०२ या. ततः सिद्धियोगः, पश्चिम दक्षिणयात्रा सा.४।१० या.।
१८	३०	जहनु७, जह्नुमुनेः, कर्णरन्ध्राद् गंगायाः प्राकट्यं, गंगास्नानदानादिः, गृहप्रवेशः-मण्डनं-कर्णवेधः-देवादिप्रतिष्ठा सप्तम्यां दि.६।५६ या.। द्विरागमनं पुष्ये रा.६।३३ या.। अमृतयोगः दि.६।५६ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः। ☋
१९	१	जानकीनवमीव्रतं, भूगर्भाज्जगज्जनन्याः जानक्याः प्रादुर्भावः, सीतामढ्यां पुण्यारण्ये श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकं, मैथिलीदिवसः, हनुमद्ध्वजदानं, दीक्षाग्रहणं, शिववासः दि.८।२५ उ., अग्निवासः, अमृतयोगः दि.८।२५ उ.।
२०	२	दशमीतिथि५४।४६, जानकीनवमीव्रतस्यपारण शिववासः दि.६।३७ या.,सिद्धियोगः दि.६।३७ या. ततः मृत्युयेगः। ☋ गुरुपुष्ययोगः रा.६।३३ या.। भद्रा ११।०४ तः ३६।१३ या.। दक्षिणाविना यात्रा रा.६।३३ या.।
२१	३	विजयाएकादशी ११ व्रतं स्मार्त्तानां। व्रतोद्यापनं, षाण्मासिकरविव्रतसप्तडोरकविसर्गः। विवाहः उत्तराफाल्गुन्यां सा.५।५६ उ.। उपनयन, द्विरागमनं द्वादश्यां रा.२।१४ उ.। ❖
२२	४	मधुसूदन १२, कुशोदकेनपारणं, वैष्णवानां ११ व्रतं, गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, विवाहः दिवारात्रौ, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा। द्विरागमनं त्रयोदश्यां रा.११।४८ उ.। शिववासः, मृत्युयोगः रा.११।४८ या.,
२३	५	हर्षण५२।१८। प्रदोष १३ व्रतं, शिववासः रा.६।२१ या., सिद्धियोगः रा.६।२१ या. ततः राज्यप्रदयोगः। पूर्व-दक्षिणयात्रा। पूर्व दक्षिणयात्रा रा.१।५४ या.।
२४	६	प्रदोष १४ व्रतं, नरसिंहावतारः, नरसिंह १४ व्रत, प्रदोषात् यावद्रात्रौ, श्रीनरसिंहपूजनदर्शनादिकम्। अग्निवासः। विवाहः-द्विरागमनं पूर्णिमायां सा.६।५६ उ.। भद्रा३३।४४ उ.। दक्षिण-पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां सा.६।५६ उ.।
२५	७	वैशाखीपूर्णिमा१५, पूर्णिमा व्रत, स्नानदानादि, कच्छपावतारः, बुद्धावतारः, श्रीबुद्धजयन्ती। सिद्धियोगः दि.४।३८ या.। विवाहः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा-गृहारम्भः स्वात्यां दि.११।३० या.। भद्रा १।५३ या.। ▢

❖ मृत्युयोगः रा.२।१४ या., त्रिपुष्करयोगः रा.२।१४ उ.। भद्रा २४।४५ तः ५१।५४ या.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	शु.	०९।२०।१६।०३	००।०३।४६।०२	०९।०४।५७।४४	०१।१९।०७।२२	०९।०४।४२।०६	०८।१०।२८।३६	४६।०६
२	श.	०९।२०।५६।५८	००।०५।३६।२७	०९।०५।०२।०१	०१।१९।३४।४६	०९।०४।४३।२७	०८।१०।२५।२८	४६।०८
३	र.	०९।२१।३७।५३	००।०७।३३।००	०९।०५।०६।०७	०१।२०।००।३६	०९।०४।४४।४२	०८।१०।२२।१७	४६।१०
४	चं.	०९।२२।१८।४८	००।०९।२६।३८	०९।०५।१०।०२	०१।२०।२४।३८	०९।०४।४५।५०	०८।१०।१९।०७	४६।१२
५	मं.	०९।२२।५९।४३	००।११।२०।१७	०९।०५।१३।४५	०१।२०।४६।५२	०९।०४।४६।५२	०८।१०।१५।५६	४६।१३
६	बु.	०९।२३।४०।३७	००।१३।१३।५४	०९।०५।१७।१७	०१।२१।०७।१३	०९।०४।४७।४८	०८।१०।१२।४५	४६।१४
७	गु.	०९।२४।२१।३०	००।१५।०७।२५	०९।०५।२०।३७	०१।२१।२५।३६	०९।०४।४८।३७	०८।१०।०९।३५	४६।१५
८	शु.	०९।२५।०२।२३	००।१७।००।४८	०९।०५।२३।४६	०१।२१।४२।०४	०९।०४।४९।१९	०८।१०।०६।२४	४६।१७
९	श.	०९।२५।४३।१६	००।१८।५४।०१	०९।०५।२६।४३	०१।२१।५६।२६	०९।०४।४९।५५	०८।१०।०३।१३	४६।१९
११	र.	०९।२६।२४।०७	००।२०।४६।५८	०९।०५।२९।२८	०१।२२।०८।३६	०९।०४।५०।२५	०८।१०।००।०३	४६।२१
१२	चं.	०९।२७।०४।५८	००।२२।३९।४०	०९।०५।३२।०२	०१।२२।१८।४१	०९।०४।५०।४८	०८।०९।५६।५२	४६।२३
१३	मं.	०९।२७।४५।४८	००।२४।३२।००	०९।०५।३४।२४	०१।२२।२६।२७	०९।०४।५१।०४	०८।०९।५३।४१	४६।२४
१४	बु.	०९।२८।२६।३७	००।२६।२३।५७	०९।०५।३६।३३	०१।२२।३१।५५	०९।०४।५१।१४	०८।०९।५०।३१	४६।२५
१५	गु.	०९।२९।०७।२४	००।२८।१५।२६	०९।०५।३८।३१	०१।२२।३५।००	०९।०४।५१।१८	०८।०९।४७।२०	४६।२६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शु.	६।३६	८।३५	१०।४८	१३।०६	१५।२२	१७।३७	१९।५४	२२।१९	००।१६	२।०२	३।३३	५।०२
२	श.	६।३५	८।३१	१०।४४	१३।०२	१५।१८	१७।३३	१९।५०	२२।०७	००।१२	१।५८	३।२६	४।५८
३	र.	६।३२	८।२८	१०।४१	१२।५६	१५।१५	१७।३०	१९।४७	२२।०४	००।०६	१।५५	३।२६	४।५५
४	चं.	६।२८	८।२४	१०।३७	१२।५५	१५।११	१७।२६	१९।४३	२२।००	००।०५	१।५१	३।२२	४।५१
५	मं.	६।२४	८।२०	१०।३३	१२।५१	१५।०७	१७।२२	१९।३६	२१।५६	००।०१	१।४७	३।१८	४।४७
६	बु.	६।२०	८।१६	१०।२६	१२।४७	१५।०३	१७।१८	१९।३५	२१।५२	२३।५७	१।४३	३।१४	४।४३
७	गु.	६।१६	८।१२	१०।२५	१२।४३	१४।५६	१७।१४	१९।३१	२१।४८	२३।५३	१।३६	३।१०	४।३६
८	शु.	६।१२	८।०८	१०।२४	१२।३६	१४।५५	१७।१०	१९।२७	२१।४४	२३।४६	१।३५	३।०६	४।३५
९	श.	६।०६	८।०५	१०।१८	१२।३६	१४।५२	१७।०७	१९।२४	२१।४१	२३।४६	१।३२	३।०३	४।३२
११	र.	६।०५	८।०१	१०।१४	१२।३२	१४।४८	१७।०३	१९।२०	२१।३७	२३।४२	१।२८	२।५६	४।२८
१२	चं.	६।०१	७।५७	१०।१०	१२।२८	१४।४४	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।३८	१।२४	२।५५	४।२४
१३	मं.	५।५७	७।५३	१०।०२	१२।२४	१४।४०	१६।५५	१९।१२	२१।२६	२३।३४	१।२०	२।५१	४।२०
१४	बु.	५।५३	७।४६	०६।५८	१२।२०	१४।३६	१६।५१	१९।०८	२१।२५	२३।३०	१।१६	२।४७	४।१६
१५	गु.	५।४६	७।४५	०६।५४	१२।१६	१४।३२	१६।४७	१९।०४	२१।२१	२३।२६	१।१२	२।४३	४।१२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ शु.	दि.८:५७-१२:०१।	रा.६:१५-१०:३८।
२ श.	प्रा.५:३१-७:०६ दि.१:३८-३:१५सं.४:५२-६:२६।	स.६:२६-७:५२ रा.१:२४-२:४७ रा.४:०६-५:३०।
३ र.	दि.१०:२४-१:३६।	रा.१०:३६-१२:०२ रा.१:२४-२:४६।
४ चं.	दि.७:०८-८:४६ दि.३:१६-४:५३।	रा.१०:३६-१२:०२ रा.२:४६-४:०८।
५ मं.	दि.५:०७-६:४५ दि.१:३६-३:१७।	रा.७:४४-६:०७।
६ बु.	दि.८:४४-१०:२२ दि.१२:००-१:३८।	रा.१२:००-१:२२ रा.२:४४-४:०६।
७ गु.	दि.३:१६-६:३२।	रा.१२:००-१:२२ रा.४:०६-५:२७।
८ शु.	दि.८:४५-१२:०१।	रा.६:१७-१०:३६।
९ श.	प्रा.५:२६-७:०५ दि.१:४०-३:१८ सं.४:५६-६:३४	सं.६:३४-७:५६ रा.१:२३-२:४४ रा.४:०५-५:२५।
११ र.	दि.१०:२३-१:४०।	रा.१०:४०-१२:०२ रा.१:२३-२:४४।
१२ चं.	दि.७:०४-८:४३ दि.३:१६-४:५७।	रा.१०:४०-१२:०१ रा.२:४३-४:०४।
१३ मं.	दि.७:०३-८:४२ दि.१:३६-३:१८।	रा.७:५७-६:१८।
१४ बु.	दि.८:४२-१०:२१ दि.१२:००-१:३६।	रा.१२:००-१:२१ रा.२:४२-४:०३।
१५ गु.	दि.३:१६-६:३७।	रा.१२:०१-१:२२ रा.४:०३-५:२२।

६ बुधे वल्ली८।३६।३५।०१
अयनांशाः २२।४८।५२

(कुण्डली: ६ शु., ४, रा.७, सू ५ बु, ३, मं, ८ चं., गु.२ श, ९, ११, ल.१ के., १०, १२)

१४ बुधे वल्ली८।३६।३५।०८
अयनांशाः २२।४८।५३

(कुण्डली: ६ शु., ४, रा.७, सू ५ बु, ३, मं, ८, गु.२ श, ९, ११ चं., ल.१ के., १०, १२)

मूलवासः-स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्ग वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। **अभूक्तमूलविचारः**- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते गासरुद्ररसाः क्रमात्। तस्मादेपूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतो हि-मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः । सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः**-मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपूला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। त्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

विविधः-परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः-जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। **जानकीनवमीव्रतम्**:- वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां सोमवासरे । प्रादुर्बभूव लोकानां हिताय जनकात्मजा। **वैशाखे त्याज्य वस्तुनिः**- कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुनं। **वैशाखेदान वस्तूनिः**-प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद् व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथा पुपग्रहाणि च । **तिथितत्वेः**- ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनंबुघटान्वितान् पितुउदिस्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा- ति.७ गुरु रा.६।३३ तः ति. ९ शनि रा.७।२७ यावत्।

• **शिखा बन्धन**

स्नाने दाने जपे होमे संध्यायां देवतार्चने।
शिखाग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन।।

स्नान, दान, जप, होम, संध्या आ देवार्चन कर्मे बिना शिखा बान्हि कखनो कर्म नै करवा क चाहि।

• **शिखा बाँधक मन्त्र :-**

चिद्रूपिणि ! महामाये ! दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

उपर्युक्त मन्त्रसँ अथवा गायत्री मन्त्रसँ शिखा बाँध लेबाक चाहे। शिखा नै रहला पर शिखाक स्थान पर कुश राखि लेबाक विधान अछि।

• **यज्ञोपवीत-**

• धारण विधिः- **यज्ञोपवीतमेकैकं प्रतिमन्त्रेण धारयेत्।**
आचम्य प्रतिसंकल्पं धारयेन्मनुरब्रवीत्।।

यज्ञोपवीतक निम्नलिखित विनियोग पढि जल खसावी, पुनः यज्ञोपवीतक मन्त्र पढि एक यज्ञोपवीतकें पहिल तानि धारण क आचमन करी, पुनः द्वितीय तानि धारण क आचमन करी।

• **यज्ञोपवीत विनियोग -**

ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवताः, त्रिष्टुप् छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

• वाजसनेयि यज्ञोपवीत मन्त्र :-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

• छन्दोगक यज्ञोपवीत मन्त्र :-

ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि।

• जीर्ण यज्ञोपवीतक त्याग :-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

मन्त्र पढ़ि पहिलका यज्ञोपवीत क कण्ठी जका बना सिरपरसँ पीठ(पाछा) दिश निकाल क जलमे प्रवाहित क दी- एहि प्रसंग में मनुस्मृति मे कहल गेल अछि-

मन्त्रेण धारणं कार्यं मन्त्रेण च विसर्जनम्।
कर्तव्यं च सदा सद्भिर्नात्र कार्या विचारणा।

• **तिलक :-**

स्नानं संध्या पञ्चयज्ञान् पञ्चहोमादि कर्म यत्।
विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्।।

अर्थ- स्नान, संध्या, पंचयज्ञ, पितृकर्म एवं होमादि विना तिलक एवं कुशरहित कयलासँ निष्फल होइत अछि। अभावमे जलसँ करथि।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

शके१९४२, संवत्२०७७, सन् [illegible] उत्तरायण, [illegible] ग्रीष्म ऋतु। [illegible] काल। [illegible]

दिनांक ८ मईतः २२ [illegible] [illegible]

तिथयः दिनाङ्के	द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	ग.	ने.	अं.
१ गु.	२२।१८	[illegible]	विशाखा	११।३६	दि.१०।०७	वरीयान्	२३।०५	कौलव २२।१८	वृश्चिक	अहोरात्रं	००।२४।२०।००	३२।५६	५।२५	६।३५	१८	२६	८
२ शु.	५८।१६	[illegible]	अनुराधा	०६।००	दि.६।००	परिघ	१६।४४	गर १८।१६	वृश्चिक	अहोरात्रं	००।२५।१७।५०	३२।५६	५।२४	६।३६	१९	२७	९
३ श.	१४।३२	[illegible]	ज्येष्ठा	०७।०६	दि.८।१४	शिव	११।०६	भद्रा १४।३२	वृश्चिक ७।०६	दि.८।१४	००।२६।१५।३६	३३।०२	५।२४	६।३६	२०	२८	१०
४ र.	११।५२	[illegible]	मूल	०६।०४	दि.७।४६	सिद्ध	०६।१६	बालव ११।५२	धनु	अहोरात्रं	००।२७।१३।२८	३३।०५	५।२३	६।३७	२१	२९	११
५ चं.	१०।१६	[illegible]	पूर्वाषाढा	०६।१३	[illegible]	साध्य	०२।२०	तैतिल १०।१६	धनु २१।३४	दि.२।००	००।२८।११।१७	३३।०८	५।२२	६।३८	२२	३०	१२
६ मं.	१०।००	[illegible]	उत्तराषाढा	०७।३५	[illegible]	शुक्ल	५७।२७	वणिज १०।००	मकर	अहोरात्रं	००।२९।०६।०६	३३।११	५।२२	६।३८	२३	३१	१३
७ बु.	१०।५८	[illegible]	श्रवण	१०।१२	[illegible]	ब्रह्म	५६।३४	बव १०।५८	मकर ४२।११	रा.१०।१३	०१।००।०६।४३	३३।१४	५।२१	६।३९	२४	१	१४
८ गु.	१३।१४	[illegible]	धनिष्ठा	१४।०३	[illegible]	ऐन्द्र	५६।३२	कौलव १३।१४	कुम्भ	अहोरात्रं	०१।०१।०४।२०	३३।१७	५।२१	६।३९	२५	२	१५
९ शु.	१६।३२	[illegible]	शतभिषा	१६।०५	[illegible]	वैधृति	५७।२१	गर १६।३२	कुम्भ	अहोरात्रं	०१।०२।०१।५७	३३।२०	५।२०	६।४०	२६	३	१६
१० श.	२०।५१	[illegible]	पूर्वाभाद्रपद	२४।५२	[illegible]	विष्कुम्भ	५८।२८	भद्रा २०।५१	कुम्भ ८।२८	दि.८।४२	०१।०२।५६।३४	३३।२३	५।१९	६।४१	२७	४	१७
११ र.	२५।१८	[illegible]	उत्तराभाद्रपद	३१।२०	[illegible]	प्रीति	६०।००	बालव २५।१८	मीन	अहोरात्रं	०१।०३।५७।११	३३।२६	५।१९	६।४१	२८	५	१८
१२ चं.	३०।५६	[illegible]	रेवती	३७।५६	[illegible]	प्रीति	००।१६	तैतिल ३०।५६	मीन ३७।५६	रा.८।२८	०१।०४।५४।४७	३३।२९	५।१८	६।४२	२९	६	१९
१३ मं.	३६।५२	[illegible]	अश्विनी	४४।१८	[illegible]	आयुष्मान	०४।५६	गर ३।२२	मेष	अहोरात्रं	०१।०५।५२।२३	३३।३२	५।१८	६।४२	३०	७	२०
१४ बु.	४०।१६	[illegible]	भरणी	५०।०१	[illegible]	सौभाग्य	०३।१२	भद्रा ८।०४	मेष	अहोरात्रं	०१।०६।४९।४८	३३।३४	५।१७	६।४३	३१	८	२१
३० गु.	४३।३७	[illegible]	कृत्तिका	५५।४७	[illegible]	शोभन	०३।५७	चतुष्पद ११।५२	मेष ६।१३	दि.७।४६	०१।०७।४७।१३	३३।३६	५।१७	६।४३	१	९	२२

- ८ — ज्येष्ठेकृष्णके त्यजेत्। **द्विरागमनं** दि.१०।०७ तः दि.२।३२ या., [illegible] गृहारम्भः [illegible] दि.२।३२ उ. [illegible] अग्निवासः, सिद्धियोग दि.२।३२ [illegible] मृत्युयोग सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।०७ उ.।
- ९ — भद्रा ४६।२६ उ.। **गृहारम्भः** अनुराधायां दि.६।०० या.। [illegible] कुम्भेसंगत १०।०३।
- १० — **श्रीआयुरथ ४ व्रतं, विवाह:-द्विरागमनं** तृतीयायां मूले च दि.८।१४ तः दि.११।१४ या.। अग्निवासः दि.११।१४ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः दि.११।१४ या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।१४ उ.।
- ११ — शिववासः, अग्निवासः दि.१०।०८ उ., अमृतयोगः दि.१०।०८ उ., **कृत्तिकायां रविः** ११।३६ दि.१०।०६। [illegible]
- १२ — शुभयोगमानं ५७।०२ उ.। शिववासः-अग्निवासः दि.६।३० या.,
- १३ — **मासान्तः।** अग्निवासः दि.६।२२ उ., अमृतसिद्धियोगः। भद्रा १०।०० तः ४०।२६ या.। [illegible] २१।१४, ← अमृतयोगः दि.६।११ उ., पञ्चकारम्भ(**मदवा**) दि.६।२३ उ.।
- १४ — **वृषे रविः ३६।३५ रा.६।१२। विष्णुपदीसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० उपरि पुण्यकः।** [illegible] अग्निवासः दि.६।११ या. ततः शिववासः ←
- १५ — **मासादिः,** शिववासः दि.१०।३६ या. अमृतयोगः दि.१०।३६ उ.,
- १६ — अग्निवासः दि.११।१८ या., सिद्धियोगः दि.११।१८ या. ततः मृत्युयोगः। भद्रा ४८।४३ उ.।
- १७ — **विवाहः** उत्तराभाद्रपदायां दि.३।१५ उ.। शिववासः दि.१।३६ उ., अग्निवासः, अमृतयोगः दि.१।३६ या. ततः मृत्युयोगः। भद्रा २०।५१ या.।
- १८ — **अपराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां। विवाहः दिवारात्रौ,** शिववासः, सिद्धियोगः दि.३।१८ या. ततः मृत्युयोगः।
- १९ — **तिलेनपारणं,** शिववासः सा.२।४० या., अग्निवासः, अमृतसिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।२८ उ., पञ्चकसमाप्ति(**मदवा**) रा.८।२८ उ.। [illegible]
- २० — **प्रदोष१३ व्रतं,** मृत्युयोगः रा.७।४० या.। **विवाहः** त्रयोदश्यां रा.७।४० या.। भद्रा ३२।२२ उ.।
- २१ — **प्रदोष१४ व्रतं,** अग्निवासः रा.६।२२ या., मृत्युयोगः रा.६।२२ या. ततः सिद्धियोगः। भद्रा ८।०४ या.। [illegible] ११।२६।
- २२ — ज्येष्ठीअमावस्या३०,स्नानदानादि, **वटसावित्रीव्रतं,** शिववासः, सिद्धियोगः रा.१०।४४ उ.। **विवाहः** रोहिण्यां रा.३।१२ उ.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५ चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३० गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि	[illegible]	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३।२३	१।०६	२।४०	४।०६
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१।०५	२।३६	४।०५
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१।०१	२।३२	४।०१
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।५७	२।२८	३।५७
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।५३	२।२४	३।५३
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।५०	२।२१	३।५०
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।४६	२।१७	३।४६
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।४२	२।१३	३।४२
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।३८	२।०९	३।३८
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।३४	२।०५	३।३४
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।३०	२।०१	३।३०
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।२६	१।५७	३।२६
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।२२	१।५३	३।२२
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१८	१।४९	३।१८
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।२८	०।१४	१।४५	३।१४

[illegible] - [illegible] विप्रकोटिसमि [illegible]। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णी [illegible]। [illegible] संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। [illegible] प्रतिगृह्यताम्।। [illegible] ।। इति [illegible]। [illegible] गंगाज्येष्ठ

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा (घण्टा मिनट)	रात्रि का अर्धप्रहरा (घण्टा मिनट)
१	गु.	दि.८:४३-१२:०१।	रा.६:१६-१०:४०।
२	श.	प्र.५:२२-७:०२ दि.१:४१-३:२० सा.४:५६-६:३८।	सं.६:३८-७:५६ रा.१२:२२-२:४२ रा.४:०२-५:२१।
३	र.	दि.१०:२१-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०१ रा.१:२१-२:४१।
४	चं.	दि.७:०१-८:४१ दि.३:२१-५:००।	रा.१०:४१-१२:०१ रा.२:४१-४:०१।
५	मं.	दि.७:००-८:४० दि.१:४०-३:२०।	रा.८:००-६:२०।
६	बु.	दि.८:४०-१०:२० दि.१२:००-१:४०।	रा.१२:००-१:२० रा.२:४०-४:००।
७	गु.	दि.३:२१-६:४१।	रा.१२:०१-१:२१ रा.४:००-५:१८।
८	गु.	दि.८:४०-१२:०२।	रा.६:२२-१०:४२।
९	श.	प्र.५:१८-६:५६ दि.१:४२-३:२२ सा.५:०२-६:४२।	सं.६:४१-८:०२ रा.१२:२१-२:४० रा.३:५६-५:१७।
१०	र.	दि.१०:२०-१:४२।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.१:२०-२:३६।
११	चं.	दि.६:५८-८:३६ दि.३:२३-५:०३।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.२:३६-३:५८।
१२	मं.	दि.६:५७-८:३८ दि.१:४१-३:२२।	रा.८:०३-६:२२।
१३	बु.	दि.८:३८-१०:१६ दि.१२:००-१:४१।	रा.१२:००-१:१६ रा.२:३८-३:५७।
१४	गु.	दि.३:२२-६:४४।	रा.१२:००-१:१६ रा.३:५७-५:१५।
३०	गु.	दि.८:३६-१२:०१।	रा.६:२३-१०:४२।

[illegible] सर्वेऽपि शंकराः।। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकराणि च। काशी प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः।। **पितृतर्पणादिमहत्त्वमाह मनुः** - [illegible] श्रद्धया [illegible]।। देवकार्याद् द्विजातीनां पितृकार्यं विशिष्यते। दैवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायनं [illegible]।।

६ बुधे वर्त्तो८।३६।३५।१५
अयनांशाः २२।४८।२४

रा.६	बु.२ शु.		३
	गु. ४		चं.२
७		मं. श. गु. न.१	
८	१०		१२
९		११	के.

१३ बुधे वर्त्तो८।३६।३५।२१
अयनांशाः २२।४८।२५

रा.६	बु.२ शु.-सू.		३
	चं. ४		नं.२
७		मं. श गु. न.१	
८	१०		१२
९		११	के.

[illegible] केशवः [illegible] ।
नाभौ नारायणः देवः वैकुण्ठः हृदये तथा।।१।।
दामोदरः वामपार्श्वे दक्षिणे च त्रिविक्रमः।
मूर्ध्नि चैव हृषीकेशः पद्मनाभः च पृष्ठतः।।२।।
कर्णयोर्यमुना गंगा बाहवोः कृष्णो हरिस्तथा।
यथास्थानेषु तृप्यन्त देवता द्वादश स्मृताः।।३।।

अर्थ- [illegible] केशव, [illegible] नारायण, हृदयमे वैकुण्ठ [illegible] दामोदर, दक्षिण कुक्षिमे वामन, [illegible] हृषीकेश, [illegible] पद्मनाभ, [illegible] यमुना, दक्षिण [illegible] गंगा, [illegible] कृष्ण [illegible] तिलक लगानेसँ देवता प्रसन्न रहैत छथि।

• भस्म लगयवाक मन्त्र :- [illegible] लगावी ॐ त्र्यायुषम् जमदग्नेः ([illegible]) कश्यपस्य त्र्यायुषम् ([illegible])। यद्देवेषुत्र्यायुषम् ([illegible])। तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् ([illegible])।

• चानन लगयवाक मन्त्रः-ॐ चन्दनस्य महत् पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

• पवित्री- धारण :-स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि।
करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा संध्याभिवन्दने।।

[illegible] पवित्री(अंगुठी) धारण करब आवश्यक अछि

अन्यत्यारे पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। हेमात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्। [illegible]
कर्मान्ते पुनरादाय पवित्रद्वितयं द्विजः।
शुचौ देशे विनिवेश्य दद्यादेतत् पुनः पुनः
पवित्री प्रतिदिन [illegible] आवश्यक नै। [illegible]

• पवित्री धारण मन्त्र :-
ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौसवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शक१९४२, संवत्२०७७, सन १४२७, उत्तरायण, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः। पश्चिमे कालः। अशुद्धः।
दिनांक २३ मईतः ५ जून यावत् सन२०२० ई। मार्गी गुरुः पूर्वोदित, वक्री गुरुः पश्चिमोदित, मार्गी शनि पूर्वोदित, मार्गी कुजः पूर्वोदितः; मार्गी बुधः पूर्वास्त।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	
१	श.	४५।५५	रा.११।३८	रोहिणी	५८।२६	रा.४।४०	अतिगण्ड	०३।५४	किंगस्तुघ्न१४।४६	वृष	अहोरात्रं	०१।०८।४४।३८	३३।३८	५।१६	६।४४	२	१०	२३	अमृतयोगः रा.११।३८ या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।४४ या.। दक्षिणयात्रा, वधूप्रवेशः। क्षीणशुक्रः१५।४७। दक्षिणयात्रा।
२	र.	४६।५७	रा.१२।०३	मृगशिरा	६०।००	अहोरात्रं	सुकर्मा	०२।५६	बालव १६।२६	वृष २६।४३	सा.५।०६	०१।०६।४२।०३	३३।४०	५।१६	६।४४	३	११	२४	चन्द्रदर्शनमं मु.४५ सौम्यश्रृंगफलंसमर्घम्। शिववासः-अग्निवासः रा.१२।०३ या., सिद्धियोगः रा.१२।०३ उ., द्विपुष्करयोगः रा.१२।०३ या., पश्चिमां विनायात्रा अहोरात्रम्।
३	चं.	४६।४१	रा.११।५६	मृगशिरा	००।५६	प्रा.५।३८	धृति	०१।०२	तैतिल १६।४६	मिथुन	अहोरात्रं	०१।१०।३६।२८	३३।४१	५।१६	६।४४	४	१२	२५	शूलयोगमानं ५७।०१, रम्भातृतीया, पञ्चाग्निव्रत, महाराणाप्रताप जयन्ती, सर्वार्थसिद्धियोगः-प्रा.५।३८ या., रोहिण्यां रविः ५।३४। मुण्डनम्। मिथुने बुधः ३८।४०। पूर्वां विनायात्रा प्रा.५।३८ या.।
४	मं.	४५।१०	रा.११।२०	आर्द्रा	०२।०४	प्रा.६।०६	गण्ड	५४।०५	वणिज् १५।५६	मिथुन ४७।०१	रा.१२।०५	०१।११।३६।५२	३३।४२	५।१६	६।४४	५	१३	२६	श्रीगणेश ४ व्रतं, अग्निवासः रा.११।२० या., राज्यप्रदयोगः रा.११।२० या.। भद्रा १५।५६ तः ४५।१० या.। पश्चिमास्त शुक्रः१५।४७। दक्षिण-पश्चिमयात्रा।
५	बु.	४२।२६	रा.१०।१३	पुनर्वसु	०२।०१	प्रा.६।०३	वृद्धि	४६।१५	बव १३।४८	कर्क	अहोरात्रं	०१।१२।३४।१६	३३।४३	५।१५	६।४५	६	१४	२७	मुण्डनं, उत्तरां विनायात्रा पुष्ये प्रा.६।०३ उ.। शिववासः, अमृतयोगः रा.१०।१३ उ., उत्तरांविनायात्रा प्रा.६।०३ उ.।
६	गु.	३८।४२	रा.८।४४	पुष्य	००।५१	प्रा.५।३५	ध्रुव	४३।३७	कौलव १०।३४	कर्क५८।५१	रा.४।२७	०१।१३।३१।३१	३३।४४	५।१५	६।४५	७	१५	२८	आलेश्पा५८।०० रा.४।२७ उ.। शिववासः-अग्निवासः रा.८।४४ या., सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.५।३५ या., गुरुपुष्ययोगः प्रा.५।३५ या.। दक्षिणांविनायात्रा पुष्ये प्रा.५।३५ या.।
७	शु.	३४।०६	सा.६।५३	मघा	५५।५६	रा.३।३७	व्याघात्	३७।१६	गर ६।२४	सिंह	अहोरात्रं	०१।१४।२८।४६	३३।४६	५।१५	६।४५	८	१६	२९	अग्निवासः सा.६।५३ उ., मृत्युयोगः सा.६।५३ या.। भद्रा ३४।०६ उ.।
८	श.	२८।५१	दि.४।५६	पूर्वाफाल्गुनी	५२।२७	रा.०२।१३	हर्षण	३०।२२	भद्रा १।२६	सिंह	अहोरात्रं	०१।१५।२६।००	३३।४८	५।१४	६।४६	९	१७	३०	अग्निवासः दि.४।५६ या. ततः शिववासः,सिद्धियोगः दि.४।५६ उ.। भद्रा १।२६ या.। आर्द्रायां बुध ३६।३७। उत्तरयात्रा।
९	र.	२३।०५	दि.२।२८	उत्तराफाल्गुनी	४८।३२	रा.१२।३६	वज्र	२३।०५	कौलव २३।०५	सिंह६।२८	दि.७।४९	०१।१६।२३।१४	३३।५०	५।१४	६।४६	१०	१८	३१	पूर्व-दक्षिणयात्रा, शिववासः दि.२।२८ या., अग्निवासः, अमृतयोगः दि.२।२८ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१२।३६ उ.। ♋ सा.५।०६ या.। सौराठ-ससौलासभारम्भः। पुष्टशुक्रः४७।१५। उत्तरयात्रा अनुराधायाम्।
१०	चं.	१६।५८	दि.१२।०१	हस्त	४४।२३	रा.१०।५६	सिद्धि	१५।३२	गर १६।५८	कन्या	अहोरात्रं	०१।१७।२०।२८	३३।५१	५।१४	६।४६	११	१९	१	गंगादशहरा, गंगास्नानदानादिः, पृथिव्यां गंगावतरणं, श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्दर्शञ्च। मुण्डनं, दक्षिणयात्रा। अमृतयोगः दि [illegible] या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा४३।५३ उ.। दक्षिणयात्रा।
११	मं.	१०।४७	दि.६।३३	चित्रा	४०।१४	रा.६।२०	व्यतीपात्	०७।५२	भद्रा १०।४७	कन्या१२।१६	दि.१०।०६	०१।१८।१७।४२	३३।५२	५।१४	६।४६	१२	२०	२	निर्जलाएकादशी११ व्रतं सर्वेषां। शिववासः दि.६।३३ उ.,अग्निवासः,मृत्युयोगः दि.६।३३ या. ततः अमृतयोगः-दक्षिणपश्चिम[illegible]त्रा, द्विपुष्करयोगः दि.६।३३ तः रा.६।२० या.। भद्रा१०।४७ या.,पूर्वोदितः शुक्रः४७।१५।
१२	बु.	०४।४१	दि.७।०५	स्वाती	३६।१७	रा.७।४४	वरीयान्	००।१९	बालव ४।४१	तुला	अहोरात्रं	०१।१९।१४।५६	३३।५३	५।१३	६।४७	१३	२१	३	त्रयोदशीतिथिमानं ५४।११ रा.२।५३। त्रिविक्रम१२. प्रदोष१३ व्रतं. तिलोनपारणं. मुण्डनं त्रयोदश्यां दि.७।०५ उ.। शिववासः, सिद्धियोगः दि.७।०५ या. ततः मृत्युयोगः.
१४	गु.	५३।३३	रा.२।३८	विशाखा	३२।४६	सा.६।१९	शिव	४५।५८	गर २६।१३	तुला १८।३६	दि.१२।४१	०१।२०।१२।०३	३३।५४	५।१३	६।४७	१४	२२	४	परिघयोग ५२।३७। प्रदोष १४ व्रतं, विवाहः पूर्णिमायां रा.२।३८ उ.। भद्रा २३।३३ उ.। अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.२।३८ या. ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः सा.६।१९ उ., कृतिकायां शुक्रः ७।२०।
१५	शु.	४८।५४	रा.१२।४७	अनुराधा	२६।५०	सा.५।०६	सिद्ध	३६।४३	भद्रा २१।१४	वृश्चिक	अहोरात्रं	०१।२१।०६।१०	३३।५६	५।१३	६।४७	१५	२३	५	ज्यैष्ठीपूर्णिमा १५ स्नानदानादिः,साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, श्रीकबीरजयन्ती। सिद्धियोगः रा.१२।४७ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः सा.५।०६ या., भद्रा२१।१४ या.। कर्णवेधः, विवाहः अनुराधायां ♋

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ श.	१०।०६।५६।२२	०१।२६।०१।०२	०९।०५।४२।११	०१।१७।५१।०६	०९।०४।३७।४०	०८।०८।५६।२९	४६।४६	४।४७	६।४३	८।५६	११।१४	१३।३०	१५।४५	१८।०२	२०।१६	२२।२४	००।१०	१।४१	३।१०
२ र.	१०।१०।३६।३६	०१।२७।३३।०४	०९।०५।४०।४०	०१।१७।१५।०५	०९।०४।३५।५५	०८।०८।५३।१९	४६।५०	४।४३	६।३९	८।५२	११।१०	१३।२६	१५।४१	१७।५८	२०।१५	२२।२०	००।०६	१।३७	३।०६
३ चं.	१०।११।१६।४७	०१।२९।०२।५८	०९।०५।३८।५७	०१।१६।३७।४४	०९।०४।३४।०५	०८।०८।५०।०८	४६।५१	४।३९	६।३५	८।४८	११।०६	१३।२२	१५।३७	१७।५४	२०।११	२२।१६	००।०२	१।३३	३।०२
४ मं.	१०।११।५६।५४	०२।००।३०।३३	०९।०५।३७।०२	०१।१५।५९।१४	०९।०४।३२।०८	०८।०८।४६।५७	४६।५२	४।३५	६।३१	८।४४	११।०२	१३।१८	१५।३३	१७।५०	२०।०७	२२।१२	२३।५८	१।२९	२।५८
५ बु.	१०।१२।३६।५८	०२।०१।५५।४२	०९।०५।३४।५५	०१।१५।१९।५१	०९।०४।३०।०९	०८।०८।४३।४७	४६।५२	४।३१	६।२७	८।४०	१०।५८	१३।१४	१५।२९	१७।४६	२०।०३	२२।०८	२३।५४	१।२५	२।५४
६ गु.	१०।१३।१६।५९	०२।०३।१८।१२	०९।०५।३२।३५	०१।१४।३९।४९	०९।०४।२७।५७	०८।०८।४०।३६	४६।५२	४।२७	६।२३	८।३६	१०।५४	१३।१०	१५।२५	१७।४२	१९।५९	२२।०४	२३।५०	१।२१	२।५०
७ शु.	१०।१३।५६।५५	०२।०४।३७।५४	०९।०५।३०।०४	०१।१३।५९।२२	०९।०४।२५।४३	०८।०८।३७।२५	४६।५३	४।२३	६।१९	८।३२	१०।५०	१३।०६	१५।२१	१७।३८	१९।५५	२२।००	२३।४६	१।१७	२।४६
८ श.	१०।१४।३६।४८	०२।०५।५४।३४	०९।०५।२७।२०	०१।१३।१८।४८	०९।०४।२३।२३	०८।०८।३४।१४	४६।५४	४।१९	६।१५	८।२८	१०।४६	१३।०२	१४।१९	१७।३४	१९।५१	२१।५६	२३।४२	१।१३	२।४२
९ र.	१०।१५।१६।३७	०२।०७।०८।०९	०९।०५।२४।२५	०१।१२।३८।२८	०९।०४।२०।५८	०८।०८।३१।०४	४६।५५	४।१५	६।११	८।२४	१०।४२	१२।५८	१५।१३	१७।३०	१९।४७	२१।५२	२३।३८	१।०९	२।३८
१० चं.	१०।१५।५६।२२	०२।०८।१८।००	०९।०५।२१।१८	०१।११।५८।३७	०९।०४।१८।२७	०८।०८।२७।५३	४६।५६	४।११	६।०७	८।२०	१०।३८	१२।५४	१५।०९	१७।२६	१९।४३	२१।४८	२३।३४	१।०५	२।३४
११ मं.	१०।१६।३६।०२	०२।०९।२४।१८	०९।०५।१७।६०	०१।११।१९।३०	०९।०४।१५।५०	०८।०८।२४।४२	४६।५७	४।०७	६।०३	८।१६	१०।३४	१२।५०	१५।०५	१७।२२	१९।३९	२१।४४	२३।३०	१।०१	२।३०
१२ बु.	१०।१७।१५।३८	०२।१०।२६।४०	०९।०५।१४।२९	०१।१०।४१।२३	०९।०४।१३।०८	०८।०८।२१।३२	४६।५७	४।०३	५।५९	८।१२	१०।३०	१२।४६	१५।०१	१७।१८	१९।३५	२१।४०	२३।२६	०।५७	२।२६
१४ गु.	१०।१७।५५।०९	०२।११।२४।४९	०९।०५।१०।४८	०१।१०।०४।२८	०९।०४।१०।२१	०८।०८।१८।२१	४६।५७	३।५९	५।५५	८।०८	१०।२६	१२।४२	१४।५७	१७।१४	१९।३१	२१।३६	२३।२२	०।५३	२।२२
१५ शु.	१०।१८।३४।३५	०२।१२।१८।३०	०९।०५।०६।५५	०१।०९।२८।५८	०९।०४।०७।२८	०८।०८।१५।१०	४६।५८	३।५५	५।५१	८।०४	१०।२२	१२।३८	१४।५३	१७।१०	१९।२७	२१।३२	२३।१८	०।४९	२।१८

५ बुधे वल्ली८।३६।३५।२८
अयनांशाः २२।४८।५६

राश्यादि (chart): ४ शु.सू. | २ | ल.१ मं. | रा५ बु. | ३ | ६ चं. | गु.१२ श | ७ | ९ | ११ | ८ | १० | के.

१२ बुधे वल्ली८।३६।३५।३५
अयनांशाः २२।४८।५७

राश्यादि (chart): ४ शु.सू. | २ | मं ल.१ | रा५ बु. | ३ | ६ | गु.१२ श | ७ | ९ चं. | ११ | ८ | १० | के.

दशपापानि-पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात् तस्मात् दशहरा स्मृता। **विविधः-ज्येष्ठमासे दानवस्तुनि** वामनपुराणे- उदक्कुम्भं जलं धेनुरतालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च। **गंगादशहरा** वाराहपुराणे- दशमीशुक्लपक्षेतु ज्येष्ठेमासे कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वारा हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता। **दशहरायां दशयोगाः,स्कन्दे**-ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरःस्नात्वा सर्व पापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	श.	प्रा.५:१५–६:५७ ।दि.१:४२–३:२३ ।सं.५:०४–६:४५।	स.६:४५–८:०४ ।रा.१:२०–२:३८ ।रा.३:५७–५:१४
२	र.	दि.१०:२०–१:४२।	रा.१०:४२–१२:०१ ।रा.१:२०–२:३६।
३	चं.	दि.६:५७–८:३६ ।दि.३:२३–५:०४।	रा.१०:४२–१२:०१ ।रा.२:३८–३:५७।
४	मं.	दि.६:५६–८:३८ ।दि.१:४३–३:२४।	रा.८:०५–९:२४।
५	बु.	दि.८:३८–१०:२० ।दि.१२:०२–१:४३।	रा.१२:०२–१:२० ।रा.२:३८–३:५६।
६	गु.	दि.३:२४–६:४६।	रा.१२:०२–१:२० ।रा.३:५६–५:१४।
७	शु.	दि.८:३८–१२:०२।	रा.९:२४–१०:४३।
८	श.	प्रा.५:१४–६:४६ ।दि.१:४३–३:२४ ।सं.५:०५–६:४६।	सं.६:४६–८:०५ ।रा.१:२०–२:३८ ।रा.३:५६–५:१३
९	र.	दि.१०:१९–१:४३।	रा.१०:४३–१२:०१ ।रा.१:१९–२:३७।
१०	चं.	दि.६:५५–८:३७ ।दि.३:२५–५:०६।	रा.१०:४३–१२:०१ ।रा.२:३७–३:५५।
११	म.	दि.६:५५–८:३७ ।दि.१:४३–३:२५।	रा.८:०६–९:२५।
१२	बु.	दि.८:३६–१०:५८ ।दि.१२:००–१:४२।	रा.१२:००–१:१८ ।रा.२:३६–३:५४।
१४	गु.	दि ३:२४–६:४८।	रा.१२:००–१:१८ ।रा.३:५४–५:१२।
१५	शु.	दि.८:३६–१२:००।	रा.९:२४–१०:४२।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघाः- ज्येष्ठा/मूल

• पूजा निर्णय-

देवकार्याणि पूर्वाह्ने मनुष्याणां च मध्याह्ने।
पितृणामपराह्ने च कार्याण्येतानि यत्नतः।।

अथ- देवताक पूजा प्रातः कालमे, ऋषिलोकनिक मध्याह्न कालमे, एवं पितर लोकनिक मध्याहन् पश्चात् करी।

देवपूजा विधि :-

कोनो पूजा सँ पूर्व सूर्यादिपञ्चदेवता आ विष्णुक पूजा करब आवश्यक अछि। जेना कि कहल गेल अछि-

गणेशं च दिनेशं च वह्निं विष्णुं शिवं शिवाम्।
सम्पूज्य संयतोऽग्रे च ततोऽभीष्टं प्रपूजयेत्।।
(ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, प्रकृतिखण्ड, अध्याय-४, श्लोकसंख्या-३६)

शिवो वह्निर्गणेशश्च दुर्गा सूर्यस्तथैव च।
पञ्च देवा इमे ख्याताः पूज्याः सर्वेषु कर्मसु।।(ब्रह्मपुराण)

सूर्यादिपञ्चदेवता के अन्तर्गत- (१) गणेश (२) सूर्य (३) अग्नि (४) शिव (५) शिवा (दुर्गा) ई पाँच देवता अबैत छैथ। राति मे सूर्यादि-पंचदेवताक स्थान पर गणपत्यादिपञ्चदेवताक पूजा होइछ।

यद्यपि- **आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्।**
पञ्चदैवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

मत्स्यपुराणक एहि वचनमे सूर्यादिपञ्चदेवता मे अग्नि के स्थान पर विष्णुक नाम उल्लेखित अछि। मुदा सूर्यादिपञ्चदेवता के पूजाक वाद विष्णुपूजाक प्रचलित परम्परा के देखैत ब्रह्मवैवर्त पुराण आ ब्रह्मपुराण क वचनानुसार गणेश, सूर्य, अग्नि, शिव आ दुर्गा के सूर्यादिपञ्चदेवता मानल जाइत छैक।

नित्यकृत्य सम्पन्न भेलाक वाद पवित्र स्थान मे आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख वैसि देवतानुसार नैवेद्य मे चाननसहित-फूल दए यदि पार्थिव शिवलिंगक पूजा कर्तव्य हो तऽ ओकर अलग पात्र मे नैवेद्य लगा ओहि पर चाननसहित-फूल दए दी। तत्पश्चात् यथोपलब्ध पूजा-सामग्री सँ पितरिया सराइ मे अथवा केराक पात पर सूर्यादि-पंचदेवता आ आन देवताक पूजा आ ताम्रपात्र मे विष्णु पूजा करी। पूजाकाल मे जलपात्र आ धूप के वामभाग मे आ अर्घा-पंचपात्र, अक्षत, तिल, चानन, तुलसीपात कें अपन आगू राखी। नैवेद्य, फूल आ दीप कें दहिन भाग मे राखी। आन पूजोपकरण कें अपन सुविधानुसार वाम, दक्षिण वा अग्रभाग मे राखी। शंख के भूमि पर नहि राखी आ ओकरा जल मे नहि डुबावी, अर्घा सँ शंख मे जल दी। जलपूर्ण शंख मे तुलसीपात दए ओकरा तेपाई पर राखी। पहिने सूर्यादिपञ्चदेवताक पूजा करी।

नैवेद्यक सम्बन्ध :-गीता२,अध्याय१२,श्लोक१३।

श्रीकृष्ण भगवान् कहै छथि, जे व्यक्ति हमर देल वस्तु हमरा अर्पण नहि कय स्वतः स्वयं भक्षण करेत छथि से चोर थिकाह।

ईष्टान्भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तान्नप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः।।

आषाढकृष्णपक्षः

शक१९४२, संवत्२०७७, सन् १४२७, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः। पश्चिमे कालः।
दिनांक ६ जूनतः २१ यावत् सन्२०२० इ। शुद्धः। वक्री गुरुः पूर्वोदितः; वक्री शुक्रः पूर्वोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधः पश्चिमोदितः।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	
१	श.	४५।०६	रा.११।१५	ज्येष्ठा	२७।४५	दि.४।१९	साध्य	३३।४८	बालव १७।००	वृश्चिक २७।४५	दि.४।१९	०१।२२।०६।१७	३३।५७	५।१३	६।४७	१६	२४	६	विल्वमाषाढके त्यजेत्। शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः। वधूप्रवेशः। वधूप्रवेशः, उत्तर-पश्चिमयात्रा।
२	र.	४२।१५	रा.१०।०६	मूल	२६।३०	दि.३।४८	शुभ	२८।५१	तैतिल १३।४१	धनु	अहोरात्रं	०१।२३।०३।२४	३३।५८	५।१२	६।४८	१७	२५	७	विवाहः मूले दि.३।४८ या.। पूर्व-उत्तरयात्रा। अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः, सिद्धियोगः रा.१०।०६ उ.। पूर्वामाद्रे मंगल १०।२०। पूर्व-उत्तरयात्रा।
३	चं.	४०।३७	रा.९।२७	पूर्वाषाढ़ा	२६।२६	दि.३।४८	शुक्ल	२४।४५	वणिज् ११।२६	धनु ४१।४३	रा.६।५३	०१।२४।००।३१	३३।५९	५।१२	६।४८	१८	२६	८	शिववासः, अग्निवासः, **मृगशीर्षे रविः४।२६ दि.६।४६। गृहारम्भ** उत्तराषाढायां दि.३।४९ उ.। भद्रा ११।२६ तः४०।३७ या.। उत्तरयात्रा।
४	मं.	४०।१२	रा.९।१७	उत्तराषाढ़ा	२७।२६	दि.४।१०	ब्रह्म	२१।४०	वव १०।२५	मकर	अहोरात्रं	०१।२४।५७।३७	३४।००	५।१२	६।४८	१९	२७	९	विघ्नराज ४ **व्रतं,** शिववासः, अग्निवासः, उत्तरांविनायात्रा श्रवणे दि.४।१० उ.।
५	बु.	४१।०४	रा.९।३८	श्रवण	२९।४८	सा.५।०७	ऐन्द्र	१९।३४	कौलव१०।३८	मकर	अहोरात्रं	०१।२५।५४।४३	३४।०१	५।१२	६।४८	२०	२८	१०	**मुण्डनं, विवाहः** दिवारात्री, कर्णवेधः, उत्तरविनायात्रा। **गृहारम्भः,** शिववासः, अमृतयोगः रा.९।३८ उ.,पञ्चकारम्भः(**मदवा**) सा.५।०७ उ.।
६	गु.	४३।११	रा.१०।२८	धनिष्ठा	३३।२४	सा.६।३४	वैधृति	१८।३१	गर१२।०८	मकर १।३६	प्रा.५।५०	०१।२६।५१।४३	३४।०२	५।१२	६।४८	२१	२९	११	अग्निवासः, भद्रा४३।११ उ.। **विवाहः** धनिष्ठायां सा.६।३४ या.। भद्रा ४३।११ उ.। **सौराठ-ससौला वैवाहिक सभासमाप्तिः।**
७	शु.	४६।२७	रा.११।४६	शतभिषा	३८।०२	रा.८।२४	विष्कुम्भ	१८।१९	भद्रा१४।४९	कुम्भ	अहोरात्रं	०१।२७।४८।४३	३४।०४	५।११	६।४९	२२	३०	१२	मृत्युयोगः रा.११।४६ या.। भद्रा १४।४९ या.।
८	श.	५०।३७	रा.१।२६	पूर्वाभाद्रपद	४३।४६	रा.१०।४१	प्रीति	१९।००	बालव १८।३२	कुम्भ २७।२०	दि.४।०७	०१।२८।४५।४३	३४।०६	५।११	६।४९	२३	३१	१३	शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.१।२६ उ., पश्चिमयात्रा,
९	र.	५५।२९	रा.३।२२	उत्तराभाद्रपद	५०।०५	रा.१।१२	आयुष्यमान	२०।१३	तैतिल २३।०३	मीन	अहोरात्रं	०१।२९।४२।४३	३४।०८	५।१०	६।५०	२४	३२	१४	मासान्तः। **आर्द्रास्थे सूर्ये पितृतृप्तिकरं नवोदकनिमित्तकपार्वणं विधेयम्।** ← **पञ्चकसमाप्तिः(मदवा)** रा.३।५० उ.। भद्रा २८।०१ उ.।
१०	चं.	६०।००	अहोरात्रं	रेवती	५६।४०	रा.३।५०	सौभाग्य	२१।५२	वणिज्२८।०१	मीन ५६।४०	रा.३।५०	०२।००।३९।४२	३४।०९	५।१०	६।५०	२५	१	१५	अग्निवासः, अमृतयोगः, **मिथुनेरविः ५।१० दि.७।१० षडशीतिसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.७।१०४ तः१।३८ यावत् पुण्याह।** ने.आषाढ़मासारम्भः।←
१०	मं.	००।३३	प्रा.५।२३	अश्विनी	६०।००	अहोरात्रं	शोभन	२३।३१	भद्रा ००।३३	मेष	अहोरात्रं	०२।०१।३६।४१	३४।१०	५।१०	६।५०	२६	२	१६	मासादिः। शिववासः प्रा.५।२३ उ., मृत्युयोगः प्रा.५।२३ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः। भद्रा ०।३३ या.।
११	बु.	०५।२६	दि.७।२०	अश्विनी	०३।०४	प्रा.६।२४	अतिगण्ड	२४।५५	बालव ५।२६	मेष	अहोरात्रं	०२।०२।३३।४०	३४।११	५।१०	६।५०	२७	३	१७	योगिनीएकादशी ११ **व्रतं सर्वेषाम्।** शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः दि.७।२० या. ततः सिद्धियोगः, उत्तरां विनायात्रा अश्विन्यां।
१२	गु.	०९।४२	दि.९।०३	भरणी	०८।५६	दि.८।४४	सुकर्मा	२५।५०	तैतिल ९।४२	मेष २५।११	दि.३।१५	०२।०३।३०।३५	३४।१२	५।१०	६।५०	२८	४	१८	यवचूर्णेन पारणं,**प्रदोष१३ व्रतं,** शिववासः दि.९।०३ या. ततः अमृतयोगः,
१३	शु.	१३।०९	दि.१०।२६	कृत्तिका	१३।५७	दि.१०।४५	धृति	२४।५९	वणिज् १३।०९	वृष	अहोरात्रं	०२।०४।२७।३०	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	५	१९	**प्रदोष १४ व्रतं,** अग्निवासः, अमृतयोगः दि.१०।२६ उ., भद्रा १३।०९ तः ४४।०७ या.। ◆**सूर्यग्रहण स्पर्श दि.१०।१९ मोक्ष दि.२।०५**
१४	श.	१५।२५	दि.११।२०	रोहिणी	१७।४८	दि.१२।१७	शूल	२५।१४	शकुनी१५।२५	वृष ४९।१०	रा.१२।५०	०२।०५।२४।२५	३४।१२	५।१०	६।५०	३०	६	२०	शिववासः दि.११।२० उ., सिद्धियोगः दि.११।२० या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।१७ या.। मकस्थगुरुनिचांशगतदोषारम्भः३२।१३।
३०	र.	१६।२९	दि.११।४६	मृगशिरा	२०।३१	दि.१।२२	गण्ड	२३।२९	नाग१६।२९	मिथुन	अहोरात्रं	०२।०६।२१।२०	३४।१२	५।१०	६।५०	३१	७	२१	आषाढी अमावस्या स्नानदानादिः,भौमवत्तीअमावस्या, पाप वारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। शिववासः दि.११।४६ या., अग्निवासः,अमृतयोगः दि.११।४६ या. ततः मृत्युयोग। ◆

५ बुधे वल्ली८।३९।३५।४२
अयनांशाः २२।४८।५८

	४ शु.सु		२
रा५ बु		३	मं ल.१
	६	गु.१२ श चं.	
७		९	११
	८	१०	

११ बुधे वल्ली८।३९।३५।४९
अयनांशाः २२।४८।५९

	४ शु.		२
रा५ बु सु		३ चं.	मं ल.१
	६	गु.१२ श	
७		९	११
	८	१०	

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ श.	१०।१९।१३।५६	०२।१३।०७।२६	०९।०५।०२।५१	०१।०८।५५।०६	०९।०४।०४।३०	०८।०८।११।६०	४६।[illegible]
२ र.	१०।१९।५३।१२	०२।१३।५१।१८	०९।०४।५८।३६	०१।०८।२३।०२	०९।०४।०१।२७	०८:०८:०८।४६	४७।००
३ चं.	१०।२०।३२।२२	०२।१४।२९।५१	०९।०४।५४।११	०१।०७।५२।५५	०९।०३।५८।१९	०८।०८।०५।३८	४७।०१
४ मं.	१०।२१।११।२६	०२।१५।०२।४७	०९।०४।४९।३४	०१।०७।२४।५५	०९।०३।५५।०६	०८।०८।०२।२७	४७।०१
५ बु.	१०।२१।५०।२५	०२।१५।२९।४८	०९।०४।४४।४७	०१।०६।५९।०८	०९।०३।५१।४८	०८।०७।५९।१७	४७।०१
६ गु.	१०।२२।२९।१८	०२।१५।५०।४१	०९।०४।३९।५०	०१।०६।३५।४१	०९।०३।४८।२५	०८।०७।५६।०६	४७।०१
७ शु.	१०।२३।०८।०४	०२।१६।०५।११	०९।०४।३४।४३	०१।०६।१४।३७	०९।०३।४४।५८	०८:०७।५२।५५	४७०२
८ श.	१०।२३।४६।४४	०२।१६।१३।०७	०९।०४।२९।२५	०१।०५।५६।०२	०९।०३।४१।२७	०८।०७।४९।४४	४७।०३
९ र.	१०।२४।२५।१७	०२।१६।१४।२२	०९।०४।२३।५८	०१।०५।३९।५७	०९।०३।३७।५१	०८।०७।४६।३४	४७।०४
१० चं.	१०।२५।०३।४३	०२।१६।०८।५१	०९।०४।१८।२१	०१।०५।२६।२४	०९।०३।३४।१०	०८।०७।४३।२३	४७।०५
१० मं.	१०।२५।४२।०१	०२।१५।५६।३९	०९।०४।१२।३५	०१।०५।१५।२३	०९।०३।३०।२६	०८।०७।४०।१२	४७।०६
११ बु.	१०।२६।२०।१३	०२।१५।३७।५३	०९।०४।०६।४०	०१।०५।०६।५६	०९।०३।२६।३७	०८।०७।३७।०२	४७।०६
१२ गु.	१०।२६।५८।१६	०२।१५।१२।५०	०९।०४।००।३६	०१।०५।०१।००	०९।०३।२२।४५	०८।०७।३३।५१	४७।०६
१३ शु.	१०।२७।३६।१२	०२।१४।४१।५६	०९।०३।५४।२४	०१।०४।५७।३५	०९।०३।१८।४८	०८।०७।३०।४०	४७।०६
१४ श.	१०।२८।१३।५९	०२।१४।०५।४३	०९।०३।४८।०३	०१।०४।५६।३८	०९।०३।१४।४८	०८।०७।२७।२९	४७।०६
३० र.	१०।२८।५१।४६	०२।१३।२६।३०	०९।०३।४१।४२	०१।०४।५५।४१	०९।०३।१०।४८	०८।०७।२४।१८	४७।०६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ श.	३।५१	५।४७	८।००	१०।१८	१२।३४	१४।४६	१७।०६	१९।२३	२१।२८	२३।१४	०।४५	२।१४
२ र.	३।४७	५।४३	७।५६	१०।१४	१२।३०	१४।४५	१७।०२	१९।१९	२१।२४	२३।१०	०।४१	२।१०
३ चं.	३।४३	५।३९	७।५२	१०।१०	१२।२६	१४।४१	१६।५८	१९।१५	२१।२०	२३।०६	०।३७	२।०६
४ मं.	३।३९	५।३५	७।४८	१०।०६	१२।२२	१४।३७	१६।५४	१९।११	२१।१६	२३।०२	०।३३	२।०२
५ बु.	३।३५	५।३१	७।४४	१०।०२	१२।१८	१४।३३	१६।५०	१९।०७	२१।१२	२२।५८	०।२९	१।५८
६ गु.	३।३१	५।२७	७।४०	९।५८	१२।१४	१४।२९	१६।४६	१९।०३	२१।०८	२२।५४	०।२५	१।५४
७ शु.	३।२७	५।२३	७।३६	९।५४	१२।१०	१४।२५	१६।४२	१८।५९	२१।०४	२२।५०	०।२१	१।५०
८ श.	३।२३	५।१९	७।३२	९।५०	१२।०६	१४।२१	१६।३८	१८।५५	२१।००	२२।४६	०।१७	१।४६
९ र.	३।१९	५।१५	७।२८	९।४६	१२।०२	१४।१७	१६।३४	१८।५१	२१।००	२२।४२	०।१३	१।४२
१० चं.	३।१४	५।१०	७।२३	९।४१	११।५७	१४।१२	१६।२९	१८।४६	२०।५६	२२।३७	०।०८	०।३७
१० मं.	३।१०	५।०६	७।१९	९।३७	११।५३	१४।०८	१६।२५	१८।४२	२०।५१	२२।३३	०।०४	१।३३
११ बु.	३।०६	५।०२	७।१५	९।३३	११।४९	१४।०४	१६।२१	१८।३८	२०।४७	२२।२९	००।००	१।२९
१२ गु.	३।०२	४।५८	७।११	९।२९	११।४५	१४।००	१६।१७	१८।३४	२०।४३	२२।२५	२३।५६	१।२५
१३ शु.	२।५८	४।५४	७।०७	९।२५	११।४१	१३।५६	१६।१३	१८।३०	२०।३९	२२।२१	२३।५२	१।२१
१४ श.	२।५४	४।५०	७।०३	९।२१	११।३७	१३।५२	१६।०९	१८।२६	२०।३५	२२।१७	२३।४८	१।१७
३० र.	२।५०	४।४६	६।५९	९।१७	११।३३	१३।४८	१६।०५	१८।२२	२०।३१	२२।१३	२३।४४	१।१३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	प्र.५:१२-६:५४ दि.१:४२-३:२४ सं.५:०६-६:४८।	सं.६:४८-८:०६ रा.१:१८-२:३६ रा.३:५४-५:११
२ र.	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.१:१९-२:३७।
३ चं.	दि.६:५४-८:३७ दि.३:२५-५:०७।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.२:३७-३:५४।
४ मं.	दि.६:५४-८:३७ दि.१:४३-३:२५।	रा.८:०७-९:२५।
५ बु.	दि.८:३७-१०:१९ दि.१२:०१-१:४३।	रा.१२:०१-१:१९ रा.२:३७-३:५४।
६ गु.	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:०२-१:१९ रा.३:५३-५:१०।
७ शु.	दि.८:३६-१२:०२।	रा.९:२६-१०:४४।
८ श.	प्र.५:१०-६:५३ दि.१:४४-३:२६ सं.५:०८-६:५०।	सं.६:५०-८:०८ रा.१:१९-२:३६ रा.३:५३-५:१०
९ र.	दि.१०:१९-१:४४।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.१:१९-२:३६।
१० चं.	दि.६:५३-८:३६ दि.३:३६-५:०८।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.२:३६-३:५३।
१० मं.	दि.६:५३-८:३६ दि.१:४४-३:२६।	रा.८:०८-९:२६।
११ बु.	दि.८:३६-१०:१९ दि.१२:०२-१:४४।	रा.१२:०२-१:१९ रा.२:३६-३:५३।
१२ गु.	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:०२-१:१९ रा.३:५३-५:१०।
१३ शु.	दि.८:३६-१२:०२।	रा.९:२६-१०:४४।
१४ श.	प्र.५:१०-६:५३ दि.१:४४-३:२६ सं.५:०८-६:५०।	सं.६:५०-८:०८ रा.१:१९-२:३६ रा.३:५३-५:१०
३० र.	दि.१०:१९-१:४४।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.१:१९-२:३६।

[illegible]विधः-**ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचारः**-बुधः शुक्र समीपस्थः करोत्येकार्णवा महीं। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्। पुरतः पृष्ठतो भानुःशुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेते प्रतिलोमगा। [illegible] चाग्ने गव्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवावृष्टिश्शनैश्चरे। वारिपूर्णां महींकृत्वा [illegible]। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते। **सूर्यनक्षत्राणि**-रोहिणी-मृगशिरा पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा- स्वाती - विशाखा-अनुराधा- ज्येष्ठा-मूल- शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **एतत्फलम**-चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणां **पुरूष[illegible]संज्ञा**-मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरूषसंज्ञकानि, आद्रार्दिदश स्त्रीसंज्ञकानि,विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः।

मूलविचारः- **ज्येष्ठा/मूल** ति.२ रवि दि.३।४८ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.९ सोम रा.१।१२ तः ति.११ बुध प्रा.६।४४ यावत्।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

अर्थात् यज्ञसँ शेष बाँचल अन्न खायवाला श्रेष्ठ पुरुष सब पापसँ मुक्त भऽ जाइत छथि। जे पापी अपन शरीर पोषणक हेतु पकबै छथि से पापकेँ भक्षण करैत छथि।

भोजन विधि :-

हस्त-पाद प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कय भोजनक स्थानमे आसनपर बैसि जल लय चतुष्कोन मण्डल करी, तकर मध्यमे परसल अन्न हर्षपूर्वक देखि- **ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धावनामासि प्रियन्देवानामन धृष्टन्देवयजन्मसि**
ई मन्त्र पढ़ि प्रणाम कय दहिना भागमे जाहि रूपेँ कुलाचार हो तदनुसार नैवेद्य राखि उत्सर्ग करी, बहुत वयक्ति ९ ठाम नैवेद्य राखि- **ॐ विष्णवे नमः, ॐ दुर्गादिव्यै नमः, ॐ गणपतये नमः। ॐ इन्द्राय नमः, ॐ चन्द्राय नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ वसुभ्यो नमः।** एहि मन्त्रैं उत्सर्ग करैत छथि।
ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। एहि मन्त्रैं जलप्राशन कय-
ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।
एहि मन्त्रैं पंचग्रास कय यथारुचि भोजन कय-
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।।
एहि मन्त्रैं पुनः जलप्राशन करी। अतः पर उठि विशेष रूपें हस्त ओ मुखक प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कए दहिना पैरक अंगुठाक मूल पर- **ॐ अंगुष्ठमात्रः पुरुषो अंगुष्ठं च समाश्रितः।**
ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुक्।।
एहि मन्त्रैं जलप्रक्षेप कए-
ॐ विष्णुः समस्तेन्द्रियदेहिदेहे प्रधानभूतो भगवान्यथैकः।
सत्येन तनन्नमशेषमेतदारोग्यदं मे परिणाममेतु।।
ॐ विष्णुरातो यथैवान्नं परिणामव्व वै यथा।
सत्येन तेन मद्भुक्तं जीर्य्यत्वन्नमिदं तथा।
एहि दुई मन्त्रैं उदर स्पर्श कए मुखशुद्धि ताम्बूलादि ग्रहण कए संध्याकाल मे सन्ध्यावन्दन कए पहरक बाद भोजन करी।

आषाढशुक्लपक्षः

शक१९४२, संवत्२०७७, सन् १४२७, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः। पश्चिमे कालः।
दिनांक २२ जूनतः ५ जुलाई यावत् सन्२०२० इ। अशुद्धः। वक्री गुरुः पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पूर्वोदितः; मार्गी शनिः पूर्वोदितः; मार्गी कुजः पूर्वोदितः; मार्गी बुधः पश्चिमोदितः

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द. प.	समा.कालः घं. मि.	योगाः	योगः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	
१	चं.	१६।१३	दि.११।३९	आर्द्रा	२१।५६	दि.१।५६	वृद्धि	२०।४३	वव १६।१३	मिथुन	अहोरात्रं	०२।०७।१८।१४	३४।१२	५।१०	६।५०	३२	८	२२	ग्रीष्मनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, चन्द्रदर्शनं मु.३०सौम्यश्रृंगफलं साम्यम्। अग्निवासः दि.११।३६ या. ततः शिववासः, सिद्धियोगः दि.११।३६या. ततः मृत्युयोगः, आर्द्रायां रविः ६।४६ दि.७।५२।★
२	मं.	१४।४३	दि.११।०३	पुनर्वसु	२२।०७	दि.२।०१	ध्रुव	१६।५७	कौलव १४।४३	मिथुन ७।०४	दि.८।००	०२।०८।१५।०८	३४।१२	५।१०	६।५०	१	९	२३	जगन्नाथरथयात्रा,समुद्रस्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनं, शिववासः दि.११।०३ या. ततः अग्निवासः, अमृतयोगः दि.११।०३ या. ततः सिद्धियोगः। उत्तरां विनायात्रा पुष्ये। ★ मीनेमङ्गलः४९।३४
३	बु.	१२।०२	दि.९।५६	पुष्य	२१।०९	दि.०१।३८	व्याघात्	१२।१६	गर १२।०२	कर्क	अहोरात्रं	०२।०९।१२।०८	३४।१२	५।१०	६।५०	२	१०	२४	श्रीगणेश ४ व्रतं। मुण्डनं तृतीयायां दि.६।५६ या.। अग्निवासः दि.६।५६ या., मृत्युयोगः दि.६।५६ या. उत्तरां विनायात्रा दि.१।३८ या.। भद्रा ४०।१२ उ.।
४	गु.	०८।२२	दि.८।३१	आश्लेषा	१९।१६	दि.१२।५२	हर्षण	०६।४९	भद्रा ८।२२	कर्क १९।१६	दि.१२।५२	०२।१०।०८।५४	३४।१२	५।१०	६।५०	३	११	२५	शिववासः-अग्निवासः दि.८।३१ उ., मृत्युयोगः दि.८।३१ या. ततः सिद्धियोगः। भद्रा८।२२ या.।
५	शु.	०३।४८	प्रा.६।४१	मघा	१६।३१	दि.११।४६	वज्र	००।३६	वालव ३।४८	सिंह	अहोरात्रं	०२।११।०५।४६	३४।११	५।१०	६।५०	४	१२	२६	षष्ठितिथिमानं ५४।४१ रा.३।०३। सिद्धियोगः५३।१४ शिववासः, अग्निवासः प्रा.६।४१ या., सिद्धियोगः प्रा.६।४१ उ.,
७	श.	५२।४२	रा.२।१५	पूर्वाफाल्गुनी	१३।०७	दि.१०।२५	व्यतीपात्	४६।३७	गर २५।३६	सिंह २७।०९	दि.४।०१	०२।१२।०२।३७	३४।१०	५।१०	६।५०	५	१३	२७	अग्निवासः, त्रिपुष्करयोगः दि.१०।२५ तः रा.२।१५ या., भद्रा५४।१३ उ.।
८	र.	४६।३५	रा.११।४५	उत्तराफाल्गुनी	०९।१३	दि.८।५१	वरीयान्	३९।०५	भद्रा १९।३९	कन्या	अहोरात्रं	०२।१२।५९।२८	३४।०९	५।१०	६।५०	६	१४	२८	भद्रा१९।३६ या.। करमूले पुलिकमूलबन्धनं, महाष्टमीव्रतं, सिद्धियोगः रा.११।४५ या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।५१ उ., उत्तरभाद्रेमङ्गलः१५।३४।
९	चं.	४०।२०	रा.९।१८	हस्त	०५।०८	दि.७।१३	परिघ	३१।२६	वव १३।२८	कन्या ३३।०२	सा.६।२३	०२।१३।५६।१९	३४।०८	५।१०	६।५०	७	१५	२९	महानवमी व्रतं। पश्चिमयात्रा, शिववासः,अग्निवासः,अमृतयोगः रा.९।१८ उ.। उत्तरभाद्रे मंगल १५।२५।← सर्वार्थसिद्धियोगः रा.२।२८ उ.,
१०	मं.	३४।१३	सा.६।५२	चित्रा	००।५६	प्रा.५।३३	शिव	२३।५२	तैतिल ७।१७	तुला	अहोरात्रं	०२।१४।५३।१०	३४।०७	५।११	६।४९	८	१६	३०	स्वातीनक्षत्रमानं ५५।५८ रा.३।३४, विजयादशमी, नवरात्रव्रतस्य पारणं, देवीविसर्जनं, रैवतमन्वादिः। अग्निवासः सा.६।५२ उ., मृत्युयोगः सा.६।५२ उ., मृगशिरायां बुधः ४।१३।
११	बु.	२८।२०	दि.४।३१	विशाखा	५३।१४	रा.२।२८	सिद्ध	१६।२६	चध्सिज् १।१७	तुला ३९।०९	रा.८।५१	०२।१५।५०।०१	३४।०६	५।११	६।४९	९	१७	१	हरिशयनीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। चातुर्मास्यव्रतारम्भः। भद्रा १।१७ तः२८।२० उ., पश्चिमां विनायात्रा। अग्निवासः दि.४।३१ या. ततः शिववासः, अमृतयोगः दि.४।३१ या. ततः सिद्धियोगः, ←
१२	गु.	२२।५७	दि.२।२२	अनुराधा	५०।०७	रा.१।१४	साध्य	०८।२३	वसलच २२।५७	वृश्चिक	अहोरात्रं	०२।१६।४६।५२	३४।०४	५।११	६।४९	१०	१८	२	वासुदेव१२, यवचूर्णेनपारणं, प्रदोष १३ व्रत। शिववासः, अग्निवासः दि.२।२२ उ., अमृतयोगः दि.२।२२ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१।१४ या.,
१३	शु.	१८।१२	दि.१२।२९	ज्येष्ठा	४७।५१	रा.१२।२०	शुभ	०२।५१	तैतिल १८।१२	वृश्चिक ४७।५१	रा.१२।२०	०२।१७।४३।४३	३४।०२	५।१२	६।४८	११	१९	३	शुक्लयोग५४।०६, प्रदोष १४ व्रतं, शिववासः-अग्निवासः दि.१२।२८ या., अमृतयोगः दि.१२।२८ उ.,
१४	श.	१४।१८	दि.१०।५५	मूल	४६।२२	रा.११।४२	ब्रह्म	५१।५०	चध्सिज् १४।१८	धनु	अहोरात्रं	०२।१८।४०।३४	३४।००	५।१२	६।४८	१२	२०	४	व्रतादौपूर्णिमा, अग्निवासः दि.१०।५५ उ.,, सिद्धियोगः, राज्यप्रयोगश्च दि.१०।५५ या. ततः मृत्युयोगः। भद्रा १४।२८ तः ४२।५१ या.।
१५	र.	११।२३	दि.९।४५	पूर्वाषाढ़ा	४५।५७	रा.११।३५	ऐन्द्र	४७।३३	वव ११।२३	धनु	अहोरात्रं	०२।१९।३७।२५	३३।५८	५।१२	६।४८	१३	२१	५	आषाढीपूर्णिमा१५ स्नानदानादिः, गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं, चाक्षुपमन्वादिः, सन्१४२८ सालसंज्ञकवर्षारंभ, अमृतयोगः दि.९।४५ या. ततः मृत्युयोगः। करमूले पुलिकमूलबन्धनं,

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ चं.	१०।२९।२६।०८	०२।१२।४०।२४	०९।०३।३४।५८	०१।०५।०२।००	०९।०३।०६।३८	०८।०७।२१।०८	४७।०६
२ मं.	११।००।०६।२६	०२।११।५३।०७	०९।०३।२८।१३	०१।०५।०८।१३	०९।०३।०२।२८	०८।०७।१७।५७	४७।०६
३ बु.	११।००।४३।४०	०२।११।०४।१०	०९।०३।२१।२२	०१।०५।१९।४२	०९।०२।५८।१४	०८।०७।१४।४६	४७।०६
४ गु.	११।०१।२०।४१	०२।१०।१४।४४	०९।०३।१४।२३	०१।०५।२७।२४	०९।०२।५३।५८	०८।०७।११।३६	४७।०६
५ शु.	११।०१।५७।३०	०२।०९।२६।१२	०९।०३।०७।१८	०१।०५।४०।१९	०९।०२।४९।३८	०८।०७।०८।२५	४७।०५
७ श.	११।०२।३४।०८	०२।०८।३९।४२	०९।०३।००।०७	०१।०५।५५।१२	०९।०२।४५।१९	०८।०७।०५।१४	४७।०४
८ र.	११।०३।१०।३४	०२।०७।५६।१६	०९।०२।५२।४९	०१।०६।१२।१०	०९।०२।४०।५१	०८।०७।०२।०३	४७।०३
९ चं.	११।०३।४६।४९	०२।०७।१६।५१	०९।०२।४५।२६	०१।०६।३१।०६	०९।०२।३६।२४	०८।०६।५८।५३	४७।०२
१० मं.	११।०४।२२।५१	०२।०६।४२।१५	०९।०२।३७।५७	०१।०६।५१।५४	०९।०२।३१।५४	०८।०६।५५।४२	४७।०२
११ बु.	११।०४।५८।४१	०२।०६।१३।०७	०९।०२।३०।२४	०१।०७।१४।३२	०९।०२।२७।२२	०८।०६।५२।३१	४७।०२
१२ गु.	११।०५।३४।१७	०२।०५।४९।५८	०९।०२।२२।४५	०१।०७।३८।५६	०९।०२।२२।४९	०८।०६।४९।२०	४७।०२
१३ शु.	११।०६।०९।४१	०२।०५।३३।०६	०९।०२।१५।०३	०१।०८।०५।०१	०९।०२।१८।१३	०८।०६।४६।१०	४७।०१
१४ श.	११।०६।४४।५१	०२।०५।२२।५४	०९।०२।०७।१६	०१।०८।३२।४४	०९।०२।१३।३५	०८।०६।४२।५९	४७।००
१५ र.	११।०७।१९।४७	०२।०५।१९।१९	०९।०१।५९।२५	०१।०९।०२।०१	०९।०२।०८।५६	०८।०६।३९।४८	४६।५९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ चं.	२।४६	४।४२	६।५५	९।१३	११।२९	१३।४४	१६।०१	१८।१८	२०।२३	२२।०६	२३।४०	१।०९
२ मं.	२।४२	४।३८	६।५१	९।०९	११।२५	१३।४०	१५।५७	१८।१४	२०।१९	२२।०५	२३।३६	१।०५
३ बु.	२।३८	४।३४	६।४७	९।०५	११।२१	१३।३६	१५।५३	१८।१०	२०।१५	२२।०१	२३।३२	१।०१
४ गु.	२।३४	४।३०	६।४३	९।०१	११।१७	१३।३२	१५।४९	१८।०६	२०।११	२१।५७	२३।२८	०।५७
५ शु.	२।३०	४।२६	६।३९	८।५७	११।१३	१३।२८	१५।४५	१८।०२	२०।०७	२१।५३	२३।२४	०।५३
७ श.	२।२६	४।२२	६।३५	८।५३	११।०९	१३।२४	१५।४१	१७।५८	२०।०३	२१।४९	२३।२०	०।४९
८ र.	२।२२	४।१८	६।३१	८।४९	११।०५	१३।२०	१५।३७	१८।५४	१९।५९	२१।४५	२३।१६	०।४५
९ चं.	२।१८	४।१४	६।२७	८।४५	११।०१	१३।१६	१५।३३	१८।५०	१९।५५	२१।४१	२३।१२	०।४१
१० मं.	२।१४	४।१०	६।२३	८।४१	१०।५७	१३।१२	१५।२९	१७।४६	१९।५१	२१।३७	२३।०८	०।३७
११ बु.	२।१०	४।०६	६।१९	८।३७	१०।५३	१३।०८	१५।२५	१७।४२	१९।४७	२१।३३	२३।०४	०।३३
१२ गु.	२।०६	४।०२	६।१५	८।३३	१०।४९	१३।०४	१५।२१	१७।३८	१९।४३	२१।२९	२३।००	०।२९
१३ शु.	२।०२	३।५८	६।११	८।२९	१०।४५	१३।००	१५।१७	१७।३४	१९।३९	२१।२५	२२।५६	०।२५
१४ श.	१।५८	३।५४	६।०७	८।२५	१०।४१	१२।५६	१५।१३	१७।३०	१९।३५	२१।२१	२२।५२	०।२१
१५ र.	१।५४	३।५०	६।०३	८।२१	१०।३७	१२।५२	१५।०९	१७।२६	१९।३१	२१।१७	२२।४८	०।१७

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट.	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ चं.	दि.६:५३-८:३६ ।दि.३:२६-५:०८।	रा.१०:४४-१२:०२ ।रा.२:३६-३:५३।
२ मं.	दि.६:५३-८:३६ ।दि.१:४४-३:२६।	रा.८:०८-९:२६।
३ बु.	दि.८:३६-१०:१९ ।दि.१२:०२-१:४४।	रा.१२:०२-१:१९ ।रा.२:३६-३:५३।
४ गु.	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:१-१:१९ ।रा.३:५३-५:११।
५ शु.	दि.८:३६-१२:०२।	रा.९:२६-१०:४४।
७ श.	प्र.५:११-६:५४ ।दि.१:४३-३:२५ ।सं.५:०७-६:४९	स.६:४९-८:०७ ।रा.१:१९-२:३७ ।रा.३:५४-५:११
८ र.	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ ।रा.१:१९-२:३७।
९ चं.	दि.६:५४-८:३६ ।दि.३:२४-५:०६।	रा.१०:४३-१२:०० ।रा.२:३६-३:५४।
१० मं.	दि.६:५४-८:३६ ।दि.१:४२-२:२४।	रा.८:०६-९:२४।
११ बु.	दि.८:३६-१०:१८ ।दि.१२:००-१:४२।	रा.१२:००:१:१८ ।रा.२:३६-३:५४।
१२ गु.	दि.३:२४-६:४८।	रा.१२:००-१:१८ ।रा.३:५४-५:१३।
१३ शु.	दि.८:३७-१२:०१।	रा.९:२५-१०:४३।
१४ श.	प्र.५:१३-६:५५ दि.१:४३-३:२५ ।सं.५:०६-६:४७	स.६:४७-८:०६ ।रा.१:१९-२:३७ ।रा.३:५५-५:१३
१५ र.	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ ।रा.१:१९-२:३७।

३ बुधे वल्ली८।३९।३५।५६
अयनांशाः २२।४९।००

रा५ बु सू | ४ गु. | ३ | मं २ | ल.१ | ६ च. | गु.१२ श | ७ | ९ | ८ | १० | ११ के.

११ बुधे वल्ली८।३९।३६।०३
अयनांशाः २२।४९।०१

रा५ बु सू | ४ शु. | ३ | मं २ | ल.१ | ६ | गु.१२ श | ७ | ९ | ८ | च.१० | ११ के.

विविधः-आषाढ़े शकुनविचारः-आषाढ़कृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं,तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः । आषाढ़शुक्लद्वितीयायाम् नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढ़े सति सुभिक्षं, प्रजापीडा च उत्तराषाढ़े। आषाढ़शुक्लद्वितीयायां **जगन्नाथ रथयात्रा**- तद्दिने रथस्थरागांवलोकिनो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां **वायुपरीक्षणम्**- तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्यः उत्पत्तिः। सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। **आर्द्रानक्षत्रस्थेसूर्येपायसभोजनमहत्वम्**- आर्द्रायाः प्रथमेपादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरम् अत्र पायसम् इति।

आषाढ़ शुक्लपक्षे रविवासरे करभूले **पुलिकमूलबन्धन मन्त्रः**-शुचिसितदिन करवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारैरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्यतस्य। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्य व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेत् इत्यनेन कार्त्तिकशुक्ल द्वादश्यां तस्य करान्मुक्तः।

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति४ शुक्र दि.१२।५२ तः ति.५ शनि दि.११।४६ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१२ गुरु रा.१।१४ तः ति.१४ शनि रा.११।४२ यावत्।

शयन विधिः-

पादप्रक्षालन कए अंगपोछासँ पैर पोछि उत्तम ओछाओन पर जाय-ॐ नमो नन्दीश्वराय नमः। ई मन्त्र ७ वा ३ बेरि जपि-

ॐ अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महामुनिः।
कपिलो मुनिरास्तीक, पञ्चैते सुखशायिनः।।
ॐ असितं चार्तिमन्तञ्च सुनीथं चापि यः स्मरेत्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्य सर्पभयो भवेत्।।
यो जरत्कारुणाज्जातो जरत्कारो महायशाः।
आस्तीकः सर्पशत्रो वः पन्नगान्यो ह्यरक्षयत्।।
तं स्मरन्तं महाभागा न मां हिंसितुमर्हथ।
सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष।।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर।
आस्तिकेति वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तति।।
शतधा भिद्यते मूर्ध्ना सिंहश्वृक्षफलं यथा।।

इत्यादि मन्त्र क स्मरण कए विष्णुभगवानकें प्रणाम कए कुलदेवता, इष्टदेवताक स्मरण करैत शयन करी।

• **गायत्री मन्त्र जल मे नहि जपी-**
न गायत्रीं जपेत् विद्वान् जलमध्ये कथंचन।
यतः साग्निमुखी प्रोक्तेत्याहुः केचिन्महर्षयः।।

पञ्च महायज्ञ :-

तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्चक्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।।
ताध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो वलिभौतो नृपयोऽतिथिपूजनम्।।

अर्थ-चूल्हि(ईंधन जरैलास), जाँत पिसलासँ, बाढ़नि लगैला सँ, ऊखरि(कूटलासँ) जलक स्थान (जलपात्र) क नीचा जीवकें दबि गेलासँ एहि पाँचो स्थान मे जे जीव मरि जाइत अछि। ओहि पापक नाश हेतु निम्नलिखितानुसार करक चाही।
(१) वेद पुराण पढ़ब ब्रह्मयज्ञ थिक, (२) श्राद्ध तथा तर्पणसँ पितरकें तृप्त करब पितृयज्ञ, (३) देवताक पूजा अग्नि होम ब्रह्मयज्ञ, (४) बलि वैश्यदेव करब भूतयज्ञ, (५) अतिथि सत्कार मनुष्य यज्ञ थिक।

मौन

पुरीषे मैथुने होमे प्रस्रवे दन्तधावने।
स्नान भोजन जाप्येषु सदा मौनं समाचरेत्।।

अर्थ- मल, मूत्र, मैथुन, होम, लघुशंका, दन्तधावन, स्नान, भोजन एवं जप करक समय मौन रहवाक चाही।

नक्षत्र मेलापक चक्रम् पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि उपरि वरनक्षत्राणि

नक्षत्राणि	अशवनी	भर	कृति १	कृति ३	रो.	मृग २	मृग २	आर्द्रा	पुन ३.	पुन १.	पूष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा१.	उ.फा३	हस्त	चित्रा २.	चित्रा २.	स्वाति	विशा ३.	विशा १.	अनुधा	ज्ये १.	मूल	पू.षा।	पू.षा३	उ.षा१	उ.षा३	श्रव ११	श्रव २.	धनि २	धनि २	शत	पू.भा३	पू.भा१	उ.भा.	रेव
अश्वि.	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	०६	१३	२२।।	२६।	२२।	१६।।	२६।।	१५	१३	२६	२७	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
भरणी	३४	२८	२६	१६	२२।।	१४।।	१७	२६	२६	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१६	२८	२१।।	१६	०६	१४।।	२६।	२२।	१६।।	१७।।	१६।।	२०	१६	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
कृति.१	२७।।	२७।।	२८	१६।।	०६	१५।।	१६	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।	२७।।	१५।।	१६।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१६	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१६।।	१७।।	१६।।	११।।
कृति.३	१८।।	१८।।	१६	२८	१६	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१६।।	२३	२४	२१	२१	२३।।	२२।।	१०।।	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	०६।।	१४	११	१०	२२।।	२६।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
रोहिणी	२३।।	२३।।	१०	१६	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२८	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०	१६	१५।।	०६।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१६	२०	१२।।	१७	१६	१८	२०	२६	२४।।	३०।।	२७	२६	१६
मृग.२	२३।।	१३।।	१८।।	२८।।	३४	२८	२०	२५	२३।।	२६	२०	२२	२१।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३	१२	२५	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१२	११	१८	२१।।	२४।।	२४।।	१३	१६	२७	२६।।	२६	१७	२७
मृग-२	२७	१८	२१	१८।।	५।	२०	२८	३३	३१।।	१६।।	१३	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१	१४	२७	१६।।	१४	११	१३	२३	१६	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
आर्द्रा	१६	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२६।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७	२०	१३।।	१७	०४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	१८	११	१६	१६	२७	२७
पुन-३	१६	२६	२२	१६।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।	१८।।	२७	२१	१३।।	२०।।	०५	१३	२७	२६	२७	२२।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१६।।	२७।।	२८
पुन-१	२१।।	२८।।	२५।।	२०	२४	२५	१६	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।	२०.	२७	२०	१६	२६	१०।।	०८	२१	२१।।	२१।।	२६।।	२५	२७	२१	१२।।	०७।।	११	१७	२५	२५।।
पूष्य.	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६	२१	२०	१६	२२	१७	११	११।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	०४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२३।।	२२।।	१६	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	८	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२०	२६	२५।।	११।।	१६।।	१५।।	२०	२६	२२।।	१६	१६।।	०८।।	१२	१३	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
मघ	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१६।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।	२५।।	११।।	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	०५।।	०५।।	०४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१८।।	१८।।	१२
पू.फा.	२७	१६	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२४	२२।।	०८।।	११।।	२५।।	१६।।	२६।।	२४।।	२४।।	१६	१६	१६	२७	२१	१६।।	१८।।	०४।।	११।।	१६।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४।।
उ.फा.१	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१८	१८।।	१४।।	१७।।	२६।।	१७।।	२४।।	३०।।	१६।।	१०।।	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११।।	१८।।	१२।।	१६।।	१५।।	२६।।	२४।।
उ.फा.३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१६।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१६	२८	२५।।	२४।।	१६।।	२५।।	१६।।	१८	२७	१३	१५।।	२६।।	२८।।	२६।।	२६	२५	२५	१६।।	१६।।	१०।।	१४।।	१८	२६।।	२७
हस्त	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१६।।	२८।।	२१।।	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७	१६	२६।।	१७।	१६।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।	२३	२४	२४	१६	१६	०८।।	१४।।	१६।	२७।।	२७
चित्रा२	१३	०६	१६	२५।।	२०	१२	१६	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	०६।।	१५।।	२४।।	२७	२८	२०	१६	२६।	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१६	१६	१८	१८	२४	१८।।	२२।	११	२१
चित्रा२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०।।	१७।।	१७।।	२०	२१	२८	२७	३४।	२४।।	०७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७	२७	२६	२०	२६	२०।।	१५।	०४	१३
स्वाती	२७।।	२६।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	१६।।	२०	१३
विशा३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१६।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१६।।	१७।।	१६।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१८	२८	१८	१७	२०।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७।।	१७।।	३२।।	२६	२६	२२	१६।।	१३।।	०५
विशा१	१६।।	१६।।	१४।।	१६।।	१४।।	२२।।	१३	१४।।	१४।।	६	१८	१५।।	२१।।	२३।।	२१।।	१८	१६	२८	२३।।	०८	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१६।।	१६।।	०६।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	०६।।
अनुधा	२४।।	१४।।	१६।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२६।।	२६	२७	१२	०७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
ज्येष्ठा	१२	१८।।	२४।।	२६।।	२२।।	२२।।	१३	०३	०६	१०।।	२०	२६	३१।।	२३।।	१६।।	१३	१२	२५	२०।।	२६।।	२०।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२६	२५	१८	११	०६	२१	२१
मूल	१२	२०	२४।।	१६	१३	१४	२१	१५	१२	०८।।	१७।।	२४	२५	१६	०६।।	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	१७	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२१।।	२८।	२१।।	१६।।	१६।।	२५।।	२७।।
पू.षा.१	२६	१८	१८	१२।।	१६	११	१६	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१६	-५	२८।।	२७	१२	१२	२७	२०	१६।।	१८।।	१७।।	२८	१७	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	०८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२
पू.षा.३	२७	२०	१६	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१६	२७	२७	२६	११	११	२६	१६	१८।।	१८।।	१६।।	२७	१८	२८	३४	२४	२४।।	२३।।	०८।।	१५।।	२२।।	२६।।	३२।।	२३।।	३२।।
उ.षा-१	२५।।	२७	१४	०८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	०६।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०	२०	१६	१२	११।।	२५।।	१६।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
उ.षा-३	२८	२६।।	१६।।	१४	१७	२२।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८।।	१३	०६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।	२४।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२२	१६।।	२६	२५	१६	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	३३।।	३०।।	३२।।	२३।।
श्रवण१	२८	२७	१४।।	१२	१८	२७	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	०५।।	१६।।	२०	२४	२५	१६	२६	२३।।	१६।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।	३०।।	२२।।
श्रवण२	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८	२६	१५	०६।।	१८।।	२०।।	२३।।	२४।।	१८।।	२५।।	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५।	१५	२४	२७	२८	३०	२०।।	१८	२३	३६।।	३१।।	२४।।
धनि.२	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	०८	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	०५।।	१२।।	१६	१८	१६।।	२३	२६	३०	२८	१४	२६	२१	०६	०६।।	१६।।	२५।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	२१	२६।।	१५।।	२२।।
धनि.२	२०	११	२६	३०।।	२७।।	१६	१०	२०	१६	१४	०५	२०	२५।।	११।।	१६।।	१७।।	२१	१८	१६	२२	२५।	२७	१२	२६	२६।।	१७।।	१६।।	२३।।	१८।।	२१	२१	२१	२८	३३	२८।।	१८	०७	१४।।
शतभि.	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२५	१८	१०	१०	०७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	०८।।	२६	२६	१६	२६	२६।।	२१	१६	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१६	०६।	१७	१६।।
पू.भा-३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१७	१७	१३।।	२०।।	१४	१६।।	२५।।	१७।।	१५।।	१७।।	१८।।	१६।।	२८	२१	२१।।	२७।।	१२	१५।।	३१।।	३०।।	२६।।	२४	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१६	२८	१८।।	२३।।	२०।।
पू.भा-१	१४।।	२१।।	१६।।	१६	२६	२६	२५।।	१८	१८	१८	२५	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१६।।	१२।।	१६	१४	२१	२७	११।।	१५	३१	३१।।	३०।।	२८।।	२६।।	३०।।	२५।।	१७	०७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१६	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	०६।।	०५	१६।।	१२	१६	२०	२२	२४	२२	२२।।	३१।।	२६।।	२८।।	२६।।	१४।।	०६	१६।।	२१।।	३३	२८	३५
रेवती	२५	२४।।	११।।	१४	१७	२६	२५।।	२४।।	२५।।	२४।।	२७।।	१३	१२	२२	२२।।	२४।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	०५।	१२।।	२७	२२	२७	३०।।	३०	२१	१६	२०।।	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२६।।	३३	२८

१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
२६	१२	५८	४४	३०	४६	०२	४८	३४	२०	६	५२
१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
५८	०८	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
२६	१२	५८	४४	३०	४६	०२	४६	३४	२०	०६	५२
२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२८	३६	४५
५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	३०	३६	५२
३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
५८	०८	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
०४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२७	३६	४५
५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
१	१	०२	२	२	२	२	०२	२	३	३	३
४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

☙ लग्नको घटाकर, राशि में ३०से गुणा कर अंश को जोड़ दे फिर जो आये उसको ६ से भाग देने पर जो लब्धि आयें वों अंश होंगे जो शेष बचे उसे पुन: ६०से गुणा करके फिर ६ से भाग दे वो घड़ी होंगे इस तरह क्रमश: जो लब्धि आये वो ही गष्टयाश: होगा।

यथा– प्रथम लग्न स्पष्ट:४।२६।२७।४०है तो लग्न स्पष्ट के घड़ी पल २७।४०को दशम लग्न सारणी में देखों तो पता चला कि २७।४० १राशि २५अंश पर आया तो यह दशम स्पष्ट हुआ इसमें ६ राशि जोड़न से चतुर्थ लग्न होगा। चतुर्थ लग्न में प्रथम ☙

वेलान्तर सारणी

मास	जन.	फर	मार्च	अप्रै	मई	जून	जुला.	अग	सित	अक्टू	नव	दिस.
दिनांक	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	-३	-१४	-१२	-४	+३	+२	-३	-६	+०	+१०	+१६	+११
२	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+१०	+१६	+११
३	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+११	+१६	+११
४	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
५	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
६	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+१२	+१६	+९
७	-६	-१४	-११	-२	+३	+२	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
८	-६	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
९	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+८
१०	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+८
११	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१२	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१३	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१३	+१६	+६
१४	-९	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+६
१५	-९	-१४	-०९	+०	+४	-०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+५
१६	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१६	+५
१७	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१५	+४
१८	-१०	-१४	-९	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+१५	+४
१९	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२०	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२१	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२२	-११	-१४	-७	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२३	-१२	-१४	-७	+१	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+१
२४	-१२	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+८	+१६	+१४	+१
२५	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+७	+१६	+१३	+०
२६	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+८	+१६	+१३	-०
२७	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+९	+१६	+१३	-१
२८	-१३	-१३	-५	+२	+३	-३	-६	-२	+९	+१६	+१२	-१
२९	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+९	+१६	+१२	-२
३०	-१३	०	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+१०	+१६	+१२	-२
३१	-१३	०	-५	०	+३	०	-६	-१	०	+१६	०	-३

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकारः

सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही हैं। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ५या ७ बजते हैं। परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः स्थानीय समय वनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार(जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे १ मार्च को कटिहार के इष्टकाल में १२ मिनट वेलान्तर ऋण एवं २०मिनट ४० सेकेण्ड देशान्तर धन कर देगें तो देवघर का स्थानीय समय हो जायेगा।

देशान्तर साधन- १.(८२।३०-इष्टस्थान का रेखांश)४= इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश ऋण।
यथा-दिल्ली-रेखांश ७७।१८।(८२।३०-७७।१८= ५।१२)४ =२०।४८ दिल्ली का रेखांश ऋण।
२. (इष्टस्थान का रेखांश –८२।३०)४– इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश धन।
यथा-पटना-रेखांश८५।१३। (८५।१३-८२।३०= २।४३)४ =१०।५२ पटना का रेखांश धन।

डॉ.बावूलाल मिश्रः द्वाराप्राप्त-श्लोकाः

सन्ध्या दानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षटकर्माणि दिने दिने।।

●●●●●

दैवाधीनं जगत् सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राह्मणदेवताः।।

●●●●●

शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च सर्वभूतहिते रताः।
क्रोधं कर्तुं न जानन्ति एतद्ब्राह्मणलक्षणम्।।

●●●●●

पाठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः यः क्रियावान् स पण्डितः।।

इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च प्रथम लग्नसारणी गद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात्।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	[illegible]	[illegible]	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	०७	१५	२३	३२	४०	४९	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४६	००	१२	२३	३४	४६	५७	०६	२०	३२	४३	५४	०६	१७	२८	४०	५२	०३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	०७	१८	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३७	४७	५९	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४५	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१८	३०	४१	५२	०३	१५	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
५	०३	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४३	५६	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
५	०२	१०	२२	३०	४०	५०	००	११	१६	२७	३६	४४	५२	०१	०९	१७	२५	३३	४३	५२	५९	०८	१६	२५	३३	४२	५१	५८	०६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	२०	२७	३५	४१	४८	५५	०३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	०१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	५८	४०	०८	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	०२	२	२	२	२
३	०३	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	०७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

लग्नसारणीदेखने की रीति जिस समय लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट काल बना कर उसमें उस दिन का सूर्य स्पष्ट लिखा होता है सूर्य स्पष्ट जितने राशि पर जितने अंश पर हो उसको लग्न सारणी में देखे कि उस राशि के सामने और उतने अंशो कोष्टक के नीचे जो घटी पल हो उसमें अपने इष्ट काल के घटी पल जोड़ दे वो लग्न के घटी पल बन जायेंगे तो यह घटी पल लग्न सारणी मे जिस राशि के सामने और जितने कोष्ट के नीचे मिलेंगे। वही लग्न राशि अंशादि होंगे। यथा– इष्टकाल १४।२३ है और स्पष्टसूर्य उस दिन ६।२६।१०।५४ है। लग्न सारणी में ६राशि के सामने और २६ अंश के नीचे ३९।०६ है। अब ३९।०६को इष्टकाल के १४।२३ में जोड़ दिया तो ५३।२९ इत्यादि हुआ इनको लग्न सारणी में देखा तो ९राशि १८ अंश के नीचे ५३।३४ लिखा हुआ है अर्थात् ९।१८।५३।३४ लग्न स्पष्ट हुआ।

विलग्नलग्नांशसमानकोष्ठ्योधः फलं तद्दशमं निरुक्तम् — दशम लग्नसारणी — नतसाधनानपेक्षिता–दशमलग्नानयनसारिणीयम्

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०
वृष	८	८	८	८	९	९	९	०९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०६	२६	३६	४१	५२	०३	१३	२४
	१४	१२	३०	००	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७
	३८	२४	१०	५६	४२	४८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२
३२३	७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१४	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०६	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	५१	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२
३२३	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१२	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०
मीन	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	००	००	००	००	०	००	००	१	१	१	१
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०

दशम लग्न बनाने की रीति –जिस समय दशम सारणी से दशम स्पष्ट लग्न करना हो तो सबसे प्रथम लग्न स्पष्ट के राशि अंश से घटी पलों में से घटी पल जितने हो दशम सारणी से उस कोष्टक में देखें कि घटी पल कहां पर है वही दशम लग्न स्पष्ट होगा।

अक्षांस-रेखांश एवं देशान्तरसारणी

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
आरा	२५।३४	८४।३२	+ ०८।०८
औरंगाबाद	२४।४५	८४।२५	+ ०७।४०
कटिहार	२५।३०	८७।४०	+ २०।४०
कमतौल	२६।२०	८५।५०	+ १३।२०
कहलगाँव	२५।१६	८७।१७	+ १६।०८
क्याथ	२५।२०	८४।१६	+ ०७।०४
खगड़िया	२५।३१	८६।२७	+ १५।४८
गया	२४।४६	८५।०१	+ १०।०४
गोगरी	२५।२८	८६।३८	+ १६।३२
गोपालगंज	२६।२८	८४।२६	+ ०७।४४
छपरा	२५।४७	८४।४७	+ ०६।०८
जमालपुर	२५।१९	८६।३२	+ १६।०८
जयनगर	२६।३६	८६।०८	+ १४।३२
जहानाबाद	२५।१३	८४।५९	+ ०६।५६
जोगबनी	२६।२३	८७।१६	+ १९।०४
झञ्झारपुर	२६।१६	८६।१७	+ १५।०८
टेकारी	२५।४०	८५।१२	+ १०।४८
डुमराँव	२५।३३	८४।१२	+ ०६।४८
दरभंगा	२६।१०	८५।५४	+ १३।३६
दानापुर	२५।३८	८५।०५	+ १०।२०
देहरी	२४।५३	८४।१४	+ ०६।५६
धंगाइन	२५।१४	८४।१३	+ ०६।५२
दुमका	२४।३०	८७।२०	+ १९।२०
नवादा	२४।५३	८५।३५	+ १२।२०
नालन्दा	२५।०७	८५।२५	+ ११।४०
नौगछिया	२५।२४	८७।०६	+ १८।२४
पुपरी	२६।२८	८५।४२	+ १२।४८
पटना	२५।३७	८५।१३	+ १०।५२
पारसनाथ	२४।००	८६।११	+ १४।४४
पूर्णिया	२५।४६	८७।३१	+ २०।०४
फार्वेसगंज	२६।१८	८७।१६	+ १९।०४
बगहा	२७।०८	८४।०४	+०६।१६
बक्सर	२५।३४	८४।०१	+ ०६।०४
बरौनी	२५।२८	८५।५६	+ १३।५६
बहेड़ी	२५।५७	८६।०३	+ १४।१२
बाँकीपुर	२५।३६	८५।०७	+ १०।२८
बाढ़	२५।२	८५।४३	+ १२।५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर दि. मि से
विरौलसुपौल	२५।५७	८६।१५	+ १५।००
बेगूसराय	२५।२५	८६।०८	+ १४।३२
बोधगया	२४।४१	८५।०८	+ १०।०८
बेनीपट्टी	२६।२७	८५।५४	+ १३।३६
बेतिया	२६।४८	८४।३३	+ ०८।१२
भागलपुर	२५।१५	८७।०२	+ १८।०८
मधुबनी	२६।२१	८६।०७	+ १४।२८
मधेपुर	२६।११	८६।२३	+ १५।३२
मधेपुरा	२५।५७	८६।५१	+ १४।२४
मुँगेर	२५।२४	८६।५६	+ १७।५६
मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	+ ११।४८
मोकामा	२५।२४	८५।५५	+ १३।४०
मोतिहारी	२६।४०	८४।५५	+ ०६।४०
रक्सौल	२६।५८	८४।५८	+ ०६।५२
राजगीर	२५।०१	८५।२६	+ ११।४४
रोसड़ा	२५।४५	८६।०२	+ १४।०८
लालगंज	२५।५२	८६।१०	+ १४।४०
लौकहा	२६।३३	८६।२८	+ १५।५२
शेखपुरा	२५।०६	८५।५३	+ १३।३२
समस्तीपुर	२५।५५	८५।५०	+ १३।२०
सहर्षा	२५।५४	८६।३६	+ १६।२४
सासाराम	२४।५७	८४।०३	+ ०६।१२
सिमरियाघाट	२५।२५	८६।००	+ १४।००
सीतामढ़ी	२६।३४	८५।३०	+ १२।००
सीवान	२६।०२	८४।००	+ ०६।००
सुगौली	२६।४७	८४।४८	+ ०६।१२
सोनपुर	२५।४०	८५।०२	+ १०।०८
हाजीपुर	२५।४१	८५।४	+ १०।१७
गढ़वा	२४।१०	८३।५२	+ ०५।२८
गिरिडिह	२४।१०	८६।२१	+ १५।२४
गोविन्दपुर	२३।५१	८६।३४	+ १६।१६
घाटशिला	२२।३५	८६।२८	+ १५।५२
चतरा	२४।१२	८४।५६	+ ०६।४४
चायबासा	२२।३३	८५।५+	+ १३।२४
जगशेदपुर	२२।४८	८६।११	+ १४।४४
झरिया	२३।५०	८६।३३	+ १६।१२
डाल्टेनगंज	२४।०२	८४।०४	+ ०६।१६
डोरण्डा	२३।२२	८५।२२	+ ११।२८

झारखण्ड

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से.
तिलैया	२४।२०	८५।३१	+ १२।०४
देवघर	२४।२६	८६।४३	+ १६।५२
धनबाद	२३।४७	८६।३०	+ १६।००
पकौर	२४।३८	८७।५४	+ २१।३६
पलागू	२३।५२	८४।११	+ ०७।०८
पालकोट	२२।५२	८४।४१	+ ०८।४४
पोराहाट	२२।३६	८५।२८	+ ११।५२
बरवा	२३।१०	८४।१६	+ ०७।०४
बसिया	२२।५२	८४।५३	+ ०६।३२
बोकारो	२३।५१	८६।०२	+ १४।०८
मधुपुर	२४।१८	८६।३७	+ १६।२८
मानखेरी	२३।४०	८४।३३	+ ०८।१२
मोरसनजोर	२४।०५	८७।२१	+ १६।२४
मैथन	२३।५४	८६।५४	+ १७।३६
राँची	२३।२३	८५।२३	+ ११।३२
राजमहल	२५।०३	८७।५३	+ २१।३२
रामगढ़	२३।३८	८५।३४	+ १२।१६
लोहरदग्गा	२३।२६	८४।४२	+ ०८।४८
सरायकेला	२२।४२	८५।५८	+ १३।५२
सारण्डा	२२।१६	८५।१५	+ ११।००
साहबगंज	२५।१३	८७।४०	+ २०।४०
सिन्दरी	२३।३६	८६।३१	+ १६।०४
हजारीबाग	२३।५९	८५।२५	+ ११।४०

उत्तर प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से.
अयोध्या	२६।४७	८१।१२	- ५।१२
आगरा	२७।१६	७८।००	- १८।००
आजमगढ़	२६।०३	८३।१०	+ २।४०
इटावा	२६।४६	७९।०२	- १३।५२
इलाहाबाद	२५।५७	८१।५०	- ०२।४०
कानपुर	२६।२८	८०।४१	- ०७।१६
काशी	२५।१८	८३।००	+ २।००
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२६	- २०।१६
गाजीपुर	२५।३४	८३।३६	+ ०४।२४
गोरखपुर	२६।४५	८३।२३	+ ०३।३२
चित्रकूट	२५।१३	८०।४८	- ०६।४८
जौनपुर	२५।४४	८२।४१	+ ००।४४
झाँसी	२५।२७	७८।३४	- १५।४४
देवरिया	२६।३१	८३।४८	+ ०५।१२
प्रतापगढ़	२५।५२	८२।०२	- ०१।५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
बरेली	२८।२०	७९।२४	- १२।२४
बलिया	२५।४५	८४।०६	+ ०६।३६
बस्ती	२६।४८	८२।४४	+ ००।५६
बाँदा	२५।२८	८०।००	- १०।००
मथुरा	२७।२८	७७।१०	- १९।१६
लखनऊ	२६।५०	८०।४४	- ०६।२४
वृन्दावन	२७।३३	७७।४४	- १९।२०
सहारनपुर	२६।५८	७७।३३	- १९।४८
सुल्तानपुर	२६।१५	८२।०४	- ०१।४४

मध्य प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
इटारसी	२२।३०	७७।५५	- १८।२०
उज्जैन	२३।०६	७५।४३	- २७।०८
कटनी	२३।४७	८०।२७	- ८।१२
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	- १७।२०
नीमच	२४।२७	७४।५२	- ३०।२२
भोपाल	२३।१६	७७।३६	- १९।३६
रीवा	२४।३१	८१।१९	- ०४।४४
विदिशा	२३।३२	७७।५१	- १८।३६
सतना	२४।३४	८०।५५	- ०६।२०

अन्य स्थान

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
अकोला	२०।३२	७७।०५	-२१।४०
अजमेर	२६।२२	७४।४०	-३१।२०
आन्ध्रप्रदेश	१६।००	८०।००	-१०।००
अम्बाला	३०।२०	७६।५५	-२२।२०
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३६	-३९।३६
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	-३०।२८
आसनसोल	२३।४२	८६।५८	+१७।५२
उड़ीसा	२१।१७	८५।३०	+१२।००
ऋषिकेश	३०।०७	७८।१६	- १६।५६
केदारनाथ	३०।४४	७९।०३	- १३।४८
कर्नाटक	१२।००	७६।००	-१४।००
कोचीन	६।५८	७६।१५	-२५।००
काँचीपुरम	१२।५०	७६।४२	-११।१२
कोटा	२५।१०	७५।५२	-२६।३२
कोयम्बटुर	११।००	७६।५६	-२२।१६
कटक	२०।२६	८५।५२	-६।२८
केरल	१०।००	७६।२५	-२४।२०
कलकता	२२।३२	८८।३०	+२०।००
कश्मीर	३४।३०	७६।३०	-२४।००
गोत्री	३०।५६	७९।०२	-१३५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
गढ़वाल	३०।१३	७९।३०	-१२।००
गुजरात	२२।५५	७२।३०	-४०।००
गौहाटी	२६।१०	६१।४५	+३७।००
चण्डीगढ़	३०४२	७६।५४	-२२।२४
जालन्धर	३१।२०	७५।३४	-२७।४४
जम्मू	३२।४३	७४।५२	-३०।३२
तंजौर	१०।४७	७९।०८	-१३।२८
तिरुचिरापल्ली	१०।५०	७८।४२	-१५।१२
तिरुपति	१३।४०	७९।२०	-१२।४०
तिरुवनन्तपुरम	०८।३१	७७।००	-२२।००
दार्जिलिंग	२७।०३	८८।१८	+२३।१२
दिल्ली	२८।३५	७७।१८	-२०।४८
द्वारका	२२।१४	६८।५८	-५४।०८
नागपुर	२१।०४	७९।१३	-१३।०८
नासिक	२०।००	७३।५०	-३४।४०
देहरादून	३०।१९	७८।०३	-१७।४८
नैनीताल	२९।२३	७९।२७	-१२।१२
पटियाला	३०।०१	७६।२८	-२४।०८
पानीपत	२९।२०	७७।०६	-२१।३६
पूणे	१८।३१	७३।५३	-३४।२८
पुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०
बीकानेर	२८।०२	७३।२२	-३६।३२
बंगलूर	१२।५८	७७।३६	-१६।३६
भुवनेश्वर	२०।१५	८५।५०	+१३।२०
मुम्बई	१९।००	७२।५५	-३८।२०
रामेश्वरम	०९।१८	७९।१८	-१२।४८
रुद्रप्रयाग	३०।१६	७८।५९	-१४।०४
हरिद्वार	२९।५८	७८।०९	-१०।२४
हलद्वानी	२९।१३	७९।३१	-११।५६
लुधियाना	३०।५५	७५।५१	-२६।३६
वडोदरा	२२।१८	७३।१३	-३७।०८
शिमला	३१।०१	७७।१५	-२१।००
श्रीनगर	३४।०६	७४।४८	-३०।४८
सूरत	२१।१०	७२।५१	-३८।३६
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	-२६।१२
हावड़ा	२२।३६	८८।१९	+२५।१६
हैदराबाद	१७।२६	७८:२७	-१६।१२

शतपदचक्रम्

नक्षत्र वर्णाः	चु.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई ऊ.ए.	ओ.वा. वी.बू	वे.वो. का.की	कू.घ. ङ.छा	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मा.मी. मू.मे.	मो.टा टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.
नक्षत्रम्	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
राशिः	मेष	मेष	मेष-१ वृष-३	वृष	वृष-२ मिथुन-२	मिथुन	मिथुन-३ कर्क-१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह-१ कन्या-३	कन्या	कन्या-२ तुला-२
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२
वश्यः	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जल-१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर-१ मानव-३	मानव	मानव
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य
हंसक (तत्त्व)	अग्नि	अग्नि	अ१. भू३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र
योनिवैरः	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो
राशीशः	भौमः	भौमः	भौमः-१ शुक्रः-३	शुक्र	शुक्रः-२ बुधः-२	बुधः	बुधः-३ चन्द्र-१	चन्द्रः	चन्द्रः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः-१ बुधः-३	बुधः	बुधः-२ शुक्रः-२
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य

नक्षत्र वर्णाः	रु.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	न.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.	ये.यो. भा.भी.	भू.धा. फा.ढा.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. द.दी.	दु.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्रम्	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशिः	तुला	तुला-३ वृश्चिक-१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु-१ मकर३	मकर	मकर-२ कुम्भ-२	कुम्भ	कुम्भ-३ मीन-१	मीन	मीन
वर्णः	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र
वश्यः	मानव	मानव-३ कीट-१	कीट	कीट	मानव	मानव।। चतु.३।।	चतुष्पद	चतु.१।। जल.२।।	जलचर २ मानव-२	मानव	मानव-३ जलचर-१	जलचर	जलचर
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक (तत्त्व)	वायु	वायु३ जल१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल
योनिः	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैरः	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशः	शुक्रः	शुक्रः-३ भौमः-१	शौमः	भौमः	गुरुः	गुरुः	गुरुः-१ शनिः-३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः-३ गुरुः-१	गुरुः	गुरुः
गणः	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य-	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

जन्म राशेः सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	१।१३।५०।६२	७५
वृषः	३।६।८।३३।४६।५२।६३	७५
मिथुनम्	६।१०।११।१८।२४।५३।६३	७५
कर्कः	१।१६।२२।२७।३५।४५।५५।६०	७०
सिंहः	१।१०।१५।२५।४५।५१।६१	६५
कन्या	१।३।१३।२६।३३।४३	६८
तुला	२।४।१६।२१।३३।४१।५१।६१	६५
वृश्चिक	३।७।८।१३।३२।३५।४५।६३	७५
धनुः	३।१०।१२।१६।२३।३६।४७।६७	६५
मकरः	३।१०।१२।१३।४२।५१।५६।६१	१००
कुम्भः	१८।३२	६१
मीनः	१८।३३	६१

जन्म लग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	४।११।१६।४४।५८	१००
वृषः	१।२८।३३।४४	६०
मिथुनम्	१।१०।१४।३८।५८	६४
कर्कः	५।२५।४०।४८।६२	१००
सिंहः	५।१३।२८।३६।४८	६३
कन्या	४।१६।२३।३६।४५	१००
तुला	१५।३१।३५।५४।६२	७५
वृश्चिक	११।२८।३८।५२।६२	१००
धनुः	२।८।१०।१८।३१।३८।४२।६७	८१
मकरः	५।१३।२७।३६।५७।६२	८५
कुम्भः	२।२८।३३।४८।६४	६०
मीनः	१।८।१३।३६।४८	८३

६ गणगुणाः

गण	दे.	मा	रा.
दे..	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

।। कन्यायाः ।।

८ नाडीगुणाः

ना	आ.	म.	अ.
आ.	०	८	०
म.	८	०	८
अ.	८	८	०

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मृग	मेष

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	वृहः	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	चं.मं.वृ	सू.बु.	सू.च.वृ	सू.शु	सू.च.मं.	बु.श.	बु.शु.
समाः	बुधः	मं.वृ.शु.श.	शुक्रः शनि	मं.वृ. शनि	शनि	मः वृहः	गुरुः
शत्रवः	शु.श.	×	बुधः	चन्द्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.च.

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्

कृ रो मृ आ पु पु श्ले म पू. उ. ह. चि. स्वा वि अनु ज्ये मू पू. उ. अ. श्र. ध. श. पू. उ. रे. अ. भ

राहुकेत्वोः शनिवत्। सू.श.रा.के. ३।६।८।११ चं.२।३।११मं.३।६।११ बु.वृ.१।२।३।४।५।६।६।१०।११ शु.१।२।४।५।६।१०।११ उक्तस्थानस्थग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभ	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्य	१।२।५।७।९	१।२।५।६	१।३।६।१०
निन्द्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श	ग्र.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	ग्र.

१ वर्णस्य गुणाः ।। वरस्य

वर्णाः	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

।। कन्यायाः ।।

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्य	चतु.	मा.	जल	वन	कीट
चतु	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

।। कन्यायाः ।।

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रह	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
च.	५	५	४	१	४	।।	।।
मं.	५	४	५	।।	५	३	।।
बु.	४	१	।।	५	।।	५	४
वृ.	५	४	५	।।	५	।।	३
शु.	०	।।	३	५	।।	५	५
श.	०	।।	।।	४	३	५	५

७ राशिकूटगुणाः वरस्य

राशय.	१ मे	२ वृ	३ मि	४ क	५ सि	६ क	७ तु	८ वृ	९ ध	१० म	११ कु	१२ मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्च	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

।। कन्यायाः ।।

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	०	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गो	३	२	३	२	२	२	२	४	३	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	१	२	२	२	४

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञान प्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि- वृहस्पति- राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

आयुर्विचारः-

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां,लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम्। प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम्। विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो वली, समे जन्मलग्ने द्वादशेश-षष्ठेशयोर्यो वली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः,आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन१०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्वपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्वपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च -

अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा। लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानानन्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेश- दशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तर-शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम्

सूर्यदशावर्षाणि ६	चन्द्रदशावर्षाणि१०	भौमदशावर्षाणि ७	राहुदशावर्षाणि१८	गुरुदशावर्षाणि१६	शनिदशावर्षाणि१९	बुधदशावर्षाणि१७	केतुदशावर्षाणि ७	शुक्रदशावर्षाणि २०
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्रवण	मृ. चि. ध.	आर्द्रा. स्वा. श.	पुन. वि. पूभा.	पुष्य. अनु. उभा.	आश्ले. ज्ये. रेव.	मघा. मू. अश्वि.	पूफा. पूषा. भर.
अन्तर्दशा १८	अन्तर्दशा ३०	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ५४	अन्तर्दशा ४८	अन्तर्दशा ५७	अन्तर्दशा ५१	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ६०
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
सू. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	वृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	वृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	सू. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	वृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	वृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	सू. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
वृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	सू. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	सू. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	वृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	सू. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	वृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	वृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	सू. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	वृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

विंशोत्तरीदशा साधन विधिः-

कृत्तिका नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से एकादि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र,भौम, राहु,गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

उदाहरण- जन्म नक्षत्र मघा है। यहाँ कृत्तिका से मघा तक गणना की तो ८ संख्या हुई, इसमें ९ का भाग दिया तो लब्धी कुछ नहीं मिला, शेष ८ ही रहे। सूर्य,चन्द्र, भौमादि क्रम से आठ तक गिना तो आठवीं संख्या केतु की हुई। अतः जन्मदशा केतु की कहलायेगी।

योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम्

मंगला १	पिंगला २	धान्या३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
श्र.आ.चि.	ध.पुन. स्वा	श.पु.वि.	अ.आश्ले. अनु.पूभा.	भर.म. ज्ये.उभा	कृ.पूफ.मू.रे.	रो.उफ.पूषा	मृ.ह.उषा
मा.१२ चं.	मा.२४ सू.	मा.३६वृ	मा.४८मं	मा.६०बु.	मा.७२श.	मा.८४शु.	मा.९६ के.
मं.०।१०	पिं.१।१०	धा.३।०	भ्रा.५।१०	भ.८।१०	उ.१२।०	सि.१६।१०	सं.२१।१०
पि.०।२०	धा.२।००	भ्रा.४।०	भ.६।२०	उ.१०।०	सि.१४।०	सं.१८।२०	मं.२।२०
धा.१।०	भ्रा.२।२०	भ.५।०	उ.८।०	सि.११।२०	सं.१६।०	मं.२।१०	पि.५।१०
भ्रा.१।१०	भ.३।१०	उ.६।०	सि.९।१०	सं.१३।१०	मं.२।०	पिं.४।२०	धा.८।००
भ.१।२०	उ.४।०	सि.७।०	सं.१०।२०	मं.१।२०	पिं.४।०	धा.७।०	भ्रा.१०।२०
उ.२।०	सि.४।२०	सं.८।०	मं.१।१०	पि.३।१०	धा.६।०	भ्रा.९।१०	भ.१३।१०
सि.२।१०	सं.५।१०	मं.१।०	पि.२।२०	धा.५।०	भ्रा.८।०	भ.११।२०	उ.१६।००
सं.२।२०	मं.०।२०	पि.२।००	धा.४।००	भ्रा.६।२०	भ.१०।०	उ.१४।०	सि.१८।२०

योगिनीदशा की भुक्त भोग्य साधन

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात्। मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः। ततो विंशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम्।

त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां(शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम्।

नवमांशचक्रम्

राशि	मे.सि.ध.	वृष कं.म.	मि.तु.कु.	क.वृ.मी.
३/२०	म.	श.	शु.	चं.
६/४०	शु.	श.	मं.	सू.
१०/००	बु.	वृ.	वृ.	बु.
१३/२०	च	मं.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	मं.
२०/००	बु.	बु.	वृ.	वृ.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	मं.	सू.	शु.	श.
३०/००	वृ.	बु.	बु.	वृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम् / समराशौ त्रिंशांशचक्रम्

अंशाः	मे.तु.मि.ध.सिं.कु.	अंशाः	वृ.क.क.वृ.म.मी.
५अ.	म.	५अं.	शु.
१०अं.	श.	१२अं.	बु.
१८अं.	वृ.	२०अं.	वृ.
२५अं.	बु.	२५अं.	श.
३०अं.	शु.	३०अं.	मं.

होराचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१५अं	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.
३०अं	चं	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.

होरालग्नानयनम्-द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम्। दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्।

द्रेष्काणचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१०अं	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
२०अं	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च
३०अं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	संज्ञा

द्वादशांशज्ञानम्

प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति।

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नाम-ग्राम-देशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभि-र्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-बृहस्पति-राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्मादिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं-कुशादिकं गृहीत्वा ओं सोपकरणवारिपूर्णघटाय नमः३। कुशोपरि-ओं ब्राह्मणाय नमः३। घटं सिक्त्वा-ओमद्यामुके मासि अमुके-पक्षेऽमुकतिथौ मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथ-सिद्धिपूर्वकपितृस्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय- ओमद्य कृतैतत्सोपकरण-वारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्नि-दैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः-एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः। इति प्रार्थयेत्।

वर्षप्रवेशसारिणी। प्रतिवर्षक्षेपकदिनादि

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
दण्ड	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गव	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	
दिन	४	२	१	६	५	४	२	१	६	
दण्ड	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२	
पल	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०	
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	

विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

पति	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्ता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः।

त्रिराशिपतिः

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	च.	बु.	म.	श	म	वृ.	च.
रात्रौ	वृ.	च.	बु.	म.	सू.	शु.	श.	शु.	श	म	शु.	च.

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्- सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः। शेषांके जन्मनि गताच्चन्द्र-राशिरिह न्यसेत्।। शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत्। त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ।। शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ।।

वर्षलग्नानयन-(गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या)÷१२। एकादिशेषे मेषादिलग्नराशिः। **वर्षेशनिर्णयः**-वर्षलग्नेश-जन्मलग्नेश मुथेश-त्रिराशिपति- दिवारविराशीश- रात्रौचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः।

शनि का स्वर्णादि पादः-यदि स्वजन्मराशितः शनिराशि संचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्यनिम्न लिखितानि पदानि भवेयुः-जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं, द्विपञ्च नन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लौहपादम्।

स्वर्णादि पाद फल-लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्चकाञ्चने ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत्।

अनिष्टफलदायकशनि जपः- कार्यः-लौहञ्च धार्यम्। शन्यश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य।

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	भयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सुखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	रुजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीडा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

७।। वर्षीय शनेः मासभेदेन फलम्-

मस्तके ७ मासाः-सर्वांशे हानिः। नेत्रे ९ मासाः-सर्वांशे हानिः। मुखे ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः-भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः- यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः-अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः-कष्टमुदरे। गुह्ये ५ मासाः-सर्वांशे हानिः। जानुनि १४ मासाः-राजबलेन जयः। जंघयोः ११ मासाः-स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः-व्यर्थभ्रमणम्।

गोचरफल-बोधकचक्र

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	स्थानहानि	सौख्य	बन्धन	भय	अभय	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	भय	धन	धननाश	धनाप्ति	धनाप्ति	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	धन	लाभ	धनाप्ति	भीति	लाभ	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	मानहानि	रोग	भय	धन	धनहानि	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	दैन्य	कार्यसिद्धि	धनक्षय	रोग	पुत्रसुख	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	विजय	शत्रुभय	विजय	अलाभ	शोक	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	भ्रमण	लाभ	व्यय	विग्रह	मान	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	पीड़ा	कष्ट	कष्ट	लाभ	क्लेश	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्महानि	मान	पीड़ा	रोग	धर्मरति	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	कार्यसिद्धि	सुख	शोक	सुख	उन्नति	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	धन	लाभ	धनाप्ति	सौख्य	लाभ	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	कष्ट	व्यय	हानि	नाश	चिन्ता	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

जन्म कालिक ग्रहों का भावफल(स्त्रियों के लिये)

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	दुःख	पुत्रवती	दुःखिता	सौभाग्यवती	सौभाग्यवती	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	पुत्रवती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्पसन्तति	सुखी	सुखी	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	सन्ताननाश	कन्याधिक	पुत्रमरण	उत्तमसुख	उत्तमसुखी	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्त	क्लेशप्राप्ति	धनवती	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	रोगिणी	प्रवासिनी	स्वामीनाश	क्षय	भयबन्धन	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	विधवा	अतिकष्ट	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्मनिष्ठा	पुत्रवती	कर्मकारिणी	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	परिश्रमी	व्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	पतिधनी	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	पुत्रवती	सुखी	आयुष्मती	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	अतिव्ययी	दिनान्धा	वन्ध्या	सुपुत्रवती	सुशीला	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

राशीनां स्वांमिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु.	च	सू	बु	शु	मं.	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आपा	पौ	ज्ये	भा.	मा	आ	श्रा	वै	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दिन	र.	श.	चं.	बु.	श	श	वृ.	शु.	शु	मं	वृ	शु
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	श्र	श	रे.	म.	रो.	आ	श्ले
योग	वि.	सु.	प.	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
करण	बव	श.	च	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श.	वणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.च.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीचं.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	क१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि३	क२८	मी१५	म५	क२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु.	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	३२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु
आकृति	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

कारकग्रहाः- ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य- भ्रातृमातृपितृ-पुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।
स्थिरकारकाः- तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध- गुरु-भौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु- रविबुधगुरुशनि-गुरु-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति।
स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्-जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे,४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्। **आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु**- रजतपादे, ज्येष्ठादिराप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति।
तेषां फलम्-स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति।

हस्तरेखा-(हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका फल)

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह बलवान होता है तो उस जातक की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है। जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधार पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लग्न मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से वृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को वृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के बाँयी ओर हथेली में ऊँचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और वृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, वृहस्पति, शुक्र शनि के एक-एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग जो थोड़ा धंसा होता है उसे करतल मध्य कहते हैं। हथेली के मध्य भाग की अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेजी में इन पर्वतों को Mounts कहते हैं।

सूर्य पर्वत (Sun Mount)– यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्वत धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है और उसकी बुद्धि भी तेज नहीं होती। उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। यदि क्रास × का चिन्ह् हो तो अनावश्यक बदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधारण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह् हो तो जातक उच्च राज्यधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्च पदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर बिन्दु या वृत्त का चिन्ह् शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधारण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत बुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हों तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएँ हों तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी बन जाता है।

चन्द्र पर्वत (Moon Mount)– दाहिने हाथ में आयु रेखा से बांयी ओर भाग्य रेखा के पास और मणिबंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता, कल्पना काव्य, साहित्य आदि से सम्बन्ध रखता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र का क्षेत्र धंसा हुआ होता है, उसमें प्रायः कल्पना शक्ति का अभाव होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र उच्च होता है वह, साहित्य, काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अधिक उठा हुआ हो तो व्यक्ति में उतावलापन अधिक होता है और उसे क्रोध भी जल्दी आता है। चन्द्र पर्वत गहरा हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिन्ह हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ विदेश में विघ्न व परेशानियां पैदा करती है।

चन्द्र-क्षेत्र मणिवन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो यह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रकृति-प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

मंगल पर्वत (Mars Mount)– मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी,निडर तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक बलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं।

यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला, समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी बात को ज़बरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है।

यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति युद्ध कुशल, दृढ़-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रबन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलाहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों और उनसे जाल-सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पद प्राप्त करता है। संघर्षों एवं बाधाओं के बावजूद वह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुतः मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता बनता है।

बुध पर्वत (Mercury Mount)– कनिष्ठिका ऊँगली के नीचे (मूल में) हृदय रेखा या मंगल पर्वत के ऊपर जो स्थान है उस स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक है। बुध का क्षेत्र अच्छा हो तो व्यक्ति को व्यापारिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, ज्योतिषी, धनी एवं कवि होता है। कानून का ज्ञाता, लेखक एवं हंसमुख प्रकृति का भी होता है। यदि बुध पर्वत अत्यन्त ऊँचा हो तो वह ठग, चालाक, धूर्त, विश्वासघाती और लफंगा भी होता है। ऐसे व्यक्ति धन के पीछे पागल रहते हैं। यदि बुध पर्वत नीचा हो तो अप्रसन्न, आलसी, धनहीन एवं मन्दबुद्धि होते हैं।

यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति व्यापार कुशल, प्रतापी चिकित्सक, वकील, ज्योतिषी आदि होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख प्रकृति का होता है। यही फल मंगल, बुध दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान रूप से ऊँचे उठे हों, वे विद्याभ्यासी, संगति प्रिय, सफल साहित्यकार, पत्रकार, लेखक होते हैं। श्रमवान और उद्यमी होते हैं। मान-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। बुध व शुक्र का पर्वत समान रूप से ऊँचे हों तो वह विलक्षण ज्ञान वाला, श्रृंगार प्रिय और संतति सुख से पूर्ण होता है।

जिनके हाथों में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी एवं भौतिकवादी कहे जाते हैं। धन-संचय करने में य उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते। यदि बुध पर्वत पर कोई तिरछी रेखा आई हो तो उसे गुप्त परेशानी होती है। यदि इस पर त्रिकोण △ का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी, मान प्रतिष्ठा वाला या व्यापारी होकर प्रचुर धन पैदा करता है। यदि बुध पर्वत पर दो चार खड़ी रेखाएँ हों तो वह डॉक्टर या औषधि संग्रहकर्त्ता होता है। यदि बुध का पर्वत ऊँचा उठा हुआ कुछ चौरस दिखे तो वह ज्योतिषी होता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है।

यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णत: श्रेष्ठ एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

बृहस्पति क्षेत्र (Jupiter Mount)– तर्जनी अुँगली के मूल भाग में राहु पर्वत के ऊपर शनि पर्वत के पास जो स्थान है उसे गुरु का क्षेत्र या गुरु पर्वत कहते हैं। हथेली में गुरु का पर्वत उच्च हो तो उस व्यक्ति में देव-तुल्य सभी गुण पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति तेजवान, ओजस्वी, दर्शनीय विद्वान्, उदार, ज्योतिषी, अध्यापक होता है। वह धनधान्य युक्त, सदाचारी, सत्यवक्ता होने के साथ-साथ जहाँ स्वयं की उन्नति करता है, वहाँ दूसरों को उन्नति देने में सहायक रहता है। यदि गुरु का पर्वत अत्यन्त उच्च हो तो व्यक्ति आडम्बर वाला, मिथ्याभिमानी, स्वार्थी, धोखा देने में चतुर तथा स्वेच्छाचारी होता है।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएँ होती हैं। यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यों में लगा रहने वाला परन्तु जीवन में सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उसमें निराशा की भावना आने लगती है। यदि गुरु पर्वत राहु पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त तथा रोगी होता है। यदि गुरु, शुक्र का पर्वत एक समान ऊँचा हो तो ऐसा व्यक्ति असत्य वक्ता, शत्रु-युक्त, अविचारी, झगड़ालू तथा स्त्रियों के साथ रहकर भी उनसे कम प्रीति वाला होता है। यदि गुरु पर्वत निम्न तथा शनि पर्वत ही अधिक उठा हो तो वह समाज व घर वालों से घृणा करता है। तथा इन दोनों के एक समान ऊँचे होने पर धैर्यवान्, भाग्यवान और अदृष्टवादी होता है।

अगर वृहस्पत्ति-क्षेत्र पर क्रास (×) का चिन्ह हो तो जातक धार्मिक क्षेत्र में वहुत ऊँचा उठ जाता है। उसका वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। यदि गुरु पर्वत पर सीधी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है परन्तु बहुत सी रेखाएं होने पर अपयश प्राप्त होता है। गुरु पर्वत पर त्रिकोण चिन्ह हो तो व्यक्ति सात्विक विचार, चतुर व कुशल होता है। यदि त्रिकोण के साथ सूर्य रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति संस्था का मंत्री होता है। गुरु के पर्वत पर तारा का चिन्ह् हो तो अच्छा फल देता है किन्तु परिवार की ओर से परेशानी कारक होता है। यदि गुरु के पर्वत पर गुणा (क्रास) का चिन्ह हो तथा तर्जनी के मूल में स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति का विवाह सम्पन्न एवं कुलीन घराने में होता है। ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त कर अच्छी उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। अस्पष्ट गुणा का चिन्ह या अत्यन्त सूक्ष्म होने पर उसके मस्तक पर चोट चपेट आदि से कोई घाव अवश्य हो जाता है।

यदि व्यक्ति की उँगलियाँ नुकीली हों तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। वर्गाकार उँगलियां के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह जीवन में निरंकुश तथा अत्याचारी वन जाता है। यदि उँगलियाँ लम्बी हों तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु पर्वत अशुभ हो तो उसे कुष्ठ, चर्म, क्षय-रोग, गठिया, पीलिया तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग रहता है।

वस्तुत: गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा गया है।

शुक्र पर्वत (Venus Mount)– अंगूठे के नीचे और जीवन रेखा के भीतर का भाग शुक्र क्षेत्र कहलाता है। शुक्र पर्वत से सौन्दर्य प्रियता, काम वासना, संगीत प्रियता, स्वास्थ्य, संतान उत्पन्न करने की शक्ति का विचार किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में शुक्र का पर्वत उठा हुआ न हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण न्यून मात्रा में होता है। शुक्र क्षेत्र का साधारण उच्च होना अच्छा है। साधारण उच्च होने पर जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं।

शुक्र का अति उच्च होना अशुभ होता है। अति उच्च होने पर मनुष्य अत्यधिक विलासी, व्यभिचारी व कामुक होता है। शुक्र पर्वत उठावदार व शुभ होने पर व्यक्ति निरोगी होता है, और वह सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी ललित कला में अधिक रूचि होती है। यदि शुक्र पर्वत धंसा हुआ अथवा गहरा हो तो वह व्यक्ति नपुंसक होता है तथा धातु रोग से ग्रसित होता है। शुक्र पर्वत पर व्रत या विन्दु के चिन्ह अशुभ होते हैं। शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा वृहस्पति की ओर जावे तो उस व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि कोई रेखा शुक्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटे तो धन हानि होती है। शुक्र पर्वत हथेली में अनुपस्थित होने पर व्यक्ति निर्मोही हो जाता है। वह उदासीन व सन्यासी बन जाता है। हाथ में शुक्र पर्वत अच्छा होने पर चेहरा लावण्यमय व प्रभावशाली होता है।

शनि पर्वत (Saturn Mount)– यह मध्यमा अंगुली के नीचे होता है। एकान्त-प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु का गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अत: वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दु:खी रहता है तथा अविश्वासी होता है। अगर शनि का क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो वह जातक विचारशील होता है। अगर शनि का पर्वत विगड़ा हुआ हो तो उस मनुष्य का स्वास्थ्य खराब रहता है व विशेष रूप से वह पित-वात रोग का रोगी होता है। शनि का पर्वत उठावदार व शुभ हो तो उस व्यक्ति का जीवन सुखी होता है।

आवश्यकता से अधिक उठा हुआ हो तो वह एकान्त-प्रिय और वैराग्य की भावना रखने वाला होता है। शनि का पर्वत गहरा होने पर मनुष्य का जीवन दु:खी होता है और वह कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। जिस व्यक्ति के शनि पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो, वह यौगिक क्रियाओं और गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। शनि पर्वत पर वृत या बिन्दु के चिन्ह दु:ख व दरिद्रता के चिन्ह होते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति एकान्त-प्रिय होने के कारण भीड़ से बचना चाहते हैं। शनि क्षेत्र प्रधान व्यक्ति प्राय: इन्जीनियर, जादूगर, साहित्यकार व वैज्ञानिक होते हैं। नृत्य, गान, संगीत इत्यादि में इनकी रुची नहीं होती है। ये संदेहशील प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। शनि क्षेत्र अत्यधिक विकसित होने पर जातक आत्महत्या तक कर लेता है। वे स्वभाव से उदासीन व चिड़चिड़े होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत वृहस्पति की ओर झुका हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। उस व्यक्ति में वृहस्पति के गुणों का समावेश हो जाता है। वह व्यक्ति उन्नतशील बन जाता है। सूर्य की ओर झुका हुआ होने पर व्यक्ति निष्क्रिय व उदासीन हो जाता है। शनि क्षेत्र पर रेखाएं शुभ होती है परन्तु चिन्ह जैसे वृत्त आदि अशुभ माने गए हैं।

ऊपर संक्षेप में भिन्न ग्रह क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलिए अलग-2 फलों का मिलान पर, परिणाम में जो फल आवे, वह कहना चाहिए।

विवाह सम्बन्धी योग–

(1) यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है।

(2) यदि स्त्री के दाएँ हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायक प्राप्त होती है।

(3) यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उदित होकर गुरु-पर्वत पर गई हो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है। उसे सुख, यश एवं विदेश-गमन आदि के लाभ प्राप्त होते हैं।

(4) यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है।

(5) यदि हृदय रेखा गुरु क्षेत्र से उदय हो तथा चन्द्र से निकलती हुई भाग्य रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई तो ऐसी स्त्री को अत्यधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता है।

(6) यदि हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

(7) यदि भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर गहरे रूप में बृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाये तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

(8) यदि किसी विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा में आकर मिल जाये तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है। उसे अपने सम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के सहयोग से भाग्योदय होता है।

(9) यदि विवाह-रेखा में से पतली-पतली शाखायें निकलकर हृदय रेखा की ओर गई हो तो ऐसी स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

कालसर्प योग–चामत्कारिक शुभ फल भी देता है

कालसर्प योग जन्म कुण्डली में उस स्थिति में बनता है, जब कुण्डली में समस्त ग्रह राहु-केतु के एक ओर स्थित होते हैं। ज्योतिष जगत में 'कालसर्प योग' के विषय में बड़ी चर्चाएं हैं। प्राचीन विचारधारा के ज्योतिविदों का कहना है कि प्राचीन ग्रन्थों में कालसर्प योग का कहीं उल्लेख नहीं है। आधुनिक ज्योतिर्विद जातक के जन्माङ्ग में कालसर्प योग की जो स्थिति बनाते हैं, वह स्थिति पहले भी होती थी, जिसे राहु की दशा कहा जाता था। अति प्राचीन ज्योतिर्विदों ने **'कालसर्प योग'** शब्द का प्रयोग नहीं किया। परन्तु महर्षि पराशर एवं वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थों में **'सर्प योग'** की चर्चा की है। वृहजातक तथा वृहत् पराशर होराशास्त्र में– योग: प्रोक्तकाल सर्पश्च......।। एवं 'राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विघ्नदा काल सर्प संज्ञक: तथा काल सर्पयोगस्य विषविघात्त जीवने भयावह पुन: पुनरपि शोकं च। मानसागरी के अध्याय ४ में स्पष्ट उल्लेख है कि **"लग्नाच्च सप्तमे स्थाने शनि राहु संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपिच।।410।।"** यदि सप्तम भाव में शनि राहु के साथ हो तो उस जातक की मृत्यु 'सर्पदंश' से होती है। इसी सर्प योग को हम **'कालसर्प योग'** भी कहते हैं।

[राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दु:खों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दु:खों से व्याकुल होकर ही मनुष्य की शक्तियाँ का स्मरण करता है।]

कुछ विद्वान लोग यह प्रश्न करते हैं कि **'कालसर्प योग'** अस्तित्व में कैसे आया? तो यह प्रश्न अनुचित नहीं है क्योंकि अधिकांश ग्रन्थों में **'सर्प योग'** की तो चर्चा है किन्तु **'कालसर्प योग'** की नहीं। 'काल' शब्द जोड़ दिया जाए, तो साधारण प्राणी के मस्तिष्क में उसका प्रथम अर्थ 'मृत्यु' ही आएगा और जब 'काल' शब्द के साथ 'सर्प' जुड़ा हो, तब तो प्रथम दृष्ट्या जातक भयभीत हो जायेगा। समाज में सामान्य रूप से **'काल'** और **'सर्प'** दोनों प्रथमत: भयावह ही हैं। यह तो उसे धैर्य बँधाने और समझाने पर ही समझ में आयेगा कि 'काल' का अर्थ है समय और 'सर्प' हमारे पूज्य देवता हैं, नाग की पूजा और शिव भक्ति से हमें ऊर्जा प्राप्त होकर मन को शान्ति मिलती है। राहु-केतु की महादशा एवं कालसर्प/पितृदोष से पीड़ित जातकों की ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए नाग पूजा एवं शिवभक्ति का विधान हमारे शास्त्रों ने सुझाया है। इससे जातक को आने वाले कष्टों से राहत होंगे।

राहु-केतु छाया ग्रह हैं। जैसे प्राचीन चरक संहिता में कैंसर एवं एड्स जैसे रोगों का उल्लेख नहीं है, परन्तु ये रोग नहीं है, ऐसा नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार कालसर्प योग जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु या राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प योग का निर्णय करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। राहु या केतु के साथ अन्य ग्रहों का सहचर्य की स्थिति में भाव-स्पष्ट कर लिए जाएँ तो इस योग में और भी अधिक स्पष्टता आ जाएगी। जैसे-लग्न भाव से निर्मित कालसर्प योग में यदि राहु के साथ मंगल या कोई भी ग्रह है तथा उसके भोगांश राहु से अधिक हैं तो कालसर्प योग दोषपूर्ण नहीं होगा, बल्कि योगकारक बनता है। कुछ विद्वान तो इसे भंग कालसर्प दोष की कुण्डली मानते हैं।

वैदिक रूप से राहु का अधिदेवता काल, प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रतिअधिदेवता ब्रह्माजी हैं। कालसर्प योग से सम्बन्धित जन्मकुण्डलियों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ कालसर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्ट झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोत्तर समृद्धि, वैभव प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्ति जब पद, प्रतिष्ठा, धन, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय माता-पिता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है, उसी का प्रभाव अगले जन्म में कालसर्प योग के रूप में आता है। इसके विपरीत अपने माता-पिता आदि की यथाशक्ति सेवा करते हैं, उन्हें कालसर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है।

सामान्यत: कालसर्प योग का प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है, परन्तु राहु अथवा केतु की दशाऽन्तर्दशा में इसके प्रभाव, फलों का प्रादुर्भाव होते देखा जा सकता है। एक अन्य मान्यतानुसार कालसर्प योग यदि किसी

जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में बनता हो, तो उसे **जीवन के पूर्वार्द्ध** भाग में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। [इस स्थिति में राहु **सप्तम में तथा** केतु लग्न भावस्थ होगा।] इसी भान्ति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह **सप्तम भाव से द्वादश** भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को **जीवन का उत्तरार्द्ध भाग** विशेष कठिन परिस्थितियों में से गुजारना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की **गणना** राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

कालसर्प का शुभाशुभ फल द्वादश भावों में राश्यानुसार अलग-अलग होता है।

1. **अनन्त कालसर्प योग–** प्रथम व सातवें भाव से निर्मित कालसर्प योग मनुष्य के व्यक्तित्व, शरीर, सिर, आत्मा एवं पिता की माता (दादी) पर जीवन पर्यन्त **प्रभावी रहता है।** 42 वर्ष की आयु तक अथवा राहु की महादशा में विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

अशुभ प्रभाव– शरीर योग, कष्ट व मानसिक तनाव **अधिक** रहता है। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है। **वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है।** जातक जीवन पर्यन्त उदर विकार से पीड़ित रहता है। बचपन में अथवा बड़े होने तक पेट में **कीड़े** होते हैं। प्राय: इसको शौच सम्बन्धी कष्ट बना रहता है। यह तब और भी अधिक प्रभाव होता है, जब लग्न एवं राशि एक ही हो। जातक को स्वप्न में सूर्य एवं मृत्यु लोग की आत्माएँ **दिखती** हैं।

शुभ फल– यदि यह अनन्त कालसर्प योग वृष एवं मिथुन, **सिंह** राशि पर आता है, तब राजयोगकारक भी होता है। जातक प्राय: विदेश गमन भी करता है। **रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय सम्पदि॥** वैद्यनाथ। गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने **वाला**, बाहरी तौर पर सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा।

2. **कुलिक कालसर्प दोष–** द्वितीय व आठवें भाव से निर्मित **कालसर्प** दोष में यदि राहु अशुभ हो, तो जातक को **कुटुम्ब** एवं धन सम्बन्धी उलझनों का सामना **रहता** है। अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। **गुप्त रोग** होने की संभावना रहती है। जातक प्राय: अपनी वाणी पर संयम नहीं रख पाता। कभी-कभी **मुख** सम्बन्धी रोग, गले या श्वास सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हों।

शुभ फल– अचानक धन की प्राप्ति होती है। गढ़ा धन, लॉटरी, सट्टा आदि से भी धन का आगम हो सकता है। **परिवार ख्याति प्राप्त एवं संयुक्त होता है। जातक** धन की अपेक्षा कीर्ति को अधिक **मूल्यवान समझता है।**

3. **वासुकि कालसर्प योग–** तृतीय एवं नवम भाव में निर्मित **इस योग** से अपने निकटस्थ भाई-बन्धुओं के कारण ही विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है। **विदेशों में अथवा** भ्रमणशील (घूमने-फिरने) के कार्यों द्वारा धनार्जन होता है।

शुभ प्रभाव– तृतीयेश उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पंचमेश या राज्येश से युति होने पर एवं राहु के तृतीय भाव में वृष या मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर अखण्ड साम्राज्य प्रदान करता है। राजनीति में विशेष सफलता देता है। भाई-बहन होते हैं तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि गुरु की दृष्टि भी हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-बन्धुओं का यथेष्ठ सुख प्राप्त **होता है।** जातक का सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है, जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। शुभफल का अनुभव स्त्री राशियों में प्राप्त होता है। अशुभ फल का अनुभव पुरुष राशियों में प्राप्त होगा।

4. **शंखपाल कालसर्प योग–** चतुर्थ व दशम भावों द्वारा निर्मित कालसर्प योग का प्रभाव जातक की माता, स्थायी **सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति,** वाहन-सुख एवं **शरीर** में पेट पर पड़ता है। चतुर्थेश निर्बल हो एवं राहु नीच राशिस्थ होने से जातक को आराम **कम** व संघर्ष अधिक रहता है। माता-पिता एवं परिवार के निमित्त परेशानियाँ होती हैं। आय में अनिश्चितता रहती है। जातक को पथरी एवं किडनी आदि उदर विकार होते हैं। जातक घरेलू परिस्थितियों **के प्रति असन्तुष्ट** रहता है।

शुभ फल– इसके विपरीत उच्च राशिस्थ राहु होने एवं चतुर्थेश के बलिष्ठ होने **पर** यह योग पूर्ण शुभ तो नहीं, अपितु **अल्प शुभफली** बन जाता है। जन्म स्थान छोड़ने पर जातक **सुखी रहता** है तथा माता को कष्ट के बावजूद **सुख प्राप्त होता है।** १, २, ३, ४ एवं कन्या राशि में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

5. **पद्म कालसर्प योग–** पंचम व एकादश भावों के मध्य कालसर्प योग का **प्रभाव शिक्षा,** संतान, श्रम का मूल्यांकन, मान-**सम्मान,** पेट विशेषकर लीवर एवं आँत पर पड़ता है। **पंचमेश नीच,** वक्री, अस्त या अन्य निर्बल भावों में **स्थित हो तथा राहु नीच राशि धनु या शत्रु राशि में हो तथा किसी शुभ** ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जीवन **के पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना** रहे। कोई भी विशेष कार्य पूर्ण होने **से पूर्व विघ्न या रुकावटें** पैदा हों। **आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहती है।** सन्तान उत्पत्ति में विलम्ब अथवा **कन्या सन्तान अधिक** हों। उच्च-विद्या में **विघ्न-बाधाएं अथवा अधूरी** शिक्षा रहती है।

शुभ फल– पंचमेश उच्च राशि एवं बलिष्ठ स्थिति में होने एवं उच्च राशि या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर यह योग **अनेक गुप्त विद्याओं का ज्ञान कराता है। संतान-उत्पत्ति के बाद क्रमिक** उन्नति हो। मंगल-राहु योग हो तो **जातक कूटनीति का प्रयोग करता है। भृगुसूत्र के अनुसार पंचम** में यदि राहु हो तो मनुष्य को पुत्र सुख **नहीं** मिलता, सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है। नागदेव **की पूजा** करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

6. **महापद्म कालसर्प योग–** षष्ठ स्थान में राहु होने पर योग बनता है। **इसका प्रभाव** रोग, शत्रु, मामा और मौसी पर पड़ता **है। षष्ठेश** निर्बल एवं पापग्रस्त या राहु नीचस्थ होने **से जातक गुप्त** रोग एवं गुप्त षड्यन्त्र का शिकार होता **है अथवा** मामा/मौसी की अकाल मृत्यु होती है। **वृथा खर्च, मानसिक तनाव** व गुप्त शत्रु भय, मातुल (**मामाके**) पक्ष को अनिष्टकर, दाँतों व नेत्रों सम्बन्धी **रोग** भया प्रगति कठिनता से हो पाती है।

शुभ फल– षष्ठेश उच्च राशिस्थ, बलिष्ठ तथा राहु उच्च राशिस्थ **होने से** शत्रु स्वयं ही (निजी कारणों से) दूर हट जाते हैं। विदेश गमन भी होता है। जातक तर्क-**वितर्क करने** में कुशल, अपने बुद्धि-चातुर्य एवं गुप्त **युक्तियों** के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है।

7. **तक्षक कालसर्प योग–** राहु के सप्तम भाव में होने पर यह योग **बनता है।** इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन, मित्र, सांझेदारी, दादा पर पड़ता है।

सप्तमेश ६, ८, १२वें अथवा अशुभ भावस्थ या राहु नीच राशिस्थ होने से **वैवाहिक** विलम्ब, विवाह होने पर वैवाहिक सुख में कमी, व्यवसाय में सांझेदारी के कार्यों में **विघ्न-बाधाएँ** एवं **धोखा,** अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही धन, आय के साधन हों। स्त्री/पति की ओर से परेशानी **अथवा वैवाहिक** जीवन में कलह-क्लेश हो।

शुभ फल– सप्तमेश शुभ हो तो जातक का एक जगह सम्बन्ध छूटने के बाद वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। स्त्री राशि का राहु शुभ फल करता है। विवाह जल्दी होता है।

8. **कर्कोटक कालसर्प योग–** राहु के अष्टमस्थ होने से यह योग बनता है। अशुभ होने पर क्लिष्ट रोग का भय, मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी व घरेलू उलझनें अधिक हों।

शुभ फल– अष्टमेश शुभ भावस्थ हो, या राहु उच्च राशिस्थ, **शुभ दृष्ट हो तो** जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

9. **शंखनाद कालसर्प योग–** नवम व तृतीये भाव में निर्मित कालसर्प योग में भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ पैदा होंगी। लाटरी, सट्टे में धन का अपव्यय तथा किसी नजदीकी बन्धु द्वारा विश्वासघात हो। मनमाना आचरण करने से प्रवृत्त।

शुभ प्रभाव– जातक स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रूचि रखने वाला, जातक ऐसी योजनाओं के संचालक होते हैं। जिनमें धन की वृद्धि अचानक होती है।

10. **पातक कालसर्प योग–** दशम एवं चतुर्थ भावों में निर्मित इस योग से जातक अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् जीवन में उन्नति करता है। आयु के उत्तरार्ध भाग में ही सफलता मिलती है। पिता के सुख में कमी करता है। झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

शुभ प्रभाव– जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल पर भूमि, आवास, स्त्री आदि सुखों को प्राप्त करता है।

11. **विषाक्त कालसर्प योग–** एकादश व पंचम भाव से सम्बन्धित कालसर्प योग के कारण जातक पिता या संतान पक्ष के कारण चिन्तित, गुप्त आर्थिक, परेशानियाँ, प्रथम कन्या संतान की संभावना, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में कमी, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के सम्बन्ध में असन्तोष बना रहता है।

शुभ प्रभाव– लाटरी, सट्टा, शेयर द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अनेक यात्राओं द्वारा धन लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक होता है।

12. **शेषनाग कालसर्प योग–** द्वादश भाव में राहु होने पर यह योग बनता है। जातक को शिर, नेत्रादि के कारण कष्ट, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला धन का वृथा खर्च अधिक होता है। कुसंगति के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

शुभ प्रभाव– यदि व्ययेश शुभ भावस्थ हो तो जातक अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भाग्योदय प्राप्त करता है। आध्यात्म, धार्मिक, लेखन, ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष रूचि रखेगा।

कालसर्प का मुख राहु होता है। यदि राहु बली हो तथा उस पर शुभ और योगकारक ग्रहों का प्रभाव हो, तो कालसर्प योग जातक को अतीव उन्नति देता है। किसी भी जन्मकुण्डली में उच्चस्तरीय सफलता के लिए केवल किसी एक योग पर निर्भर रहना शास्त्रसम्मत नहीं है। उच्चस्तरीय सफलता के लिए लग्न का बली और शुभ प्रभाव में होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लग्न बली हो, तो जातक की कुण्डली में विद्यमान् सामान्य शुभ ग्रहयोग भी जातक को अच्छी प्रगति देते हैं। इसके विपरीत लग्न के निर्बल होने पर जातक की कुण्डली में विद्यमान ग्रहयोग उच्चस्तरीय सफलता नहीं दे पाते। कालसर्प योग के शुभफलदायक होने की स्थिति में लग्न की बलवत्ता को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। कालसर्प योग जिन स्थितियों में विशेष शुभ फलदायक सिद्ध होता है, उसके लिए योग की स्थिति एवं कुण्डली में विद्यमान् योग कारक ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को अवश्य देखना चाहिए।

जिन लोगों की कुण्डलियों में यह योग मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या और मीन राशिस्थ राहु से बनता है, उनके मन-मस्तिष्क और हृदय में गुह्य ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रेरणाओं का अनूठा संगम होता है। जो उनके जीवन में उत्कर्ष के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु तत्पर, व्यवहार-कुशल और त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयबद्ध और यर्थाथवादी सोच होती है। लोगों में अपने नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को संतुष्टि मिलती हैं।

(1) उदाहरणार्थ– (१) लौह पुरुष सरदार **वल्लभ** भाई पटेल की कुण्डली में कालसर्प योग के बावजूद वे दूरदर्शिता और दृढ़ व स्थिर मानसिकता के व्यक्तित्व से लब्ध एक महान् पुरुष थे। उनके जैसा गृहमंत्री आज तक नहीं हुआ। **उनकी कुण्डली** में सप्तम भाव में बुध आदित्य योग एवं दशम भाव में रूचक और शश योग **हैं।** लग्नेश बली है। जिनको कालसर्प के द्वारा कोई हानि नहीं हुई।

अनेक उच्चस्तरीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प योग देखने में आया है। **उदाहरणार्थ–** सचिन तेंदुलकर, धीरू भाई अम्बानी, सुश्री लता-मंगेशकर, हिटलर, मोरारजी देसाई इत्यादि।

(2) उदाहरण कुण्डली– (२) संलग्न कुण्डली **प्रसिद्ध** उद्योगपति स्व० धीरू भाई अम्बानी की है, जिनके जन्मांग में समस्त ग्रह तृतीय के राहु तथा नवम के केतु के बीच हैं। कालसर्प योग का मुख तृतीय भाव में शनि की राशि तथा राहु के नक्षत्र में है। तृतीयेश शनि द्वितीय भाव में स्वगृही है। इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु बली तथा शुभ स्थिति में है एवं **उसका सम्बन्ध** धनभाव से है, जो कि आर्थिक जगत में शीर्ष सफलतादायक है, इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु धन उगलता रहा। तृतीय भाव में इसकी स्थिति स्वपराक्रम को बढ़ाने वाली तथा जुझारू प्रवृत्ति की द्योतक है। इस कालसर्पयोग का शुभ फल लग्न की बलवत्ता ने बहुत बढ़ा दिया। लग्नेश गुरु भाग्येश सूर्य के नक्षत्र में **स्थित होकर** दशम भावस्थ होना, लग्न में भाग्येश सूर्य और उसका मित्र चन्द्रमा स्थित है। लग्नेश और भाग्येश का नक्षत्र सम्बन्ध तथा भाग्येश की लग्न में स्थिति लग्न को बली और इन्हें प्रबल भाग्यवान बनाया। इस प्रकार श्री अम्बानी की कुण्डली में उच्च सफलतादायक ग्रह योग विद्यमान थे, जिन्हें कालसर्प योग ने और भी ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

(3) उदाहरण कुण्डली–(३) संलग्न जन्मांग **प्रसिद्ध** अभिनेता अनिल कपूर की है, जिन्होंने फिल्मी जगत में अच्छी पहचान बनाई। इनका जन्म कुम्भ लग्न के मिथुन नवांश में हुआ था। कर्कोटक नामक, अष्टमस्थ राहु तथा द्वितीयस्थ केतु के मध्य सभी ग्रह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेश (वाणी का कारक) गुरु बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र भाग्य भाव में **स्वगृही है,** जिसने कपूर जी को वास्तव में कलाकार बनाया। स्पष्ट है, अष्टम भाव में कन्या राशिस्थ राहु (नवांश में भाग्य स्थान) कोई अशुभ/अरिष्ट प्रभाव प्रदान नहीं कर रहा। यद्यपि अष्टमस्थ राहु उत्तम फल नहीं देता परन्तु शुभ-अशुभ परिणाम राशि, बल तथा अन्य ग्रहों को दृष्टि के अनुसार प्रदान करता है। अतः कर्कोटक नामक कालसर्प योग से भय में न आएँ, यदि अष्टमस्थ राहु शुभ होगा तो निश्चय ही लाभकारी परिणाम देगा।

वास्तव में राहु वायुकारक, छाया व **अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे** [illegible] **की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों** [illegible]**कुल होकर ही मनुष्य प्रभु की शक्तियों का स्मरण करने** लगता...

वल्लभ भाई पटेल
31 अक्तू. 1875 ई.
6-00 सायं, लगभग
गुजरात

1	
2	
3	
4	
5	
6	के.
7	सू. बु. गु. शु.
8	चं.
9	
10	मं. श.
11	
12	रा.

स्व. धीरू भाई अंबानी
28-12-1932
प्रातः 6-31 बजे
जन्मस्थान–गुजरात

9	सू. चं.
10	श.
11	रा.
12	
1	
2	
3	
4	
5	मं. के.
6	गु.
7	
8	शु. बु.

अनिल कपूर
24-12-1959
12-00 दोपहर
मुम्बई

11	
12	के.
1	
2	
3	
4	
5	
6	चं. रा.
7	शु.
8	मं. बु. गु.
9	सू. श.
10	

बुध पर्वत (
पर्वत के ऊ
समृद्धि

वास्तु विचार

वास.विचार–मस्तकक्त पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः। कुक्षौ पञ्च धनं धान्यं षटपादे स्त्री दरिद्रता।। पृष्ठे चैक पादहानिर्नाभौ चत्वा रिसंपदः। गुह्ये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु क्रन्दनम्।। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नरां कृतिः। गणयेज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा।।

-ग्राम के नक्षत्र से वास पुरूष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र

ग्रा.न.से. पु.ज.न.	५	३	५	५	६	१	४	१	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुर्दा	दाया हाथ	वाया हाथ
फल	लाभ	धन हानि	धन धान्य	धन धान्य	स्त्री अभाव	पैर में पीड़ा	धन सम्पति	भय पीड़ा	युद्ध	मत भेद

भूमिपरीक्षण :- गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि शोधन की बहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित हैं।

मध्येगृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्पांशुभिराश्रुतस्य ।
सम्पूरयित्वा धिकतामुपेतःपांशुर्यदा तद्गृहमुत्तमं स्यात्।।
समे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं दाचित् ।

जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके बीचों बीच एक हाथ लम्बा,एक हाथ चौड़ा,एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिटी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

तदा निशादौ तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्।
प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।।

पूर्व विधि से गड्ढा खोदकर पानी से सायं काल में पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो
शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिटी फट जाय तो भूमि हानिकारक होता है। वास्तुरत्नाकर के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियाँ, बृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

गजपृष्ठादि भूमि विचार :- गजपृष्ठ जिस स्थान मे दक्षिण, पश्चिम,नैत्रृत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो उसको गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान,आयु की वृद्धि होती है।

कूर्मपृष्ठ : जहां की भूमि मध्य में उँच हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो,वह कूर्मपृष्ट भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह,धन-धान्य, संतान,आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठ: ईशानकोण,पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

नागपृष्ठ :- जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

चारों वर्णो के आधार पर भूमि विवेचनः-

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा।। रक्तगान्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्ताप्राक्प्रावणज्ञेया क्षत्रियाणंा च सा मही।। दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वाभिरन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते ।। पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकुण्ठा काश संयुता। मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा।।

स्पष्टार्थ चक्र

ब्रह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उतरप्लव	पूर्वप्लव	दक्षिणप्लव	पश्चिमप्लव	प्लव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतगन्ध	रक्तगन्ध	अन्नगन्ध	मद्यगन्ध	गन्ध
दर्भयुक्त	शपतयुत	बूवयुक्त	कशयुक्त	
श्वेतवर्ण	रक्तवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य-चन्द्र वेध विचारः-चन्द्र वेधी मकान एवं जलाशय सूर्य वेधी शुभ होता है। हद या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दानों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन- धान्य एवं संतति की क्षति होती है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनो प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यविध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता ।(वास्तुरत्नाकरे)

पिण्ड ज्ञान- मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है। **भवन के आय आदि का विचारः**- गृहपिण्ड को नव स्थानों मे रखकर क्रम से ६।६।६।८।३।८।८।४।८ इन अंको से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल मे क्रमश-८।७।६।१२।८ ।२७।१५। २७।१२०। इन अंको से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि,योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होता है।

१:आयः- ध्वज ,धूम्र ,सिंह ,श्वान ,वृष ,खर ,गज ,उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते हैं इसमें विषम आय १, ३,५,७ हो तो शुभ एंव सम हो २,४,६,८ तो अशुभ होता है।

वार तथा अंश-सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश मेषादिनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

द्रव्य या धन:- यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

नक्षत्र-गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है। **तिथि** :-शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमें ये ४,६,१४,१६,२४,२७,२६,३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं। **योग** :-अतिगण्ड, शूल,गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है। **आयु** :- दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीने गेहे तु दुर्भगत्वं प्रजाय्यते। **राशि** :-वासकर्ता का नाम राशि से २,६,५,१०,११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १,३,४,७,८ और१२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

भवन के लाभ आदि का विचार :- अपनी २ वर्ग संख्या को द्विगुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव,मुहल्ला या शाहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

स्पष्टार्थ-चक्र

क्र	वर्ग	नामाक्षर	वर्गेश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा या कोण
१	अवर्ग	अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ	गरूण	१	पूर्व दिशा
२	कवर्ग	क,ख,ग,घ,ङ.	मार्जार	२	अग्नेय कोण
३	चवर्ग	च,छ,ज,झ,ञ	सिंह	३	दक्षिण
४	टवर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैर्ऋत्य कोण
५	तवर्ग	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६	पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७	यवर्ग	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८	शवर्ग	श,ष,स,ह	मेष	८	ईशान कोण

मण्डलानयनः-पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १.दाता २.भूपति ३.क्लीव ४.चोर ५.पण्डित ६.भोगी ७.धनाढ्य ८.दरिद्र ९.कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते हैं। इनका फल नामके सदृश होता है।

मण्डलेशानयनः-स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं मण्डलाधिप उच्यते।। इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः।। इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम् वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्।। धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः।।

स्पष्ट चक्र								
१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	धन	महादेव	विधाता	गणेश	देव
सुखद	यश	दुःख	उच्चाटन	कुबेर	कलह	सुखशान्ति	सर्वसिद्धि	फल

आँगन विचार:-आँगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १.तस्कर २.भोगी ३.पण्डित ४.दाक्षा ५.नृपति ६.नपुंसक ७.कुबेर ८.दरिद्र ९.भयदाता ये नव प्रकार के आँगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। बीच में आँगन उँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

राहु दिशा विचार-देवालय,जलाशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।
देवालये गेहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।
मीनार्कः सिंहार्कः मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्।।
नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ट भाग ते खोदना शुभ होता है।

कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणी :-
स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणिं च पूर्वतःस्युः।
तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषध सर्वधाम्।।

स्नान कक्ष :- वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर बाथरूम भवन के पूर्व में होना चाहिये। स्नान घर में गिजर वाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष मे शौचालय रखना हो तो नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य तथा नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में,हाथ साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

भोजनालय :- इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन का अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्न भण्डार पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण यापश्चिम दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिये। अगर भोजनालय मे ही भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य मे उत्तम होता है।

शयन कक्ष :- गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिर करके सोना चाहिये। प्राक्शिरःशयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।
पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानि मृत्युर्तथोत्तरे।।

पूजाघर :- ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर मे शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल परदा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैर्ऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण मे बिजली, जनरेटर अर्थात् उँर्जा से सम्वान्धित कक्ष, उत्तर दिशा मे कोषाघर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य मे घृत दधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर मे रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष बनवाना चाहिये।

द्वार विवेचन :- मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई बराबर-बराबर नव ९ भाग करके पांच भाग दाहिने और तीन भाग बायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

शिलान्यासः-पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में ... के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना ... चाहिये, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

गृहारम्भे वास्तु पुरूष स्थिति ज्ञानम - गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमें गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना,यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एव ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरूष का निवासी होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरूष का निवास होने पर लाभ एव लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का-ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु,सूर्य,शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

वास्तुदोष निवारण के उपायः-१.घर में वास्तुदोष होने पर उचित यही है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे बेंच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवाराणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नौरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या भागवत यज्ञ आदि अवश्य करें। २.अमावश्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी तिल,चावल,जौ,शक्कर,गुग्गुल ,जटामाशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा ११०० आहूति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।